

प्रमोद

चिह्नी | पत्री

१

महत्तम-सिप्यतर राष्ट्राय

अमृत राय

हर्य प्रकाशन
इ ल रा आ व



ॐ श्रीगणेशाय नमः

प्रकाशक

श्री स. प्रकाशन इलाहाबाद

मुख्य

सामक श्री कानाकाबाद

आचार्य-मज्जा

कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव

प्रथम संस्करण

प्रथम दृश्य दिनांक १९९२

मूल्य — मात्र दश



मुंशी दयानरायन निगम

भूमिका

उर्दू की साहित्यिक दुनिया से जिनका कुछ भी परिचय है उन्हें 'जमाना' के बारे में बतलाने की जरूरत नहीं। बसों बरत 'जमाना' ने उर्दू की घोर क्रीम की बिरफत की घोर जसदी गिनती बोटों के पत्रों में होती रही।

'जमाना' घोर मुंशी प्रमचर के साहित्यिक जीवन को दुक़मात लगभग एक नाम हुई। 'जमाना' १९०३ में निकला घोर १९३३ में ही मुंशीजी का पहला जन्मघात 'घतरारे मयाबिह बनारस के एक दुक़नाम उर्दू सासाहिक में निकलना शुरू हुआ। लेकिन जब १९३३ में घाकर उनका संबंध 'जमाना' से हुआ तब से उन्होंने घोर भी बँककर सिपना शुरू किया। घीरे-घीरे यह सबय पहुरा से पहुरा होता गया। बरतों मुंशी जी ने उसके घनोपचारिक घ सनिक संपादक के रूप में काम किया लेकिन घोर कहानियाँ तो लगभग हर महीने लिखी ही समापोबनार्द भी लिखी घोर 'रुनारे जमाना' नाम का एक राजनीतिक संतंभ भी सँभाले रहे। कितनी ही बार 'जमाना' का इतमवदान संभालने की बात भी उनके लिए उठी जो कि जमाना की घाविक स्थिति की देखने हुए कभी संभव न हुआ, बर इसमें कोई संदेह नहीं कि 'जमाना' के बिदास में मुंशी जी का बहुत बड़ा हाय रहा है— घोर जतना ही बड़ा हाय मुंशी जी के बिदास में 'जमाना' का रहा है।

'जमाना'-संपादक मुंशी बवानरायन नियम क साथ मुंशी जी को बिदु-पत्री का सिलसिला १९३३ में शुरू हुआ, एक पत्र के संपादक घोर एक नये लेखक के कारप्यरिक सम्बन्ध शुरू के रूप में। घीरे-घीरे उसने पहुरो घात्मीयता का रूप ले लिया जो भरते इम तक बनी।

१९३६ में मुंशी जी ने गोरखपुर में निगम साहूब को लिखा था — घाव क्या बहते हैं, जिग्दपी की जग्दीह घरी भी कम है। मयर यह बाहना है कि घा ता साथ बनें घा गग्दीह-सो तज्जीम घी-सादीर हो। मैं घापरवा येगरी बनना बाहता है।

बही हुआ। मुंशी प्रमचर पहले मये १९३६ के दंत में घोर मुंशी बवा मरायन १९४३ के घारम्भ में...

इरतीस बरत की घा रोहती दुब एक घनटी कहानी है।

रोनों के बिचार रोनों का रचमाय रोनों की रबियाँ काटी बबन् थी।

नियम साहब शुक से गरम दम धीरे मोकते की धोर झुके हुए थे सुनी की परम बल धीरे तिलक की धोर । एक को हिन्दुस्तान की जलाई घण्टों के साथ प्रथिब से प्रथिब सम्बन्ध-सहयोग बनाये रखने में विघायी बैती थी, दूसरे को पूर्ण सम्बन्ध विन्देद में । सामाजिक परात्म पर भी बड़ी बल थी — नियम साहब की प्रपञ्च बुझाम से बोस्ती थी सुनी की को जलते झटई कीई लरोकार न था । एक ने अपने बच्चों को सिविल सर्विस के लिए तयार किया दूसरे ने यादवार विधायी के लिए । दोनों के स्वभाव का धतर भी काफ़ी स्पष्ट था । सुनी की अपने रहन-सहन, रक-रखाव में अितने ही डीले-डाले थे नियम साहब जतने ही सुस्त-बुद्धत । नियम साहब बितने ही बख्खार-बुवाल थे सुनी की बख्खार-कीमत से जतने ही धरभित ।

दोनों के धरभितर की पशु रूबकता ही साबध उन्हें एक दूसरे के बाम बीच लायी लेजिन न ला सकती धगर उनमें कुछ मौनिक समानधरभिता भी न होगी । बहु समानधरभिता को जलको पुष्ट मानयोग लखिरनार्द, उनके मित्राव की मैली, साटाऊन, बडाबारी, हुमबारी डीस्ती को निबाह लरने के लिए धावधक धाम-रधाम ।

अपने डली छत में अितका दिरु ऊपर हुआ है, सुनी की ने मिना था — यही दिरु है कि मैं धाव पर जाऊँ तो इन बाम-बच्चों का धुरसान हाल कीन होया बोस्ती में धगर हूँ तो धाव धीरे यही हूँ तो धाव । धीरे न होगा तो मैरे बाव धाल दो सात इन बच्चों की लरर तो न सकते हैं ।

नियम साहब ने अपने बोस्त के हल धिरावत की बैते ही रता थी री । दूसरे की बदा बड़ी, सुव धपको बात मुझे धाव है । १० से १२ तक मैं हुनाहावा धुनिधरभिता का धाव था । नियम साहब हिन्दुस्तानी एकेडेमी की धीगिणों के मिनाशिक में हुन कीव बधिरों धार हुनाहावा धाव होने धीरे धावध बहु धार भी एला नहो हुआ कि मुभते मिने धरैर बामधुर लीट पये हूँ । बकी मुझे धरने बाम हुना लेते धीरे कहुत धार सुव ही हुलास में धाकर मुभते मिन लेते ष्ठे लिङ्ग धाव मिना के लिए, धावे-धावे केवल हुनाधाम लेते की — धाव में तो ही ? कीई तधलीरु तो नही है ? बड़ाई बैको धल रही है ?

धगर धाने जलर । बहु धुराधी बडाबारी भी एक डीस्त को बना पया, उत्तरी डीस्ती का निबाह । धिधुिर्पा भी बराबर मिना धरते धीरे उनमें धुमरी धावों के साथ-साथ एक धु बरला धरुधर रहा करती कि बैट, निधिन लरिस के हुनाधाम में बैटन, धावी से उत्तरी तैधारी करो — को लि बहु धरने डेटों से भी कडा धरने धीरे धिन धर उन लोवों से धधन की दिवा । मैरी धोर से इन

सामने में उन्हें निराशा ही हुई लेकिन उनका किरवातू स्नेह मेरे लिए धन तरु बम का बसा बना रहा ।

इच्छोत बरत को यह बोसती इन को सी इकवासी कर्तों में शिपरी हुई है । मेरा अनुमान है कि यह संघर्ष पुरा है, लेकिन हो सजता है कि बुध एत इपर उपर हो गये हों । ओ हो, इनका मिल जाना सुद एक बजरकार है ।

घाठ-बल बरत पहले अब मुंशी प्रमचंड की बीबनी मिलने का प्रयास पशुली बार मेरे मन में आया था तभी त्रिल बुनियादी सामग्री को घोर मेरा ध्यान गया था वह वे चिट्ठियाँ थीं । मुंशी प्रेमचंड और नियम साहब का सम्बन्ध जितना पुराना और कितना गहरा था, यह कोई दूसरी बात न थी । इसलिये यह प्रयास बुध वसन न था कि नियम साहब को तिसी यपी चिट्ठियों में ऐसी बहुत-सी बातें मायूम हो सकेंगी मुंशी जी के व्यक्तित्व पर ऐसी बहुत-सी रोशनी पड़ सकेगी जो किसी घोर तरह से सुमलिन नहीं ।

यही सोचकर मैंने बहुतों बार तभी कोई घाठ-बल बरत पहले नियम साहब के बड़े बेटे भीमरायण साहब को जो वहीं कानपुर में रहते हैं और बढालत करते हैं, इन चिट्ठियों के बारे में लिखा । तैम भाई (यशो उनका घर का नाम है) बहुत ध्यस्त आसमी हैं निर उठाने को मोहमत नहीं मिलती, बाबा साहब को परसोक लिपारे भी इन बरत में उपर हो गये थे 'अमला अब का अब हा बुका था काउड-पलर सब इपर उपर हो गये थे तैम भाई ने दो-बार जागहों पर उन चिट्ठियों को तमाया किया जहाँ उनके होश को उम्मीद को और अब वहाँ नजर न आयी तो यही बात उन्होंने मुझको लिख दी । मुझे बहुत खबईस्य घरण लया, यों कहिए कि दिल टूट गया । लेकिन तो भी न जाने क्यों मेरे मन में यह जान अभी कठी थी कि चिट्ठियाँ लपट नहीं हुई हैं । नियम साहब इन सब मामलों में चितने बरके-बोड़े और मुंशी जी से कितने भिन्न थे यह मुझे पता था । गिहाबा मैंने तैम भाई को जान सुन ली बुध को हुआ लेकिन उम्मीद मरी नहीं और मैंने उनसे तमाया जारी रखने के लिए कहा ।

किर दो तीन बरत बीन गये और मैं बुध इनके कायों में रुंना रहा । हाँ इत बीच मैंने दो-तीन बार तैम भाई को इन चीज के बारे में लिखा उरर पर कोई जनीबा नहीं मिलता । तैम भाई इनकी तरक से मायूम हो चुके थे ।

इरीब रीच साल पहले अब इन बीबनी के काम को हाथ में लेने की घड़ी आयी तो मैंने निश्चय किया कि एक बार गब जाकर तारै पुराने काउडान को टटोचना चाहिए, संवातना चाहिए ।

इसी तिमनिने में मुझे किसी से मिलने बिर्जपुर जी जाना था । तिर्र

इस ज्वाल से कि वहाँ जाने पर मेरी मुलाकात उन सीमें से हो जाय और मुझे बेरंग न जोटना पड़े, मैंने एक छत मिर्जापुर जाला और एक कानपुर। संयोग की बात कि मिर्जापुर से कोई जवान नहीं घाया और कानपुर से पा गया।

कानपुर मेरे लिए नयी अपहृ न थी और न नियम साहूब का मकान। दिल्ली ही बार में वहाँ जा चुका था। लेकिन वहाँ पहुँचकर मेरी हासत द्वारका से लौटे हुए सुबाना की-सी हो गयी : वह जाना पहचाना पुराना मकान वहाँ न था। पास ही बाहिले हाथ पर, एक तंबोली था। मैंने घाये बड़कर उतसे पूछा — क्यों आई यहीं पर क्यों निगम साहूब का मकान था न ? तबोनी ने साजन की तरफ़ संवली से इशारा करते हुए कहा — वह तो रहा, बाबू जो ...

मैंने देखा — एक बड़ा-सा मकान बहा पड़ा था।

मेरे चेहरे पर व्यथन ही दिख्य रहा हुआ क्योंकि उतसे कहा था — जो हूँ बाबू की वही मकान है। इसको तो गिरे हुए भी मझीना भर से ऊपर हो गया। पीछे का हिस्सा बचा है। उसी में वह नीव रहते हैं। यहाँ में निपटारों से रास्ता है।

मैं पहुँचा। मकान के गिर जाने की हास्ताय सुनी और साथ ही यह भी कि सेन आई का नया मकान तिविल जाईत में बन रहा है। पशुली तारीय को यानी छ रोज़ बाबू गृह प्रवेश है।

प्रगते दिन लडैटे, सेन आई के बड़े बेटे सुभल की मदद से, वे बिट्टियाँ उली बड़े हुए दिल्ली की एक पिरो-पत्री कोठरी में बुनिया भर के काठ-बन्धाड़ और रड़ी सही कापड़ों के बीच खोयी हुई मिली — कावापरा तरलीबचार सती हुई १६ २ से लेकर १६३६ तक फाइल के भीतर बंद।

यह है इन बिट्टियों के मिलने की बज्जानी। बाग़ बाबू बुचानी ही गयी है लेकिन मैं अब तक यह सोचकर बाँर जाता हूँ कि घर में उन रीठ न पहुँचकर केवल सात दिन बार पहुँचा होता तो क्या होता।

तब मुझे क्या पड़ी की जो इन बड़े हुए मकान के करीब जाता नये मकान में गया होना। पुरानी इमारत के बहने का जिम्मा भर गुना होना — और इन बिट्टियों को किसी घनघने कबाड़ो या मुहल्ले की बुट्टिया में जहरी-नयक बचाने के भी बाय न न सपभरकर घायक बुट्टे की मदद कर दिया होगा।

यह गुप्त संयोग घरत बयनवार नहीं तो बयनवार और फिर क्या है ?

जीवनी मिलने में इन बिट्टियों ने मेरे दिलको मदद ली है, यह मेरे बहने की बीज नहीं है। पढ़नेवाले छुद देखेंगे। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि इन

पत्राने के बगैरे घर में जीवनों की कसरत भी नहीं कर सकता। निजी बहु
घाघर तक भी जाती लेकिन संगड़ी होती बेजान होती।

जीवन के तप्य तो जैसे इन बिट्टियों में हैं ही — क्या लिख रहे हैं, क्या पढ़
रहे हैं क्या सोच रहे हैं, घर में कब कितना क्या हाथ है कौन क्या कौन मर
कितनी घाघरी हुई—

लेकिन जतने भी बड़ी बात यह है कि ये बिट्टियाँ उक्त घाघरी के दिन दिमाग
का घाईना हैं, इनमें बहु सत से रहा है उसकी पुत्री, उसका घर, उसका गुस्ता
उसकी सु भण्ड— सब कुछ इन विदारों में मौजूद है।

बिट्टियाँ, रिती की भी, घाईना होती हैं उक्त घाघरी की तबीयत का, मुंगी
की की बिट्टियाँ तो घोर भी, जिनमें कितने तरह की बनावट या तरफनुक नहीं
है, कायब-कलम उठाया घोर लिख बारी एक बिट्टी कि जैसे घाघरी-साधने बैठे
बातें कर रहे हों।

जबान इन बिट्टियों की बहुर उर्तु है जो बहुत जल्द काकी सदन में हा
गयी है लेकिन मेरा दिवाब २ डि कुन्नी में तिये गये नडिन शायों के घायों
पर नहर डालने चलने से उनका भरपूर रस पड़नेवाले को भिन जाना है।

पीला बड़ता हुआ घस्ताहाम कायब रोजमाई बाह-जपहु बहुत बन रोजन
चौटो, उड़ी हुई, गिबस्त बने बहुत उसी में घलीदी हुई टैड सुतियामा निज्राब—
— इन बिट्टियों का निर्व्यतर घाली टैडो घोर रहा है। घाघरर बहू जहाँ बरि
स्वितिकन सुभे मूल बर के बरने उक्तकी ओगे-प्रतिनिधि से काम चलाना पड़ा।
लेकिन पाठ में कोई घण्टि न जाने पाये इनके लिए एक से घघिच सोचों में एक
से घघिच बार ताब बहुर, घोर जहाँ-जहाँ मजोकाईग घोत को मरद से
मून उर्तु की हिम्बो बाड से बिला लिया है। इन काम में सुभे घपने शायर दालन
'तातिब' जयपुरी भाहुब से बहुत मरद मिली है।

घरघर बिट्टियों पर बुरी-बुरी तारोय न डालने की मुंगी जो की घारन
हमारे लिन् जाती उक्तमन का बारल बनी — मजोना है तो तारोय नहीं तारोय
है तो मजोना नहीं, मजोना घोर तारोय है तो तारु नहीं घोर उन बिट्टियों का
तो गर विक हो किल्ल है जिनमें वह सोचों ही बायब है।

बाघों में तो यह सुप्रतिब डारु भी मुद्द से घानान हो गयी। बाघिन
करने पर लयबन तारी डारु भी मुद्दें बड़ने में घा गजी घोर जहाँ से बिट्टी बनी
बहाँ की डार-मुद्द को घैने बिट्टी की तारोय मान लिया। लेकिन निज्याद की
बिट्टियों में यह सहरा जो न रहा। बर्ग घैरे लालने एक ही घाना या उन
बिट्टियों की बनी का बँना बिट्टुन दिना तारोय का जाने देना। लेकिन बर

इस जमान से कि वहाँ जाने पर मेरी सुलाकत घन लीनों से हो जाय और मुझे बैरंग न लौटना पड़े मैंने एक जल मिर्जापुर जाला और एक कामपुर । संयोग की वस्तु कि मिर्जापुर से कोई जहाज नहीं आया और कानपुर से आ गया ।

कानपुर मेरे लिए नयी जगह न थी और न नियम साहब का मकान । स्थिती ही बार में बहो का सुखा था । लेकिन वहाँ पहुँचकर मेरी हालत द्वारका से जीटे हुए सुखाना की-सी हो गयी : वह जाना पड़वाना पुराना मकान कहीं न था । पाम ही चाहिये हाथ पर, एक लबोली था । मैंने आगे बहकर उससे पूछा — क्यों मैं यहाँ पर कहीं नियम साहब का मकान था न ? लबोली न सामने की तरफ जँवती से इशारा करते हुए कहा — वह तो रहा जायु जी

मैंने देखा — एक बड़ा-सा मकान रहा पड़ा था ।

मेरे बेहरे पर अकतब ही बिस्मय रहा हुआ क्योंकि उसने कहा था — जो ही जायु जी बड़ी मकान है । इसको तो घिरे हुए भी महीना जर से अवर हो गया । पीछे का हिस्सा लथा है । उसी में वह लीय रहते हैं । वनी ने पिछवाड़े से रहता है ।

मैं पहुँचा । मकान के गिर जाने की वास्तव्य सुनी थीर साथ ही यह भी कि सैन भाई का गया मकान तिविल माईस में बन रहा है, पड़नी ठारोत्र को पानी का रोड बाव पड़ मवेज है ।

अगले दिन छबेरे सैन भाई के बड़े बेटे सुमन की मरद से, वे बिट्टियाँ उसी छहे हुए हिस्से की एक पिटी-बड़ी कोठरी में बुनिया भर के काठ-कवाड़ थीर रही लही कपड़ों के बीच लोपी हुई मिली — बाकायदा तरतीबवार सजी हुई १६ ५ से लेकर १६३६ तक अग्रहल के नीतर बंध ।

यह है इन बिट्टियों के मिलने की कहानी । वस्तु धव पुरानी हो गयी है लेकिन मैं अब तक यत्र लोचकर करि जाता हूँ कि अवर में उस रोड न पहुँचकर केवल सात दिन बाव पहुँचा होता तो क्या होता ।

सब सुनि क्या पड़ो को जो इस छहे हुए मकान के करीब जाता नये मकान में गया होता पुरानो इमारत के इन्हीं का किस्सा जर सुना होता — थीर इन बिट्टियों को किसी मजदूरे कबाड़ी या सुहलने की सुझिया ने हस्वी-नयक बाईने के भी काम का न समझकर हाथव पूछे की नजर कर लिया होगा ।

यह सुभ संयोग अवर जगत्कार नहीं तो अमरकार थीर फिर क्या है ?

बीवनी लिखने में इन बिट्टियों से मैंने कितनी मरद भी है, यह मेरे कहने को थोडा नहीं है पढ़नेवाले खुद देखेंगे । मैं इतना ही कह सकता हूँ कि इस

घबाने के बरौरे यह में बीबनी की कल्पना भी नहीं कर सकता । तिको बहु
 पापर सब में जाती सेटिन लंगड़ी होती बेजान होती ।

बीबन के तथ्य तो जैसे इन बिट्टियों में ही — क्या तिरा रहे हैं, क्या बड़
 रहे हैं क्या तोच रहे हैं, घर में कब बिराका क्या हाल है कौन बिपा कौन मरा
 दितको शारी हुई—

सेटिन उससे भी बड़ी बात यह है कि ये बिट्टियाँ उस घाबनो के दिल बिपाय
 का धारना हैं, इनमें बहु शीत में रहा है उसको सुधी, उत्तका घम, उत्तका गुस्ता
 उत्तकी सु भलाहट सब कुछ इन पिटारी में मौजूद है ।

बिट्टियाँ, किसी को भी, धारना होती हैं उस घाबनो की तबोयत का, सुधी
 जो की बिट्टियाँ तो घोर भी, जिनमें किसी तरह को बनावट या तदस्तुत नही
 है, कायत-कलम उडाया घोर तिरा भारी एक बिट्टो, कि जैसे घामने-तामने जैसे
 बालें कर रहे हों ।

उबाव इन बिट्टियों की उकर उर्दू है जो बहुत बगडू का की सदन भा हा
 मयी है सेटिन मेरा बिबाव ? कि कुनो में दिवे गने कडिन शारों के धरों
 पर नजर डालते चलने से उनका भरपूर रस बड़नेबाले को भिन जाता है ।

बीबा पड़ता हुआ दास्ताहाल कायत रोयनाई बगडू-जगडू बहुत कम रोयन
 कीको, उर्दू हुई, गिरस्त की बहुत जहरी में घषोटी हुई डैड सुंनियाना निपाय
 — इन बिट्टियों का निर्यंतर जाली टैडी घोर रहा है । कायकर बहु! अहां परि
 तिबडिबा सुभे मूल पथ के बरने उत्तकी झोने-अखिनियि के काम चलाना बड़ा ।
 सेटिन पाठ में कोई अगुडि न जाने बाबे इनके लिए एक से अघिक लोयों में एक
 से अघिक बार लाल बैठकर, घोर बर्न-तर्न मन्वोअईय दीग की यह से
 मूल उर्दू को शिन्को पाठ से जिला लिया है । इत काम में सुभे अपने शायर होस्त
 'तालिब जयपुरी भाबूच से बहुत सबब मिली है ।

अन्तर बिट्टियों पर घुरी-घुरी तारीय न डालने की सुंनो जो की घाबन
 हमारे लिए बानी उत्तभन का कारण बनी — यहोना है तो तारोय नहीं तारीय
 है तो यहोना नहीं, यहोना घोर तारोय है ता लम्ब नहीं घोर उन बिट्टियों का
 तो गर डिक हो किजल है जिनमें यह तीनों ही घाबन है ।

बाहों में तो बहु सुगदित डार को सुदर से घाबान हो मयी । कोणिग
 करने पर लगभग सभी डार को सुदर बड़ने में घा मर्गें घोर जर्न से बिट्टी बनो
 बर्न की डार सुदर को जैसे बिट्टो को तारीय काम बिपा । सेटिन निष्कार की
 बिट्टियों में यह सहारा भी न रहा । बर्न मेरे तामने एक ही राम्ना या उन
 बिट्टियों को बल का बला दिगुन बिना तारोय का जाने देना । सेटिन का

शायद फुलनेवाले की गजर में घीर भी सुरा होता, इसलिए मैंने बड़ी-बड़ी मुचकियों से, जिंदी में कतौ यही बातों का घाबा-पीछा, ताल-मेल मिलाकर अनुमान से उनको निजि का संकेत देने का निश्चय किया। इसमें मैंने अपनी धोर से पूरी सावधानी बरतने की शोचिास की है, लेकिन उसमें गलती की संभावना बराबर रहती है — जैसे कि इस संग्रह की बसबों जिंदी में। उसको मैंने अनुमान से बन् ११ १२ का बतलाया है, पर बहुधमल सन् २६ के घातपाघ की हीनी बाहिप क्योंकि 'अमाना' का बहु 'घातिघ नंबर' बिसको बैकर जिंदी लिखी यमी है अमल १६२६ में निकला था जिसकी बालकारी सुधे बार को हुई।

मुंशी की की जिंदी-पत्री का एक धोर अरुध भी खन रहा है, लेकिन इन बिंदियों को मैंने बाली सब बिंदियों के साथ देना ठीक नहीं समझ — इसलिए कि इनमें एक ऐसी पूरता है, एक बिन्दियों की ऐसी पूरी कइानी जिसे बुरे पत्रों के साथ पठमड करना इन्हें भीड़ में जो देने के बराबर होता।

अत में अत्र केवल कुञ्जला-अपन रोब है। सबसे पहले सेन माई के प्रति जिन्हीं का सब कुञ्ज है और फिर भी मदन गोपाल के प्रति बिबकी कृपा से सुधे इस संग्रह के से पत्र मिले जो निघम साहब के यहाँ नहीं थे।

अपने आदरलौम गुड भी सतीसबंड देव का धामार प्रकट करने के लिए मेरे पास अमर नहीं हैं जिन्हीं की प्रेरणा मे में पत्र-संग्रह में अमल हुआ था।

असूत राय

चिह्नी पत्री—१

बनाब मुन्तरम श्या

परताबगढ़
१ जनवरी १९२

तसमीम । इनायतनामा पहुँचा । महकूर हूँ । मैं यहाँ हरषण्ड नमारा किया
 उनहीद^१ नाबिन बूय्य कुँवर का कोई सखा नहीं मिमता । मेरा जहाँ तक खयाल है
 सखा कोई मुम नहीं हुआ मरों पर मम्बर लिखने में मैंने दमनीकी है । अगर सटा
 पेपर के तीम लगते पुरे-पुरे मौजूद हों तो उनहीद को मुन्मिम समझ लीजिये ।
 मैंम शानिबल भूँ मम्बर दिये हैं १२५-७-२१२ । बीमर इन्मामल^२ यह है
 कि अगर मुमदिम हो तो जगवरी बर्ना ऊरवरी कं मम्बर में कुर इम मजमून
 की इनायत^३ हो जाये । मैं बड़े इरिगयाऊ^४ से मुलाजिर हूँ कि आप से मेरा नाबिन
 धमी तह पत्रा या नहीं । जबाब से मरछराज ऊरमाइए । क्या निवाज ।

बाऊमा
 बननगदम
 स्तून मास्ट
 परताबगढ़ ।

इसाहाबा
 १ ऊरवरी १९२

मिय बाबु बपालदायन साहब
 को नहीं से क्यास हुआ कि मुझे आपने कपम्याम की पाएइमिति आपके पास
 कबसावनाप मेजन का सीमाय्य हुआ था इन कान्या में कि आप मरे मिला एक प्रजा-
 तह बुदामे की हुआ करेगे । मुझे यह है कि बह रिगम्बर की ८ शारी^१ की जब
 कि मैं रिताब घाट पास भजी थी । उसकी प्रप्ति की सूचना आपन १६ दिन
 म्बर को सिगो की धीर बाश दिया था कि आप इनके धार में फिर मुझे सिगो
 मदिन को मरोन म श्या^२ निरल मये धीर आपन म तो पुम्पक पर ही दया
 गियाकी धीर म उमक मगक पर । आपकी इस उदामीनता धीर उहागुमठिरुम्पता
 क रिग आपने भाय्य को ही शारी मानता हूँ । यदि आपन मुक पर बह धनपद
 दिया हास सिगो की म आंस दाबता की थी तो यह निरषय ही एक हुआ बकि

१ बजलीदना २ शार्दना ३ कदायन ४ पाव

बया का कुरम होता मुझमें आपको एक ऐसा व्यक्ति मिलता जो हठमन नहीं है।

मेरा तबाबला अब इलाहाबाद के लिए हा गया है और मेरी नियुक्ति ट्रेनिंग कालेज इलाहाबाद से सम्बन्धित मास्टर स्कूल के हेडमास्टर के पद पर हो गयी है और मैंने अपने आपको महामर कानून विधि प्रेस इलाहाबाद के प्रोफेसर बानू बकि बिहारी साह के रहम-ओ-करम पर बाल दिया है। उम महारम ने फिदाव को एक नजर देख लेने के बाद उसको प्रकाशित करने में बलि बिलसाबी है। इसलिए आप कृपया पापुत्रिपि जल्दी-से-जल्दी मेरे पास भेज दें और अगर मुताबिक हममें तो उसके साथ अपनी सिफारिश के दो सफू भी। मुझे यकीन है कि आपकी सिफारिश का बहुत असर पड़ेगा। मैं आपका हृदय से धामारी हुंया अगर आप उसको हृदये भर क धन्वर भेज देने की कृपा करेंगे क्याकि वह महारम जल्दी ही यहाँ से आगरे जाने जाने है। मैं चाहता हूँ कि उनके जाने के पहले सारी बातें उनसे टय कर लूँ।

धारा करता हूँ कि आप मजे में होयें।

मैं हूँ आपका
जनपत राय

पुनरुप—

मेरे रिप्यू के बारे में आपका क्या जमान है? क्या आप बराह करम उसे अपने रिशाले में रेंने? अगर हाँ तो कब? मेरा जमान है कि आप शम्भ एक ही शंक में ऐतिहासिक और साहित्यिक दोनों समीचायें न के सकें। क्या आप कोई साहित्यिक समीचा लेना चाहेंगे?

अगर चाहते हों तो कृपया सूचित करें। आपने फिदाव वापस भोगायी है। इससे पता चलता है कि अब और समीचा नहीं चाहिए। क्या मैं एमत कइता हूँ?

उम्मीद है कि आप बरत जमान देंयें।

जनपत राय
ट्रेनिंग कालेज
इलाहाबाद

बनारस

अपनी बीवी किश से कहूँ। पक्ष क्रिये क्रिये कोष्ठ हो रही है। क्यों-र्यों करके एक घंटा काटा जा कि खानगी तरबुदात का ताँता बंधा। धोरतों ने एक घुसरे को जलो-कटी मुनाई। हमारी मन्त्रमूर्त ने जस-गुण कर गने में फाँटी लगायी। मैं ने घाघो रात को नीपा बीड़ी उसको रखा किया। मुबह हुई मेने एबर पाई भ्रमनामा विगड़ा मानत-मनामत की। बीवी साहिबा ने सब दिव पकड़ी कि यहाँ न रहूँगी। धीके जाऊँगी। मेरे पास रपया न था। नाकार देत का मुनाऊ बभूज दिया उनको रत्नसती की तैयारी की। वह रो-बोकर बसी गयी। मैं पढ़ेखाना भी पसन्द न किया। घाम उनको मये घाट रोज हुए, न लठ है न पसर। मैं उनसे पहल ही पुरा न था जब तो मूरत से बेजार हूँ। शासिकन सबकी की मुनाई बायमी^१ साबित हो। लुभा करे ऐसा ही हो। मैं बिना बीवी के रहूँगा। किन्ती बहो मुहाँ खंडूण ही रहगा। जपर ननिशास से बानिशा की तरत से खिद है कि ब्याह रवे धोर जकर रवे। जब कहता हूँ मैं मज्जिम हूँ बंभात हूँ पाने को ममसर नहीं तो बानिशा साहिबा कहती है तुम अपनी रजामन्ती बाहिर करो तुमसे एक कीड़ी न माँगी जायगी। तुमज हूँ बीवी हवीन है बासकर है जब से लर्नेन बौर निमी जागी है फिर तबीयन क्यों न मुरमुराये धोर मुबमुनी क्यों न पैग हो। ईबर जानना है वो-तीन दिन समका कशाब भी देग मुफा हूँ। बहुरहास सबकी तो मना पुसा लूया। घाईस की बान मारायल के हाथ है। बँसी धारकी समाह होगी बँना कर्पा। इन बार में सभी फिर मराबरा करने को जसरल बाजी है।

राये धासल रवाना क्रिये पहुँचे। धा मे कह को ममरत^२ हानिय हुई। तीन बार से कम न पड़ा हागा। फिजाबे धोर पत्रबार पहुँचे। उरूए मुपन्ना हरे नामन पन्न है।

जमाना की धार्त धबरी को एक मज्जम की न बनी। गगनऊ धोर बान पुर धरे फिजाबज न नाक कर मजर धाता है। धार्त की मज्ज^३ तिगार्त के ऐब को मरी मिटा लगी। अयर पवन से पर्वा निरुप तो यह मब बागुबारने^४ बाबिन मुसायि है। अगर देर ही में निबतना है तो धरनी लूबियों में क्यों बद्रा लगावे। जून का पर्वा निरुपने ही हम धिरेई मय बार-नाब धरैस की बारी के रवाना कीजिये। उनके पहुँचत ही दबागिज रवाना होंगे। जेरुसल धापके पाम पहुँची

होमी। शायद इतनीमान के काबिल भी ही। नी तो बहूवा या कि ५ सरीरायें के नाम एकबारगी लिखता मगर प्रिन्सहास १६ ही पर इनाघत की। उनके नाम पत्रें भेज दीजिये।

बोटी-दुर्गा अपने तोरेकामे मे रहने बीजिए, यहाँ भेजने की जरूरत नहीं मेरा काम चल रहा है। छठर गाबीपुर आशमगढ़ बलिया गोरखपुर और बनारस का करगा। बनारस ही में पश्च-भीस खरीदार हो जायेंगे। छठ ठभोयत टिकाने हो जाये तो काम रुक नरें। धर्म की कुछ कैप्रियत न पूछिये। कहाने को तो चाहते मकान^१ हूँ और खुवा के छल्ल से मकान भी छारे गीब का महसुब^२ है, मगर रहने काबिल एक कमरा भी नहीं। कोठे पर घाग बरसठी है। बीठा और परीगा बोटी से एही को जमा। नीचे के कमरे सब गिरे। परीसान। किसी म बल बभता है, किसी म उपने जमा है, नही पनाज का डेर है किसी मे बाँठ बननी भोखसी मुसली बनैरह खुसुछरमा है। कोई बेंठे कहीं सोए कहीं। मन्-बुरल मनाब के नर में एक चारपाई की अवह निकाल सी है। छठी पर विल टट पड़ा रहता हूँ। इनके घूमने कहीं जाऊ। बरबे हीन-चार दिन के किये घाये वे। हमारी मन्सुमा को पहुँचाने के लिए बरठी नय। कहीं से अपने बासिल के पास जले जायेंगे। इस नर्म में नसा पढ़ना बीठा लिखता। सुबह के बजत बंटा घाग बंटा नरंगरानी^३ कर भठा हूँ बाड़ी टल बिन में हूँ और चारपाई। सुल्लकड़ बडा हूँ मगर मोद भी कुछ मेरे नर की सोडी नहीं। छठ पर वरखुब घाग। कहीं हँसी-मन्नाक मे विल कटता या कहीं नुप की मिठाई या गुँगे का कुछ खाकर बैठना पकता है। धबब थीक^४ मे जान मुबलता है। भाई बन्धी छ छुट्टी कटे और फिर यारो के बलसे और बहने-बहने हो। कोई बीस बिन छे क्माबा बुजर मगर इंसम से जो जो ज्मान छे प्याठ लश्म^५ बंभुक एक बार भी मिबसा हो।

अबबीन मे छोड़मबाने और होमे। यहाँ तो अब एक बार बाहू पकड़ी तो बिन्धी पार जवा वी। नीबठ राम न धार्। क्या कहीं मुर्दा न होमा कहीं सुवह न होमी। एडिटोरियल मे सब कर नूमा। कतो कितारत जो मुधामने की है वह मे कर रूंगा। साठ एडीटर की तबबो के काबिल जो खुसु हाये वह छिबमते शरीक मे पैस हावे। और काम करन का बन्धीबस्त होता जरूरी है। सेबल घना लेंगे। घाने का बजत घायेना तो मशकत हो रूँगा। जान पाठे में न बामो। हिम्मते मर्दा सबह खुबा। हिम्मते एडीटरों मरबे बोरती। हूँ यह एमान करना जरूरी होमा कि नवाब राम वहाप में बाबिल हो यये। बस। बन्नु राम नाउबख

जा क्या हुआ हुआ ? मैं उनको छोड़ आया था । कमगिरा है या शायद हो गया ।
 माँ राममरण से प्यार और सस्यम कहियेगा । माँ, गजट निकले तो भटपट
 इतना देना ।

(संश्लेषी में) कुछ सेटर वेरर और निकाले भी ।

४

नया बीक कागडर
 १५ फरवरी १९०८

प्रवर

तमनाम । पारधावरी का सुजिना । नरन गुणे डिरीन नहीं पहुँची । आप
 परमाणु हैं मैं नज बुजा । फिर क्या बात है । घरर रवाना न छरमाया हो तो
 बराय इनायन भेज बाजिये । शायद आपके कागडर में यह गयो हो । सुबन्दिगात्र
 बहुत जबर रवाना रिग्मन हुंये । रिग्मन यह है कि सभी संपी रग्मन मंजूर
 न। हुई और नारी मंवर नहीं निकला । बेविए क्या हाजा है।

नियामुनद
 नबाब टय

५

निधि नहीं है ।
 धनुमानन सन् १९ ८

प्रिय निधन

छपर आप मन ले जाने वाले के हाथ पाँव डाने भेज दफे तो बड़ा महरबानी
 हो । आपके पुराने नडे अब ठक बरा नहीं हुए । मैंने कोशिश की और नाकाम
 रहा । मगर १९ अब अपने महीने से रिस्नवार देना शुरू करेगा ।^१

आरता
 धनपतरान

६

निधि नहीं है ।
 धनुमानन सन् १९ ८

मन्त्रान

आज बाहर मे आया हूँ । और यह बाजिया देगवर रवाना करवा हूँ । 'रा'र

का धंधाम मिता । रूबिया । अब तीन दिन की तादीस है । जिसका साऊ हो
 जायगा । बाहर मुठसक^२ प्रुर्सेत न मिली ।

मुसी मौबत राय बने मये । क्या होली की तहरीब मे ? मार्च भर मे वृष
 खिबमत नहीं कर सकता । घरम से जो कुछ हुनम बीबिएगा उसकी तामीन होनी ।

क्यावा नियाब

घानका

बनपतउब

७

हमीरपुर

९ नवंबर १९६६

बराबरम

बत मिता । मसकूर हुआ । घानकल प्रुर्सेत कम है । इसी बजह से 'शादी
 व एम' साऊ न हो सका । रेबील सिंह की भी जकरत है । बन्व मेव बीबिए ।
 बीकसी के मुठसिक मेरा जमात अब भी है, मगर मेरा जमान है कि मैं मजरात
 की फिक से घानाब होकर क्यावा काम कर सकता हूँ । मेरे बसपतउबत रोब व
 रोज बफते ही जाते हैं । अब कामपूर धोर मजोबा वो बजह का खर्च संभालना
 पड़ता है । अगर घाप सैबा धोर मजल की मसतबी मुझे दे दें तो लैसा पर एक
 पन्ना मबमून लिखूँ ।

घानके सिबने से माफूम होता है कि नवम्बर धोर दिसम्बर दोनों नंबर अब
 छूट कर बिये । ऐसा न कीबिएगा ।

वह धंमेकी नाबिस मेव बीबिए । अगर हो सका तो क्ररसाइते तामीन कर
 हूँमा बनी मजबूती है । तबाबला क्रिसहाल धीर-मुमकिन है । बीबर क्या धर्ज
 करे ।

बाकसार

बनपत एम

८

हमीरपुर

१८ मार्च १९६९

बराबरम

घान बस खपये मिले । मसकूर हूँ । मैं जो बिल से नहीं घाया हूँ धोर बहुत

बाइना या कि एक दिन के लिए काठपुर चला पाऊँ क्योंकि जब रेल रुक गयी है मगर १८ घंटे ११० तीन दिनों में मुझे निकल बनम मरने देखने है घोर महोबा पहुँचना है। इस बख्त से मजबूर हूँ। इन्हीं परीशानिया के बाइना इन इन्ते में कुछ न मिल सका। मुझाऊ कीविएगा। जब महोबा पहुँचकर निर्गुमा। बाकी छोरियन है। जो चाहुना है कि नये नये बाइनायन पर कुछ मोटिम लिखा करे। मगर बाइनायन का इन्त्य मुझे उम बकन होगा है जब वह बाइनायन में निरम चुगन है घोर उनके बेर घड बकन हो जाने का लौक टट्टा है। बहल्लाम मेने मुसम्मम इच्छा रिन्ता है कि बुवाई घोर घपपन व सज्जन लू घोर घपपी घपपवारी बाइनायन को घाइपाऊँ। घाइना जैसा इरवर बाई।

घानवा

घनान राय

६

कुल पत्राङ्क

१४ मई १९१०

मार्दान

दममीम। कई दिन हुए, घाप का लय बाया। जैसा घाप कर्मने है बीना ही होया। मरे तिरमे जब कहीं न जाँसे। मुझाबिजे का बिक्र मुझ लुन मजबूर मासूम होना है मगर बाइना यह है कि छोटे बिस्कों के मासूम में रिमापी उतमम बहुत उवासा होनी है घोर ताबकने कि तबीयन को यह मक न हो कि इन में कुछ मुझनिग^१ बहुत हूंगे मर इन काम की तरक दखु^२ नही होनी। एक मानिय मरो बा है।

मबाब राय ठा घानियन कुछ निने क लिये जगल मे मये। होबाग पार देगनी हूँ है कि मुम न मुझाबिजे में मो घपपवारी मबाबिन कही निग मगर इमका संरा हूर जियन की लहरीर^३ से का। गोया मे बाई मजमुन मराह बिगी मजमुन पर—दार्वा बाँव कर ही बयो न हो—मनु^४ मुझे पश्य का जनाब ईड-मघाब^५ कमफ्टर ग^६ ब बहादुर की गिरमन मे पश बगला दहगा। घोर मुझे छोटे-घमाये लिगना नहीं पर तो घेर घोड का घग्घा टपरा। हूर माह ग^७ मजमुन माहिरे बागा की गिरमन म पट्टेपदा तो वह सममेम मे घने जगल मजवारी मे गफालन करना है। घोर काम मेरे हर घेरा बापगा। इमदिना घुरा दिने के लिए मजब राय मजमुन हुए। उनके जिनगीन को घोर माह

हागे। धास मेरा मजबूत किताबत कराने के याद मुंठी बिटाग धनी को बे दिवा करने। मुधाकने भी निस्वत जो धापने क्रमयाया वह मुझे मंजूर है। धगर मजबूत इतना बड़ा हो कि एक नम्बर में निकल जाय तो खम्भे धीर धगर एक से क्यादा नम्बरों म निकसे—तो या तीन में—तो इसका धनमुदाइक^१। यह मे धब फिर कहता है धीर पहले भी कह चुका था मगर किती बबह से वह रिमाके धापने नजरधन्वाध कर दिया कि यह मुबस्तिगाठ मे धपने तसह क्र^२ मे गही लार्जेया। व एक मरुम^३ बोस्त के पसमाईगान^४ के नख होंगे। इयनिये धाप को भूम कर मुम्ह पर कमीनेपन सुहाबी^५ धीर लमा^६ का इसनाम न धायव करना चाहिये। धाप के इस कृत के उबड़े डंग से मालूम होता है कि धाप कुछ कहना चाहते है, मगर कहते नहीं। यह सब मजामीन बिनका धागाव^७ कुंड से होता है (धीर ईबर मे चाहा तो सामव कुछ दिनों तक यह सिलसिला जारी रहे) बल मा बबेर किस्से की लकम मे निकसेंग। धगर धाप निकालिये तो चौलाई नख मेरा धीर मे निकालुंगा तो चौलाई नख धापका। बोमा मेरा धीर धापका उन पर बराबर का धकियार रहेगा। मेरा ताता उन से 'धमाना' म निकस चुकने के बाद भी लगा रहेगा।

किताबों की छेहरिस्त भेजी थी। उनकी छीमठ मीनेबर साहब ने न लिखी। स्वामी रामवीर के लिए मैं क्या प्रिक कर्के। धगर धाप इसे टेकस्ट बुक कमेटी म भेज कर इनाम की म^८ मे मंजूर कर लें तो धलबता ही पचास बिस्के निक मबा सकता हूँ। धाप धब कमी-कमी इलाहाबाद की धर करती नजर धाया करें धीर इलामी किताबें लावा करने की प्रिक करें। मे इस काम म धापकी इलामी मुधाबत^९ करने को धामाया हूँ। किताबों की लिखाई बदीरह धधवी हो धीर मंजूर हो जावे तो कुछ धायदे की सुरत निकल सकती है।

धीर कहिये क्या खबरें है। बन्धा तो कमरए धातरी^{१०} में पड़ा भुल रहा है। इमसाल धम की टट्टी बलवाई कि मही? नाह क्या टंडी हुआ है धीर क्या फरहतबइया^{११}। याव से उह फड़क गयी। बाए मरुहाने धा^{१२} कि इस टट्टी की बहार मे रहे होंगे।

मैंने मजबूत मीगा था जो धापने न भेजा। कोई माबिध गुदड़ी बाजार ऐ लिया हो तो वह भी डेरंग भेजिये। इलाहाबाद की लाइबरी की निम्बत धर्पाइत किया था मगर वह धाउट स्टेशन म किताबें नहीं भेजते। धबकी इलाहाबाद बाठेया तो धपने लुख-बादे^{१३} को धपना धायम मुकाम बना धाउंगा। वह धपने

१ पोच कने २ दुबमा ३ इलीवाक ४ दिरपत ५ पीछे हूट जानेवाले, ६ बल-कमी ७ लकम धरतन ८ धरवीर ९ बल बैसे कने १० धातरी मीने बन्धी ११ क्या करने है कन्ध को १२ लुख के डेटे बाजे

नाम में क्रियाओं सेकर मंद पाप भंग किया करने में। जून में इसाहाबाद बनारस पर्यटन की गर्म हवा खाऊँगा।

नज़र में भाविस-आमा मजबूत बापस मांगा था धीरे छरमाते थे कि मैंने महज़ ठरमीय के भिये भेजा था। धगर धाग उगे धासाभी से धलहदा कर सकें यानी रही के टाकरे म पड़ा हुआ हो गो भेज दीजिये। उम्मी के सर पटक हूँ। पबको तो शायद इकरत मकर एडवर्ड मजबूत का मोहा^२ कह रही होंगी।

हिन्दी पर्व का क्या हुआ हुआ? यानी उमकी लजबीज ग्याई में पड गयी या बातो हूँ। निरुत्पने वाला हो ना हिन्दी लिखने की धारत डालूँ।

मिस्टर रामगणम की लिखन में मेरा नाम कल बीजिया।

धकती मरस्वती म मारर बीरर पर लीम लमबीरें धकती मिनामी धीरे मुराग पर मजबूत धकती हूँ। धाग भी हिन्दी लिखने पर मजबूत लिखने का रंग निकालिये। मुरज मारगन मेकर शायद भिये। धीरे लजबीज व दूर की या गहर हो पाप-पड़ोग की उमग मलपा कीजिय।

नज़र साहब ने अपने रिमासे को बिहकुम इगमापी इग पर कमान का बादा उठाया हूँ। धीरे क्या भिये।

मादिम

धनपतराय

मादिम वाला मजबूत मकर भजिय। धाग छिरे लकाबा हूँ। जब धागक मही उमकी लिखन मकरत गरी हूँ तो धाग दीजिय। लगे दिर रगे। जस्ट पड़ेगा।

१०

क्या धीरे लिखि लही हूँ।

धनुमानन म ११ १२ में

महोबे में लिखा गया।

मकर मजबूत मजबूत मजबूत मजबूत

लगमीय। रिमांग जगमा का माह मरम्बर का पर्व दिगकर मर निव में धाग मयानाग निग हूँ जिसे धाग कर देना म धाग पर्व मयमना हूँ। उम्मीद है कि जगमा को मारगम म होगा। दग जगमे म जब कि गुवागु^२ मगमाती^३ गियागी मघाशरी^४ धीरे इगमाती^५ मगमाग^६ हमारी लमामन^७ लममा^८ के मगमाग^९ है मझे धाग दिगकर धरगाग हुआ कि रिमांग जगमा का धरीय

१. म २. म ३. म ४. म ५. म ६. म ७. म ८. म ९. म १०. म ११. म १२. म १३. म १४. म १५. म १६. म १७. म १८. म १९. म २०. म २१. म २२. म २३. म २४. म २५. म २६. म २७. म २८. म २९. म ३०. म ३१. म ३२. म ३३. म ३४. म ३५. म ३६. म ३७. म ३८. म ३९. म ४०. म ४१. म ४२. म ४३. म ४४. म ४५. म ४६. म ४७. म ४८. म ४९. म ५०. म ५१. म ५२. म ५३. म ५४. म ५५. म ५६. म ५७. म ५८. म ५९. म ६०. म ६१. म ६२. म ६३. म ६४. म ६५. म ६६. म ६७. म ६८. म ६९. म ७०. म ७१. म ७२. म ७३. म ७४. म ७५. म ७६. म ७७. म ७८. म ७९. म ८०. म ८१. म ८२. म ८३. म ८४. म ८५. म ८६. म ८७. म ८८. म ८९. म ९०. म ९१. म ९२. म ९३. म ९४. म ९५. म ९६. म ९७. म ९८. म ९९. म १००.

करीब एक पूरा नम्बर गहब्र धातिल के कसाम के लखसरे की नजर हो गया। मैं धातिल की खस्तायी का क्राएल हूँ। लखनऊ शायरी का मजमूम^१ पड़सु धातिल की शायरी में मुकाबिलतनु कम है। मगर फिर भी इतना ब्याया है कि बहस्तसगा^२ उन हजरात के जो मजबूबी शायरी के रंग में रंगे हुए हैं और घनी तबाए^३ को मौजूबा मेयार^४ धीरे खोके सही^५ से गिरा हुआ नजर आता है।

सिटरेवर का मौजू है तहजीब मजबूत मुशाहिषए बजबात^६ इन्कसाके हुकामक^७ और बारबात-घो-कैफियते इन्ब^८ का इन्बहार। जो शायरी तुम व इस्क को घाहना व खाना^९ खबर व महसर^{१०} सम्बा^{११} व सुत बहन^{१२} घो-कमर के तल्लियुल^{१३} से मुलम्बस^{१४} करती हो वह हरगिज इस इन्किल नही कि भाव हम उसका बिर्^{१५} करें। बिगकी उल्लाहे लबीयत^{१६} उस रंग की है जम्हें भक्तिउयार है धातिल या धातिल रिब और धमानत का बजीफा फे। लेकिन जमाना के मुक्तलिफुकुतबाघ^{१७} नाबटोन^{१८} को इस बिर् धीरे बजीफे में शटक होने के लिए मजबूर करना कहीं का इच्छा है। बिर्वा बादरपनी खाँ साहब ने अपने लखसरे में धातिल के कसाम का इन्कजाव पेठ किया है मगर इस इन्कजाव में भी बेरातर ऐसे भलभार है बिन्हे खोके लतीफ^{१९} हरगिज इन्किले सताइय^{२०} न समझेना। मुलाहिजा हो

भर बना बामने लखबारा गुल नरगिस से।

धातिल घटाकर जो कमी तुमने इबर रेखा ॥

शौब की रिघायत से नरगिस को जाकर बामने लखबारा को गुले नरगिस से भर देना इससे क्या गुबरते^{२१} ख्याल है? क्या तूजोकर है?—समझ में नहीं आता।

क़ासिबों के पाँव तोड़े बरगुमाली ने घेरे।

खुद बिया लेकिन न बतलाया निशाने कूप बोस्ट ॥

क्यों नहीं बतलाया? की धातिली हिमाकर या नहीं? धातिलो खोफ़ हुआ कहीं माशुक क़ासिब का बम न भरने लगे। बाहू रे माशुक धीरे बाहू रे धातिल बोनों बिन्बा बरगोर^{२२}।

ऐसे भलभार एक नहीं रीकड़ों है। बहुत धामबीन करने से ही बो सी भलभार सारे बीजान में ऐसे निकलेंगे जो पाकीजा कड़े का एक बिगमें बाकई

१ कसाम २ मुत ३ लखनऊ ४ लबीयती ५ लखन की लखीटी ६ बजबात धातिल बिन्ब लखी की लखिलियते ७ बरब का बरुफाक ८ बिब की बरकत का बरबान ९ लबी १० कमानत ११ बरु मीदना १२ हुँ १३ कसबना १४ कसट घेटी १५ बरबा लगे १६ लबीयत का कमान १७ लखन लखन लबीयती बाक १८ पाकको १९ सुधधि २० बरुबबीन २१ लखपन २२ लख में

बरबा सच्चा दर्ब बमानेवासी हसरत बीबा बेनेवासी जिह्न राशा बरभंदाम कर देनबासी^१ नाजूकप्रयासी धुनुर्दंगज^२ मगती हो। धमाणा में धगर मेरा धंशबा प्रतती महीं करता तो एक बजम भठबा धागिश की ममियादुबानी^३ की बा चुकी है। मडीनन् मशासमे मरब^४ म शोधराए सहर^५ की ममियादुबानी के सिवा धीर भी बहुत मे पकरी काम हैं धीर छामकर उन शोधरा का बसाम त्रिके बीबात कोह कम्बन धोर काह बरघालुर्दम मे मिसदाह^६ है। मरा गवान है कि रितामे क एडीटर को जाती बभ्रमान धीर बोलाणा ताम्पुकात से बासावर रचना चाहिए। उसका फुड है कि हर रंम धीर हर मजाह के नाइगीम का सिहाज् रचे। यह नहीं कि

घैरते मेह् रशके माह ही तुम लुबमूरन हो बाफ्साह हो तुम।

जिसन बेला तुम्हें बह मर ही पया हसन की लगे बैपनाह हो तुम ॥

तैए बैलकर कीम मर जाना है ?

क्रीह है सारे गुराजमानों पर बा सिवारे बा है तो माह हो तुम
बैले निरुमागा^७ पत्रवान के धराधार स पर्व का पर्व धर रें।

समस्तराटी के लिए मुधाउ करमाइएगा।

मियाजमन्

प्रेमबन्

११

एवान धीर सिधि नहीं है।

धनुमानन सन् ११ १२ में

मनेवे ॥ लिखा गया।

बधराम

'जमाना जुमाई मिया। तबीमन शुरा हूँ। कबकी धरदा मन्बर है। मने शरात में बुझरे मन्बर निजामने का बीबा मने है। ऐसी गरवम रबाबन^८ के होये हूए मे यह ममाह न हूँगा। हरी मरी बोलाणा ममाह मर है कि धार 'भारने रिम्बु की पणह करीब को मने बीजिय राह 'रिन्दुलान रिम्बु की जयत मीजिय। मजामीन की लबी निगाई एगाई धानिन्धन बनेरह को तरह स्वाना डार दीजिय धीर तमबीर को तरह बटन कम। इस माग रा' में

१ रिता की धरती के बासी २ बजम कर देन बासी ३ बा'बा बरबा ४ बा'बा क ५ ६ बुझे हर धारती ७ लोहा बराह कीर निजनी पु रबा क बधराम बधराम ब'बनेर।

इसी एक पूरा मन्बर महेश घाटिश के कसाम के तबसरे की मन्बर हो गया । मैं घाटिश की उस्ताही का कायम हूँ । जलनऊ शायरी का मन्बूम^१ पढ़ूँ घाटिश की शायरी में मुकामिसतम् कम है । मगर फिर भी इतना ज्वाला है कि बहस्तसना^२ सग हजरात के का मन्बनवी शायरी के रंग में रंगे हुए है और सभी तबाए^३ को मौजूदा गेयार^४ और चौंके सही^५ से बिरा हुमा मन्बर प्राता है ।

मिटरेशर का मोडू^६ है तहबीब भक्तनाथ मुसाहिषए जन्बात^७ इम्कशाडे हुकायक^८ और बारबात-भो-कैफियाते इस्ब^९ का इम्हार । जो शायरी हुस व इरक को प्राइमा व शाना^{१०} खंवर व महसर^{११} सम्बा^{१२} व खत खून-भो-कमर के तब्दीयुन^{१३} से मुसन्बस^{१४} करती हो वह हरगिज इस इकामिस नहीं कि पात्र हम उसका बिर्वी^{१५} करें । बिन्की उफ्तावे लबीयत^{१६} उस रंग की है उन्हें अकितयार है घाटिश या नासिल रिब और अमानत का बबीफा पके । लेकिन जमाना के मुकदलिककुतबाभ^{१७} नामरोन^{१८} को इस बिर्ब और बबीफे में टरीक होने के लिए मजबूर करना कहीं का इम्पाफ है । मिर्बा बाफूरअमी का साहब ने अपने तबसरे में घाटिश के कसाम का इम्तजाब पैठ किया है मगर इस इम्तजाब में भी बसतर ऐसे अरुधार है बिन्हीं चौंके सहीफ^{१९} हरगिज काबिसे उताइत^{२०} न समझेया । मुसाहिषा हो

मर गया बामने नरबारा गुने नरगिस से ।
घौल उठकर बो कभी गुमने इजर देखा ॥

घौल की रिवायत से नरगिस को साकर बामने नरबारा की गुने नरगिस से मर देना इसमें क्या नुबखते^{२१} जमान है ? क्या हकीकत है ?—समझ में नहीं आता ।

हासियों के पीव ठोके बबगुमली ने बेरे ।
खत किया लकिन न बतनाया निराने कूप बोस्त ॥

क्यों नहीं बतनाया ? बी घापकी हिमाकृत या नहीं ? घापको खौफ हुआ कहीं मासुक इरसिब का बय न भरने जमे । बाहू रे मासुक और बाहू रे घाटिक दोनों जिनका बरबोर^{२२} ।

ऐसे अरुधार एक नहीं रीकड़ों है । बहुत छानबीन करने से ही बो धी अरुधार घारे बीबाम में ऐसे निक्कले जो पाकीजा कड़े का सके जिनमें बाकई

१ कर्क हुस २ अजना ३ तबीयती ४ कसब की कर्बोटी ५ इबरद धरि विपन मन्बी की अलिखति ६ जल व इन्बसत ७ बिब की शकत का बयान ११ ५ की २ जमानत १५ मर बीयमा १७ हुँ १४ कफवा १५ खिफे बेटी १७ मन्बा कर्बे १८ तबीयत का अजना १९ जमान-जलन तबीयती बन्के २ अरुधरी २१ इरसिब २२ मईसमीन २३ मयापन २४ काय मे

बम्बा सप्ताह पूर्व समाप्तवासी हसरत चौका देववासी जिह्म राधा बरधंशम कर देनेवासी^१ लाजुबस्तुवासी पुनर्धर्मेजु^२ भरती हो। जमाना में धरम मरा धंदाया चलती नहीं करता तो एक बजम मतवा धातिरा को मसियाठवासी^३ की बा बुकी है। मञ्जोगन् मशाएले धरब^४ में शोधराए सलक^५ की मसियाठवासी के विषा घोर भी बहुत से उकरी काम है घोर घालकर उन शोधरा का कलाम दिमके टीबान कोह कम्बन घोर बाह बरघाबुर्वन के मिश्राह^६ है। मरा गवाम है कि रिमाले के एबीटर को जाती रुम्यनाठ घोर दोस्त्रामा ठाम्पुबान से बालातर एला चाहिए। उकका फुड है कि हर रंग घोर हर मञ्जक के नाञ्जरीन का मिहान् रन। यह नहीं कि

घेरते मेह्ल रके माह हो तुम कुबमूरन हो बापय्याह हो तुम।

दिसन देका तुम्हें बह मर ही गया हुसल की तेने बेपनाह हो तुम ॥

तेन् देरकर कीम मर जाता है ?

क्रीड है सारे तुशजमालों पर, वो सितारे वो है तो माह हो तुम
बैसे निटमाला^७ जन्माठ के धरुधार से पर्वे का पर्वी मर दें।

समस्तराजी के लिए भुषाण परमाहण्या।

निवाडमन्

प्रेमबन्ध

११

एवान घोर तिमि नहीं है।

धनुमानत सन् ११ १२ में

मन्नेसे से लिखा गया।

बयारम

बनाना जुलाई मिला। सवीयन सुरा हुर्द। बबकी धपदा नम्बर है। मने गुवाल में हुर्दरे नम्बर निवालेने का बीडा नहीं है। एभी मरबम रडाबन के हुँडे हुए भी यह समाह न हुआ। हाँ मेदि दोरगाना समाह मर है रि धाप 'मार्डम रिम्नु की जगाह 'घरीब की सीमे हीन्त्रिये सुर 'रिम्नुमान रिम्नु की पयद् सीन्त्रिये। मञ्जामीन की गभी निगाई धपार्द पालिन्त्रिये बाएरुह की सरक बपान जोर सीन्त्रिये घोर तमवीर की तरफ बहुत कम। इन माग-डोन् में

^१ दिम को मरी देने वाली ^२ कलम कर देने वाली ^३ मसियाठ बज्जा ^४ मसियाठ के बँडे ^५ मसियाठ के बँडे ^६ मसियाठ के बँडे ^७ मसियाठ के बँडे

घाप खेरवार हो जायेंगे। घरनी हार मान लेने में बुराई नहीं है। घाप इंडियन प्रेस के बसाइल^१ कहीं से मायने। घबली रंगीन उसबीर घापको फिर खण्ड मिमी। इससे तो बेहतर होता कि बहूँ को उसबीर पहले होता। बहुरहाम घब बामाना^२ की कबूरी मजामीन पर होनी चाहिये उसबीर पर नहीं। कमी कमी उसबीरों भी वे सो जायें मगर उसी बचत जब समझत^३ का कोई धन्धा तमूना राब घा जाए। कबामक्याह उसबीर लेने से कोई फायदा नहीं। मैं इसके सख्त खिलाफ हूँ। उसबीर की किफायत कायब धौर खपाई का इसलाह^४ में छर्फ कीजिये। घौर मौजूदा मसाइल पर मजामीन सिपाने की फिक कीजिये। बासू के बिल पर कोई मजमून न निकसा गोसले क बिल न कहीं तक तरक़ी की मुहम्मदून मुनिबसिटी का कास्टिट्यूशन बगीरह मससे पर कुछ होना चाहिये वा। मतलब यह है कि बामाना घपदूबेट पोलिटिकल पपर हो। बीक पर घाबा पर्वा भरना मैं धन्धा नहीं समझता। हमें बीक का रोना रोने से क्या मिला जाता है। बीक के नाम पर रोने वाले बहुत हैं। यह काम बरीब को करने बीजिये। घौर घाप इससे बेहतर काम न मसकठ हूजिये। हबम^५ में मुस्तजिल हो यह नहीं कि कमी ७ सके बिसे कमी ८ कमी १ । बड़े साइब के ८ या ७२ सके काड़ी है।

हज़रतवार का मोटिस घाप ने निकाल ही लिया। खण्ड लबीकत तो धन्धी होने देते। बेबिये क्या कामयाबी होती है। घाप का हज़रतवार कामरेड के नमूने का होना चाहिये।

ईरवर का नाम लेकर शुरू कीजिये। मुझे जो मबर हो सकेगी करता रहूँगा। फ़िनहाल मेरी हाकत मुझे हबाबत नहीं देती कि कुछ ईसार^६ कर सकें। स्कूल मालिये घाप से बसिदके बिल कहता हूँ कि जब से यहाँ घापा हूँ सिर्फ़ दो सी खपे मेरे पास जमा हुए हैं। घौर वह भी सी खपे नाबिल का मुसाबबा है। घौर एक सी खपे में कोई तीस खपे इंडियन प्रस से मिले। सायब तीस वा पतीस घाप न बिसे। घौर इमी खवर एकुकेशनल बजट से मिला। मेरी तलक्याह घौर भले न कौड़ी की बचत नहीं हुई।

हाँ बचत कहिये तो कगार्ई कहिये तो बीबीबाम की बरसों की बिल पर रफ्त शिकायत के लिये एक कड़ा बनवाया मिसका सखमा घब एक न भूसा। इस बिरते पर मैं क्या ईसार^७ करूँ १. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००. का घौरत घौर। घौर खज म बुजम^८ से काम लेता हूँ। तब भी कमी फ़रागत नहीं महीब होती। नहीं मासूम यहाँ कालपुर के मुकाबले में क्या खर्च बड गया है। वहाँ ४) में

मुझ ही जाता था। यहाँ उसके दुःख में रोगा पडा हुआ है। धीरे धब बने हुए ध्यतवाज को तोना मुझ पर तो नहीं दूमरों पर मितम होगा।

नाम गिन्नु बहुत मौजूद था मगर सायब इस नाम का कोर् पचा पंजाब म निकलने गया है। रणार जमाना से बहतर नाम मुझे मही सूझता। साय म भी तो यही नाम पसंद किया था। नाम तो यही रमिय। अब रहे मजामीन। साय उनका एक क्विस्टेंट की मन्त्र से हस्ताकार ध्यतवार इसी हामन म बना मरेंव जब उसम का जयाबा रबा बनाये। ये हस्ताकार एक दा लके बिना भागा साय की जिम्मन म भेज दिया कर्षेया। कुछ मोट होमे बन पडा तो काँ एडिगारियल कर्षी बिधी मजमून का ठजुमा कर्षी कुछ। मगर ध्यतवार का ममूना कामरेड ही हो। पासिची हिन्नु। अब मेरा हिन्दुस्तानी डीम पर एलज्जर मही रहा धीरे उसकी कोतिल क्लिबून है। साय कहत है कि ४) की जिय कर हुंवा। जहाँ ४) की किक कीजिय वहाँ ३६) की किक करनी बजा मरतिम है। मगर साय मुझे ६) का समझीना कर रेमे ता ये इमी पर काम कर्षेया।

य माह ध्यतवार की हामन देगकर बाद को टैमपा कर मरुंमा कि मर मिय बीन-मा रावता ययाता सीपा है। यहाँ से द्यमन कंकर बना धाऊंगा। बजा अब है ये ध्यतवार का जमा सके। मगर ध्य माह के बाद ध्यतवार कुछ द निरुता ता मे हाथ वेर डेनाऊंमा। कर्षी धरना मा मंहु मंकर ध्यत पुराने ड्यवर पर कर्षेया। मगर ६) मे कम पर मेरा गुडाघ मही हा मजता। यह सायगोँ धाना। धरना दोस हम्दर्द धीरे मारि समझकर करता हूँ। ये काम ये जा मही बुलाना। न इस इन्टर मुनामबा जाहता हूँ गोमा ये मही का बड़ा मुर्छी सिहार है। मही सिद्ध गुडाघ जाहता हूँ धीरे गुडाघ ६) से कम मे मी हो सक्ता।

दुमरी बान धात मे 'जमाना अब तक निज के तीर पर बसाया है। हमका गर्ब धीरे धात का अब गर्ब होना एक ही मन् मे शमार होने छे सिमती बज्ज मे धात धरार परीमान होने रहे। धात मे धरना आपी गर्ब बटन बजा मिया है। माछगार् के निजे मघाक प्रमी-जगा। रणारे ययाता का मुघामना निज का मुघामना न हागा। हमका हिमाक किनब धीरे मध मज का म धारने अब गर्ब मे बिसुल धमय होगा। इमी उमूतो पर काम बन मक्ता है। मजे बडीन है कि एक गिन्नु पचा जो धरता बागज धरपी तागा दे म्के उमक निजे गुमारता बाडी है। हमारी म्क बासिदा हापी कि 'दु पचा मे रणारे जमाना एक सायन हो जाये। हमकी सापी का दूमरे ध्यतवार हवनबग'वरें। ध्यतवार' ३

बगीचा को तपस्वीम जो आपने की है वह मैं पहले की देख चुका हूँ। बहरहाल मैं काम करने के लिये तैयार हूँ ऊपर सिद्धी हुई शर्तों पर धीरे-धीरे हासिल में कम कि मासिक हासिल मुस्तफिस हो। धीरे-धीरे क्रियाये का बट्टू बन कर काम न करूँगा बल्कि धनमे भरपूर से। या तो आप सभी मेरी क्षमताय तमब करें या जब धनवार की हासिल कुछ मामूम हो तब।

अब आप की तबीयत कैसी है।

यहाँ सब औरियत है। बारिश बनसरत हुई।

आपका

बनसत

१२

स्वाम और तिमि नहीं है।
अनुमत्तता सम् ११ १२ में
पहोले से लिखा गया।

बराबरम

मस्तकूर हूँ। पहले 'अबब धनवार' वाला मुषामता। क्या अबब हूँ। मासिक पइसु यह है कि यहाँ नेट धामबनी () से किसी तरह क्या नहीं है। धीरे-धीरे का जब धीरे मुनाबियों की तनकबाह इसमें शामिल नहीं है। इन्टिब-इन्टिब यही हासिल बहाँ भी होगी। धीरे मसारिक बरस्तूर। मगर काम में बड़ा प्रब है। यहाँ बहुत धानबाबी है बाबजूब गुनामी के। बँकि कोई बरस्तूर सर पर नहीं रहता धीरे न कोई अबबबिही हो, इसलिये धानबाबी की मसूम होती है।

१ बने से १ बने की हासिली बिभाती काम रोबाना बनकार, बी कांप बादा है। हिम्मत नहीं पकती। यहाँ सिटरेटी काम बरबबला तपरीह है। यहाँ यह मधारा हो बायगा। हालांकि जोटक की पकई धीरे बादेवा बिबपी की रकवार के जमान से यह मौका कुछ नहीं है मगर काम की कसरत हयरे को मुस्तफिस नहीं होने देनी। बहरहाल मैं अभी दुबिसे में हूँ। अपर मौका मिले तो आप प्रोप्राइटर से बिक कीजियेगा। सब बनत तक शायब हरबा किसी तरह कम कामे।

इस्मा सिसा हुआ तैयार है। सिद्ध मज्जल करना बाकी है। कम तक धामिबन हो बायगा। आपने मेरी तनकबाह कइना की इचका मस्तकूर है। क्योंकि यह प्राइवेट द्युसन है। अब मुझे () माहवार मिलेने।

मेरे चिट्ठियों के मसजुद का खयाल रक्षिएगा। और जब आप घर के झुंडवाले में बहुते आप उम्र बचन इसे निकामन की क्रिक करना मुनासिब होमा। मुमकिन है आपका घर के झुंडवाले में पहुँचना मरे मिये कोई बहुतरी की मूरत पैदा करे। क्या पकरत है कि मैं अपना खून बिपर या जेयसियों के निकमनेवासे इठरए मन को जिमी मँर जगह फेंकूँ, अगर अपने घर में कुछ हो तो हमरे का रस निकरें हाई ?

हार्ताकि मैंने हमरद का कोई धरजा जिस्मा नहीं दिया ताहम अगर उनके मिये और कोई पुँजाइरा होती तो मैं वहाँ न देना। हूँ ज्माउर न होना चाहिये। आपके वान ईररर मे जाहा तो परमों जिस्मा पहुँचेगा। धनीब में धार तीब गम का धारजाइरा देगा। मुझे तो तर्जुमा-ना मानूस होना है। है यही बात न ?

अब रिमानो और धरजाराँ का जिफ। आप मुझे पाइन रिम्बू 'मीहर और 'हिन्दुस्तान न कीजिये। मार्न रिम्बू मैं भगवाँईगा। हमरद' अब मनकरीब धाने ही मयेगा। बन काई एक उहू पर्चा मसलन बरीन या 'बनन मुझे और मिसना चाहिये। 'हिन्दुस्तान में धार मंगाना हूँ। इनका बाये हो जायदा।

'मुमकिन मर' म रिबनी का मरम्म 'ममलमानों की वीनिटिशन करबट बाबिमरद है। मैं इनहरे की तानीम न यहीं रहा। कहीं न गया। अब धरजा है। और तो कोई हान ताजा नहीं है।

आपका
धनपाराय

१३

मममर्चा
६ अरबरी १९१३

भारत

आज आपका बंदेजी का मिसा। मिसा मिसाल भारत और हिन्दुस्तान का पैरेट भी बगूर हुआ। आजा भी थाया। आजा के अज्ञान धारन मेरी राय पूछी है। अपने बहु धर्मा तक मुझ तक नहीं पहुँचा मगर हममें मुरामद को मुमकिन मन की है कि का अब उहू के बेनीम अरबाराँ न हमदरी का दावा कर मरना है। अगर इतिहास के साथ हर संवर में जिमी माहिबे राय का एक

प्रीतिमिलन मजमून धीरे एक बिनाबस्य तर्जुमा दिया जा सके तो इसकी बिलबस्व
 धीरे बढ़ जाये। धन की पं बड़ीबस्य का मजमून था। इसी तरह हरेक मरद
 कोई न कोई मजमून हो जाये तो क्या कहना। नामानिगारो^१ की धनी तक कमी
 है। धाय खुब इसनी बहमिमत्त समझते हैं और कसरतकार ने ठामिबन् धायके
 धनी इस तरह मुबातिब नहीं होभ दिया। बहरहाल इसकी खतरा क-क-तरफ
 है। मामूम नहीं कइवानी का शायरा भी इसी निस्बत के साथ बसीह हो रहा है
 या नहीं।

बाबू रामनरोस के पिदरे बबुर्गवार के इंतकाल की बबर निहामत पुरनतान
 है। ईरवर उन्हें सब बे। धन खानावारी का सारा बोझ उनके सर पर आ पड़ा।
 जिस बूबसुरती से वह अपनी शान को संभाले हुए बे मामूम नहीं रामनरोस
 से वह समाहित है या नहीं। मगर इसमे शक नहीं कि मखूम की जिन्दगी काम-
 याब जिन्दगी थी—और हर एक मरदबाजे को उस पर ररक हो सकता है। धाय
 मेरी बानिब से हमबर्सी का खन्ना पैगाम उन्हें दे दें। मैं ठामियतनामा^२ की
 लिखूंगा।

मुझे यह सुनकर बड़ी खुशी हुई कि धायका मसीन प्रेस धन धनकटिब बम
 बायेगा। मिन्वसाकी कुतुबखरोती की शालें भी कायम होंगी। ईरवर धायकी
 कोठियाँ को धरसबू करे। मैं मजबूर हूँ कि मुझे to fall back upon का
 बोझ सहाय नहीं है। बस किराये का टट्टू हूँ। प्रेसपचीसी इस प्रेस का पहला
 काम होगा। धयने उन्हें मुबारकबाद देता हूँ। बीच किस्सो से बामर हो गये हैं
 वो धनी हमबद के बफतर में पड़े हुए हैं। मामूम नहीं हमबर्सी खुसिया धी ना टपका
 पड़ गया। बहरहाल वो तीन माह में पन्नीस किस्से बकर हो जायेंगे। हाँ
 किताब किन्ती कबर खलीम^३ हो जायेगी। चार सौ सुफहे से किन्ती तरह कम न
 होयी। मिस्तर उन्नीस सवरी रहना चाहिए और साइब बामाना के दो बरस इन्त
 के साइब के बराबर। नातिब खुसबत हो। मैं मजामीन की टपतीब रूपा धीरे
 बर्हा कहीं धामे की शर्तियाँ हो गयी हैं उनकी इशलाह^४ भी कर रूगा। मगर
 मेरे पास सब पर्से मौजूद नहीं है। धनसंग धायब हो गये। इसलिये बकरत होयी
 कि मेरे पास सब पर्से मौजूद हो जायें। बहरहाल जिस बमत प्रेसना हो जाये न
 यहाँ से उन कंद किस्सों की काफी भेज रूपा जो मेरे पास मौजूद है। बीबाबा
 धाय लिखेंगे या जिस धाय मुनासिब समझें उससे लिखबाइएगा। खर्च धीरे लगे
 न मुझे निस्स का शरीक समझिए। लगे का किफ ही क्या एज में धामे का
 सामीबार हूँ।

घब रत घब लिखो रिमास । घाप मुझे घपने हिन्दी रिपाटमेसट का एडीटर समझिए । मैं घपुशरान घोर रिमासा से मुताबिक घोर लिखस्य तजुम कर दिया करूंगा । कदा कदा उन पर नाम घोर तनझोर्न लिखूंगा । हिन्दी शोषण क लिखस्य घोर मुतमर मजाने उमगिया का निपनिमा भी दूंगा । मर्यादा घाप लिखने है भेज दिया गया धर्मी यहाँ नहीं पहुँचा । मरकुरी यहाँ एक जगह घानी है । घब बं हा गया । घाप या घपुशरान घोर रिमाने यहाँ भेजेसे उन्हें मैं अब कभी घाऊँगा वेना घाऊँगा ताकि घापक बजुर म मौजूद रहे । घापकी कई रिमासे घोर कई रिमाने मेरे पास पड़े हुए हैं । घबकी घामर म अब बजाया बेबाक हा जायेगा । घप रिनी घेंबडा रिखस्य मजमुन का तजुमा कठना बाह ना मैं बहु भी बचने समझाने करन को नेपार हूँ । घाब एक डिस्मा डिस्मा घोर मोन उनाना क लिख भेजना हूँ । पमर घाप ता रर सीखिगा । यही घानिरी काशिस है । इमर महुने भर म एक मगर भी नहा लिगा । राबाना की रवा रबिसा दूना है । पुमर नहा लिनी ।

घरीब घाया । हरर मजमुन के माय एडोण का पुधम्मा मौजद है । रने घाने घर हजरन रवा रिमाने है । मामुस होना है मजराद की हेनिपत घपुशर कर गया ।

जमाना की पबडी-म-घोषान पर घापका मबारनबाद रैना हूँ । मर गुवान म पर माच का रिमासा माच को निवन जय ना घाम्मा भी इगनिमाने नाम रनिग । मर उरु बुनिया म तर गैर मामुनो बाव हायी ।

घब रत मरस का रिऊ । मुझे इन बरत रंटी जूझन लगी है । मगर मर रिम हमारतुर घाउनमाच के रम करे बना है । बार-बार नकामा हुआ है मगर घानी रिखिस्य म इमान न नी रि घा कर दू । घार घार रिमि कर मरें तो बछे रास मर नाम से हमारतुर घापममाच के मेरटरी के नाम रम रप का मनाघाण पर रें । ममनून हूँगा । मरमीरु तो हागी मर वेरी गारि इना मरना वेया कानि मरी अब जम्मा भी इनररीब हातबाना है । मुहरर घब घु है रि मर रम रने जूझ भज रेंगे । रैन उनररी मे घा करन का हायो बाव रिमा है । घा घमर इमान रें तो म रर ममर्या कि जमाना मर पदर हाये का रमरर हूँ । जमरगी के घारि मर का घर रिमाघ रत । रिखिस्य घारतो एरराज न हागा । उरररी घमर म ना रिमाघ बनना है ।

१. कपोपना २. कपोपिनी ३. कावर्ज मर ४. कपोपिक ५. कपोपिनी ६. रिखिस्य
 ७. कपोपिनी ८. कपोपिनी ९. कपोपिनी

घौर तो कोई मयी बात नहीं। तेजनारायण नाम ने बांसा में घाट रूपमें की नौकरी कर ली है। मुर्धारित हो गये हैं। बाड़ी काम बवस्तुर बम रहा है। सेह्य प्रभवता बहुत भन्धी नहीं है।

तामीरे बेहमी पर एक मुस्तसर-सा गोट लिखा है, मुमकिन हो तो बे बीजिया।

भापका
बनपराय

१४

महोबा
२८ फरवरी १९१३

बटाबरम

बहुत से रिशाले धाने। भाबाब भी १३ और २ फरवरी का मिला। मगर ५ फरवरी का नहीं मिला। खेर। बन्ध रिशालों के रिब्बू किन्ने है और वह हरसाले बिबमत है। फरवरी के रिशालों का रिब्बू बहुत बन्ध भेजूंगा। फुलत न मिला। 'अमावस की रात' भाषा नकल कर चुका हूँ। बाड़ी बन्ध नकल करके भेजूंगा। अमाना फरवरी का मिला। पक सिधा है। सिर्फ सिबाई जवाई स-स-सलखुम है। ये इसके पुराने खुसुसियाठ है और इनमें हगिब कमी नहीं होनी चाहिए। भाबाब के लिए कोई गोट न लिख सका। मदीमुलफुर्वी^१ का रंज है। मगर बन्ध ही काम करम हुआ जाटा है। और कोई उन्हा हाल नहीं। प्रेम-पचीसी के फिस्वों की उरलीब^२ भी है। मबमून और रिब्बू और वह उरलीब साब-साब एक हज्ते में पहुँचेंगे। मुमकिन हुआ तो दो तीन गोट भी मुरसब^३ हो जायेंगे। लकी मैयबीन में एक टारीली मबमून रीर-यो-सियाइठ के मुतासिक^४ है। उरका उनुमा भी करटा बा रहा हूँ। फुलत है। भाबाब की खतारे उरलीबी कैसी है। रामसरम के धबराब^५ से मुके पूरा इतफाक है। यही बात मेरे दिल में भी थी।

भापका
बनपराय

१५

महोबा

६ मार्च १९१३

बराबर

तलमीम । ६७ का आजाद बैठा । योमन् प्रयोमन्^१ तरक़्की हो रही है । घोर मुबारक़बार के वाजिम । नामानिगारों की कमी भी जम्न पूरी हो जाय । मगर जमाना न गिरन पाये । कम अख़बारान के रिष्यु घोर 'अमाबस की एन भेज चुका हूँ । अगर आपन हमीरपुर समाज के नाम दस रुपये न रखाना करमाय हों तो बराहरे करम धब कर दीजिए क्योकि मैं १४ को वहाँ जाऊँगा और तपाजा नहीं सहा जाऊँगा । अम के डिस्के २१ आपक वहाँ छप गये हैं । २ हमरर के पत्नी है । वह दोनों आज भेवबाये सजा हूँ । सब बा की कमी यह आपनी घोर यह दो रिताबन क पूरे हुाने एक बन जायेंगे । तरतीब क्योकर हूँ । अबाबाब^२ की मूरत में नहीं जाने बनीं मीने आहा या कि शुजाधन^३ बुरदायी^४ ईमार^५ बनेंयह के उनवान^६ से तरतीब हूँ । मुनासिब यही मानूम होगा है कि दिलबग्पी घोर इलामार^७ के मिश्राडसे उनकी तरतीब बी जाये । २५ रिस्सों का हजम बहिखाब घौमन १२ महे अ क्रिसा ३ सऊं होगा या एयादा से एयादा बीन जुज । घारो इमान^८ में हमका हुम मऊं क्या होगा ।

घोर क्या हाकान है । दो एक मो^९ अल्द सिर्गुया । इधर दो हस्ते से आपका एन नहीं पाया डिंक है । जबाब जफ़र अता हो ।

आपका

बनरन राय

यद् बन अघ्या होगा कि रिताब फबलिक में जाने से पढ़ने पास-पास पढ़ने कलम के पाम इबहारै राय के लिए भेजी जाये घोर यही रायें इरनहार का नाम हें ।

१६

महोबा

२२ मार्च १९१३

मार्दान

आज हमीरपुर न आरन पाया । अब तर ताबा आजा^१ नहीं मिला । मार्च का जमाना मिला । घभी अघ्पी तरहू देग नहीं मका हूँ मगर कुछ अमबार मबर

१ रिबोदिब २ कीभेद ३ बराबुरी ४ अवाकियाब ५ अलम-अ-अहाय, एबल ६ दीरक होटा करके, बंभव ७ बनें ८ अतुवाब

मानूम होता है और सिखाई-छपाई की सिकायत मुद्याक ।

इस तरह कोई मजदूम न सिखा सका क्योंकि धामद न रफ्त की शब्ददुब से इत्मीमान न मिला । धमाबा इसके कोई मसाला भी पास न था । चिन्तनी और मीठ बहुत गलत था । धीर फिस्ता भी कुछ पों ही था है । मगर धमाबास की रफ्त की निस्वत आपका क्या स्यास है । सिपाई नाम जिब बुका है सिर्फ साफ करना बाकी है । रखममीर के किले पर एक छोटा-सा मजदूम बनिमिन (हिन्दी) से बकन करके रवाना करता है ।

मिस्टर सरन के घर न बच्चा पैदा हुआ है । सुसी की बात है । ईश्वर उसे जिन्दा रखे । मेरी न पुष्टि । यहबाब फर्ने-फूर्ने । मेरी सुसी के लिए इतना काफ़ी है । क्यादा की बकरा नही है । उन्ही क बच्चों को प्यार करके अपनी हबस मिटा लूंगा ।

प्रेम पत्नीसी की टिपारी न तीन सौ बरेंगे । यह रकम बहुत ज्यादा है । क्या इससे कम में ठेकार नही हो सकता । कागड बहुत भन्का न सही । आपन छपाई बुस्क का हिसाब सयाया है या तर का । बहुरहास अब मैं जुलाई धीर धमस्त में हो खीने के लिए कामपुर माळंगा धीर उसी बमान में यह सब काम हो जायदा । बाकी सब लीरियत है ।

—बनपत राय

१७

महोबा

२ मई १९१३

माईबाल

बंभ मुक्तसर मोट इरसान^१ है । उम्मीद है पर्सद बाबेंने । आज मैं आप में कुछ मुधानमें की बातचीत करने की आजादी चाहता हूँ । आबाद का शायद हुए एकरीबन् पीच महीने हुए । आप छ महीने की मुक्त को धाम्दार की कामयाबी के लिए काफ़ी प्रयास करते थे । यह मुक्त अब इरीब है । मुझे खचीन है कि आबाद अब बस निकला । मैं धम्बल से धीर अब तक हस्वे अक़ात^२ और फुसत आबाद के लिए नोफ़ा-बहुत भिखता रहा हूँ । मगर आप जानते हैं यह माहियत^३ का खमाना है । हर एक इंसान अपनी मेहनत का कुछ-न-कुछ मरीबा बकरा चाहता है । सुमुसन् पंगी हालत में अब कि मेरी सेहत भी बन्धी नहीं है । कुछ धममी मनीब की तरवीब^४ धमस^५ के लिए बहुत कारपर साधित होती है । मैं फिदाबी कीफ़ा मशहूर हूँ धीर मेरा तबई मीतान^६ जीया है उधसे उम्मीद नही है कि मैं सरकारी मुलाजिमत में कमी कारगुनार कहला सकूँ । मेरा शुमार^७ धंभ तर्दे

१ अफिद २ अन्कतल और नाकपर्व-बर ३ नीरिखता ४ मेरेबा ५ धारबा ६ दिनी क्काम

दर्रांग सोम के बादमियों में रहा है और धारणा रहेगा। इसलिए मरी घरइसो^२ टोनी साबमी है। अगर इधर में न मही तो रिमी और ठरुठ में सगी कुछ बापी प्रायश होना चाहिए। इसलिए मेरे घायले दरगाह है कि घाय घब राट-नरम^३ बिले मजापीन या मोट शायम करे उनही उबरन किमी एक राह^४ से ममनन् घाट बान प्रे बालम मुकरर प्रमा दीविए। मरा गयान है कि यह घायद पर बार्द नाकाबिल बर्शन बाय न होया क्योकि मैं रिमी हने में भी बार बामम न श्याश मही निग मरुंगा और घाबाह वा उयाश न ययाश निरु हम न्यय मेरी नय करन परन। मुझ उम्माह है कि घाय हम मरी जानिद से भी मनी न नराय प्रमायेगे। मैं चाहता था कि यह तहरीक^५ घायही जानिद में हाठी मवर एक ही बान है। अगर घाय हम फर्म^६ न फरमाये तो बो^७ मुजायका मरी मैं हय बरुन घोबान और उनन क सिहाउ न कुछ-न-कुछ बसमी गिन्यन करता रूमा मवर हाय बोनाना बयान ममभर। मैं जानता हूँ कि घाय रिमी दान है। मामी हासन घञ्जी नहीं। मगर ऐसा बग हा। और अग्रबार नरा कर रहे है घाय क्या मुजगान उटाये। बरुनरन और बननीमा ईगार कर्ते करे। इन बिनन-नुई के निरु मुझे मुचाऊ करमाइया। और अगर नबरीद पनें घाये तो निरु बनाय^८ न इनवा बिकरीवै बर्ना बामन धो नु यह बिकर पही गय हो जाना चाहिए।

घायवा

धनरन गय

१८

महोबा

४ मई १९१३

भार्मान

घाय घायवा मुजगान उन बिमा। निगाहे नाउ न बर्ती बरी बरुन हा मिय वा गणउ उठा दीविए और नरुन में गणराउ है तो इनके बजाय 'नरुन' का बीविए। मुझे बार्द उय मरी है। मझे यर मुनवर मगन मगान हुआ कि घामी नरु घायन घाय गेगे न यह होन के बाबिल मनी हुआ। मही प्रुव बरवे मैन बम घायन नरु शिवायनमामा निगा है बिन पर घब बादिम^९ है। मैं मममा था कि घब हाय नुप नरुघर^{१०} होमी। तीव बगपुर बीग में बमुरा^{११} घाट दान मागशा और न मगर बेघार हा मरे। घय पर जा रहे है। घाटक न दार्निग वा इगयान निय है। उनही शारी बी बानपीन मिर्जापुर के बिन म हो रही है।

१. लोका इव २. अर्धु बोदगा ३. कृपवा ४. इर ५. इरुव ६. इरने ७. बरवे ८. न देी बीव ९. बरिहा १०. बरवा ११. लयनर

बेगम चाहिबा यहीं तखरीक रखती हैं और मामिबन बुखारे नेक बखतर^१ की बाम्ब है। और सब हामास चाबिक बखुर है। पापोरा का ईतबार है। और क्या धर्ब करे। बेश रोबाना मेरे लाम कापी हो गया है। मीने उसका लामानियार^२ बनना मंजूर कर लिया है। मुघामबे की बातभीत हो रही है। धाज छोटक के इतरवा मिर्जापुर से धानेबामे है। और कोई हाम राखा नहीं है। बामू राम सरल की खिबमत म इस्तबस्ता धावाक पैठ करता हूँ।

धापका
धनपत राम

१६

धोरखपुर लहमीनबन
२ जून १६१९

मार्जबान

तसलीम। मने अखोस है कि मैं धपने बादे के मुताबिक ४ को बनारस न जा सकूँगा। अभी यहाँ मुझे तीन दिन और रहना पड़ेगा। ऐसी ही बकरठ बर पैठ हो गयी है। इसलिये बालिबा चाहिबा जिस दिन बनारस धाये उससे बामू महताब राम जालमएकल बनारस को मुत्तिला कर बीजिएगा। बहु बुनाताना के बर्मलामी म मुताबिक ईतबार कर देंगे। मने उन्हें ताकीद कर बी है। बामू रबु पठ सहाय की तबीयत किसी इतर नासाब है।

धापका
धनपत राम

२०

धुबोबा
७ जून १६१९

मार्जबान

धाज धापका काई धाया। धपना मुहसल लत परनों लिय चुटा हूँ। बहुत धम्बा हुआ कि मरतीन धा बयी। धब जमागा और धाबाद बोलों बजत पर और साठ धपेंगे। लामिबनू कानपुर में धापको काम की कमी न रहेगी।

प्रेम पत्नीसी की काफी मैं बुर बेजना जाहता हूँ। मैं धपनी हामन सउब होने के बादस धाजकम बिमकुल धपाहिय हो गया हूँ। धोरिबिनल कोई क्रिस्ता नहीं। एक है सो बहु धबूर पडा हुआ है। हाँ एक क्रिस्ता मीने बगाली से धकब^३ लिया था। बहु धपर धाप धरें करे तो मैं धेज हूँ। हाँ उस पर धपना धाम न हूँगा।

मेदा अरा सही हो धाये तो धिर कुछ काम करे। कानपुर धरे धाधाम म

सामिल है। घोर शास्त्रिण बनारस जाने से इन्जिनियर धरम धरम मेरी पिछाछाना का बन ईनबाम कर सके तो ये कामपूर ही में अपना मुघासिजा बनसुं। क्यों बनारस जाऊँ। क्योंकि जब शारी तो होनी नहीं घामछाह की बनगरी है।

मेरे अपने परमोबामे उन में कुछ धरियाएँ घागारु का बिक्रि किया है। मँ घोर जून में कुछ बीबीग कासम हुए। जब शाय जून में मैं कुछ न मिलूँगा क्योंकि हाबमा निहायन कमजोर ही गया है घोर एक बँ भी बीटना दरबार है। अगर माऊशा राऊ रगिए तो घाठ मुखमिणान होते हैं। अगर धार गौर बहुत रयाश तरदुदु के एक तीन चार रुपये की बाक घोर चार साडे चार रुपये का जूना मिरवा गँ तो धारका बहुत समजुन होऊँगा। एक ही पासल न होगो धा मरने है। मेरे जूना घोटक मे स लिया घोर मैं बरना-या है। अगर यह सब उमी हानत में कि धारको तरदुदु या परीराग्री न हो बर्ना अगर हू हुरमथ हू गरी। घोर क्या लिनुं। जूते का नंबर ७ X ४ है। मैं जम डिस्पे को भेजने की बोसिदा करूँगा। बाकी सब सौरियत है।

निपाबमन्द

बनरस राय

२१

महोदय

निधि नहीं है। अनुमानत

सितम्बर तक ११ में लिखा गया।

मकरम मन्दा

समर्पित। हताशनामा जिसे धारका हताशनामा बनना जाहिये बनम हुआ। बन निच हो मय। मोचना रहा किन लखों में करार है। बँमे गुस्ता ठंडा करूँ। कुछ धार में बाम न दिया। न घोर जो शापरी से मय है कि दो चार बड़िया छेद करवा कर है। किन धारिए किन न यही प्रीमना दिया कि तुम गनावार हो। मित्रांमे धार मैं जो कुछ धारने बनने दा घोर बनम बँ दिखे मुने जाघो। यह बनना कि मैं बनना है। शास्त्रिण धारने नखरीक बो मानी मरो रगना क्योंकि धारका गवर है कि धारके बँर धरबीक भी मुनखिम मरवार है। घोर धार इबा-इर न बालिक है। अगर मुघाए बोसिनया अगर मैं धार बँ कि धारन धरनी उम ना मयम बेरबरा रिन्मा मरि तरदु मरवारि मनाबमम न मरद दिया होरा

१९२१ २ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

तो आप इतनी बेझोरी से यह प्रस्ताव न मिलाते। मैंने समस्त मेरे में कोई पकीझा नहीं छोड़ा। वो बर्खास्ति भी तार दिया। पक्षार्थियों दोनों बाह्र प्रथम बक्त^२ की मयी धोर दोनों मेरे पास रखी हुई है। बेशक मैंने मेडिकल सर्टिफिकेट देने की कोशिश नहीं की लेकिन मुझे यहाँ इसके मिलने की उम्मीद भी न थी। यह इन्जाम कि बर्खास्ति क्यों याद भ्रम बहुत ही गमों मेरे घर क्याथा से क्याथा १ स है क्यों कि मेरे पहले हफ्तए इन्जाम कानपुर म तो आपने रोझाना बतौरह का कोई बाह्र रेफ्ट तकटिया नहीं किया। तिक्र किया तब जब मेरी सखसत खतम होने को आई धोर छँसना उस बक्त हुआ जब कुन तीन दिन रह गये। ऐसी हालत में मेरे जैसे बटाये^३ का धायमी बजुब इसके धोर क्या कर सकता था कि सखसत मेने की कोशिश यहै इन्कान^४ करे धोर न मिल सक तो मचबुरल व साधारन धपनी नौकरी पर बापस था जाये। आप ही क्रमार्थये मुझे क्या घरज पड़ी थी क्या क्याव का कि मैं पहले काम शुरू कर बेठा धोर तब भग सड़ा हुंठा। आपने मेरा मना नहीं बकामा का धोर न बका सकते थे। आपने मुझे कोई सँक्रियाइस करने पर मचबूर नहीं किया न मैंने कोई सँक्रियाइस की। मेरा भाभी प्रयथा था। फिर एसा कौन प्रथ था जो मेरी बेबिनी का बाइस होता। हुमीरपुर म मैं ऐसे बहल पठुँवा जब मेरी सखसत तमाम होने वाली थी। मैं १३ की खाम को क्या धोर इतबार का दिन। डिप्टी इन्स्पेक्टर धीरे पर। घरज हुमीरपुर में ऐसा कोई सखस न था जिससे मैं ससाह-भरवरा म सकता क्योंकि हुमीरपुर में मेरे जानने वाले गिनती के धायमी भी नहीं है। यहाँ भागा धोर चार्ज मेने म तब भी एक दिन की डेर हो गयी जिसका बबाव मुझको देना पड़ा। यह है मेरा बयाल हलखी।

धब बूसरे पहलु पर नजर कीजिये। आपको मेरे भाग निकलने पर नाराज होने की बकरत नहीं है क्योंकि बेसा धखवार आप बाहुरे है वह कम तकन्नाह धोर सख में निकल सकता है धोर निकल रहा है। मामूम नहीं इसकी इराजत क्या है, लेकिन मुझे मकीन है कि इसकी वह हैसियत कायम है। एक मामूली सेहत धोर मामूली सिवाकत का धायमी ऐसा धखवार निकाल सकता है जिसमें बहुत सा धोटीबिगत न मिलना पड़े। मामूम नहीं आपने रोझाना धखबत्र का क्या इन्तजाम किया। न मुझे पूजने का कोई हक हासिल है। लेकिन यकीनन हस्ब-दिलक्याह^५ कोई न कोई इन्तजाम धकर हो गया हागा। धोर २० धकनूबर से तो उसकी दिसवस्यो के लिए किसी मधीर^६ मसाले की धखरत ही बाकी न रहेगी। आप धीर धयर क्याथा नहीं तो यही जयास करके मुझे मूघाठ धीत्रिय कि रोझाना धखवार की धारजू को धयमी धूरत में लानेवाला नहीं राकस है। गाड़ी

का पहिया पहिले मुद्रांकन में बनना है और एकबार बन निरपना तो बन निरपना ।

प्रथम वर्षीयों को निरपना सब हथकड़ों न हथकड़ों मन्त्री काटके संज्ञाना संज्ञाना का उद्धारियाल सब प्रेम की आश्रीला हीन होंगे ।

मे घायल सब कर कहा है कि मेर 'घाया' और 'दमा' के मन्त्रान्त व मुनास्त्रिक कुम ३२) घने है । ३६) परम व इन का नाडा हिम्मा हो उद्धार शामिल करके ३२) हा जाने है ।

घालन उद्धारण का कि प्रथम वर्षीयों को 'दूरे उद्धार' घन करी है और इसके उद्धारणान्त मन्त्र विनाशन कागड करके (३२) हूण है । मन्त्र उद्धारण और घाया हिम्मा का मन्त्र नाडा है । सब घायल घाल वर्षीयों को निरपना पदों वने और घायल निम्न मन्त्र-उद्धारण म शरीर हों तो वही उद्धार को उद्धारण नाकि २ उद्धार की एक शामी विनाश हो जाय । निरपन हथ २ उद्धार में ० कर्त्तव्य का उद्धारण । घायल मरी मरनीय के मुनास्त्रिक ३० हिम्मा व घा मन्त्रे हा का घायल उद्धार मी मरनीय करके हथ २ उद्धार म १ हिम्मा मन्त्र मन्त्र है । पर नाया 'वर्षीयों का उद्धारण हिम्मा हाण । दूसरा हिम्मा हथकड़ों उद्धारण और मन्त्रान्त का को हाया कर दिया जायदा मन्त्रिन घायल घायल प्रथम उद्धारण घायल व निरपन मन्त्रे ना मे कर्त्तव्य मन्त्रुनी व उद्धारणान्त कर्त्तव्य कि घायल मन्त्र ३) मन्त्र घायल उद्धारणान्त उद्धारे वा प्रथम वर्षीयों के उद्धार उद्धार हा मन्त्र के उद्धार मन्त्रे पाम मन्त्रे दिव जायें । निरपन हथ कर्त्तव्यों व मन्त्रान्तान्त मन्त्रे काद मन्त्र मन्त्रे है । मे हिम्मा दूसरे पम्पिरर का उद्धारण और मन्त्रे मन्त्रे ना हथ ४२ उद्धार की विनाश बना मन्त्रे । मन्त्रे उद्धारण और उद्धारण की उद्धारण होयी । और घन मी व हा मन्त्रे ना हथ और वा मन्त्रे उद्धारण का कर्त्तव्य और मन्त्रे मन्त्रे वि

उद्धारण की मन्त्रे

वा मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे की मन्त्रे ।

उद्धारणान्त घायल वा मुद्रा मन्त्रे वने उद्धार वने और मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे । मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे घायल हथकड़ों उद्धारण का मन्त्रे हथा है । हथके उद्धारणान्त मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे की मन्त्रे है । उद्धारणान्त मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे । घायल वने मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे ।

मे घायल उद्धारणान्त विनाश विनाशान्त पदों वने है वने वि घायलान्त हों और उद्धार विनाश को विनाश मन्त्रे । कर्त्तव्य व उद्धारणान्त मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे

१. मे ३ कर्त्तव्य मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे । मन्त्रे मन्त्रे मन्त्रे

तो घाप इतनी बेजोखी से यह धरणाज न लिखते। मैंने एकसत सेने में कोई यकीनान नहीं छोड़ा। वो बरखासिंते ही तार किया। बरखासिंते दोनों बाब बाब बरखा^१ की पत्नी धीर दोनों मेरे पास रखी हुई है। बेशक मैंने मेडिकल एडिजिस्ट देने की कोशिश नहीं की लेकिन मुझे यहाँ इसके मिसने की जम्हीद भी न थी। यह इनबाम कि बरखासिंते क्यों बाब बाब बरखा की पत्नी मेरे घर क्यावा से क्यावा १ से है क्यों कि मेरे पहले हफ्तए इयाम कालपुर म तो घापने रोबाना बरखा का कोई बाब रेकट तबकिया नहीं किया। जिफ किया तब बाब मेरी एकसत कतम होन का धार्द धीर अंसना उस कतम हुमा अब कुस तीन दिन रह गये। ऐसी हालत में मेरे जैसे पारवे^१ का घाबनी बनुब इसके धीर क्या कर सकता बा कि एकसत सेने की कोशिश बहरे इनकाल^१ करे धीर न मिल सके तो मजबूरन बलाचारन अपनी मोकरी पर बापस धा बाने। घाप ही फरमाइये मुझे क्या सम्ब पड़ी थी क्या दबाव बा कि मैं पहले काम शुरू कर देता धीर तब भाव बाका होता। घापने मेरा ममा नहीं बरामा बा धीर न बवा सकते थे। घापने मुझे कोई तैजिअइस करन पर मजबूर नहीं किया न मैंने कोई तैजिकाइस की। मेरा माकी अयवा बा। किन ऐसा कौन पत्र पा वो मेरी बेदिनी का बाइस होता। हमीरपुर म मैं ऐसे बल्ल पछुंवा जब मेरी एकसत तमान होन बाकी थी। मैं १३ की शाम को बला धीर इतबार का दिन। डिप्टी इन्स्पेक्टर बीरे पर। यरख हमीरपुर मे ऐसा कोई शकस न बा जिसमे मैं समाइ-मस्तबप से सकता क्योंकि हमीरपुर म मेरे बानने वाले बिलनी के घाबनी भी नहीं है। महीं भागा धीर बाब सेने में तब भी एक दिन की देर हो गयी जिसका अबतम मुझको देना पड़ा। यह है मेरा क्यान हलअरी।

अब दूसरे पहलु पर नजर कीजिये। घापको मेरे भाग निकलने पर नाउब होने की बकरत नहीं है क्योंकि बीसा अकबार घाप बाहते है वह कम तनकबाह धीर अइमें निकल सकता है धीर निकल रहा है। मासूम नहीं इसकी इतापत क्या है, लेकिन मुझे मझीन है कि इसकी बह हैसियत कायम है। एक मामूली मेहत धीर मामूली मियाकत का घाबनी ऐसा अकबार निकाल सकता है जिसमे बहुत सा धोटीजिनन न लिखना पड़े। मासूम नहीं घापने रोबाना घाबदार का क्या इतबान किया। न मुझे पूछने का कोई हक हासिल है। लेकिन यकीनन हसब-बिसइबाह^१ कोई न कोई इतबान पकर हो गया होगा। धीर १० अकबुर से तो उसकी लिखसपी के लिए किसी बखीर^१ मसामे की बकरत ही बाकी न रहेगी। घाप धीर अगार क्याश नहीं तो यही जयात करके मुझे मुयाक कीजिय कि रोबाना अकबार की भारजू को घाबनी गुरत में मानेबाना यही शकस है। गाड़ी

का पहिया पहले मुशकिल मे चलता है और एक बार चल निकला तो चल निकला ।

प्रेम पत्नीसी गामिबन् धब हथ तक न छाप सकेयी क्योंकि रोझाना धबधब की बकरियाण बज प्रेम को खामोश बैठने देंगी ।

मे धापने धब कर चुका है कि मेरे आजाद और जमाना के मजामीन के मुताबिक कुस ७२) घाते है । १६) पहल मे इन दो ताजा किस्मा की उजगल शामिल करने ७२) हो जाते है ।

धापने फरमाया बा कि प्रेम पत्नीसी ४३ जुम्ब छर चुकी है और इमने धाउराबात मम किताबत कागज खैरह ७२) हुए है । गोया इमारा और धापका हिदाब यहाँ तक साऊ है । धब धगर धाप पत्नीसी को निकामता पसंद करे और धाप निस्के मडे-मुकमान म शरीक हों तो ४३ जुम्ब और धापबाइये ताकि ॥ जुम्ब की एक खामी किताब हो जाये । गामिबन इन ६ जुम्ब में १२ कहानियाँ धा जायमी । धगर मेरो तरनीब के मुताबिक १२ किस्म न धा सक्ते हा ता धाप धरा सी तरमीम करके इन ६ जुम्ब म १२ किस्म लपा सकत है । यह पोसा पत्नीसी का पहला हिस्सा होगा । डूमरा हिस्सा हमब बकरत और मम सहत बज को शायी कर दिया जायया लेकिन धपर धापका प्रेस इतना वज्ज भी न निकाल सके तो मे बदर्जा मजबूरा यह इन्तमान कर्जेगा कि या तो मेरे ७२) मुझे धना करमाय जाये या धम पत्नीसी के ४३ जुम्ब धपे हुए रेम के बरिय मेरे पल भेज दिय जाये । गामिबन इन ह-बस्तों म गैर-माकनिपन से काम नहीं ले रहा है । मे किसी डूमरे पम्बिशर बा बुँहुँगा और न मिस सका तो इन ४३ जुम्ब की किताब बना चुका । सिर्फ सीबाबा और टाइमि की बकरत होगी । और यह भी न हो सका तो शहर और भी मगाकर औराब की बरूया और मम-भूना कि

उरे मुद भी लुरम

बा मबए महुमते मुद भी लुरम ।

बहरजान धाप जो कुछ तमझिया करे बल करे और मुझे मुत्ताना फरमाये । सबम मफ्त मुमगा बम धपे हुए जुम्ब को भेज बना है । इममे धापका मिठ हुबम देने की देर है । बउरघी ने मट्टर बनाया और उस पर रज धाये । धापको कोर तब सीक न हुई ।

मे धब मिर्क ६ जुम्ब की किताब निजामना पनीर करताहूँ बराने कि धाप शरीक हों और बज किताब को निकाम मके । क्रयामन के इन्जार में बैठने म तो यहा

१ धमे २ धपे ३ धब ४ धीधपन ५ धाबना ६ धमे धपना कैना बा धपनी मेरमन बा धम मबला रता है ।

वेहतर है कि जो कुछ सवाब इस वकत मिलता है मिल जाये । ज्वाला क्या मरकई ।

नियामनेक
जनपतराय

२२

महोबा

१० वितम्बर १९१३

मार्गसाहब

उसमीन । मेरे ज्वाली के छोड़े बार कुछ मिले । मरकूर हूँ । सञ्ज ११ पर विक्रमादित्य के लेवे नामा हिस्सा खरम हो गया है । मगर यह पहली बार इतना ही खपा बा । मेने खुबारा उसमें निहायत बकरी इबाखर कर दिया बा । वह खमाना के किसी नंबर म खपा भी बा लेकिन इस कित्तब मे वह इबाखर किया हुआ हिस्सा नहीं है, जिससे हिस्सा विस्तृत बे-सर-खो-ना मामुम होया है । बराहै करम इसी खमाने के रिवालों में इस टुकड़े को तसारा करबाके इसमें बदा खोत्रिए धीर वह टुकड़ा न मिले तो खो-शीन खुमले जो मरुसे-मठनब को बाहिर कट्टे हों बकर बड़ा बिये जावें । क्या मे यह पूछ सज्जा हूँ कि यह मूक है या मुकम्मल क्रमा बिद्यमें अब उसहीहूँ की मुबाइत नहीं ?

मे एक हज्ते के मन्वर घापकी खिरमत में कस्मे काण्ड के लिए खाना कर्केया । कबों क्या यह रकम धीर छोड़े बार कुछ के लिए काखे न हो जायगी । खिलहाल मे पहला हिस्सा ही खाना कर्केया । घाप कित्तबत करवाने का इंतजाम क्रमाइए । सज्जा तसक्रिया कित्तब के पूरे हो जाने पर हो जायेगा बैसा घाप खुद करमले है । धीर मगर यह मर्बी के खिमाऊ हो तो बिज बजत घाप मुझे धीर सज्ज बार मुकम्मल कर बैमे मे खपाई का खिचाल भी बैबाऊ कर हूँया । मगर काण्ड के लिए मे बहुत बन्ध खप्या खेजता हूँ । अब जो कुछ तखीर होनी सज्जा इन्खान मेरे ऊपर न रहेगा । गाभिनग् काण्ड के एकबाई इंतजाम न होने के बाइस कित्तब खैरगी हो गयो है । कोई मुबायजा नहीं । टाइटिम वेज खुबसूरत होमा बाहिए । बस । कई जगह खिजा-पड़ी के बाब मेने यही तसक्रिया किया है कि कुछ ही खपाई धीर नख-मुकसान उठाऊँ । पहला हिस्सा इसका खैखपा कर रेगा । धीर सज्ज हाभात बदस्तूर है ।

इहूत^१ पड गया है । इमवादी^२ काम खुमले मुक हो गये है । धर जिस खबर खन्ध मुमखिन हो यह काम खरम हो जाये तो खन्धा हो । मुझे बधापती डाक मूलता क्रमाइए कि विक्रमादित्य का वह धाखिरी टुकड़ा मिला बा नहीं टाफि

बहु हिस्सा मिलाने की क्रिक करू। सैरे दरबरा बहुत नुसानी जिम्मा है। उसके बजाय नमक का आरोपण रख दीजिए तो बहुत बूब हो।

घापका

धनपन राम

२३

महोबा

१६ जनवरी १९१४

नाईबाल

तमलीम। कुछ घसी हुषा घापका छन मय रमीर घापा था। हुसालत मामूम हुए। घात की शक से घापकी निबमन में बीस रुपय धीर भेजता हूँ। उम्मीद है कि प्रेम पत्नीसी की किराबत आरि होमी। घापन छरमाया था कि घपाई का हिमाक बाद को हुंगा। चूँकि मैंने यह ठसक्रिया जिता है कि पहले प्रम पत्नीसी क सिद्ध नो चुम् छपें बाड़ी किराबत पुनर हिस्से में शापा की जाय इनमिये जब बाड़ी छाड़े चार चुम् की किराबत खाम ह्ये जान तो मुझे एक नजर देखन का मौजा दीजिएगा ठाकि वो कुछ सतथियाँ रख जायें उनकी तरमोम कर हूँ। घाप मुझे मुत्तिया छरनाहये कि घपाई के घनाषा पहले हिस्से को खरम करन के निये धीर किरने रुपयों की खरखठ होगी। इसमें टाइटिस पेज धीर दीबाचे का भी खयाम मदरे नजर रखिएगा। रनबीत सिंह क हिस्से के मुनास्सिक मुझे भी मही मुनासिब मानूम होता है कि इनना हिस्सा धर सरें नो घापबाकर बिपका दिया जाय। हाँ मयद भान बरहये करम उस टुकड़े को तसारा करबा लीभिय क्योंकि या हिस्सा मने बाद का मिलाया है बहु जमाला के किमी मम्बर म खरख घप चुफ्त है। धर मे उसको इनगी मुबमूरती से शायर न मिय सहुँ।

पिरसों के मुनास्सिक मया धर करेँ। तब स एक हक नहीं रिदा। तबीपन कुछ एनी मुर्दा हो गई है कि इस हँ मर का बार नहीं जठलाया जाता। ताहम जो कुछ हा मरेमा निर्तुंगा। एक जिम्मा शरु किया है—घमी नहीं बनदुबर में शक किया य—बहु जब खाम हा जायगा रजामए खिरमत्र करेगा।

जमाना धीर घाबात बनूम हा। घाबात घम्भा है। महत का नहीं हाय है। जब तब चलता है काम करता जाता हूँ। उम्मीद है कि घापका मित्राब बहुत घम्भा तरक होगा। यह इत्तमाम करन की ट्ठरल मरी है कि प्रेम पत्नीसी महब घापकी बडानी की बडीपन घप रही है धीर धर घाप ही उन घनाम को पहुँचायें।

जिस इतर बन्ध मुमकिन हो काम हो जाना जरूरी है। क्याया क्या धर्म कहें।

बनपुत्र राम

२४

सुरीसा (बीबा)

९ फरवरी १९१४

माई साहब

तमलीम। मैंने वो बात आपकी निदमल मं रजामा किसे मबर आपने एक का भी बचाव देना मुनासिब न समझा। खैर हम मैं अपनी बदनियतकी के सिवा और क्या समझूँ। आपने कुरमाया था कि मैंने तुम्हारी बात मुझको की लेकिन शायद अभी उसका गुबार मौजूद है। बर्ना आप तो इतने मुस्तकम्म न थे। मामूम नहीं मेरी किताब की किताबत हो रही है या नहीं। बचड़े करम बनम मग्ना मगाइए और धाना देने की बकरत हो तो मुसला फरमाइये ताकि किताब के शायद होने की उम्मीद को तिस से निदान है। क्योंकि मुझे उसे मम मानस को तरहूँ जो आपके इफ्तुर से अपनी किताब छपवाकर उठवा या इतनी फुलत कड़ी है। रिल मुजरते करते हैं। अगर किताब उम बकत निकसी जब घोपा को बचाव भी न रज्या कि प्रमचन्व कीम है तो उसकुं निरालन से क्या इतर। मैंने इतर अपना किस्सा पूरा कर लिया है लेकिन आपकी खर्चमेहरी के बावत उसे मेजने की बुरघत नहीं होती। अब आपने यह इतिहास है कि किताबन का काम शुरू कर बीजिये और मुझे मुसला बीजिये कि पहले हिस्से में कौल-कौल से फिस्ते है और वो फिटने सफो पर है। मैं पहले हिस्से को बन बुझ से ग्यादा नहीं करता चाहता। कामाता और माजान दोनों बराबर घाते हैं और उनके लिए आपका मरकूर है। आपके बात का इतिहासक और इतरार है।

नियामन्व

बनपुत्र राम

२५

बिरेबा

४ मार्च १९१४

मार्जान

तमलीम। आप धन्देशा न बीजिये क्योंकि मेर धन्देशा करने की बारी है। मुझे बापिया २४ टारीश को मिली धार अब उन्हें देकर २५ को रजामा कर दिया। मामूम नहीं पहुँची वा नहीं। मुझे भी बही गपनी हुई कि रजिस्टरी मत्री

करायी । बबापनी हलसा दीजिए । रहा मजमून । उसे दो एक दिन म जकर मेज
 हूँया क्योंकि कहीं-कहीं साऊ करने का जरूरत है । मुझे अभी तक यह इरमीनान नही
 हुआ कि कौन सा तर्ज ठहरीर बाजिनवार कर्से । कमी तो बकिम की नऊस करता
 है नभी आबाय के पीछे चलता हूँ । आबायम काउएट टासटाय के फिस्से पङ
 चुका हूँ । तब से कुछ उसी रंग को तरऊ तबीयत माइल है । यह धपनी कमजोरी
 है धीर क्या । यह फिस्सा जो मे रवाना कलगा इसम मुझे ठहरीर की मुलमज
 कोशिश नही की गयी । सीधी-सीधी बाते मिलो है । मामूम नही आप पसंद
 करेंगे या नही । बल धय निकला या बठ गया । मैने आपसे एक शाम का
 खंजाम धोर बेगम साहिबा भोपाल की नयो लछमीकई मीपी है । इन दोनों
 निठानो को बकर भेजिये । इरिठयाऊ है । फिताब जालिबन् मज्ब म पूरी होनी ।
 आपन बाद करमाया है ।

नियाजमन्त्र
 बनपत राय

२६

गोरखपुर

३ अगस्त १९१४

बउदरम

तसमीम । बमागा म क्या बेर है । इस धपील का लरीदारों पर कुछ बसर पड़ा ?
 प्रम पचीसी की तरह इसे मई महीने म उत्स कर दीजिये । ११२ लडे धप
 गये है । २४ की फिताबत छरम हो चुकी है । अब सिऊ १६ लडे या १२ या २
 जितना बरकार हो धोर ले सकते है । इन तरह पहला हिस्सा दो तैयार हो ही
 बाये हुनरे हिस्से का अस्ताह मासिक है । टाइलिन मूझाई सिमझई बगौरह का
 लउमीना होगा । ठहरीर^२ करमाइए । बीबाबा आपने लिखने का बाग करमाया
 है । तुम म हो मुग्नछर ही सही मेरी खातिर कन्द सत्रे लिखने की मुहमत निकाल
 लीजियेगा । धीर क्या बर्ज कर्से । सलिज फिताब मई में बकर तैयार हो जाय ।
 म आपनो दल रुपये धीर मज्ब^२ कर सकता हूँ । बाकी हिस्सा रायम पर । अभी
 दमउन^२मे की फिक भी है । बहुरटाम जिस बबर जल हो सब मेरे पान १४४ से
 १६ गयो तक का पहला हिस्सा रायम बरके इरमास करमावे । अब बहुत बेर
 हो गयो ।

नियाजमन्त्र
 बनपत राय

२७

पृष्ठोत्तर

३ मई १९१४

भाईजान

तसलीम ! जीविए राजा अफवाहापुर हाबिर है । येने छाप नहीं किया । कई दिन और भग जाते ।

'हैती का बकिया बख्त तिसुया । मामटी प्रचारिणी पत्रिका मे बह छिनसिमा घनी बख्त नहीं हुआ । मगर अब हरेक नम्बर ये दो तीन छात्रों से पत्रादा नहीं निकलते । पूरा निकल घामे तो जमाना के पाँच छ छात्रों का मताना हो जावे । मेने ठरना नहीं किया है सिर्फ मफत भ किया है ।

उरे पुरपुकर नाम का एक लिस्ठा लिखा हुआ है । सिर्फ कुछ टरनीज बाकी है । उसे छाप करना पड़ेगा । दो तीन दिन भ उसे भी हाबिर करेगा ।

भरत पर एक हिन्दी मखमून का ठरुमा किया था । वह घन ताबित भ पहले ही भेज दिया था हाताफि वह जयाना में रखा था बीजू हूँटा । भरत क कॅरेक्टर पर बहुत भख्या पुरमानी और बर्बनाक रिब्यू किया गया है । भापकी पत्रमेसी में मुझे जबर क्यू होने पर भजबुर किया था ।

बाकी सब खीरियत है । मेम पत्नीसी का इरतहार बकर बिलवा बीजिएगा ।

भापका

जनपत राय

२८

पृष्ठोत्तर

२२ मई १९१४

भाई साहब

तसलीम ! कठ मिला । भाबकत गमी के बाहस बीटना मुसफिक है लेकिन काम कर रहा हूँ । उरे पुरपुकर जाता है । एक और लिस्ठा भी भजता हूँ । वह हूज घसी हुआ अफमा से ठरुमा होकर भबिया में निकला था । लिस्ठा मिहासत देलबस है बर्ना में ठरुमा क्यों करता । यह बखीरे के लिए किया था । भाप परा इसे करसरी तीर पर बस बीजिएगा । जी जाहे तो रख बीजिए बर्ना नहीं का उहाँ भेज दूँगा ।

मुझे बह सुनकर बखी हुई कि अब भापकी तरपुबत का हूबून नूय हटा । अब भाप क्यावा मकसू हो सकेंगे ।

मेरे घाने की बात यों है। मैं तो घाम ही रवाना हो जाता मगर २७ मई को ऊँचाबाद से एक साह्य साह्य छोटक की शारी के मुवाब्बिऊ कुछ ठबकियाँ करन के लिए धायेंगे। फिर मुझे भर्मपत्नी की के साथ समुदात आता है। घामिबन् ४ या ५ बून को जाऊँगा। मगर यह भर्मम न होते तो बराहै रास्त कामपूर घाटा। ट्यूटी और वंके तो खैरियत से होंगे। धर रही बमाला का कलम-खान घँभालने की बात। उरू की हवा घामकत बिपड़ी हुई है। मखवारनमीसी बहुत मुसकिल हो गयी है। जिसमें मौजूदा रिवासे है उमम किसी को छोटेपे नहीं है। सब कृते की खिन्वी बीते है। इन हालात में क्या हीसला हो। इमर १५ घाल की मुलाजमत। कुछ दिन और खिन्वा रहूँ तो Invalid पेशान का हकवार हो जाऊँ। मेरे लिए यही हाल सबसे भच्छी है। और मुझे यहीं पड़ा रहने बीजिए। यहाँ आक्रमत है और मैं मोशलशोनी में बयादा जाने रहूँवा। इसी हालत में कुछ उसनीऊ का काम भी कर सकता हूँ। मखवार या रिवासा सेकर मैं उसनीऊ का काम कुछ न कर सकूँगा। अभी रोब बंटा भर सिटरी काम करना भच्छा मानुम होया है। मंजिन दिन भर इसी हाल में बीने रहूँगा। कारा मैं किसी तरह कामपूर लबशील होकर आ सकता। लबादम की दरख्वास्त तो बी है मगर मामूम नहीं कहाँ फँका जाऊँ।

मगर घापको किसी धंघेड़ी रिवासे से किसी मखमून का जुलासा या तर्जमा कराना हो और जिसकी जुलाई के लिए बकरत हो तो औरत भेज बीजिए।

बसलाम

बनपत राम

२६

महोबा

३ बून १९१४

माईबान

तो अब धरब का बयादा पेश कराना हूँ। मैंने खिन्वा या कि खमसत की दरख्वास्त में चुका हूँ। घामिबन् पंहु तक मैं यहाँ से रकसत हो जाऊँवा। सेहत की हालत मुझे मखबूर कर रही है। घाप मुझे देखें तो घामिबन् पहचान न सकेंगे। हाइमे मे जिुरर घा मया है। जोऊँ दिन-दिन बग्या जाता है। इमलिए मैंने मुसम्मम डराया कर लिया है कि कुछ दिनों तक सिटरी काम मुठलक न बर्ये। हालांकि लबीय का लफ्फा मखबूर करेगा लबिन हलुन इमकाम उसे रोषगा। इमलिए मैं निहायत मखबूरी की हालत में घामा की हालती मखद न कर सकूँवा।

काम से कम ही तीन माह तक—अब घाप मरे पास अक्षयवाराव न भिजवाया करें। मिर्ज़े आबाब हलके बस्तुर भिजवाते रहें। आइन्दा कुछ दिनों तक मैं सिर्फ़ एक कहानी माहवार सिप्यन की कोशिश करूँगा। बस इससे ज्यादा कुछ नहीं। दो एक और अक्षयवारों से शास्त्रुक पैदा किया जा। लेकिन भी से अहाम है। क्यों मरें।

छांटक की शारी बिसमिस हो गयी। बहुत अच्छा हुआ। अभी वो तीन साल तक यह काम इन्ज-अब-बकल^१ का। आइन्दा सीधा जनाइद हुए^२। ज्यादा क्या सिन्^३। आपके यहाँ जाने का इरादा है। देनू^४ अब तक पूरा होता है। मरीच बहुत बलकम मेहमान नहीं होता। यह लयान माने^५ है।

मई के महीने में मैं आबाब के लिए १० कासम लिखे। और शास्त्रिकून कून क पहल मंबर में भी बार बालन से कम न होगा। कून २२ कासम इच्छे है। अगर घाप हिमाबे दोस्तों के ठौर पर मुझे एक बाब इनामद कर सकें तो आबाब की यावगार रहेगी। अगर वह बाब नहीं जिसके साथ तीन रूपये में अंतह चौबे मिलती है। मजबूत बनी हो या ज्यादा नहीं तो तीन बार अंत तक ठो साथ रहे। उम्मीद कि घाप अच्छी तरह होवे।

प्रेम पचीसी की तसहोह जारी है। अमकरीब-अल-इस्तताम^६ है। अब तक हमदर्दों में जो लोगों फिस्ते देने जाते हैं।

आपका
अनपत राज

३०

खोसा
जून १९१४

भाईजान

तसलीम : इस्तहार के जो जाने सेबड़ा हलक हुआ। और यह कुछ इस्तहार सिख लिया है। इस काम में मैं अनाही हूँ और पहला इस्तहार करे अफ़ों में तैबार हुआ था। उसे घाप अगर एक हफ्ते में घाप सकें तो आबाब के साइब पर पाँच हजार घाप रहे। सिर्फ़ एक तरफ़। बनी जब बस्ती बना आइन्दा तो वहाँ मेबना पड़ना। मैं अचिजी कटिंग का तर्जुमा न कर सका न कुछ सिखने ही की तरफ़ तबीयत ज़ु हुई। क्या करूँ। बाऊई अमाना बहुत बिखड़ गया। कून अरम हुआ अभी अफ़िल मंबर लापता है। इस्तहार की ज़ीमत अब कातब बड़ेरह त्वाह मुझे अचरिबे चौ० की बगुल कर नीबिए या अपर कित्वाब की बिछी को कुछ अमानद हो तो वह उसके बख़ कीबिए। घाप जाने पर मैं अर्थ करूँगा कि अिनहाम मुझे कितनी परतों की अकरत है।

^१ बस से परके ५ देखा आगवा ५ नाएक ४ तरफ़ हीने से कटीय

बराहें करम मुसिला कीबिए कि किसी घोर बखवार ने रिष्कु किया मा नहीं ।
बखवार की कमला पर क्या रिष्कु करें । बहुत मामूली है ।

धापका

धनपत राय

३१

बस्ती

१६ सुलाई १९१४

भाईजान

तबलीम । प्रूठ के लिए रुकिया । मेरे खयाल में दोनों हूँ । बचने रखे बायं
साया घोर मुरस्ता^१ । निष्ठ निष्ठ हूे जाये तो बचया । रिषायतें मेने काट हीं
बच तुम्हा^२ घोर मुर्दरसीन^३ की रिषायत रखी है । अगर धाप मजीद^४ रिषायत
करना चाहें तो हाँक से कर बीबिए । अगर बन्द छप जाये । धमी तक जल्मान
बाले एजेस्ट ने कोई खबर नहीं ली । खैर । इतहाद छप जाने पर छापद कुछ
बिखी हो सके । अगर जमाना में दो बार तहसील^५ कीबिए तो घोर स्फारा छपना
सीबिए । मज्जाय में भी तहसील करत हुआ । घोर खंड रिषालों के नाम बरमाइए ।
माछन रिष्कु घोर सरस्वती ने रिष्कु किया नहीं क्या ? मेने हमदर्द को एक हिस्सा
दिया था । कई माह हुए, उसने धापा नहीं । अब दी दो तीन दिन में उसे जमाना
के पास भेजूया । धपेखो कटिंग का ठरुमा धाप चाहते हैं या उस पर बैठ करके
बुद्ध सिखें । धाबाव नहीं धाया । एकाय बखवार धपेखो का धीर भिजवा दिया
कीबिए तो धाबाव के लिए कमी कमी मुकउसर गोट भिजा कर्कें । जमला कम
तक धायेवा ।

बारिख हो रही है । मज्जाय की सतः तकनोक है । जम्बोध है धाप बर्करियत
होगे ।

धापका

धनपत राय

३२

बस्ती

धनुमानन ३ सितंबर १९१४

भाईजान

धापने यह धर्पाजत नहीं किया कि धाबध कमसियन बैक ने सिर्फ धर्पाजत किया

का या बड़ी शान्द बंगाल के पास भेज देना था। बहरहाल मुहम्मद ग़ाली साहब का
 ज़रा धाया है। जो लिखते हैं कि इसमें कमरिशियल बैंक भी गलती है। उन्हें बुझाए
 बैंक भेजना चाहिए क्योंकि टाकीब सख्त कर दी यही है और कोई बख़्त नहीं है
 कि बैंकवाले अपना न हों। मैंने प्रथम कमरिशियल बैंक को यह लिख दिया है और
 टाकीब कर दी है कि जो बुझाए बैंक को भेजें। अगर सबकी भी वह बात धा
 जाये तो बैंक को मेरे पास भेज दें मैं अपना भेज दूँगा। आप साहबसाह पटौछान
 होते हैं। बैंक भेजने का सर्का मैं दे दूँगा। ज़लिए धुट्टी हुई।

बंद मजामीन और नोट भेजता हूँ।
 एक सख्त मूख से मेरे पास दस दिन तक डाक मिलकुन न पहुँच सकी। वह
 सब मजामीन धाज ही लिखे हैं। आपने मेरा हिसाब भीपा है।
 जून में १) जुलाई में ५) धयस्त अभी चल रहा है
 २५ कालम १४ कालम
 किस्कों के मुआबजे के मब में मेरे बैंक के खजूस हैं
 बेकस सबकी सख्त जून टिकारी राजकुमार

५) मेरे ज़ायस में मैंने कोई ज़ायब मताबजा नहीं किया है। टिकारी राजकुमार
 मुक़्तसर किस्ता है इसलिए उसका मुआबजा कम रखा है।
 जीवर मेरे पास एक भी नहीं धाया। मालूम नहीं क्या हुआ। मैंने बंगाली
 काटी कराया है। ज़ायब तो तीन दिन बाब जारी हो जाये। अब वहाँ मुझे नाज़न
 रिष्यु इतिवयन रिष्यु बरीरह मित्त जाया करने क्योंकि परिवयत म्मनन डिक्वेटी दुम-
 रिजार्नज के सहजीकार है। ज़ायब क्या धाज करें।
 आपका
 बनफ़्त रा

मार्दबान
 कल एक नोट लिख चुका हूँ। धाज मुक़्तसल खत लिखना चाहता हूँ। मुझे
 यह मुनने का बहुत इरिठबाऊ है कि धाजाल भी इरायत में भी इस बंग का
 मसर हुआ। गोरखपुर में मैंने प्रताप को स्टेशन पर लिफ़्टे देखा। क्या धाजाल
 १ विन्मालिखत रखे

के लिए कोई ऐसी सूख नहीं निकल सकती है। जमाना के दोनों गंवर मिले।
 रेखा। कुछ हल्के हैं।

प्रेम पत्नी का इतराहार बेलकर लुत्ती हुई। अगर इस बन्ध उसका निकलना
 शानिबन् बेमोका है। जंग की धुन में शायद ही किसी को क्रिस्ते-कहानी का शीक
 हो। क्या कुछ दरकवाले घाती। टाइलिन पेन बरीरु तो शायद धयी तैयार न
 हुआ हो। जल्द जिऊ बीजिए। इतराहार करते-करते बहुत बिन हो गये। जिताब
 धप जाने पर मुझे उसका पूरा बिन मिलना चाहिए ताकि मैं जिताब बना सकूँ कि
 हमारे घोर धापके इर्यान क्या मुपामना है। यह क्या इतरापत के कर्ष का
 खान। मैं इस मुपामने में हर तरह धापको नहीं पर शक्ति है। धाप जैसे
 मुनासिब समझें करें। पहले तो धापकारों के पास घोर पहले इतराहार की शिदमत
 में रिम्पू घोर धाप के लिए मेजना बकरी होगा। यह भी एक काम है। सौ बत
 निकले पड़ेंगे। सौ विपिन्याँ दरकार होंगी। बत कम सबभूत धाप बना चुके थे।
 उते क्यों न धापका शीजिए। घोर जिताब न एक-एक धाप रक बीजिए। क्या पैर
 पैदेबाने कारों की बकुरत होयी या साबा कारें काड़ी होंगे। मेरे धापत में धपे
 हुए काठ बेहतर होंगे। धापकारों के लिए साबा कारें पहले इतराहार की
 काठ। क्यों? जब इन इतरापत के रिम्पू घोर धापें कुछ धाप बायें तब इतराहार की
 जिऊ होंगी। धापकार घोर जमाना तो लैर है हो घोर लभें बिन्हुँ धाप मुनासिब
 समझें उन्हें इतराहार देने की बकुरत होयी। या उन धापों का इतराहार एक
 बरक की सूत में धापकर धापकारों की मारुत शायी कर दिया जाये। बहुराज
 यह धापका अपना काम है।

धाप स्टेट्समैन के लिए जिऊ शिया है घोर धाप में जल्द का बेहतर इतराहार
 रल्लेना ताकि धापकार के लिए बाबीका नोटिस लिख सकूँ। ही मेने मुजरता^१ बहुराज
 को एक जिस्मा नय नोटिस के मेजा धाप। मालूम नहीं पहुँचा या नहीं। मिथिएया।
 धीगाए धाप धापने नहीं से धाप। क्या हमदर्द से नकन क्रिया या मेने धापके पास
 बराहे धापत मेजा या। नीबर का इतराहार जो धापने क्रिया है एक मामूली धाप
 बारक्या के लिए तो धापता है अगर जिने धापकारलबीती भी करली पड़ उसके लिए
 ययाया करधामर नहीं है। इधलिए स्टेट्समैन के जाये हो जाने पर उते बर
 करना पड़ेगा। धाप मेरे पास पंडह रुपये भेजें बँ तो ऐन नबाजित हो। सधमें मैं
 स्टेट्समैन मया लूंगा। घोर माह सिर्नबर की तनगुबाह भी मधुमू^२ हो पायती।
 नये-नये इतराहार की बबह धे मैं यहाँ तंगदस्त हो गया। धारपाइयाँ बनबानी
 पकी धयी बालबर नहीं लिया अगर उसके लिए रुपये की दिन-रात जिऊ है। पूर

सिनाटोवन का हस्तोन्मत्त कर रहा हूँ जो सामग्री यह शीशी खरम हो जाने पर मुठ
 किन से मिस सकेगी । बस्ती में पत्री किसी से खनासाई नहीं । बस बिट्टी हस्त
 पेक्टर को खालटा हूँ । धीरे दुमरियार्नाम में पब्लिशत मन्मन विवेकी लहसीखवार से
 बाह्यक्रियत हो मयी है, प्रताप की बरीमत । यमी तक यह नहीं तप कर सका कि
 दुमरियार्नाम में खनाम कर्क या बस्ती में । चाची बस्ती के लिए बोट बेटी है ठान्कि
 खोटक की धामध-उत्त मे विपन्नत न हो । हर बार मुझे एक लंबा दुस्की छडर
 करमा पड़ता है धीरे कमबलत बीरत बजाय नरके के मुकसानवेह होता है ।

धीरे तो कोई ताका हाम नहीं है । क्याका क्या बस कर्क । प्रताप के इसरार
 से मन्मूर होकर एक मन्मूर-सा छिष्ठा हिन्दी मे उसके विपन्नतमी संवर के
 लिए लिखा है । हिन्दी जिसनी तो घाटी नहीं मपर कुछ इन्तम ठोड़-मोड़ बिया
 है । बन्ने कैसे है । खवार का मुत्तखिर,

धामका
 बतपत राव

३४

बस्ती

१ नवंबर १९१४

भाईबान

धामका ५ नवम्बर का लिपलाका धाम १ को मिला । ऐसी हालत में क्या
 धरबाटी काम कर्क क्या न कर्क । यही सामग्री बीस मील के मबाह^१ मे सिर्फ
 एक बन्नाका है । पब्लिश विस्वनाथ भी धरबाटी निकालने वाले है । धाम्की खबर
 है । मैं अपनी मीन्ना हामत के एतबार से रोबाला धरबाटी के सामक किसी तरह
 नहीं हूँ । फिर उर्ध्व धीरे हिन्दी दोनों का बार मुझे बर्कोकर बनेबा । धामर
 धरबाटी काम करना होता तो धाम्बाद क्या बुरा बा । बसी को निकालता
 रहता । मेरे सिबे तो अब यही मुनासिब है कि किसी प्राइवेट स्कूल की मास्टरी
 कर लूँ जहाँ से ५) माहवार मिले । इसी के साथ-साथ 'बमाना' धीरे
 'धाम्बाद' की छियमत कर्क । इस तरह मुझे साठ सत्तर छप्पा मबाहार का
 भीमत पड़ता कामे । इससे क्याका की खनाहिंश नहीं धीरे न इससे क्याका पा
 सकता हूँ । खनामक्याह तकबीर से क्यों लई । कुछ कितारें लिपुंदा कुछ अपनी
 कितारें खपनाईका । पाँच छ-छो मेरी कमाई है, उसे इन्ही कामों में खर्च
 कर्कया धीरे मिल धाम्बाद अब लिटररी शोहरत हासिल कर सईया तो कोई

माहवार रिद्याना निकाल कर गुमुर करेया। घोर धमर इसके पहले ही ह्यात^१ ने जबाब दे दिया तो फिर राम नाम सप्त है।

धाय मेरी किताब बस्ती से छपवा बीबिये ताकि उसकी कड़वानी देखकर दूसरे हिस्से में हाथ नये घोर कुछ नफ़ा भी हो। क्या कहीं धाय ने तो मुझे सधाधने में कोई कसर नहीं रखी। कुछ जघामा। मगर मैं ही किस्मत का धर्या हूँ कि बाधन कर परवान^२ नहीं कर सकता बसिक नीचे पिरने के सिन्ने बर्या हूँ। बर्ना शिखरत लाल बर्मन की तरह जैन से बिबनी बसर करता। हुकूमत यह है कि देख्य बड़ी बीब है, जिसने उसकी कूट न की उसक सिन्ने बमुब रोते घोर घर पुचने क घोर कोई इनाम नहीं है। घोर क्याया क्या सिन्ने।

घाय से घाय का डिन्ता साऊ करता हूँ। बैरू^३ पितने पिल मगते है।

साटी दुनिया को सेनाटोबन कायदा करती है मुझे इससे भी कुछ न हुमा। धायने बार पाँच मीन हुवा जाने की सलाह दी है। उसकी सामीम कर रूह हूँ। पाँच दिन से सबाठार तीन-बार मीन भुमठा हूँ। धामीद कि तबीमत टिचन होगी।

कोई प्राइवेट स्कूल की सुपरिरी का बर्ना हो तो पैर लमान रबियेगा क्योंकि मैं अब इससे बेजार हो गया हूँ।

घायका,
धनपतराम

३५

स्वान-तिथि नहीं।

धनुमन्थ^४ बस्ती, भारतम १९१५

बाईबान

कन बस्ती आ रहा हूँ। बैरू^३ बाहरेवर साहब कन तक मास्टरी पर बापस मेजते है। बहरहाल इस बका-बिबा से धाय लंग धा गया हूँ घोर मास्टरी को इन जिदपी पर तरजीह देता^५ हूँ। विरु^६ लकनाह भी कभी की शिक्षापत्र धनबसा है। धमर मुझे पचास रुपये देया तो बमुरी बना जाऊँगा।

तमहोर^७ बली। इनक सिन्ने काकक साहपुरी क्याया मौजू^८ धारमी हो सकते ये। इन हुजरा ने लारीक क्याया की है। धमर काकक न सिध सपे तो इरी को रहने बीबिये। मगर मिन्तर^९ देसा होना चाहिये कि एक परपर मे क्याया न हो। धाय की तरफ से येने एक मुगसर-सा बीयाचा^{१०} तिघ रिपा है। धमर धाय को फर्ग धाने तो जरी अपनी तरफ से बक कर बीबिये। धायकी मेहनत घोर तरदुव रखा हो जायगी।

बस्ती मे एक डिन्ता धनकरीक भेजूया। मिगा हुमा तैयार है, मिर्क बाऊ

१ बिगरी २ बकुवा ३ बैरुत धनकरीक ४ माकपय ५ बसरी का रिबाक ६ बिबिया

करना बाकी है। अब मित्राब की क्या कैदियत है। घर में सेहत हो यनी मा नहीं। बच्चे कैते हैं। ये इस बात यहाँ से उगहा जाता हूँ। विसम्बर में प्रासिकम फिर आऊँगा। 'प्रेम पत्नीसी' कब तक ठैयार होगी।

बन्ध्या बसुनाथ

बनपट्टराम

३६

बत्ती

६ मार्च १९१३

भारतवासी

आज स्वच्छत मंत्र होने के लिए कलक्टर साहब की विचारित के साथ डाइरेक्टर के पास बनी गयी। कब से मैं आजाब हो गया मगर बसबाब बंदरह यहाँ पड़ा हुआ है। उसे लेकर मजबूरन बनारस वाला पड़ता है। बर्तन बंदरह गुल्श से जैबू तो टूटने-फूटने का डर रहता है। प्रासिकम की का तीन दिन बनारस में लगे। इसके बाद कालपुर आ जाऊँगा। मगर इतना मुस्तकिल ठौर पर बनारस में रहने का है। तबले के कि जमाना का ईतबास ठीक नहीं हो जाता कालपुर चूँगा।

शो मजामीन हरसाले लिबमत हूँ। बत्ती मजामीन जो मे लामा वा बो बेकार है। आपके बख्तर मे मगर कुछ मजामीन धामे हों तो बचापछी डक रबला करमा बीबिय टाकि बेक डालूँ। मेरा इतना है कि बर्तन प्रसवले का मुहारिबाला 'हम्पल' पर एक मजमून लिखूँ। इसलिए नवम्बर और विसम्बर के इदिबमन रिबू भी भेज बीजिए। ये सब इतलिए मँयवाता हूँ कि ममकिन है मझे बनारस में कुछ बर्तन मव भाये। इस फुर्सत के बख्त में कुछ न कुछ कान कर आरूँगा। बबदरी की कितारत प्रासिकम शुरू हो गयी होगी। 'अल्लतकए बबबात' पर रिबू भी लिख रहा हूँ। मगर मजमून धामे हों और मेरी फकरत प्यता हो ता इदिबमन रिबू न भेजिएगा। सिर्फ़ कत डाल बीजिएगा। बत्ती सब ठैरियत है। कब तीन बजे की गाड़ी से बनारस जाऊँगा।

आपका

बनपट्टराम

पता

बनपट्टराम

मार्केत बाबू डारका प्रताप

बाब पोस्टमास्टर, डारका—गाडेपुर, बनारस

३७

पत्रिपुर, बनारस
२ मार्च १९१३

भाई साहब
 वसन्तीम । मैं कम सही पहुँच गया और हल्के दस्तूर बीते या बीते हूँ ।
 प्रॉम्बिन् धामने मार्च का पर्चा कापिब के पास भेज दिया होमा । अगर आप
 मुझसे नोट लिखाना चाहें तो कामगमीन के चारों पर्चे और धमृतबाजार पत्रिका
 के बाशिरी दो पर्चे रवाना करमाइएया घाठ बस सजे निब रूंगा । और अगर
 बिना नोट के रखना चाहें तो कोई जखण नहीं ।
 ऊपरकी के साथ बनवटी का एक पर्चा भी भिजवा दीजिएया । मैं बनवटी
 का कोई पर्चा साथ नहीं लाया ।
 घर में सब बीसी लबीवत है ?

आपका,
 बनवत राम

३८

बनारस
 ३० मार्च १९१३

भाईसाहब
 वसन्तीम । आपका काब मिला । क्या बनाना की मौजूदा हालत इस क्रान्ति
 है कि कोई शक्य जसे लेकर ६०) आपके नजर करने के बाद १२) और
 मसालिह मसलन् उनक्याह बीनेजर, किरपया मकान पुबपल एबीटर और
 उनक्याह अपरासी बरीरह के निकाल सके । माहवार मसालिह निताबत और घपाई,
 कापड टिकट बरीरह कुरीबन् १३) हूँगे । हम लोगों ने एक बार जो लबमीने
 किने थे उसके हिसाब से मुझे और आपको बमुशकिल समान सायद ६) श्री कस
 पकरी थे । यह तो तयगुवा धम्र है कि कस्ट्रुक्टर को बनाना क मानी बार्ने से
 कोई तालमुकुर न हागा । लेकिन Debts में बरा लरीबार्ने की बहु इमिमें नहीं
 मसलुब होंगी जो उनसे बनून की या चुरी है । आप बरपय मेहरबानी लहरीर
 करमाइये कि कस्ट्रुक्टर जिस लारीघ से शुरू होगा उन लारीघ से धान धपने
 कस्ट्रुक्टर पर कोन-कोन सी जिम्मेदारियाँ धायब करेंगे । मैंने धानी नीडपी पर बाने
 का कोई इरादा नहीं किया । वो माह की सजमत और मैं ली है । अगर कस्ट्रुक्टर की

सुरत निकल आये तो मैं झीरन साल भर की बख़्तत बेतनकबाहू की बरक़्बास्त कर सास भर लाक़्बीर भावमार्द करना चाहता हूँ। बिस बख़्त मैं यहाँ पर कस्ट्रैक्ट का ज़बान न आपको धामा खीर न मुझे। धामिबन् इस मुमामने बाहमीं तसक्रिया होला मुमकिन है। बस आपके मुक़स्सल बख़ाब का इस्तज़ार।

प्रेम पत्नीकी के मुताबिक़ धमी बिक्र मुशतबी। धयर बहू मुमामता ठीक यमा तो मैं पुर ही छपवा भूंगा।

धावन
बनपत र

३६

फ़सलेपुर, बनार
धनुसल्लात बुन १९१

बाईबान,

तसलीम। मुझे यहाँ धामे क़रीबन् तो हज़रते हुए।...क्या बेटी ठरऊ कोई धामे नापबारे जातिर हुआ बा धमी ज़ालमी तरदुबरात की ठरऊ से निबल नहीं हुई। धावन लाहवा की तरीबत तो धम धामिबन् ए-बख़्तनाहूँ हीनी जमला करबरी ...धम तक कैमार नहीं हुआ। धावाब भी नहीं धामा। मार्च क़ क्रियास्त हो रही है बा नहीं।

बासूम नहीं मेरी निम्ताब का रिम्बू धीर धक़बारीं ने क्रिया या नहीं। धीने का धक़बारीं से ज़त-क्रियास्त की है धीर इस्तज़ार देने के लिए रिम्बू का इस्तज़ार कर रहा हूँ। बराहे करम नामा ख़ाबनुबेर है क़हू बीबिएबा कि धयर क़िती धक़बार ने रिम्बू क्रिया ही तो उसे काटकर दे दें। बिस हज़रत के पास क्रियाब घोहक़लन् इबज़ारे राय के लिए मेज़ी बबी पी ज़ल इबज़रत में से क़िती ने वधाब बिना या नहीं। धयर मुष धुरत धावे हों तो बहू मेरे पास ख़ाबना करबाहएमा। इस्तज़ार का काम बेंने। धापके नहीं प्रेम पत्नीकी की बिन्नी केंटी हो रही है। यहाँ उख़्तार ज़बनम है या बिक़तुल सुरत बहू नहीं। क़ग़बरी का धम धयर निकम यमा तो रिधामती एनाम का कुछ धसर हुआ ना नहीं।

मेरी तबीयत बरस्तुर है। धावनक़न कोई रबा इस्तीपास नहीं करता है। धीर धीर एह्तियात कर ही बाधोमधार रसा है। निटररी करम बिक़तुल बंद है।

धाप मेरे यहाँ ज़ने धामे से मुष तरदुबुब में तो नहीं पड़े। बात यह है कि

दिने बचामा की मौजूदा हालत को देखकर उस पर क्यादा बार डालना मुनासिब नहीं समझा। मेरा खयाल था कि उसकी मासी हासल में कुछ एस्तहकाम^१ थाया होया मगर बनबटी नम्बर मे गुम्मे बहाँ धीर क्याबा नहीं रखे बिया। मेरे बने धाने से धयर क्याबा नहीं तो तीम सी क्ये सात की बपत तो हो गयी। इसी तरह तसत्बीर को मर में थाप बार-पौन सी रुपया बचा लेने। वो बसकों से भी पूरा काम निकल बानवा तीम की कोई बकरत नहीं। धयर कोई हिस्तेदार है तो थाप ग्रेस में धपना शरीक बना लें। उसे कुछ कमीशन देने का बात कीबिए तो इस तरह ग्रेस की बिम्बेबाटी से थाप धपना हो जायेंगे। इस तरह से थाप साम मर में कम से कम एक हजार रुपया बचा सकते हैं। हाँ थापको बोड़ी सी मेहनत करनी पड़ेगी।

बबाब से कब्र भरकूर करमाइएमा। बानी सब छेरियत है।

धापका
बनपत राम

४०

पठिपुर, बनारस
१७ जून १९१५

माई साहब
तसत्बीम। इस्तहार मामूम नहीं धमी तक छपा या नहीं। मे बसका इन्त बार कर रहा हूँ। कई बिल हुए मने एक लिखछे में बाक्टर इन्जनास के छठ की नकल भेजी थी ताकि वह भी उसमें शामिल कर दी जाये। मामूम नहीं धापने उसे शामिल करने की हिदायत कर दी या नहीं। बराहै करम उसे बल्ल धपबाइए हुमा हो तो उसे बापस ही कर बीबिए ताकि किसी पंदाबी ग्रेस में धपबाकर मैमबा नूँ। नये इन्तजायत क्या हुए, सिधिएमा।

धीर सब छेरियत है। बबाब बबापसी रबाना करमाइए। मिस्टर राम सरन निमम की त्रिबमत में सनाम।

निदाबमन्द
बनपत राम

पारंपुर

२६ जून १९१५

माई साहब

तसलीम । क्या आपका मित्राण मिला । हा सजीसबत्र के मर्गेनामहानी पर बिस इन्वर मातम हो बोका है । बड़े धारमी बल्ब भरते है, इस ब्यास की तसबीह हो बयी ।

इरतहार कई दिन हुए खाना-प-खिचमठ कर चुका हूं । हा इफ्जाम के बठ का इन्वबास भी जो आपके पास मौजूद है उसमे शामिल करवा बीबिएगा ।

मैंने इन्वबास^२ इन्टरमीडिएट का इरादा किया है । मुझे बिबगी क ठकुर्से से मालूम होता है कि किसी मिटररी भाइन मे बठेर प्रेषुएट हुए कोई सम्मीव नहीं । इतने दिन क्रिसा कइमी मबामीन मिलता रहा लेकिन आप बरबोगार हो बाळें तो कोई ऐसा रिवाजा या प्रबचार नहीं है जो कमील^२ मुपाबके पर भी मेरा निबाह कर सके । वस प्यारइ साब तक मैंने रिवाजुत^२ की मबर कमी कैंजु^२ न पहुँचा । हा बार धारमियों के बाहबाह से भी कुस होता है । मगर मइब इतना ही काळी नहीं है । अब वही तरह मीले धोर फुसत के बिहाजु में कुस पोका बहुत मिटररी काम करता चुँका । ब्याबा सरवर्मी नहीं बाळी है । तीन घास की मामूनी मेहनत में प्रेषुएट हो सकता हूं । बुझाये मे आपम मिसने का सहाय हो ब्यायेवा इत्नाकि मेरे लिए बुझाये का बिभ ही छिबूत है । मैं फिस बूड़े से कम हूं ।

मिस्टर रामसरल को मेरी तरफ से मुबारकबाद । सच्ची खुसी हुई । मिसार ए-इन्व बल्ब नुमकिन हो तो मिसबा बीबिए ।

आपका निबाबमन्ब

बनपठ राम

बनारस

६ जुलाई १९१५

माई साहब

तसलीम । क्या बस्ती जा रहा हूं । इरतहार बुररी बार मेब चुका । एक हउते से प्यारा मुबरा । मेरे ब्यास में कटीब जो हउती के हुए । मबर पमी तक

मूठ तक का पता नहीं। अगर आपके यहाँ न धप सके तो बरहूँ करम बस्ती के प्ले से मुचिला करमाये ठाकि कहीं और धपवा नूँ। इरवहार के न धपने से इस एक महीने मे मे बुकसेमरों से खतो कितानव कुछ न कर सका बर्ना मुमकिन या कि कुछ जिकरें निम्न जाती।
उम्मीद है कि धान बहुत धब्बी तरह होंगे।

श्रीर धन्वेष
धनपत राय

४३

बस्ती
२१ सुलाई १९१४

माई साहब
उसनीम। नबाबिखाने का मुकिया। परमारया आपके इरदों में बरकूड
के। बर आह्वियत ठंका रहे। ठव घोर धब में कोई उखली छर्क न होने पाये और
मुके पकौन है कि धाप उसमें कामयाब होंगे। अगर इरवहार धप गया है और
धान उसे खमाना के साथ तछवीम करना चाहते हों तो दो माह के लिए दो हजार
या त्रिपती खरख हो अपने पास रख लें बाकी मेरे पास भेज दें। हाँ अगर
आपका मुहरिर है परत उन्नाव के एजेण्ट के पास और ५० परत राय बरेसी
के एजेण्ट के पास भेज दे तो बहुत धब्बी बात हो। बर्ना जयावा तरहूर हो तो
खमाना के लिए रखकर बाकी बररिये देलने पासल या बदन खयाल न हा तो बाक
पासल मेरे पास खयाल कर दें। मयकूर होऊँगा। कौताह कमम^१ खरर हो गया
है। एक ए का इन्जहान देना चाहना है। इस महरुमे में इसके बरर गुबर
नहीं। मयान मररवे से दो मील। त्रिस्ना बहुत खरर भेबूंगा। क्या बरमाऊँ।
शरीफदार तो बनने के लिए मैं बना रहूँ मगर जब तक धाप नहीं बनाते नहीं
बनजा। यह सभरोख^२ की मुनामी किन परब है मगर मयाध^३ की मूठ भा तो
होना खरकी है। अगर धाप अपने तनावोख पर नहररानी करे और ऐसी सहुतवे
है गऊँ जो मेरे बीमे कमहिम्मत (खररतण) शक के लिए जाबिने ठहरीक हो तो
धब भी मुमकिन है। धब तो धानको बज्र घोर भी कम नितेया और एक
मयाबिन की सख खररत होयो। मैं धनकरीब धापसे मुबारित करूँगा कि मेरे
तनावीख क्या है। शायर धाप उन्हें खुवगारती से घाली न पायेमे मगर त्रिमी इदर
accomodativo सिपरिट भी खररत है।

आपका
धनपतराय

१ मूपा धब २ धन किलने बासा ३ दिव-रत ४ बीरिबा

साईं दाहद

तसलीम । मिर्जाज मुबारक । बिस्ती मिसी । धाय जिंठी बसत इरिठहार भी धा धायगा । इसके भिये मस्तकूर हूँ । बायरस्तुन धरब देहसी मुम्ले प्रेम पनीसी बिचने के लिए तसब करते हूँ । उनकी मिस्वत धापका क्या जमान है । हिस्वा होयम की इरामत के मुठाभिनक भी बहु धामाबा है । धापका कबाब धा बाये तो मैं भी उग्हें कबाब हूँ । धब रह गयी हमारी बाहमी शायत^१ की बातचीत ।

जमाना^२ शूँकि इस बसत बिसकुल पैमिग कन्सर्न नहीं है । इस बजह से उसका good name सतना बेसकीमत नहीं है बितना बूछरी हाकत में होता । मैं उसकी छीमत एक हजार जमान करता हूँ क्योंकि पुड नेम के साथ ही इसमें बंड नेम की भी धामेबित^३ है । बहरहाल येरा ठजनीगा यह है मेरा जमान है कि धगर कोई नया माह्वार क्वाबमियत के साथ एक्टि किया जाने धौर उस पर एक हजार रुपया चर्छ कर लिया जाने तो उसे इतनी मुरतहूटी^४ हासिल हो जायगी ।

यह मैं तसलीम करता हूँ कि धाप को इस माह्वार की बरीकत बहुत खेरबार होना पका जिसकी मिस्वत जामिबन् तीन या चार हजार तक हो । मगर जामिबन् धुने बाजार में इस जिस की इतनी छीमत हरमिब न मिल सकैगी । धौर फिर इस जसारे के धौर भी असबाब है जिनकी तजवील की यहाँ बकरत नहीं । मगर एक हजार पुड नेम की छीमत हो तो उसका मिस्व हिस्वा पाँच सौ होना है । मैं इस रकम को दो या तीन साथ में धरा करने का जिम्मेदार हो सकता हूँ । धूब बठरहे बाजार^५ मइसूब^६ करने को भी रजामेब हूँ ।

मैं इसका एडीटोरियल धौर बड़ी हब तक मैनेजीरियल जार्ब लेन पर ठमार हूँ । धाप चिर्छ धपने खुबूक धौर जाती धधर से धौर भीब इरातिश्राउठ के मुठाभिनक बितना मुनासिब समझे काम करेंगे । मैं कोसिदा कस्येा टि जहाँ तक मुमकिन हो उसका सर्ब काम हो । इसके धमाबा धधरमेंतस जार्ब बिसकुल धापका रहेबा । यानी काठब कितारत गधपाई कटाई पोस्टल जार्जेड । उनका ज़िदान धाप माह्वार धरा करने का बंधोबस्त करेंगे । धामिका^७ बकामा का हिस्वा इससे धलय रहेबा । ताटीये शराकत^८ से धाप बितना जयमा सगार्जेये^९ हर माह के धाधिर

१ धापकी बर्तों २ मिस्वाबट ३ जथाट ४ बिसिदि ५ बाजार की बुर ६ धा ७ रिबजे ८ धाक

मे या हल्के गुंजाइश^१ विस्मर या बनबरी में भरा होया। बितना नञ या मुञ्जान श्रोया उसमें ह्य धीर धाप बरखर के शरीर होने। मेरा लगाम है कि बनबरी तक ह्य ह्य रकूम को धारा कर सकेंगे। लेकिन धपर उठ बज्ज फिर कमी रहे धीर दुधरे शाल के सिमे कपये को क्याश बकरत हो तो फिर हल्के उक-रत कोई सबीम^२ करेंगे। धपर लगइते कि ये बिम्बेशरियाँ बैबाक न हो जायें धामरणी में से अही तक इयकाल में होया कुछ न सेंगे। एहीटर आते धाप छे या नै। धपर धाणके नाम से क्याश कायदा हो तो मुझे कोई ठिकाणत नहीं। बनीं मुझे भी कायंत एहीटर रहता होया। धपर यह शरयत धापकी तर सीमात^३ के साथ धप हा अर्थे तो हा हा लोग विस्मर तक बार-बार नञ्जर बज्ज पर निकालकर कुछ बजार^४ कापय कर सेंगे धीर बनबरी से धामिबन क्याश अयरे के साथ धाडाह हो। मैने माली बिम्बेशरियाँ सब धाप पर रकती है। इसके बज्ज मुनिये। मेरे पास ह्य धा माह की रखत के बाब इस बज्ज कुम घाठ सी कपये हैं। तीब सी कपये मैम तीम धसाधियों को बजारह सी सरी मूद पर कर्क दे दिये हैं। मेरा नञ्जी सरमाया ह्य बज्ज कुम पाँच सी रपया है। इसे मैं उठ बज्ज तक के सिमे सुरित का बसीला समझता हूँ जब तक कि 'जमाना' से मुझे कुछ अयया न हो। धीर कीम कायता है उठ मुबारक बज्ज के सिमे बिठने सिमों तक इन्तबार करना पड़े।

धरत मै माली बिम्बेशरियों का बोध उठाने के बिन्धुम नाजाबिल हूँ। इसी धसन^५ में धपर छोटक की शरीर धप हो गयी तो धामिबन यह रकम भी मेरे हाथ से निकल जायगी। छोटक इमसाम जेम हो गये। यहीं हैं। स्कूम सीबिम में नाम लिखा दिया है। जाची नहीं धाई। मकान पर है। तेम नचपन धी यहाँ नहीं। धपमे मरान पर है।

मैने धपनो माली हालत का जो क्रिस्ता लिखा है यह हर्क ब हर्क सरी है। ये धाप के बहाव का इंतबार कर्कमा।

धाववरा एक ए० क धुन में कुछ लिटररी काय नहीं होना। कहीं से तह टैक^६ भी नहीं हूँ। धीर मुञ्ज में कलम धिसना क्रिजून धम्लुम होता है।

बाकी सब लीजित है। धपर मेरी तजाबीब में धुपधरों की डू धाये ता मुमाऊ क्ररमाइयेगा।

लाह उकहोबी बी लाहउ देस रहा हूँ। हम पर एक रिष्यु करने का इच्छा है जो धामिबन ईज की लालीम में पुरा हो सके।

बस्तभाम

मियाबनेय

धनपत राय

भाईमान

उसहीम । आपका एक मित्राग्र पहले धाया या दूसरा धनीमक पकट के रिन्गु के साथ फिर मिला । पहले छत का अनाम मीने मिखा या मगर धनती से मिखाका मेरी खेब म पड़ा रहु धया । ठिकन सगा कर खोड़ने की नीमत रही धायी ।

मैं जो भाबिह हूँ वह भातहरी से । काम ऐसा करना चाहता हूँ बिचमे बजुब मेरी लबीयत के धीर किसी का लकाबा न हो । धयर भी मैं धाल तो रात-दिन करता हूँ जो बाड़े तो खोड़ा ही कर्के धीर वह सिर्फ भासिकाता हैदियत में हो सकता है । साल भर तक छेके पर काम करना धीर वह भी जब धरपत^१ धीर कपडब^२ का बोम गले पड़ा हो—मरफिन है । इसलिए क्रिस्वाभ इसी हालत पर क्रमापत करता हूँ ।

एक ए के लिए मेहनत करना बकरी है धीर बही कर रहा हूँ ।

प्रेम पचीसी हिस्सा बोम के मुठासिन्ध दायरजुब धय्य देखती से खत-क्रिवात की । वह पची है मबर क्रिस्ते सब नहीं है । तीन-बार क्रिस्ते मियाँ इरितवाफ हसन ने मिये से । धाल कलसे लकाबा करता हूँ । सल क्ये पर मुधामना लय हो आमया । हिन्दी लबुमें के लिए कई क्यह से इधरधर हुआ है धीर मैं खुद ही इस काम के हाल में लुंगा । धम हिन्दी मिखने की मरुध धी कर रहा हूँ । लरु में धब गुबर नहीं है । यह मानुम होवा है कि बाबमुकुन्ध मुल मरुधम की लरु मैं भी हिन्दी मिखने में बिम्बगी सक कर हुँया । लरुनबीसी में किस हिन्दी को लरु हुआ जो मुझे हो बायेया ।

क्रिस्वा जो आपके पास भेजता हूँ—

आपने एक खत में मिखा बा कि अमाना सब निकल गया । मेरे पास एक कर्वा भी नहीं धाया । मार्च धरैल मई खुन जुलाई—वह सब पर्थे बराहे करम मिजवा बीजिये ।

मजिस्ट्रेटी का कुछ हाल मिधिपगा । कानपुर में तो खुब हलचल हुई होवी ।

प्रेम पचीसी हिस्सा धम्मस कुछ मिफ रही है या क्यो की ल्यो रबी है । इरतहरों का मिज क्या हुआ ? दो हवार पर्थे लकासीम करना बी । धनका कुछ धसर बिभी पर भी हुआ ? मैं तो अभी तिहीबस्ती के बाइय किसी पल्लवार में

यह होनी कि घाप सरमाया पैवा करें। मे तो घब की ही खससत लेकर घापने यहाँ गया था मगर रंग बगचा न देखा मायी मुराफिनात मबर पाई। इस बबह से क्नामस्नाह धलमना किबून समस्य। मगर घापकी मायी हागत बमुझ्-बिसए सामिह बेहतर हो कयी है तो घाप मुधे बुनाइमे मे हाबिर हुँवा और बाहमी^१ मठबरे से कोई सुरत निकालेगी।

‘प्रेम पचीसी के लिए घापने क्या कोसिसा की? इनायी कुतुब के सिलसिले में मंजूर हो जायगी? हिस्सा बोन घाप ही जपवाइये। मगर घाप का प्रेत बल्ब घाप सके तो इससे और क्या बेहतर होया। मपर घाप जपवाएँ तो फिर समझोटा हो जाना चाहिये। मैं घाप ही के कंसस पर टापी हो जाऊँगा। घाप-कन कोस की कुतुब के लिये इनामत का एमान हुआ है। मपर घाप इस मैदान में घाना चाहे तो मैं इसमें भी घापका साथ देने की तैयार हूँ। क्सर्स बाह इंडिया सीरीस की तरह ३४ सज्जता पर मधर्मरों के सवानेह^२ लिखने का इराबा है। एक ए भी होता रहेया। इसके लिए मैं बंटे घर से बाइब बहत नही सज्ज करता। मे करना तो बहुत कुछ चाहता हूँ मगर मुझमें न पंडरपाइब है और न कपया। घापमें पंडरपाइब है मपर कपया मरागद। जब तक कोई सरममेवाला तरीक न हो कैसे काम बसे।

प्रेम पचीसी हिस्सा बज्जल बाबणुम बबब बेहसी के पास कुछ कित्ने भेज ही है और कुछ ‘हिस्सावाली’ में ठकसीम कराई, मगर धमी तक कुछ मतीबा नहीं लिखना। मैं कोसिसा कसेंगा कि बसहरे की तातीब में कानपुर बाई बसों कि घाप कोई मुठीबे मतसब मठमरा वे सके।

मैनीवाल का कुछ और हाल सुनने के लिए मुस्ताक हूँ। क्यादा निबाब।

आरिफ

बलसत राय

४७

बलती

९ अक्टूबर १९१३

भाई साहब

तसमीम। कन लिखाका मिला। इसके क्कमनासा^३ जल भी मिला था। मपर मनेरिया ने कई दिन सज्ज परीखान किया। अब बगचा हूँ। घोबता हूँ क्या बबाब हूँ। इमताम तो कितारें येयबा ली है। घोटक साथ है। इन्हें घोम भी नहीं सकता। यही कंससा होता है कि एक बार फिर टानिबइस्मी के

१ बाबरी २ बनिम-बयित ३ बरके बाबा

उम्मीद-भो-भोम का भजा ले लूँ। फिर धाएँवा घास से नया प्रोवाम शुरू करूँगा। प्रेम पत्नीसी हिस्सा बोन के मुताबिक आपने मुझसे शरणवत्^१ तमब किये हैं। फिदाब आपकी है, बीसे चाहे। फियो तरह इसे इनहाको^२ कुतुब में माने की छिक करे। धनर इसमें कामयाबी हो चाये तो मैं छिप्टी इंस्पेक्टरों से तहरीक करके इसकी छरीबारी करवा सकता हूँ। हर बो हिस्सों में हम धीर थाप निष्का-निष्क^३ के तहरीकदार हैं। चाहे हिस्सा बम्बल में भी भरी मुधाभना रखिये। हिस्सा बोन में मैं मागत का निष्क बेने पर तैयार हूँ। मेरी मेहनत आपका रसूब। मागत मुसानी^४। धनर आपको यह भी मंगूर न हो तो मुझे एक एबीशन के पचास रुपये नकद धरा छरमाइये। बायएतुम बरब से मेरा मवाबबा^५ साठ का बा। मयर क़ैसना बरब छरमाइए।

जमाना के लिये एक धीर फिस्सा लिखा है। मैं हिन्दी में भी लिख रहा हूँ। सरस्वती को एक मजमून दिया। प्रताप के लिये लिखा। इसलिये क्याय काम करने से भाबूर^६ हूँ। फिस्सा लिखमत न बाब बरबहण पहुँचेया। बा कुष धरा धरमाइया मुझि के साथ कुतुब करूँगा। बाबू राम बरब यहाँ कानूनगो हुए। ऐन मसरत है। उन्हें आप तहरीर करें जिस तारीख को वह यहाँ धारि हों उसकी मुझे इत्तमा बे हें ताकि मुसाछिरत की तकलीफ न सठानी पड़े। धनर यह न हो सके तो स्टेशन पर इन्फेमाले से कर्ने पुठनी बस्ती डाकबाना ले बनी। डाकबाने के बाबू मेरे सानू हैं। मेरे मकान पर धारमी साब कर देंये। मुझसे धनर उनकी कोई लिखमत हो सकी तो इसे अपनी बुरकिस्मती समझूँगा। नाकर एक पहले ही से तय कर रखा है। इसकी तकलीफ न होपी। बरबहरे की तारीख में जमाना के लिये इरबत चाहेगा तो कुछ न कुछ बकर लिखूँगा। प्रेम पत्नीसी को हिन्दी में भी लिख रहा हूँ। छेहत् बरस्तुर। उलाब के सरनू पच्छाद नियम ने बत का बबाब नहीं दिया। बरबहे करम एक बार आप भी उन्हें यादधिहानी कप हें। बाको सब छेरियत है।

धापका

बनपत राज

४८

बस्ती

१३ अक्टूबर १९१३

मार्जिन

तसनीम। यह नीजिये एक कहानी इरवासे लिखमत है। इस तारीख में एक धीर मजमून लिखूँगा धनर वह फिस्सा न होया। आपने पत्नीसी हिस्सा बोन के

१ बरतें २ बरबलेखरी: बहाबक ३ चाये-चाये ४ बरबबर ५ लानि ६ फिबक बरबबर

मुतासिलक धमी तक कोई प्रीससा नहीं किया। हिस्सा बम्बस भेजी डाइरेक्टर प्राइम के यहाँ ?

बाबू रामचरण यहाँ भाने के बूधरे दिन मुझसे मबरसे में मिले और एक बार पाई की छरमाइस की। बूधरे दिन बहुत बारिश हुई। तीसरे दिन मेरा बाल्मी बारपाई लिए उन्हें बँडता फिर। बाबू तक उनके घरान नहीं हुए। वह फल्केपूर है और मैं पुरानी बस्ती में हूँ। उनके मकान का पता मुझे मासूम नहीं। बरालत की बबह से इस मुहब्बे में परबेसियों की बड़ी कसरत है। उनका एक मनीबार्डर सबर डाकखाने में पड़ा है। कम एक पोस्टकार्ड मेरे माऊंठ बामा बा। वह भी पड़ा हुआ है। माजूम नहीं यहाँ है या देहात कबे पये।

बारिश रोख होती है। नामों धम है। बमला बुलाई का सब तक नहीं बामा। कमला और कमलाने म्हुकम पर इस तारीख में बरस निबकर भेजूंवा। कोई रिखाने या बरबबार इल्लिबाम के साथ निबबा दिया कीबिए तो शम्ब कुब निब भी सजूँ। अब एक Current affairs से बबाब न रहे किन्ती मज-मून पर निबाने की तहरीक नहीं होती और नबमून भी मुसकिन से सूम्बता है। बापके निबे कोई रिखाना या बरबबार भेज देना बन्नी मुसकिन नहीं। बापस कर देने का निम्मेबार मैं हूँ।

क्यादा बसुनाम

निबानमन्ब

बनपत धम

४६

बार्मल स्कूल, धोरबपुर

२४ नवम्बर १९१३

भाई साहब

तसभीम। कई दिन हुए मिडाइज मिला। मलकूर हूँ। किस्से लिख रहा हूँ। क्यों ही कैवार ही गए भेजूंगा। धमी तक हिन्दी मजमुपा तैयार नहीं हुआ है। यह किस्से पहले पहल हिन्दी में निकलेगे। इसके बाब सजूँ में भी। धमी इन्हें बाप देने से इन्का नवापम जाता रहेगा। कोमिश कर रहा हूँ कि धपनी धोर कहानियाँ भी तर्जुमा करके धापुँ। एक साहब तपया लगाने के किसे तैयार है। बापने धमी रूपसे इरसाम न करमामे। बाप नपनक यकीनन् धार्येगे। मैं भी बानेबामा हूँ। मयर धमी तक माजूम नहीं ठहरना कहीं होमा। बाप कहीं ठहरेंगे। यहाँ मेरे लिए भी गुंबाइस रहिएगा। बन्नों के रिखाने के मुतासिलक भी यहाँ

बातचीत होगी। प्रेम पत्नीसी हिस्सा ब्रोम को घब घाफने की कोशिश की जाये। काष्ठ की गरमी का ख्याल धब करना शिखर है। इसके शीतकार में मुमकिन है इस पाँच बरस लय काये। पतला काशब सगाहए मगर तासीर शिखर है। इस बारे में ध्याफका को ख्याल हो उससे मुत्तिला करमाहएया। बाकी धब खेरियत है। उम्मीद कि घाप मय ख्याल^१ बखेरियत होगे।

नियाममन्व

बनपत राम

५०

बस्ती

१५ विसंवर १९१३

भाईबान

तसलीम। सिखका मिले कई दिन हुए। मैं इसका बहुत मराहूर हूँ। इज्जा का कि मजामीन धीर जबाब साय साय मेरू मयर कुछ ऐसा इतकाहू हुमा कि मजामीन के साऊ करने की मौबत न धायी। उसहीनी तो मैं उरूँ धीर हिन्पी बानों धरों में एजूकेशनल गजट में डाबिबन् १५ दिन होते है, रवाना कर चुका। क्रिस्ता ठमार है। कल या परसों तक बखर-बिल-जकर भेज हुआ। नायरी प्रबारीषी में जराऊत^२ पर एक बहुत धालिमाना मजमून धया है। उरुना है। बहिए तो खमाना के लिए कुछ मये जनबान है इसी पर लिख हूँ। सख्त^३ बिल-जकर^४ हो या बहबाजत? जबाब से बहुत खल्प मुत्तिला कीविए। क्योंकि मजमून संबा है।

खमाना के लिए इंतजामात निहायत धन्धे है। इबरात एडिटर खमाना धानिबन् मुधामसाठ को राहे रस्त पर लाने में कामयाब होंगे। माला रयामलाल भादमी खहीन होनहार है। वह भात है तो बुला लीविए।

प्रेम पत्नीसी के मुताम्मिल घापने को कोशिश करमायी है उसका तहेरिल से शुक्रिया। हिस्सा ब्रोम में धाज ही भेज देता मयर मुसीबत यह है कि कुछ क्रिस्म धारियत^५ निकल गये है, ज़ाहम भी या इस यहाँ मौजूद है। बाकी घाप बराह करम या तो इरिठयाऊ हुसैन से मंगवा लीविए या बखर के। इरिठयाऊ हुसैन के पास को मुसधबा^६ है वह सहीशुवा है। मेर ख्याल में तीन क्रिसे उनके पास है १—मंकिने मङसुद २—धमावस की राउ ३—याव मही भाता।

१ बाब-बनो बनेत २ हंडी ३ जोरी ४ बखरती ५ जोरी ६ बकीदा

पल्लवारण में धाप मेरे पास मे मेजें तो ऐन इनायत हो

- १—स्टेट्समैन (या बंगाली)
 २—मार्कन रिम्पू (या कोई दूसरा रिम्पू)
 ३—बखीरा (चर्च)
 ४—धार्म गजट घीर ५—हिम्बोस्तान
 ६—कामनबीन
 ७—हिन्दी के एक या दो याहवार रिछाले

मैं मार्कन रिम्पू घीर कामनबीन को अहिच्छिन्नत ठमान रखूंगा घीर हर माह खाना कर दिया करूंगा । लीडर मिल जाता है । तर्जुमान मेरे पास समा मगर कसब बेहंगा है जहाँ लोम शतरंज घीर टेनिस खेलते हैं । लीडर सिवा फ़ानिक्नु कोई रोझाना अखबार नहीं जाता । उस पर बंदा हो माहवार ।

बच्चों के क्लासिक लिटरेचर होना बुरी है । पहले मैं एक किताब लिखे हैं जिसमें बच्चों के क्लासिक छोटी छोटी अलसत्तकी ठापीकी बुझाएँ कहा होती । किताब छोटे साइज के ६४ सुझाव से बना न होनी । अघर धा काम घीर टेक्स्ट बुक मंगूर कर ले तो फिर बुरा काम शुरू किया काम मेरे पास कुन तक बसामा आया है ।

अब मेरे पास यह पत्र आने लगे तो मैं अखबार के लिए कुछ गार्ड एडिटोरियल लिखने की कोशिश करूँगा । घीर रिछालों से बसामा के एकमात्र प्रश्नो मजमूल तर्जुमा कर दिया करूँगा । हिस्तानबीसी होठी बायन हम लोम बर्हीरियत है । बापी बनारस बाकी ठीन बाबनी यहाँ । बाब-बन्नु हुए न उम्मीद न आरजू । जिम्मेदारियों के लयाल से तबीयत पबराती है । समझ ही नहीं सकता कि अघर धाव मेरे लो तीन लड़के होते तो उन्हें सितावा घीर कैसे रखता । धापके भस्मा बाबू की सी दुर्घत होती । धापको इस मुझसे पयादा खबरवा है । बाबू राम सरन अस्ताबाव यये । बहुत अच्छा हुए अघर बाहें लो कभी मिलेंगे ।

मैं एक ० ए का इस्तजान देने मार्क में कहीं न कहीं जाऊँगा । इसमें तैयार हूँ । घीर मजदूर कायनाथ होगा । बनारस इलाहाबाद घीर कानपुर में लखनऊ—चारों में बनारस तकनीकबेह है । कानपुर में जाने-पाने की तकनीक लखनऊ में बाये इयाम कालिदा से बुर इलाहाबाद लुभीठा है । कर्ना कानपुर लीन से रहता । बहुरहाल गर्मी की ठालीन में क्याता नहीं लो पंद्रह दिन ठ सोहबत छोदी ।

धीर क्या धर्र करे । बच्चे बर्बरियत होने धीर धापका मित्रान भी बच्ची
तरह होना ।

धापका
बनपत राम

५१

स्वान-विधि नहीं
अनुमानतः बस्ती, अंत १९१३

भाई साहब

उसमीम । हुंसी पर एक मजदूर हल्क बामबा रवानये सिद्धमठ है । मजदूर
मामुक्कमल है । अभी असल मजदूर ही पूरा नहीं थाया हुआ । अब वह पूरा ही
थाये तो बसका बूसत हिस्सा भेज हुंगा । हिस्सा लिख रहा हूँ । बच्चा रवाना
करेया अगर तारीख के बाद करम होया । बच्ची धावाय नहीं थाया मामुन नहीं
क्या बात है । इसके पहले जो छत धीर मजदूर भेज चुका हूँ वह धामिबन्
पहुंचे हुंदि । प्रेम पत्नीसी हिस्सा बोन कारिब के पास पवी या नहीं । धीर हिस्से
हुंइवाने की लकमीऊ धापको उठानी पड़ेगी ।

बाकी सब बर्बरियत है । उम्मीद है धाप बर्बरियत होने । जमाना कम तक
निकमला है ।

नियामुमन्द
बनपत राम

५२

बस्ती
१ फरवरी १९१६

भाई साहब

उसमीम । मित्राश्रम मिता । जमाना भी थाया । मशकूर हूँ । मजामीन
पच्छे है । अभी सरसरी तीर पर बैठा है । मजामीन के मुनास्मिऊ रिवायत का
कोई भीका नहीं । परमात्मा धापको खाबगी परीशानियों से बल्क निजात दे ।
धामिबन् इन मजदूरों की पैरवी का बार अब धापके सर हुंगा । धीर किनके
सर ही हो सकता थ । तैर किसी तरह धापने जमाना को जिन्या तो किया ।

धन मुझे यह जानने की ज़रूरत है कि लीबायन का बर्तन कैसा है और धनी जगदी उपाय इस क़दर कम तो नहीं है कि लीबायन ही नज़र भाये ।

प्रेम पत्नीसी की जित्ने यहाँ नहीं हैं । मैंने सम्मान के नामा घरजू परताप निगम को सिखा है कि वह अपने यहाँ की जित्ने धाफ़े बपतर में भिन्नता हैं । ज़माना में पत्नीसी का इतरहार न देखकर ताज़ुब हुआ । अगर धुत्तर उड़ गया हो तो बरूहे करम फ़रवरी से बूढ़र दर्ब करत हैं ।

हिस्सा दोम के मुतास्किह—धनर इरिठ्याह इसन बाबे करते हैं तो मजबूती है । मजामीन की ख़ेरिस्त मैंने भेज दी है । कोई ठेरूह किस्ते होने चाहिए । धा मौजूब है सात धीर इतरबाबे जमाना जीविण । सिर्फ़ पुराने पर्वे ठनास करवाने पढ़ें ।

मजामीन के मुतास्किह—धनरकम मसफ़ह बर्तयापी हूँ । उला बंबहाडुर धाक़ नैपान की सबाने समरी^२ सिखाने का इतरबा है । मसामा धमा कर सिमा है । यमुत बन्व सिखकर रवाना करेगा ।

धापका
बनपत राम

५३

बस्ती

२४ फ़रवरी १९१६

माई साहब

उसमीन । मिज़ाज कैसा है ? मुक़रमे के मुतास्किह क्या हुआ ? क्या धनी तक बवा-बकिह^३ खापी है ? या नबात हो धनी ? इससे तो धाफ़े काम में बड़ा इर्ब होला होला । मुझे यह जानने की ज़रूरत है कि धनबरी मंवर का पबलिह पर क्या असर पड़ा । लीबायनों में कुछ तो बकर ही खारिज हो धने हूँबे । मगर धनकी ताबाब इतनी तो नहीं कि लीबायन ब्याबा हो ? बबमेष्ट की धरपरस्ती २५ जित्ने तक महबूब है या कुछ धीर ब्याबा हुई ? मेरे ख़याल में धनी धाफ़े इसमें कामयाबी नहीं हुई ।

मालूम नहीं इन विषों धाफ़की यानी हालत क्या है । मैं तो परीसाग्धान हूँ । धनबारी धामबनी मसबूब^४ सिर्फ़ तलक़्बाह पर पुबारा । सिर्फ़ मेरी ख़ीस धीर क़िताब बयैरूह पर एक तलक़्बाह सर्फ़ हो गयी । धीर धनी पंद्रह दिन की बससत भी पढ़ गयी । कोई पचास बाये का धीर सर्फ़ है । क्या मैं धाफ़े

तकनीक होने की कुछ सुरासत करके। अगर आप मजामीन के मुतासिफ़ उसफ़िया कर में तो इस बिल मुझे मशर मिल जाये। प्रेम पचीसी का हिसाब और आपके इराहारात का खिसाब फिर होना खोया। मैंने मजबूर होकर आपको तकनीक से ही नहीं मैं आपकी बाकरों की तरफ से बेखबर नहीं हूँ। मुझे मज़ीन है कि मुझे मायूस न होना पड़ेगा।

प्रेम पचीसी का इराहारात खमाना मुझे नहीं मकर थाया। बटाहे करम उते दे बीकिए। उम्माव के सरखू परताव के पाछ मेरी पचीस जिल्में पड़ी हुई हैं। अगर आप उन्हें मँववा लें तो बहुत खच्छा हो। मैंने तो उन्हें बिस रिवा या मगर शायद उन्हें कुछ परपाइ न हुई। कितारें बनारस में हैं इस मजह से किमहाल मेजने में तरबुद है। पचीस जिल्में को माह तक हो जायेंगी। उम्माव से तो आपके इस्तर में रोख ही कोई न कोई घाटा बाटा रहता है। हाँ आपको खयाल जाना शर्त है। एक मजबूत मैंने खमाना के लिए निब रखा है। अगर साज करने की मुतबक़ फुर्मत नहीं मिलती मजबूर हूँ। इस्तर खमाना में धावक़त क न साहब है? नहीं खलिफ़-उ-शे या और कोई। बाबु रामसरन का कुछ हाल कहिए। बाड़ी सब खैरिबत है। उम्मीद है कि बच्चे खुश होंगे।

बबाव का मुताबिर,

नियाजमन्द

बनपत राम

५४

बस्ती

१३ मई १९१६

माईबान

कत काई मिला। धात्र बनारस जाता हूँ। मैंने एक साने साहब की शागी न पूज को है। इसलिए मैंने यह बेहतर समझा है कि जून ही मैं बनारस से चर्तु और आपके मुताक़ात करता हुया शागी में शरीक होने के बाद १५ तक बनारस बापत जाना चाकें। मजामीन बनारस पहुँचकर हाजिर करेगा। मेरा पता देन है

बनपत राम

गाँव—मजुर्बा

बनारस बीर

नियाजमन्द

बनपत राम

५५

पोरबपुर

११ दिसंबर १९१६

घाई साहब

उससीप : कम काई मिला । मराहूर हूँ । वो चार रोख में कुछ इरसाने खिबमत कर्नेया । एक क्रिस्ता घोर कुछ घोर ।

दिसंबर मे ससनक बाने का इरादा तो करता हूँ । देखूँ, टैब से मख मिबरी है या नहीं । इसी के लिए कई रिखानों में भिखा । एक सख्त मे तो खबर की बुरे साहब बाहला सँने । हो सकैगा बाहला नहीं तो न सही । ठकरीर में धुनता नहीं घोर तो कोई कम नहीं । धखबारों मे पड़ कूंगा । घोर क्या कहे । जब ठक-मो-रोख की मेहनत पर यह हाक है वो मासूम होता है इफलास के कमी निबास न होगी ।

क्याब निमाख

बनपत राम

५६

पोरबपुर

२ जनवरी १९१७

घाईबान

उससीप । आपका खत मिला था । उसका जबाब जल्द न है सका । क्योंकि आप भी वो कारेस में मसकत रहे होंगे । पहले यह बताइए कि Victor Hugo की मराहूर किताब *Les misérables* का उर्दू तर्जुमा हुआ है या नहीं । अगर हुआ है तो कहाँ मिल सकता है । अगर नहीं हुआ है तो मैं इस काम में खुदना चाहता हूँ । शक भर का काम है । किसी तरह से पठा लगाकर बतलाइए । हिस्ता बोन प्रेम पत्नीसी को निकालिए । इसके कगज पर सही । जिस कगज पर धाबाब छपता है सही पर हो तो क्या मुश्याम । जल्द करना चाहिए क्योंकि प्रेम पत्नीसी भी पूरी हुआ चाहती है । शक्तिबन् पत्नीस डिस्के घोर हो चुके हैं । ज्ञ सात की घोर कमी है । इसके बाद मैं बिक्टर हूगो में खुदूंगा । 'पैके बान' की तकलीब सेबी भी मगर यह आपके यहाँ बैकार हो गयी क्योंकि किसी घुररै साहब मे भिख ही । खैर बीसा मुनासिब समझे, करें ।

बाड़ी बँटियत हूँ । उम्मीद कि आप घोर बच्चे बसैर-बो-भाकिस्त होंगे ।

निमात्रमन्त्र

अनपठ राम

५७

घोरलपुर

१४ जनवरी १९१७

बाईबाल

उसमीम । मुबारकबाणियों के लिए तहें बिल से खुलिया । मेरी जानिब से भी बड़ी दुभारें कबूल करवाराए ।

उम्मीद कि आप शादी की तकरीब से आपस या मये होंगे । कुछ इतरा शिक दिखिया । आप मुस्त के बाद यहाँ आवात देखा । फिर जिन्ना हुआ । प्रेम पनीसी के लिए जो डिस्ते चाहें से हैं । इसकी अहेरिस्त तो मैं पक्षे ही दे दी थी । सहीबकी कापिया भी मेरी थी । क्या वह कापिया इत्यक हो मरी । ईर मतसब तो तेरह कहानियों से हूँ । अगर यह हों ।

५८

बार्नेल स्टूल, घोरलपुर

२४ जनवरी १९१७

बाईबाल

उसमीम । कस ब्यड मिला । मराफूर हूँ । मनोघाईर अभी नहीं मिला । घाया हांगा । मेरे इस मनीघाबर के बाद पैठीस समय घोर रह अर्मेम । हिमाब से मिला क्षीत्रिया । मैं आरबम एक डिस्ता लिखते लिखते नाबिल मिला बना । कोई तो सजे तक पहुँच चुका हूँ । इसी बजह से छोटा डिस्ता न मिल मना । अब इस नाबिल में ऐसा भी लय गया है कि बूसत काम करने को भी ही नहीं चाहता । अगर माच के लिए दो तीन दिन में बकर कुछ न कुछ भर्जुगा । अरबरो के लिए बजबूरी हूँ । आप अगर इस नाबिल को मुसलसल देना चाहें तो बैया हो ? हालांकि मुझे कुछ दह सुरत पर्सद नहीं । मानुम नहीं जब तक सरम होमा । घोर रिसाने भी मौजूदा खत्रामत भी इस बोम्ब को नहीं सभाल सकती । डिस्ता रिमबस्य हूँ घोर मुझे ऐसा खदान होता है कि मैं बरकी बाद नाबिलनबीमी में भी कामयाब हो सऊंगा । एक बजमूब हमापी बाब तासीमो बुकरियात पर खदान

में है। बेचिए बन जाने तो भेजूं। ऊरबरी में मुझे इलाहाबाद भेजा है। सुसर साहब बहुत बीमार है। शायद इस सिनसिने में धायसे मुलाकात हो सके। बन्नु राम भरोसे के घर तो जून में शादी होगी। बन पड़ा तो बर्नूया। धनी बहुत दिन है। बच्चों की भेषक का हाथ फड़कर रंज हुआ। क्या टीका नहीं मना था? ईश्वर बच्ची को बचा करे। धन की जो हिस्सा धायके पास हो तीन दिन में जायेगा उसे धरती हुआ मिखा था मगर लीक के मारे नहीं भेजा। इसमें बाइबल बन गया है हाकिमि कुचा में और कुचा पीरे ऊरदूत^१। अगर पसंद धाने तो धायिएया बर्नू हिनो में छप जायेगा।

नियाबमन्व
बनपत राम

५६

गार्मल लून, बोरखपुर
६ ऊरबरी १९१७

मार्जान

तसलीम। दो मजमूल बिरंग भेजे थे। बबाब न मिला। माजूम नहीं पहुँचे या नहीं। तरदुद है।

धन तो जमाना ठीक बजत पर निकलने मना है। मुझे यह बालने की स्वादिष्ट है कि इस पामन्वी का तावाब करीयाउन पर कुछ ब्यसर पड़ा ना नहीं। मुत्तमा फरमाइएया।

पत्नीटी हिस्सा बोन की मिठावत यालिबन् शुरू हो बयी हनेबी। छेहठ का मिहान् रखना बकरी है। इस मिठाव की इस्ताभव में मेघ क्या समझीटा रहेया। मेरी है ना धायकी ना मुस्तरक। मुस्तरक रलिए तो धान्या।

बबाब से सख्तपत्र फरमाइएया। मैं इसी माह में माईना मगर माजूम नहीं कर।

नियाबमन्व
बनपत राम

६०

इलाहाबाद
१० ऊरबरी १९१७

मार्जान

तसलीम। मैं कम इलाहाबाद भा गया। १५ मार्च तक रहना पड़ेगा।

हिजरे सेहत^१ और First aid के मुताबिक लेक्चर होंगे। सरकार ने हर एक मार्शल स्कूल से एक एक छात्रों को उठाए किया है। मैंने बस्ती से आपकी लिखत में दो छत भेजे थे। लेकिन खराब से महकम रहा। तबकीत^२ है। खुदा न क्यास्ता तबीयत तो खराब नहीं हो गयी। और आप इलाहाबाद तो नहीं आये। मुलाकात हो जायी। मैं खुद धारा लेकिन बजुब होसी के और कोई तारीफ नहीं पढ़ती। ट्रेनिंग कालेज इलाहाबाद के पते से छत लिखियेगा। बाकी सब खैरियत है।

नियामन्द
वनपठ राम

६१

ट्रेनिंग कालेज, इलाहाबाद
९ मार्च १९१७

भाईजान

तसलीम। आज लिखत मिना। मरकूर हुआ। आपकी परेशानियों का हाल पढ़कर अछोस हुआ। क्या बच्चे की धाँक इस इतर खराब हो गयी कि तारीफ तक करना पड़ी। यही सब धयाकशायी^३ की तकलीफें हैं। आपकी आंखों से मैं समझ गया था कि खैरियत नहीं है और धरिया सही निकला। ईतर बच्चे के हाल पर रहम करे। लिखत के अन्दरबाले खुतुब देखे। खुदा हुआ। हासकि मेरे पास बहुत-सी किस्तागोई के लिये न हिमास है न बजत। धावकल अपना माविल लिखने में महक हैं। यह खरग हो आय तो कुछ और करें। हाँ 'जमाना' के लिये स्टाक मीजुब है।

प्रेम पत्रीसी हिस्ता बीम में खराब खारा खरगर्मा करमाइये। जस्ती खरग हो आय। अभी बहुत कुछ धपमाना है। अवर पहली मंजिल में इतना स्के तो फिर इतनी तन्वी खिरगो कहां से धामेयी। तारीफे यमी के पहले खरग हो जाना बकरी है। मैं खरोफ हूँ।

'प्रेम पत्रीसी हिस्ता अजल की बिस्सें भेजी आयेयी। मैंने मोरखपुर लिख दिया है। लेकिन अगर जिगी बजह से इस बजत न गयी तो मैं बहाँ पहुँचते ही भेज दूँगा। आप से भी 'यादगारे राम' की कुछ बिस्सें भूँगा। मोरखपुर के स्टेशन पर एक दुकान खुली है। वहाँ उर्खू की किताबें भी बिकनी हैं। मुमकिन है 'यादगारे राम' कुछ निकले। 'प्रेम पत्रीसी' तो बस-याँच निकल जाती है। मैं होनी की तारीफ में धानेबाला हूँ। लेकिन मेरे लिखसे हिमास में कुछ खमाना

ऊरमाइये बर्ना मुझे बोरखपुर से मंगाना पड़ेगा जो स्याबा तरहुप-उसब है। पिछला हिसाब मे प्रापको निशत चुका हूँ। घामिबन प्राप मे गोट कर लिया होया।

प्रेम पत्नीसी' का हिन्दी एबीरलन छप रहा है। छपका मरछी एबीरलन भी छप रहा है।

मुसाकत के लिए भी बहुत चाहता है। होनी में साम्ब एक दिन बहुत निकल सके।

और ठो सब बीरियत है।

घामका

बनपत रज

६२

इलाहाबाद

१२ मार्च १९१७

भाईबान

तसलीम। अछखोस है कि इस तारीख में मैं कालपुर न था सका। बहुत कोठिठ की कि घाठें लेकिल एक तरहसपुरत का तकाबा बूसरी तरह हमकुसई साहब का इस्तर। तीन दिन की तारीख में बमुरकिल तमाम इन चीनों तकाबों से नबात मिली। प्राप आना हूँ और फिर कालेब शुक हुआ। जमाना के लिए दो मजामीन तैयार है मगर बोरखपुर जाने पर राख होवे। नाबिल घामिबनु एक माह में पूरा होना और जमीन करता हूँ कि मई में उसे प्रापके मुसाइने के लिए हानिर कर सकेगा। बच्चों की नासाबी-दे-तबीफत अरब हैबाल है। बबट से मान्नुन हुआ कि घाबकल कालपुर में जेम की भी कमी नहीं है। ईरबर बीरियत से रबें। एसी कोठिठ कौमिए कि प्रेम पत्नीसी जिस्वा बीम बून तक निकल जावे। प्रेम पत्नीसी की ४४ बिन्दें भेज बी गयी है, पढ़ी होगी। और सब बीरियत है।

बसबाम

गियाबयन्द

बनपत रज

६३

नार्थल स्कूल वीरखपुर

१२ मार्च १९१७

भाईबान

तसलीम। मैं १९ को यहाँ बीरियत था गया। कई हिन्दी के मुकसेनर प्रेम-

पत्नीसी को शाया करने की इनायत मांगते हैं। मैं हिस्सा बोन का इतबार कर रहा हूँ। फिटार पूरा हो जाये तो किसी को बे हूँ। आपने होनी के बाद उसके मुतास्कि मउस्सस^१ किसने का बाया फिमा बा। धब उसे पूरा कीजिए। जमाना के लिए मउमून साउ कर रहा हूँ। तीम दिन लगेये। धमी मार्च का जमाना नहीं आया। क्या देर है ?

बाबू महताब रय सलनऊ से टाएप सीलकर बा धये हूँ। धाप इन्हें बहाँ किसी मिस या कुर्म में इन्ड्रोपुस कर सकये हूँ। धबर ऐसा हो सने तो मुन्क पर साव इनायत होगी। मुत्तिका ऊरमाइएया। फिटारें पहुँची होंगी। कपया इलाहाबाद ही में मिल गया बा। मउकूर हूँ।

कालपुर में ज्ये की क्या कीकियत है। वहाँ तो निजात है। मगर देहातों में बड़ा धोर-धोर है।
बबाब से सऊरउउ^१ ऊरमाइएया।

६४

निजाबमन्द
बनपत रय

भाईजान

गोरखपुर

२१ मार्च १९१७

उसमीम। यह मिशमने द्विबायत खिदमत में हाकिर है। कोई प्लाट नहीं है। सिर्फ जमानए मौजूद का मुरकबा^१ दिखाने की कोशिश की गयी है। जम्मीद है पसन्द धायेयी।

मुझे ४३) में से १) मिले ३३) धीर रहे। इसमें इव मउमून को धीर इनायत ऊरमाइये तो ३८) होते हैं। धबर हिन्दी शोधरा बाबा विमकिला पधर हो तो एक शायर को रबागा कर्के। बरगा 'उमुगान' में मेक हूँ।

यहाँ मेरे एक बोस्त ने स्टेसन पर उर्नू फिटारों का स्टाक खोना है। उन्हें कुछ 'जमाना' प्रेस की फिटारें बरकर हैं। बाप जेस नौ फिटारें रबागा करत है। द्विबाब मय कमीशन के सिध भेजें। बाहूँ मेरे द्विबाब में मुजर हो जाययी बाहे डीमव रबागा हो जायगी। मेघ बिम्मा है। प्रेहरिस्त हुस बैन है।

बादपारे रय
भारत धर्पन

५ मिनै
९

^१ विनामपूरक २ बम्बयकित कीरिया ३ उबवीर

ऊरमाझे वर्ना मुझे बोरखपुर से मंगाना पड़ेगा जो क्याया तरखुब-उत्तम है। पिछसा हिसाब में आपको लिख चुका हूँ। शामिलन आप ने नोट कर सिमा होगा।

प्रेम पत्नीसी' का हिन्दी एबीकन रूप रखा है। उसका मराठी एबीकन भी रूप रखा है।

मुलाकात के लिए भी बहुत आहूटा है। होती में शम्भ एक दिन बहुत निकल सके।

धीर तो सब शैरियत है।

आपका

बनपत राम

६२

इलाहाबाद

१९ मार्च १९१७

भाईजान

तसलीम ! अष्टशोस है कि इस तारीख में मैं कानपुर न था सका। बहुत कोशिश की कि झट्टे लेकिन एक तरफ़ समुदाय का उकाधा दूसरी तरफ़ हमबुक्त सख्त का इसरार। तीन दिन की तारीख में बमुश्किल तमाम इन दोनों उकाधों से नजास्त निभी। आज आया हूँ धीर फिर कालेब मुक हुआ। जमाना के लिए दो मजामीन तैयार हैं मगर बोरखपुर जाने पर साफ़ होगे। नाबिन शामिलन एक माह में पूरा होका धीर सम्मील करता हूँ कि मई में उसे आपके मुफाहने के लिए हाबिर कर सफ़ूंगा। बच्चों की नासाबी-ये-उबीकत बख्त हैजान है। पकट से मासूम हुआ कि आजकल कानपुर में प्लेम की भी कमी नहीं है। ईरबर शैरियत से रहें। एसी कोशिश कीजिए कि प्रेम पत्नीसी हिस्सा दोम जून तक निकल आवे। प्रेम पत्नीसी की उ-उ बिस्वें भेज बी मयी है, पहुँची होगी। धीर सब शैरियत है।

बस्तनाम

दियाबमख

बनपत राम

६३

नार्यल स्कूल गौरखपुर

१९ मार्च १९१७

भाईजान

तसलीम ! मैं १९ को यहाँ बनीरियत था गया। कई हिन्दी के बुकसेलर प्रेम-

पत्नीजी को शाबा करने को इबाबत मांगते हैं। मैं हिस्सा बोन का इतबार कर रहा हूँ। किताब पूरी हो जाये तो किसी को दे दूँ। थापने होमी के बाद उसके मुतासिक मुकससम^१ लिखने का बाबा किया था। अब उसे पूरा कीजिए। जमाना के लिए सबमून साठ कर रहा हूँ। तीन दिन लगेगे। सभी मार्च का जमाना नहीं थाया। क्या बेर है ?

बाबू महताब राम सबगऊ से टाहप चीखकर घा गये हैं। थाप इन्हें नहीं किसी मिल या फर्म में इम्प्लोयूस कर सकते हैं। धपर ऐसा हो सके तो मुझ पर खास इलायत होयी। मुत्तिसा करमाइएगा। किताबें पहुँची होंगी। रूपया इलाहाबाद ही में मिल गया था। मस्तकूर हूँ।

कालपुर में प्लेय की क्या कैरिडियत है। यहाँ तो निजात है। मपर बेहातों में बड़ा खोर-खोर है।

बबाब से सख्खरख^२ करमाइएगा।

नियाबमन्त

बनवत राम

६४

खोरखपुर

११ मार्च १९१७

माईनाम

तसमीम। यह 'मिलतमने हियायत' खिदमत में हाबिर है। कोई प्नाट नहीं है। सिक जमानए मौजूघ का मुखक^३ दिखाने की कोठित की गयी है। उम्मीद है पसन्द आवेगी।

मुझे ४१) में से १) मिले ३३) खीर रहे। इसमें इस सबमून को खीर इबाज फरमाइये तो ३) होते हैं। धपर हिन्दी शोधर बाला विलविला पस^४ हो तो एक शायर को खाना कर्के। बरना 'तर्जुमान' में भेज दूँ।

यहाँ मेरे एक बोस्त मे स्टेशन पर उर्दू किताबों का स्टाल खोला है। जन्हें कुछ जमाना प्रेस की किताबें बरकरार हैं। थाप बीत की किताबें खाना करार हैं। किताब मय कमीशन के निख घेजे। बाहे मेरे हियाब में मुखर हो जायगी बाहे कीमत खाना हो जायगी। मेरा जिम्मा है। प्रेहरिस्त हस्त बीत है

माखगारे राम

५ शिन्वे

भारत दर्पन

२

सीरे बरबेस	२
मसायेह् चाखण	१
हमाये-भूली	५
तरीछे दोस्तमयी	५
महादेव गोबिंद रागाडे	५
भार्य समाज और पार्लियमन्ट अन्व इश्वरराज्य	१
मुसहूये हाजी	५
उर्दू मन्त्रमूत मधीसी	२

इन किताबों के मित्रबाने में बेर न करमायें । 'श्रीम पत्रीसी' हिस्सा दोम के मुतास्किक अन्व तक जो कुछ हो चुका है उससे मुक्तिमा कर दें । मेष नाबिल अन्व रहा है । अन्व अरु इतमीमान हो बाने तो खल्प करे । तुम हां रहा है । बाह्या हूँ कि अन्व अंबाम की तरफ अर्नु ।

एक और किस्सा तैमार है । अन्व किस्सा है । मगर अरु सफरई म बेर है । अन्व भेचूमा । 'शाकिर' का 'अलफत' देखा । क्या बिधा हो गया ? भाप को मासूम हो तो कुछ उसकी कैक्रियत लिखियेमा ।

बन्नों की तबीयत कैसी है । कानपुर म जोग तो नहीं है ?

सोने बदन की एक कित्त अकर रवाना करें । यहाँ एक भी नहीं है ।

नियाबमंद
अनपठ राय

६५

सलेमपुर

बाकबाला अन्वारा इन्व्याबाय

८ जून १९१७

माई सख्त

तसमीम । भाप परसों लीटेंगे । यह खत भाप ही अस्ता है । मैं यहाँ कुछ अा फेंसा । बाकई सब बीमार हो रहे हैं । अन्व देवूँ किस तारीख तक पिएड छूट्या है । अन्व मेरी कोई चिट्ठी-पत्री अाने तो उसे गोरखपुर भेजिएमा ।

(शेप मिट गया है ।—अ)

६६

बोरखपुर

२ जुलाई १९१७

माईबाल

तबलीम : मैं यहाँ हील बूज की था पहुँचा लेकिन अभी इमीनाम से काम नहीं कर सका। आपने यहाँ किसी से इमदार^१ के मुताबिक गुजामू की या नहीं। मैंने बाला तो कर लिया है और उसे पूरा करने का खयाल भी है लेकिन नये प्रोसेस को देखकर भी डर बचता है। और इसे आप भी जानिये तबलीम करिये कि मुझे इन को हक़ की जगह बकरा है। ऐसी हालत में मैं मुन्डिल और पर इमदार आपर न कर सकूँ। हाँ बजान् प्रकृतन् के लिए हाजिर हूँ। बाला और प्रेम पचीली की कापियाँ कानपुर में एक नेटर बकन में बाल धारा है। जिस पदी होंगी। इस बकन अभी^२ फ़र्नी के बाइल मिल न सका। और तो कोई ठाढ़ा हाल नहीं है।

बारिश बुर हो रही है। बीडर आबकल कुछ घूम उ निकलना है और प्रचार में भी और है। इस बजान मामूली तबलीमों से काम चलना नहीं बकरा माना। बकरेकी^३ की बकरा है। और नया सिर्जु। उम्मीद है कि बच्चे बच्ची तरह होंगे।
निवाजन्द
बनरग टप

६७

बोरखपुर

९ जुलाई १९१७

माईबाल

तबलीम : मास्टरियल की डेहरिस्त आप पकी। क्या खबरें हैं। बजान रोम रोम न सही इबार को इबार कुछ हाल नया बस्तों में को बुरक^४ हुआ। बार नि से बच्चे को आबाइलिस की शिजायत हो पकी है। डाक्टर की बधा कर रहा हूँ। आबाइ के मुताबिक आपने कुछ तहरीर नहीं करमाया। देखने में ही नहीं आया। मैं तो अभी तक बजानी बंमट से नहीं घुटा।

आपका
बनरग टप

६८

मोरखपुर

२२ जुलाई १९१७

भारिजात

तसलीम । आप एक काम से प्रेरित मिली । वेदक धारो के ज्ञानात एक धारक की प्रमाणा से हिन्दी मे लिखे है । अब 'अपाना' के सिमे कुछ लिखने की शिक्त में है । साटरो मे फिर बोला गया । इसका अफसोस रहा । ठकुर भी की मल्लि किस सम्मीर पर की जाय । 'प्रेम पत्नीसी प्रेम मे बनी कमी बहुत मन्दा हुआ । प्रूफ अगर बहुत करार हों तो यहाँ धिखवा बीबिये और धरर इनतिपा कम नजर धार्ये तो नहीं लिखना बीबिये । धाने कामे में बेर होगी । मेरे जिज्ञाबे साबका में बाब मिनहार्ति हीमठ पाबर् ११) निरुक्तते है । इसे महसुब करके मेरे बिम्मे जो कुछ सफ़ हो उससे मुतिना कीबियेगा । हिस्ता बख्त की मरर बिम्मे दरकार हों तो भेज नूँ । हर जो किल्ले १॥) में मुसतहिर हो जाना चाहिये । आपकी बुक एजेन्सी कुछ और बनी या नहीं । बखवार 'बाबक' साकिड बस्तूर बसा जाता है, मुन्ने तो कोई लयम्पूर नहीं मकर धाता । अब मुन्ने स्टेटसमन मिसने लगा है । चाहता है कि सिखा करे लेफ्लिग मुस्लिम यह है कि मेरा कुछ न कुछ बज्ज अब हिन्दी-गरीसी में बसा जाता है । बन्ने अब शोनों मन्वो त रह है । और तो कोई ठाना हुआ नहीं । सम्मीर कि आपके यहाँ साटरी की मामूली के मन्नाता और सब कैरिबत होगी ।

निवाचमन्

बनपतयम

६९

मोरखपुर

२ अगस्त १९१७

भारिजात

तसलीम । अभी तक प्रेम पत्नीसी के प्रूफ नहीं धार्ये । प्रेम में क्या बेर हो रही है । आपका इन्तर कोई बात नहीं धार्ये । शायद आप बहुत मसकठ है । मेरी भी यही ज्ञानत है । एक किस्सा जमाना के लिए मन्त परसों तक रवाना होना । आपकी किताबों की एजेन्सी की क्या हथ हुआ । कुछ काम बना या ठकडा पड़ गया ।

घपना नामित करम कर रहा हूँ। उसे पहले जिह्मी में तबा' कराने का
 क्रम है। जड़ में तो पबनिसार घनका है।
 घपने हामात से मुक्तता करमाइए। उम्मीव है घाप बढैरियत होंगे। हम
 सोम घपची तरह है।

७०

निवाबमद
बनपठपय

मार्जान

गोरखपुर

११ सितम्बर १९१७

उसलीम। घापकी सपोठी तज्ब डाली है। मज्जुम मेजा 'सप्ट-सरोज'
 मेजा। लेकिन घापने एक रसीद की तज्बकी भी बबारा न की। घाप बकर
 घरीमुनजुर्मत है मरिम मेरे सिने एक बाक सिजना बन्ना मुयकिन न बा। 'प्रेम-
 पनीची के मुतामिलक घापन बवा कारवाई की। सज्जक बा बयी बा कानपुर
 ही में कोई दूसरा इतजाम हुषा या जमकी इरापत का खपाल ही तर्क कर दिया।
 घपर ऐसा हो तो कितानत की कापियाँ मेरे पास रवाना करमा हें मैं उन्हें घपना
 हूँ बर्ना फिर कापियाँ सपराव हो जायगी। बवाब से बल्द मुमज्जब करमायें।
 उम्मीव है कि घपाल बन्ने घपची तरह होंगे।

७१

घापका

बनपठपय

मार्जान

जिह्मी पुस्तक एजेती गोरखपुर

१६ सितम्बर १९१७

उसलीम। कम घापना काब मिला। बहुत लुग हुषा। इरबर करे जम्ब
 निरुपे। घापने बाडपट टासटायन का सवालही मज्जुम को प्रारत से निवातकर
 बनग रय निया है उसकी मुझे सज्ज बकरत है। घपर बराहे इमापन उधं मेर
 बीशिए तो मसकूर होईगा। एक मज्जुम लाला माजपत पय का है घीर दूसरा
 बिसे घीर साहब बा। दोनों मज्जुमीन इरसाम करमायें। एक हस्त में बापघ ही
 बायेने। इसी के साथ मूठ भी बा जायें ता बेहतर है।

१ बराने १ हपरा १ कजाम १ जीवनी-बाला
 ५

७२

गोरखपुर
१७ सितम्बर १९१७

मार्जिनल

तसलीम । प्रेम पचोसी घाब भेजी जायगी । मिस्टर मूंगिया के सत का बबाब दे दिया है । एक डिस्टा घापके लिए लिखा बा । वही वही भेज दूंगा । घापके मही भी वही टाया हो जायेगा । घामिबन् इसमें घाप कोई हज न समझे । कम मने काउस्ट टान्स्टाय पर सबावही मजामीन वो घापके मही निकसे है मने है । उनका एक हिन्दी एडोशन टाया करने की नीमत है । ईरप भेजिएगा । एक हफ्ते में वापस कर दूँगा । बाकी सब औरिमत है । अभी तक मुफ नही घाया ।

निवाबमंत्र
बनपठपत्र

७३

गोरखपुर
२ अक्टूबर १९१७

मार्जिनल

तसलीम । निवाब शरीफ । फिर कोई मुफ नहीं घाया । क्या एक एक अर्से में वो हफ्ते का बज्र होगा ? इस तरह वो कई महीने नन जायेंगे । हमारा स्कूल बरकिम्मती है १० अक्टूबर से बंद होगा । इस्पेक्टर छे बरकबास्त की ममी की कि इसके इम्न ही से बंद करने की इजाजत है लेकिन मंजूर नही की । इन बबह से मेरा सीतापुर जाना संसूख । अब बसतें बिन्दुनी कलकत्ते की छेर होगी । उम्मीद कि घाप बहुत अच्छी तरह होंगे ।

निवाबमंत्र
बनपठपत्र

७४

गोरखपुर
२६ अक्टूबर १९१७

मार्जिनल

तसलीम । किताबें लाहौर पहुँच गयीं । वही से भी किताबें घामिबन् कामपुर

मा गयी होगी। मैंने चाकोर तो कर लो थी। सरे बर्ज़ की लवरीगी करने का लयान बन्द रहि एथा। लाहौर वाले घीर तो धब पर्यव करतें हैं सिर्ज बही तिहरी-पत्री कन्हे भी हैं।

मजमून धमी साळ नहीं हो सका। अपना बलिख हिन्दी में लिख रहा हूँ। फुल्ल नहीं मिलती। न कोई चाकील ही पकटी है। अगर आज इधरा करता हूँ कि साळ करने में हाथ लया हूँ।

हिस्सा धमी तक बनाव बराजा साहब ने नहीं लेबा।

प्रेम पत्रीकी का बूखल एकीशन लाहौर आ रहा है। आप पबलिखर बतना पसन्द ही नहीं करते इस बब्द से मजबूतें हैं। मैं खुद पबलिखर बनने का हद सर नहीं बख्ता। मुझे दुखे एकीशन के दो ही कपड़े मिल जायेंगे। × में मिल जायेंगी वो खायर भागत से बचाव नहीं। उम्मीद है कि आपकी उबीयत धब धक्की होमी।

धकीन् बाबू बिलन नाययन को लो बाताबाबा। एथावा बसनाम।

आपका
बनपठ राम

७५

तिथि नहीं
सन्तुभास्ता: मार्च १९१५

माई साहब

लखमी। एक काठ भेज चुका हूँ। आप यह लिखा इरलाले लिपमठ है।

आप के लप को पढ़कर निहायत अकमोत हुआ। मुझे आप से कमात हमबरी है। अठ मुझने कुछ मरद हो सकी।

उसा बंय बहादुर को लवानेहुअमी लिखी है। कम परसें तक पूरी हा बाबकी। साळ न करुंया क्योंकि कई दिन की देर हो जायगी। ऊरबरी के बमाला में उछरीह की बहुत फलरत है।

मेरे मजमून के बाजकम बहुत जोर हो रहे हैं। मुबलिख है आप को खारा नजर आते हों। मुझे लिखसम्भू देखने का मौका मिला। उठे नीरीरंकर कात फलर निफलतै है। इबरत ने मेरी बवाळ के पूरे पूरे पैरेसाळ भजन कर मिये है। बनबरी ऊरबरी आप तीनों लम्बरों में यही हात है। ऊपटांग लिखा

लिखकर उसे सर्वे^१ के सिवाय से सजाने की कोशिश की है। कर्बरी के बचीरा में 'बरीफूतबा' एक मिस्सा है। लखनऊ के एक साहब ने लिखा है। इसे पढ़िये और मेरा मिस्सा 'मनाबन' पढ़िये साफ़ बर्बा मालूम होमा। 'सिर्फ़ बुखियाल'^२ म रज़ोबबल कर किया गया है। बिमात पर और न जाना जाहूँ और मबमूलनियार बनने का अर्थ या अनुम सवार।

छोटक की शाही के दो एक बरह से तबकिरे हो रहे हैं। शायद तस्तीम में हो जाये।

धर्म सख्त पक रही है।

धर्म पचीसी का इस्ताहार कर्बरी के 'जमाना' में भी नहीं है। क्यों? क्या बकरत से क्याता किन्हीं ऊपेस्त हो क्यों?

कहिये तो इन बोरियों पर एक छोटा सा सिगुखखोब? यह हजारत बिब बिब^३ हूँ। बुधा करे।

शाकिर का फ़ा नहीं है। मालूम नहीं इस बुनिया में है या उस बुनिया में। मैं कानपुर २ गई तक शायद भा जाऊँ। और बो-एक रोब सुझे सोखबठ सखखेमा।

बाकी सब खीरियत है।

घाफ़का
बनपतराब

७६

मोरकपुर
अप्रैल १९१८

भाईजाल

कल घाफ़का लिखख मिला। मिस्टर अबबुस्ता की राय पर धमल कहैमा हामाकि Supernatural element इस्लाम की बिन्गी में बाखिल है।

धेम्बबचीसी की इस्तामत^४ के लिए घाफ़ने वो सुरत सोची है उससे बल मुत्तिला कीबिए। ऐसा न हो कि ये पाबम्ब^५ हो जाऊँ। मैं हर तरह से उबी हूँ।

नाबिम के लिए मेरी राय में बाहीर ही बेहतर रहेया। वहाँ से मुझे बुध नखब मिल जावेगा जिसकी मुझे बकरत है। घाफ़ क्या कहते हैं बिन्गी को सम्मीद यहाँ भी कम है। मगर यह बाहूता है कि या तो साय बने या सखी^६

१ बोरी २ बोरी-बोरी वाले ३ बिटपिटा कायेरे ४ मन्दाबय ५ बंध जाऊँ ६ बोरी-बी

सी तकरोम^१ व ठाकार^२ हो । मैं आपका पेशरी बनना चाहता हूँ । मोत की फिक्र मारे डालती है । फिटना चाहता हूँ कि परमात्मा पर भरोसा रखूँ मगर विश मुझी है, समझता नहीं । किसी महात्मा की सोहबत मिले तो शायद रास्ते पर आये । वही फिक्र है कि मैं प्रायः मर जाऊँ तो इन बाल-बच्चों का पुरसानेहाम कौन होगा । मर में कोई ऐसा नहीं । छाटक से कोई उम्मीद नहीं रखे । बीस्तों में अगर है तो प्रायः और नहीं है तो प्रायः । और न होगा तो मेरे बाद छाल दो छाल इन बेफुजों की खबर तो ले सकते हैं । इसी फिक्र में डूबा जाता हूँ । कुछ सन्तोसा बना करने की कोशिश करता हूँ मगर कामयाबी नहीं होती । कसो किसी हुकान की कमी किसी दूसरे कारोबार की नीयत बाँधता हूँ ।

बमाना का विलसिता में भी कायम रखना चाहता हूँ मगर यह भी चाहता हूँ कि मेरे और आपके दरमियाल कुछई बदलना बर्ताब हो । इसे मैं बनाना^१ और माना^२ की हिमाकत से बेनोस^३ चाहता हूँ । और जब आपकी तरफ से बीन बैचता हूँ तो मायूस हो जाता हूँ और हीरान होता हूँ कि जब कौन-सा दरबाबा लटकटाई ।

यह मन्बून बा रहा है । पसंद हो तो लिखिएना । यह सब यही नहीं चाहता कि अपना में छपे बसिक आपको पसंद भी हो ।

प्रेम बत्तीसी के मुसम्बदे प्रायः मुझसे बना माँगते हैं । वह तो आपके अग्रहस में हैं । हाँ इस-पाँच डिस्टे जो मेरे दूसरी जाहू छपे हैं वह बरबकत बकरत में मुहम्बा कर लूँबा । अगर मैं आपकी तकदीबे इशाफत का मुन्तखिर हूँ । मुज्जसल लिखिएगा ।

हाँ प्रेम पत्तीसी हिस्सा दोम की पाँच लिखें बचापसी बाक बकर विम बकर मिबबा बीनिएना । कई बीस्तों को देना है ।

बन्सलाम

बनपत राय

७७

बनारस

२ जून १९१४

मार्जिनाम

तसमीम । आपके बी काई मिल । आपकी शिख^१ हूँ । इस खबर से निहायत तसमीन हुई । ये २९ मई को शारी से इरतान पा बना । समी को एक टोब की

१-२ देर-बरेद, प्राया बीना ३ बीटा ४ बहा ५ बालक सुत ६ टोप के सुनि

मारे नाक में बस है। मुंठी पीरखामसार साहब यरहूम की मसलगी हुस्ने छितरत^१ के मुठास्किरु धापने क्या क्रीतता करमाया है। बसब मुतिमा करमाहए। समीब है कि मम बमास कुत-यो-कुरम हाने। यहीं सब परमात्मा का कस्त-यो-करम^२ है।

नियाजमन्
बनपठ राम

१२१

पीरखपुर
९ अगस्त १९२०

माई साहब

उत्तमीम। सामिबन् भव आपको डिस्ट्रिक्ट काउन्सिल की मसलक़िबत^३ से निबात हो यमी होगी। मैं आप और मिस्टर मधुवन बसब निमय की समामतरबी^४ का कायस हूँ। आपको बाब बेया हूँ।

इसके इन्ज्म बी बिष्टियाँ सिक्क चुका हूँ। मसलबिए हुस्ने छितरत^५ के मुठास्किरु धापने क्या क्रीतता किमा है। धबर उसकी इस्तापत भंभूर न हो तो बराहै करम उसे मिस्टर रबुबदि सहाय मन्मी मबन पीरखपुर के बतै ल बापस करमा बे। मीरा म्दरसा १ मई को बंद होमा। इराबा करता हूँ कि बामपुर न बाकर निबात हासिब कर्के सेकिम इसके इन्ज्म एक माह तक न्दपीकेम यह्न का कस्त है। प्रेम-बसीसी की ठंभाठी में सब कितनी बेर है? कितने कर्के धप चुके है? मउहै करम बबाबे बत से मुमठाब^६ करमाबे। मैं १ की म्हुई से कला बाईमा। धगर बबाबे सत में देर हो तो मीरा पता नोट करमा लें

डाकसागा रामपुर

याब रामपुर

जिला धाजमपड़

मैं १ मई तक इस मोजे में रहूँगा। समीब कि आप मब बबान कुरा हूँमि।

महकर
बनपठ राम

१२२

देहपत्र

६ जून १९२०

भाईबाल

तसलीम । भाब कई दिन के बाद घायकी खत लिखने बैठे हैं । मुभाउ कीजिएगा । मैं हउदार कनकल खपीकेत बरीरहू होवा हुमा भाब देहपत्र धा गया और बहुत खरर यहाँ से भापने का कलर रखता हैं । मेरी तबीयत होपने सजर में ज्वाश पउर हा गयी । बजाय इसके कि बाबहुवा की तबदील से कुछ खयबा होता जस्ता और मुफुषाल हुमा । मुझे यहाँ यह खबरवा हुमा कि बरीर मुवाबिम के सलत तकलीक होगी है । हरवार और कनकल और खपीकेत में बहुत खपे-खपे बमर्यामे मौमूर हैं । वहाँ भाप बहुत धारम से रह सकते हैं लेकिन धपना धादमी साथ रहना कठोर है बनी तकलीक होने लगती है । खाना बाजार से भी हो सकता है लेकिन बहुत मामूली । पीटी और बाघ कोई एक तरकापे खर्च रयाबा नहीं । खार धाने में खेर हो सकते हैं । यहाँ देहपत्र में भी वही धादमी की बकल महसूस हो रही है । धनर मस्तुरात के साथ हउदार का सजर कीजिए तो खान मुलक धाये । हउदार निहमयत पुरमुलक और पुउरबा बगहू है । और तो कोई धात धम्र नहीं । मैं खो तीन दिन में यहाँ से देहनी धानप होता हुमा बल ही बापस धा जाऊँगा । सलत तकलीक हो रही है ।

बस्तलाम

धनपउ उम

१२३

मोरकपुर

२६ जून १९२२

भाईबाल

तसलीम । भापुम नहीं मैंने बापकी कोई खग लिखा धा नहीं । यहाँ ४ को धा गया और धाते ही धाते खोप बख्शा बीमार हो गया । धाजकस इमी पीटीरानी म हैं । बखसून भाउगाम पडा हुमा है । मेरी तबीयत भी ख्यों की ख्यों है । इस नदी मुनीबन से खलासी हो तो धपनी फ़िक कर्क । उम्मीद है कि धाप मय बाल-बच्चों के रुरा होये ।

पानी खुब बरमा है ।

बस्तलाम

धनपउ उम

१२४

दौराबपुर

२ जुलाई १९२०

भाईबान

ठयमीम । कम काक मिसा । दोनों कामधायियों की खबर सुनकर बहुत खुशी हुई । तमू तो मेरा खाबिर्ब ही ना ।

धाम एत को मुक पर एक सागिहार^१ मुजरा । सरीब मुम्बू मेरा छोटा बन्धा इलाहाबाद से आकर बेचक में मुमतिमा हो गया ना । उतने नी दिन एक सरीब को बुसा मुसकर खाबिर्ब बान ही बेकर छोड़ा । सखीर ने तो अपनी दामिल^२ में मुके सबा की होगी लेकिन मैं सुत हूँ कि छिन्ने का धावा बोक पर से दूर हो गया ।

इम्मीद है कि आप खुश होंगे । धब मुके यहीं मरने बीविए । इसी मोले में ।

धानक

बनपत राम

१२५

दौराबपुर

१९ अगस्त १९२०

भाइबान

ठयमीम । क्या ईस्बर के साथ बहवाय भी मुकजे कठ बायेँ । दो महीने के इरौब होने धामे हैं और धापने एक सत एक न लिया । इस समयकियत^३ की भी कोई इच्छा है ।

धमी एक मेरी वेहउ इस इतिवत नहीं हुई कि कुछ निदररी काम कर सऊँ । मयर पहले से कुछ बहतर करर हूँ । धापके लिए जो फिस्ता मुक क्रिया ना वह नातधान पड़ा हुमा है । ईस्बर से बाहा ती कल ही कल्प करके भेजूंगा । बलीनी का क्या हाल है ? कुछ और धापे बड़ी ? धरा धमाक वीमेर साहब का हप्ने में दो एक बार कटपटाइया तो सायब वह बड़ी साल के बन्धर निकल लके बर्ना एक है । और तो कोई हाल ताका नहीं है । धामकल मामू साहब का कुनवा भी बहो धामा है और छोटे भाई का भी । पर ये बहुत-बहुत है ।

बस्सलाम

बनपत राम

१२६

नार्यल स्कूल, गोरखपुर

६ अगस्त १९९

भाईबाबू

तमामीम । कइ दिन हुए बरह मिया था । बापदा पाला कुछ किसी बरह से मुक्त नहीं मिया । सिंकापन की मुधाएँ का ताकिब ।

प्रेम बलीसी हिस्सा होम छप गयी । परे पाम एक जिहा था भी मयी । सब बनताइए क्या हो । बहु हिस्सा धम्मन ललब कर रहे हैं । उनके बनेर उन्हें डरन हार बेम म ताम्मुक^१ है । बगल्ले करम मलिला परमाइए दि धमी हिस्सा धम्मन के बूम किनेने काम बाकी है । मैं लाहीर बाणों से सकल नादिम^२ हूँ । मैं बराबर उनसे ताकी^३ करता रहा इस धम्मीर में कि हिस्सा धम्मन पहले तैयार हो जायेगा । मयर सब निश्चल^४ बढानी पड़ रही है । क्या धमी मुमकिन है कि किनाब सिंकर क महीने म मुहम्मम हो बामे । बचापसी बचाब म मरुतराब छरमाइए । उम्मी^५ है कि आप मय बाम-बच्चों के मुश होंग ।

बस्मानाम

बनपन राम

१२७

गोरखपुर

२१ नितम्बर १९९

भाईबाबू

तमामीम । गन मिया । हानान लागूम हुए । मैं बाबपम एम ए के पिय तैयार हो रहा हूँ । मेहुल भी बखी मही है । इन बरह से बाप भी बहुत कम हो गया है । प्रेम बलीसी के लिए बरम बराह^१ हूँ । प्रेम के मुगाप्लिक^२ मैं बना मियुँ । मरुताब राम कमजले ही में एक प्रेम मे मास्य कर रह है । जिन प्रेम में बह है बहु बिद छा है । उबका इरासा है कि नये लकीशरों के नाब दरीक हो जाये । मैंन उन्हे बापरी मजबीब मिल मेरी है । बर कानपुर जाने पर बाबाश एा जाये तो बापको इतना हूँ । जन की क्या कीमत है ? किनेने दामे की उकरत है ? पर सब बाफे बुघ म निगा । टाटा शुगर के हिस्सों मे बापरा बुघ दिना दा मगी ? रीटन मित्र के हिस्सों का क्या हूय हुआ ?

घोर सब औरियत है। उम्मीद है कि आप बास-बच्चों के साथ औरियत से होंगे। मेरे लिये बरामे खुदा धन कोई बुधा न करें। बिस्ती बरसे मुर्दा खंडूरा ही बियेबा।

आपके यहाँ 1 Delighton's Antony and Cleopatra
2 Much Ado About Nothing

तो नहीं है। अगर हों तो मेरे पास मेघ बीजिये पककर आपस कर दूंगा।

जबाब से बरस सफरबाब फरमारें। कइकशाँ सामिबन् बन हो रहा है। बसाराँ बहुत हुआ।

आपका
बनपत रज

१२८

पोरबपुर
२ अक्टूबर १९२२

भाईजान

तुलसीम। काई मिला। मसकूर हूँ। किताने मैंने मंगवा ली। अब आप तरह न करमारें। 'बत्तीसी' आप के यहाँ पहुँची या नहीं? मुत्तला बीजिये तो यहाँ से मेघ है। आप के बजाबा साहब उटपटींग जबाब देते हैं। खेसी मजामीन की खेहरिस्त? और कहीं बजतरी बिपकायेबा? मेरी समझ न नहीं जाता। 'बत्तीसी' २३२ सफ़ह्त पर बरत हुई है। कासाय बरबना है। किताने बरबना बरत खफी है। अगर और बत्तीसी होती तो बरत बरबना होता। हिस्सा बरबन की नी यही कीमत रखी जायगी। हाँ बटिया कासाय बरामी कितानों के १) रखे जावें। अब किताने कर्म बाकी है इसका मुफ़्तमन जबाब बाहवा हूँ। इस माह न किताने टपार होमी?

'बमला' के लिये मजामीन लिखूँवा और बरत लिखूँवा। अक्टूबर २ में ईशाधस्ताह एक बिस्सा हाबिरे लिखमय होना। अब 'कइकशाँ' तो रहा नहीं 'बमला' है और लुबहे उम्मीद'।

मैंने कमकत के प्रस में १२ का गाम्भ्य कर लिया। ३) मैंने पढ़े। इन बरत अगर आप की यामी हालत खराब न हो तो आप कुछ मेरी एधानत कर्माइये। मुझे इन बरत २) की बराब बरबरत है। यह एकम मुझे बतौर कर्म के सके तो ऐन एखवाग समझूँवा। 'बत्तीसी' हिस्सा बरबन आप जाने के बाद जब हिमाब-किताब हो जायेबा तो मुझे मामूम हो जायेगा कि मैं किताने का बरत

१४२ हैं। किताब की बिट्टी में धाप २०) समूल करके तब मुझे बीजियेया। मगर धब की कमोशन में ३० फीसदी से ज्यादा न दे सकूँया। ही धपर धाप १) जिन्में दोनों हिस्सों की शरीर हैं तो ५ फीसदी कमोशन से सीविए। इस तरह धापको २२) में ३ ०) की किताबें मिल आयेंगी। बहरहाल किमी तरीके से मुझे २) या इससे कुछ ज्यादा जरूर भेजिये क्योंकि बसहरे तक मुझे ५ ०) की शिक जरूर करनी है। तंबदली के हीलों की यहाँ समाजत न हानी। धौर न धाप का प्रभने धपों के मुनासिब कोई खरना है। खाना से ख्यास सूद का मुकमान। खबाब मे जन्मी खरफखर खरमाहये कि किछ तादीन तक खिस्ती बीमा का इन्शरार करे।

बस्मताम

धमरन राम

१२६

खोरखपुर

२० अक्टूबर १९२०

भारतवासी

तखलीम। बाइ मिना। खबालनी खबाब लिख रहा हूँ। धब धाप बेक न मेरे खबोडि खनकत से लाख करने का इरासा टिप्प हो गया है। (१) धेब बुला का मखिन खर ऐमी बाने हुई जिन्से बह तबदीन तक करनी पड़े। बरबइती मसाजान मखसलन खबान करेगा। धब धाप ही की समाह पक्की रही मानी खनारम इनाहाबाब या खनपुर म प्रेम। धोटक यहाँ का यए है धौर धब शानि धन खनरत न आवे। खनारम में उन्हें ७) की पोस्ट खानमखनबासो ने धाकर की है। बहीं बपे हा है। मेकिन कल मेने 'प्रनाप' में नाइट प्रेस खानपुर के इन्वेण होने का इतिहास रखा। क्यों न हम धौर धाप मिल कर हम प्रेम की ले में। धेरें पाम १ ०) है। मजकिन है किछ करने से कुछ धौर बहमन पठेब जाये। धपर धाप को यह प्रनखानका धौर खपना हुया मानुम हो तो खने नुनानू कीजिये धाग कीमन बगैरत मय खरमाहये। तब मुझे मोखिये खीजिये ताकि मैं भी धा जाऊँ धौर मखामना मपना हो जाय। तब धोटक को खानपुर धाड़ दूँ। बह मदेबर रहे धौर धाप सुपरबाइबर, मपर धानरेरी। बीस में धाने ही यह काइ धारनी मिलेया। मैं तीन-चार दिन में खबाब का इन्शरार करेया।

बस्मताम

धमरन राम

घोर सब चौरियत है। उम्मीद है कि आप बास-बच्चों के साथ चौरियत से होंगे। मेरे लिये बराये कृपा सब कोई पुषा न करें। बिस्वी बहते मुर्दा बँडूए ही बियेया।

आपके यहाँ 1 Delighton's Antony and Cleopatra
2 Much Ado About Nothing

तो नहीं है। अगर हों तो मेरे पास भेज बीबियं फकर बापस कर दूया।

बबान से सब छुटकारा फरमाएँ। कहुकहाँ पालिबन् बन् हो रहा है। बसारा बहुत पुषा।

आपका
बनपत राम

१२८

दोरबपुर
१ अस्तुबर १२९

माईबाल

उसमीम। काई विष्ठा। मशकूर हूँ। फिटाईं मेने मयबा ली। अब आप ठरह न करमायें। बलीसी' आप के यहाँ पहुँची या नहीं? मुत्तला कीबिये तो यहाँ से भेज दूँ। आप के कबाबा साहब उटपटीय बबान बैसे हैं। कती मजामीन की फ़ेहरिस्त? घोर कहीं बजारी बिपकामेना? मेरी समझ मे नहीं आता। 'बलीसी' २१२ छपूहाउ पर खल्य हुई है। काबन् बच्छा है। फिटावत धनबला कर बली है। मगर घोर कभी हूँती तो बाम फबाया होता। हिस्ता बख्त की भी यही झीमठ रकनी बायगी। हाँ बटिया कामब बाली फिटाबों क १।) रकने बायें। अब फिठने फ़में बाकी है इसका मुत्तसम बबान बाहता हूँ। इस माह मे फिटाब तैयार होयी?

'जमाना के लिये मजामीन फिर्कीबा घोर बकर लिगुंगा। अस्तुबर ही मे ईशाफस्ताह एक विस्ता हाजिरे बिबमत होया। अब 'कहुकहाँ तो रहा नहीं 'जमाना है घोर मुबहे उम्मीद'।

मेने कबबले के प्रेत में १।२ का माध कर लिया। १०) मेने पढ़ेये। इस बन् सबर आप की माली हासन तराब म हो तो आप कुछ मेरी एपानन फ़र्माइये। मुझे इस बन् २) की बतर बख्त है। यह रकम मुझे बनीर बज दे सके तो ऐन एहसान समझूया। 'बलीगी हिन्ना बख्त राप जाने के बाद अब हिवाब-फिटाब हो जायेया तो मुझे मापुय हो जायेया कि मे फिठने का दैन

चार हैं। फिनाब की बिक्री में धारा ६) समूह करके तब मझे बीबियेमा । मगर धर की कमीशन में ३ सीमरी से पगान न ब सकूँगा । हाँ धर धारा ७) जिसे दोनों हिस्सों को नतीर में तो ४ छीमरी कमीशन ले लीविए । इन तरह धरको २२) में ३) की छिजार्ब मिल जायेगी । बहुरहात फिमो ठरीके से मझे २) मा इसके कुछ राशा जकर भेजिये क्योंकि बमहते तक मुझे ४०) की छिज जकर करना है । तंबरली के हीर्नों की यहाँ समाभन न होवी । धीर न धारा को धरन रूपों के मुनाम्निड कीई खरता है । रागन से क्याय मू का मुकमान । बधाव मे जन्मी सरकराव करमाहये कि लिप नतीर तक रबिस्ट्री बीमा का हलकार करे ।

बसनाम

धरन राव

१२६

नरकपुर

९ अक्टूबर १९२०

साईबाब

तमपीम । बाइ मिना । बधावनी जबाब मिल रहा है । धर धारा चेंक न मज क्योंकि कलकत म सास्य करन का इपया सिम्क हो गया है । १२) में ब बुरा या लकिन बंध ऐसी बाँने हुंरें जिनसे बह तबरोक तक करली पकी । बरबइते मलाजान मुडलनल बधान करेगा । धर धारा ही की ससाह पकी रही धानी बनारस इनाहाबाद या बालपुर में प्रम । छाटक महीं धा गए हैं धीर धर धामि बन कलकत न जाये । बनारस में उन्हें ७) की पोस्ट बालपंभनधामों न धाडर पके है । बही मजे हुए है । लेकिन बन धीमे प्रगाव में साइट प्रेव बालपुर, के ऊपन्य होने का इशिलार क्या । क्यों न हम धीर धारा धिन कर इन प्रम को ले में । मरे नाम ४) है । मयविन है छिज करने से कुछ धीर बहम^२ पहुँच जाय । धरन धारा को यह प्रमबामबाधीर बनना हुमा मानूम हो तो जयमे पुत्रामू कीबिये धार बीमन बगीर नय करमाहये । तब मुझे नोटिय कीबिये ताकि मैं भी धा बाई धीर मुमावना धाना हा पाय । तब छोटक को बालपुर छोड़ है । बह मैनेबर रह धीर धारा मुनरबाइबर, मगर धामरैये । धीर न धाने ही यह बाइ धाराको मियेगा । मैं तीन धार धिन में जबाब का हलकार करेगा ।

बसनाम

धरन राव

१३०

गोरखपुर

३ अक्टूबर १९२९

माईबाग

तसलीम ! खत का धमी तक इंतजार कर रहा हूँ । प्रेम बत्तीसी अब धीरे-धीरे जलती जा रही है । हिस्सा बोन की कुछ दिनों निकल भी नहीं थी और हिस्सा धम्मक धमी तक पढा हुआ है । अक्टूबर भी खत्म हुआ । अब ऐसी हम्मक में धाप मुझे प्रेम पत्तीसी के दूसरे एडीशन को पामिबन् बानपुर में खपवाने की हटविज सलाह न देंगे । मैं इसे भी माहीर से निकलवाऊँगा ।

रुहे ह्याठ इरसामे खिबमड है । हरबन्ध कोसिस की कि हिस्सा बन बाप लेकिन न बन सका । इसके बाद जो हिस्सा धापके पास पहुँचेगा वह सच्चे मारों में हिस्सा होगा । यह तो एक जगल ही है ।

बदले कीजिए छोटक न ज्ञानमददम में पत्तर रुपये की नौकरी कर ली । कलकत्ते से इस्तीफा दिया । परता यहाँ से चले । हूँ अगर हम लोगों का मुफा मसा कानपुर में कुछ है जो बायया तो बुसा सिये चले । बसते कि हम उन्हें इतनी ही तकवाह व सके । धापको धमी तक शापक लाइट प्रेम की तरफ जाने की महत्तम न मिली । कहीं से बोड़ा छा बन्ध निकाल लीजिए ।

धीरे तो कोई ताजा हाल नहीं है । प्रेम बत्तीसी का सभो रोज इंतजार है ।

धापका
पनपत टम

१३१

गोरखपुर

१३ नवम्बर १९२०

माईबाग

तसलीम ! खत मिला । प्रेम बत्तीसी छप गयी बड़ी खुशी की बात है । अब टाइमिंग छप जाये और रिताब मेरे मामन धा जाये ता दूरी खुरी हो । प्रेम पत्तीसी का प्रेमसा फिर होमा । अगर छपना मेग हो क्या ता कोई बाग ही नहीं । बहीं छपेगी । लाइट प्रेम के मुताम्मिक धापने कोई प्रेमसा नहीं किया । जब मासिके प्रेम से मुताम्मक ही नहीं है तभी तो धाप बमुर्ब प्रेम देख धाने क धीरे कर ही क्या सकते थे । हमकी कीमत बगीरह का प्रेमसा हा जाय तक मैनेजर का

मसला है ही। इसका कोई मीनेजर तो होगा ही। मासूम नहीं क्या तकवाह पाता है। घोटक को ज्ञानमदक से हटा सेना मुनासिब नहीं है। कुछ दिनों तक हम बूसरों के सहारे काम करना पड़ेगा। हमारे शरीक क्या बाबू राममरोसे भी रहेंगे। प्रस की मालियत धीरे धीरे बांटे मसार्किफ का धंधावा करके मझे मुनिमा करमाइएगा। तब मैं भी धाने की कोशिश करूँगा।

मजमून धान की बाक से खाना करता हूँ। डिम्पी म छप चुका है। शवाब बालों का सफ़्त तकवाबा बा। मपर धब बहूँ जबाब सिद्ध हूँगा। धान उँत शामा कर दें।

बकिया सब खीरियत है। मेरी सेहत बरतूर बनी बानी है। बहुत कम काम करता हूँ। एम ए का इच्छा तक कर दिया। बानीस-बचाम रुपये किनाबा में सऊ हुए। कुछ स्पेन्सर पर देख लिया तस्कीन हो गयी। बस्मनाम

बनपत राय

भापके छोटे भाँजे का सानिहा भुनकर सफ़्त रंज हुआ। किननी मुरत के बाद यह दिन रेफना ममीब हुआ बा। वह भी धासमान में न देखा गया। एरीब माँ के बिल से कोई इन बब को पूछे परमारमा उमे मन्न रे।

१३२

गोरखपुर

१ दिसम्बर १९२२

माईबाब

ससमीम। बच्चों से कोई खन नहीं आया। लाइट प्रेस का मधाममा इन्विबा में पड़ गया। तैर बल्ले बीजिए। प्रेम बलीसी का टाइमिंस धभी लगाना मही। धब तो मिन्नाहूँ देर न कीजिए। जैसा काबज दम्नबाब^० हो लेपर किटाब निबान कीजिए। लाहौर से तबाबला हो आये तो दो बार जिम्मे इबर-उपर गिम्पु के बिल भभी जायें। मरा बस्य है कि भीटर में एक छोटा ना मोटिम से लिया जाय। शायद कुछ प्रयत्न हो जाये। मकम्मम हिगाब से मुझे जम्ब मुनिमा कीजिए। मजमून पहुँचा होगा।

बस्मानाम

बनपत राय

बोरखपुर

११ दिसम्बर १९५०

भारिबाग

तसलीम । आपका इनायतनामा भिजा । जहे मसीब । बीगर समूर का बबान छीरत सोचकर बुना । मेरी सेहत ऐनो नहीं है कि बबबारी काम कर बार से सखूँ । इस खयाल से मैने एम ए का इराधा तक कर दिया है । खा टाइटिल । आपको बाबार में जैसा कागज मिले धन्ना मुए बकिमा बटिया बाउग काना पीसा मीसा सखूँ मुब नारंभी लेकिन टाइटिल पेज खपवा बीबिए धीर मिखाब की ख सौ जिखे (किस्म धन्ना ३ किस्म बोम १) माहीर मिबबा बीबिए । बीड़ के बकस में मिबबाने से किताबें बहिजाउत पहुँच जायेंगी । माहीर बालों के तक्रारों ने मेरा नाक में बम कर रखा है । बोरे में न मिबबाने बना बहुत सी किताबें खराब हो जायेंगी ।

धीर सब बीरिक्त है । मुझसेज खत कम मिलूँगा । इतबार है । इस्तीमान खेमा । प्रेम का खबाल अब शायद गया । मैने गबनमेखट के कासबाउत में खपने लगा दिये । अब बीस रुपये माहवार पर बीठे मिल जायेंगे । खपों का धन्नेशा नहीं ।

बसलाम

बनपठ राव

१३३

बोरखपुर

२६ दिसम्बर १९५०

भारिबाग

तसलीम । नीरोख मबारक । कई दिन से माऊई बीपार हूँ । बस्तों ने रिक कर रखा है । प्रेम बसीसी निकल गयी । मिहायत जुत हुआ । माहीर जिखे मिबबाने के दिये मालबाड़ी खुम्ने का इंतजार करना ही मुनासिब होना । पासम से महमूल धीर बीगर भसारिखे बहुत पढ़ेंगे । वहाँ से हिस्ता बोम की ४ जिखे भेजने के लिए लिखता हूँ । धनकरीब या जायेंगी । बाबू रजुपति सहाय धाबबल नागपुर बने हुए है । उन्हें मजामीन लिखने की धब प्रसूत कहीं । शायद इमे भी गान-कोषापरीशन समझे । बहरहाल क्यूँगा । मिस्टर इबबान बर्मा सेइर

मे अपनी मौसमों वाली नरमें बीबाबा लिखने के लिए यहाँ भेजी है। इरादा था इस ताजील में मिले वाला लेफ़्टन बस्तों में मजबूर कर दिया। धाखाइ मेरे पास बरसों में नहीं आया। अब मित्रवार्थें तो देखें। उम्मीद कि धाप बुरान से होंगे।

जगाव धीनेकर साहब से कहिए मझे प्रेम बलीधी नवीरह दुम हिसाबात से मुसलता करें। मुहम्मद हिसाब चाहता हूँ। धामदनी धीर कृष्ण का नाकि मुझे अपनी पोबीरान माजूम हो गये।

धापका
धनपत राय

१३४

गोरखपुर
३ जनवरी १९२१

जगाव भाई साहब

तलमीम। उम्मीद है धाप मे मेरे हस्त-हमतदधा * जित्नों का पामल लाहीर मित्रवा दिया होगा। इसका लिखाव भी प्रालिबन रख लिया होगा कि मजबूत का महमूम बवार न हैना पड़ क्वाह जित्नों की ताबाद में कमी-बर्ती कर ली जाय। २० फेर के पासल में शायद १ या इत से कुछ कम जित्नों धा जायें। ५ जित्नों यहाँ मित्रवा हैं। इनायत होगी। मैंने लाहीर बार्थों को भी लिख दिया है। यहाँ से जित्नों आती होगी। हिसाब से भी मुसलता किया जाना चाहता हूँ। एक मजमून 'जमाना' के लिए लिख रहा हूँ। प्रालिबन धाप को पमन्व धाए। इतरए सून टपका रटा हूँ। मपर आखिरी नहीं। नवम्बर में सम्पद धधुमहाजिद का मजमून धूव था। वो खीर बानू के मजमून से माजूम है, मगर प्रालिबनन रेंव धा गया है। जित्ना हूँ। नाबिन की हिली कर रहा हूँ। धीर 'प्रेम बर्तासी' की फिर धाए जा रही है। उम्मीद है धाप मय धमाल शुरु व शुरुम होमे। क्या इन धरीबरेदे^२ को धापके इरदा की बिपारत कमी नधीब न होयी। धरीबो से इतनी बे-नियामी। मीजा मिले तो दो दिन के लिए धसे धार्थ्ये। राज ही भर का तो बकर है। मैं तो अपनी कैह से माचार हूँ।

धापका
धनपत राय

१३५

मोरखपुर

१८ जनवरी १९२१

भाईजान

तसलीम । कार्ब मिमा । शुक्रिया । बत्तीची का पीकेट मिमा । टाइटिल देखकर रो दिया । बस धीर क्या मिले । फिटार की मिट्टी खराब हो गयी । आपने बेइतबार कायब न पाकर यह कागज इस्तेमाल कराया होया । सामिबन् फिटार की तकलीफ में हम तरह बियाइना जिखा था । और, फिलहाल बजने दीजिए । लाहीरवालों के कहेंगे कि वह टाइटिल बरस डालें । आपके यहाँ भी अच्छा कागज मिलते ही टाइटिल बदलना पड़ेगा । कुछ मुकामल होगा अगर गम नहीं । आप माच में तस्-रोऊ लायेये । अभी से दिन गिन रहा हूँ । बकर घासए । फिटारा तमाम हो गया । आप करके भेजना ।

नियारबमख

बनपठ राय

१३६

अनुमानत पोखपुर,

नतीचे इरमना कुछ तबीमत तो खराब नहीं हो गयी ।

प्रेम बत्तीची अभी तक ठीकार हुआ नहीं थायी । ८. १० बहुत क्याया तरबुख हा और जस्य उसके ठीकार होने की उम्मीद सत की सात ही जितने बटौर टाइटिल ही के लाहीर खतरा फरमा हैं । वह अपना टाइटिल आपकाकर भगवा सेगे । जबरत लेंदे । मगर लाहीर भेजिएवा क्योंकर—देखार के बसत सान की बिलों के भेजने के लिए पाँच बोरे लगेये । फिटारों अन्तर भग देना फरती होगा ताकि फिटारों खराब न हों घामानी से बस्तमाच हो जाये और रूपये बी बसम ही में भिजवाये । हममें फिटारों के खराब हो वा नहीं से तीन ही जितने ही मिलेंगी । येने लाहीरवालों को

बेने का फैसला कर दिया है और वह राबो है। मई तक सब कीमत घटा कर देंगे। बाजारों हुस्न और हिस्सा बोन बत्तोगी के बावत उम्होंने मेरा मतामबा' मिलकुस बेबाऊ कर दिया है। अब हिस्सा अम्बल के लिए जम्मी कर रहे हैं। पञ्चमी का हूके तामोऊ' और मरे मय नाबिल का हूके तामोऊ भी तैन पर धामारा है। मैं खुद अपनी जिम्मीशरी पर छरवाने की बनिस्वत यह मुधामता बहुतर ममम्मा हूँ। और घालिबन् घाप भी मुम्भवे मुत्तठिक होंगे।

इन बात का जबाब बवालपी तहरीर ऊरमाहए। और मुम्भ पर रहम करके एक रात अपने घारमियोको बोड़ी सी तकमीऊ देकर छिठावें वहाँ भिजवा दोलिए। अगर आपको हममें बवाल तरबुद हो तो मैं खुद घाकर इस काम को मंत्राम हूँ। हालांकि मुझे तकमीऊ बेहद हीसी और बेजान हो रहा है। बहरहाल जबाब का मकल इंतजार है।

जिवादा बस्त्राम

जिवाउमम्भ

बनपन राय

१३७

गोरखपुर

१५ अरबते १६९१

भाईजान

तमनीम। कई दिन हुए जनाब कबादा माहब व हिंसाव भजा वा। बचा। इस्तीमान हो गया। मैं कुछ प्यारा मऊकऊ' नहीं हूँ। तुम बन रूपय का मुधामता है। ईंता अपना माह दो माह में माऊ हो जायगा।

मैं बन तरकारी मुभाउमन स मुबुकरीत हो गया। धाव इस्तीजा भी मंजूर हो गया। वहाँ से एक हस्तेदार उदू बबवार निवापने का बस्त्र है। प्रम की भी तपारा है। नातिबन् वहाँ रूपय का भी इंतजाम हो जायगा। धर्म स यह खजान वा। अब इनके पूरा हमने के दिन आये। छिपहाल खुशुन (सी पत्रे में सिप्रिण्णा। हो कार टोड म अपने गठे हम्मान है आपकी मुत्तिया बर्बेमा। क्या कतपूर में कोर् सीमो मशीन मिल गयेगी। अगर मुमकिन हो तो मुत्तिया करमाहए। इमी हीने से उरा मुतावात हो जाये। उम्मीद है घाप खुश होगे।

घावका दुधामो

बनपन राय

१३५

गोरखपुर

१८ जनवरी १९२१

भाईशान

तसलीम । बाई मिसा । शुक्रिया । बलीची का पीकेट मिला । टाइटिस बेसकर रो दिया । बस धीरे क्या मिले । किताब की मिट्टी खराब हो गयी । घापन बेहतर कागज न पाकर यह बालब इस्तेमाल कराया होगा । गालिबन् किताब की तफ्तीर न इस तरह बिगड़ना सिखा था । खैर फ़िलहाल बचने बीजिए । साहीरवालों से कहूँगा कि वह टाइटिस बचल डालें । घापके यहाँ भी थपड़ा कागज मिलते ही टाइटिस बचलना पड़ेगा । कुछ मुक़्तान होगा मगर छम नहीं । घाप मार्च में ठस-रोऊ पायेंगे । अभी से बिन बिन रहा हूँ । खबर साइए । फ़िस्ता उमान हो गया । साफ़ करके भेजेंगा ।

नियाजमन्

घनपत राम

१३६

स्वान तिथि नहीं

अनुमानत गोरखपुर, जनवरी १९२१

.. नसीब हरमना कुछ तबीयत तो खराब नहीं हो गयी ।

मून बलीची अभी तक खैर हसकर नहीं भायी । टाइटिस देत्र में अगर बहुत ख्यास छरदुख हो धीरे पाल उसके खैर होने की सम्मीच न हो तो घाप उन की सात सी मिले बहीर टाइटिस ही के साहीर वख़्तर बहक़्ता को रवाना करमा रे । वह अपना टाइटिस छपवाकर लगवा लेंगे । खरत^१ मुम्न बख़ा^२ कर लेंगे । मगर साहीर भेजिएया नपोंकर—देवदार के बसत में या मामूनी बोरों में । सात सी मिले के भेजे के लिए पाँच बोरे लयेंगे । किताबों के सात रही काग़ज धन्धर भर देना पक़्ठी होगा ताकि किताबें खराब न हों । घापर बीड़ के बस घामानी से दस्तपाव हो पायें धीरे रूपये दो रूपये से पयास छर्र^३ न हो तो घाप बस ही में भिजवायें । हममें किताबों के खराब हो जाने का धन्देरा कम है ।... बही स तीन सी मिले ही मिलेंगी । भने साहीरवालों को खामीस छपये कमीरात

देने का फैसला कर लिया है और वह राखी है। मैं तब सब कीमत भरा कर दूँगे। बाबाएँ हूँ और हिस्सा दोम बत्तीगी के बाबत उम्हाने मेरा मतानबाँ बिलकुल बेबाक कर दिया है। अब हिस्सा बम्बम के लिए बाँटी कर रहे हैं। पत्नी का हकें तापीकें और मेरे मये गाबिल का हकें तापीकें भी मेने पर प्रामाण है। मैं खुद अपनी जिम्मेदारी पर धनवाने की बनिस्वत यह मुझामना बेहतर समझता हूँ। और गाबिलन् प्राप भी मुझमे मुक्तिक्र होंगे।

इस तब का जबाब बबापसी ठहरीर करमाइए। और मुझ पर रहम करके एक रोड अपने धानियोंको बोड़ी सी तकनीक देकर किताने बही निजबा दीबिए। अगर आपको इसम स्वादा तरबुनु हो तो मैं खुद आकर इस काम को धंत्राम हूँ। हासाकि मुझे तकनीक बेहतर होनी और बेजाल हो रहा हूँ। बहरहाल जबाब का सक्त इंतजार है।

जिवादा बससलाम

जिवादाबम्ब

पतनरा राय

१३७

पोरछपुर

१२ अक्टो १९२१

भारिवाल

तमनीम ! कई दिन हुए जनाब बबाबा साहब न हिस्सा भेजा था। बला। इमीनाम हो गया। मैं खुद स्वादा मककक नहीं हूँ। कुल दम रूपय का मुझामना है। इरादा बसता माह दो माह न माक हो जायगा।

मैं कब सरकारी मुलाजमन से मुमुकरोस हो गया। बाब इस्तीफा भी मंजूर हो गया। यहाँ न एक हुनेवार उतू धत्रवार निकालन का इस्तर है। धम की भी गपारा है। गाबिलन् यही रूपय का भी इंतजाम हो जायगा। धम से यह प्रयास था। अब इमक पूरा होने के दिन धाये। किरहाल गुनुन एसी पत्र से मिगिणगा। दो बार रोड न अपना मये हागाल से आपको मुत्तिसा कर्मेगा। क्या कानपुर में कोई तीयो मरतोन मिल सकगी। अगर मुमकिन हा तो मुत्तिया प्रग्माइए। इसी दिन मे जरा मुलाजान हो जाये। जम्मीर है आप गुरा होन।

आनका बुमागो

पतनरा राय

माईबाग

तयारीम । धाबाब के कई पत्रों का पैकेट मिला । मेराक इस धाबाब न तराजू की है और इस पर मैं धापको और पीप^१ धासिस्टीएट एबीटर साहब को मुबारकनाद देता हूँ । इसका बर्बा धब मुक्त के बेहतरतीन उर्दू धाबाबात में है । शासिकन् इरायत^२ पर भी कुछ धासर ज़रूर पड़ेगा ।

प्रेम बत्तीसी खिस्ता बोग की बिल्खें गालिबन् धापके यहाँ पहुँच गयी होंगी । कुछ मालूम नहीं आपके यहाँ से भी बखिया ५ बिल्खें गयी या नहीं ।

मैं तर्क मुताबिकत कर ही जी । धाप मुझे बहुत धरसे से इसकी तहरीक^३ कर रहे थे । हालांकि यह आपकी तहरीक का धासर नहीं है बल्कि उजतारे जमाना का । मगर किसी तरह धब मैं धाबाब हो गया । धब बतलाए क्या करें । इस और धाबाबातबीसी और कुतुबनबीसी के सिवा मैं कोई दूसरा काम करने के क्वाबिल नहीं । कपड़े बुनने के लिए तैयार नहीं । कारतहापी मेरे निये हो नहीं सकती । क्या आपका इराधा धब भी प्रेस की तरफ है । मैं चार पाँच हजार का सरनामा और धपना छारा बजत धापके मन्ज करने को तैयार हूँ बहतरे कि धाप भी मेरे मुआबिल^४ और हरीक हों । मैं धब क्याता तबखब^५ म नहीं खूला चाहता । बल्कि कोई न कोई क़ैसबा करना चाहता हूँ । येर लिए बारखपुर बभारस और कालपुर तीन मुकामात है और भी जयह बोड़ी बहुत धानानिवा^६ है खेकिन कालपुर में बिलनी धासानी नजर धाती है खतनी और कहीं निस्ली नहीं । मैं एक धाबाब प्रेस उर्दू हिन्दी और धंधेजी का खोपना चाहता हूँ जो किन्हाल महज धाब बर्क पर बसे । धाबाबाब से जसे कोई ताम्बुक न रहे । मैं धापी धोर पर धाबाबाब का काम भी कर सकता हूँ भगर यथावा नहीं । धाबर धाप चाहें तो दो एक दिन के लिए कालपुर या जाऊँ और बिल मुताफ^७ धमूर^८ तै हो जावें । साइट प्रस धभी शासिकन् फ़रोख्त न हुआ होया । धागर वह बिक भी क्या हा धो कलकत से महीन और दुबिल भंगाना जा सकता है । लीबो प्रस का इतजाम भी बरूटी है ताकि धपने बर के बाब के लिए दूसरों का वस्तनिदर न होना पड़े । मीनेजरी का काम हम और धाप दोनों मिलकर तुब कर धवते हैं । एडिटर के काम म भी हरुस इमाना धापकी बोड़ी मजद कर सकता हूँ । इस खत के जबाब का मुताबिर हूँ । धागर धापने कुछ सग्यीद न दिसायी तो और कोई

सबील सोचूँगा। यहाँ मैंने छिमाहाल एक कपड़े का कारखाना खोल रखा है जिसमें घाट करने बस रहे हैं। कुछ बसें बंदीरह भी बनवाये जा रहे हैं। एक मीनेजर पचीस रुपये माहवार पर रख लिया है। वो उससे मुझे माहवार कुछ न कुछ लक्ष उठकर होगा लेकिन इतना नहीं कि मैं उस पर तक्रिया कर सकूँ। बाबनूर मान-कोषापरोशन करने के धमी तक मैं बीतत की तरह से बितकृत मुसलमानी नहीं हूँ। धीर में चापी ठौर पर हो भी जाऊँ लेकिन मेरी बीबी को यकीन हो जाये कि धन इसी तरह उसकी शिश्यी बचर होगी तो वह मुझे इतगिब मुपाछ न करेगी।

धीर क्या धन कर्के। धाबकम एक देहात में मुकीम हूँ। सुब मायम से दिन कट रहे हैं। धाबाधी का कुछ उठ रहा हूँ। धाप लप इस पते पर रवाना करमाये

धनपत राय
माछ्त मद्दाबेल प्रसाद पोहार
उदू बाजार
गोरखपुर

तातीमी मान-कोषापरोशन के मुताम्निक धापका मानुम नहीं क्या त्रपात है। मैंने इन पर एक मञ्जमून लिख रखा है। मैं इनकी धनमी धहभियन विप्रतामी चाहता हूँ। इस्ते गीब एक छिस्वा मो तैमार है। वह मो जन्म जमाना के नय होगा।

बिवाधा बस्तमान

१३६

धापका
धनपत राय

गोरखपुर
७ मच १९९१

नारिमान

तसलीम। कस काई मिला। वो मञ्जामीन मेजे ने। छातिबन् पहुँचे होये। मैं कानपुर नहीं जा सका। कर्द दिन से बुगार की तरफतुठ हो रही है। बाबनूर म धापने यह नही मिला कि मैं क्या काम करूँगा। महज प्रम गोमकर बँठे रहना तो मेरे लिए छिबून-सा मानुम होता है। मीनेजरी बरने की मुझमें निपात्रत नहीं।

अखबार का काम कर सकता हूँ लेकिन उसकी शुरुत क्या है ? इसके मुकाबले में तो मुझे वही क्यादा मुनासिब मामूम होता है कि यहाँ से एक अच्छा उर्दू अखबार निकालूँ। मैं दो चार दिन में प्रेस बंदेराह की छिन्न में कानपुर घाऊँगा। मजबूत हो एक दिन ठहरूँगा और प्रेस मिलते ही अखबार का डिक्लेरेशन दिया जायगा। काम ही तो करना चाहिए, क्या कानपुर और क्या गोरखपुर। रोमी यहाँ भी है और वहाँ भी है। बीसत की हजत नहीं।

धीर क्यादा क्या लिखूँ। बबकते मुताआत कब बाँटें होंगी।

आपका

बनपत राम

१४०

शाल मख्तल, बनारस छिट्टी

२३ मार्च १९२१

बराबरम

तसलीम। मैं यहाँ १९ ठाँव को धा गया और पर पर मुकीम हूँ। होसी के एक दो दिन बाव कानपुर आने का कस्ब करता हूँ। जमाना के लिए 'शाल छीठा नाम का एक छिस्ता सिता है। उसे भी धाव लेता घाऊँगा।

गोरखपुर से उर्दू अखबार निकालने का इरादा खत्म हो गया। वहाँ एक हफ्तेवार अखबार को पहले बन्द हो गया था फिर बाँट हो गया और इसकी मौजूबगी में किसी बुराई हफ्तेवार की खपत नहीं हो सकती। आपके मौबवान बोस्त पानिबन् मेर ठबकुठ से बबकिल न हूँ होंगे। मैं होसी के बाद बर्नूया।

बन्नी सब खीरियत है।

आपका

बनपत राम

१४१

शालमख्तल, काशी

२ अप्रैल १९२१

मार्दान

तसलीम। मैं जादिम हूँ कि अब तक कानपुर नहीं धा सका। मेरा अखबार निकालने का मुसम्मम इरादा है बशर्ते कि काशी सरमाया ऊरहम हो जाये

घोर महत्कार काशी मिस जायें ।

वा एक रोज म उकर पाऊंया । घोर तो कोई ताका हात नरो है ।

११२ / बिट्टी-पत्नी

भायका

धनपत रम्य

१४२

भाईजान

बनारस

१४ मई १९२१

तसलीम । बर्नियत हूँ । उम्मीद है मकतब बखीर-ओ-खुशी धंजाम या मया
होया । अम-ए-उधाबुन वाला मज्जून आपने देख लिया था नहीं । अगर देख
लिया हो घोर उसने कुछ काबिले-ए-एज न हो तो बरहै करम कातिब को बं
हैं । बर्ना बिरय ज्ञानमयदान के पते से अर पास भेज दें । मैंने सार्टीफिकेट बरैय
महाशन काशीनाथ के पास भेज दिये हैं । अब उनके बचाव का मुन्तखिर हूँ ।
सेन बाबु अगर आपस घाये हों तो उनसे बहिष्पया 'मंजरी' प्रयाप के द्द्वार म
महशाय बालकृष्ण शर्मा के पास लिखवा दें । मैं उन्हीं के पास से लाया था ।
घोर तो कोई ताका हात नहीं है ।

एक क्रिश्च तापीठ-कसब लिखा है । टाकुच्छारा का महान बनना शक हुआ
या नहीं । मरा वाला आप मुज्जूम-समझे अगर महाशन जो हो बी लख मे
कोई दफावट न हुई । टाकुच्छारा मिस जाय तो मुझे आपके कर्ब के घनाका
लिखावत होयो । एवाग बस्त्रनाम । बच्चों को हुआ ।

१४३

निपात्रमन्द

धनपत रम्य

भाईजान

बनारस

२७ मई १९२१

तसलीम । भाप शायद सीधे मय होये । मुझे धात्र आपके दोनों गुनून मिले
बनोकि बाबु महताब रम्य वाला मातृब क यहाँ मरवे में बस गये थे घोर मरे काम
बिदिट्या न पहुँच सकती थीं । मैं खुद तो धामी जालपुर न था मयूंगा सेनित्र
बाजार के लिए हगुन इमराने विगतने बी बीठिया बर्बया । मर्मी इगनी सिद्दय
१ मी १४२ २ विद्वत्ता ३ बर्बर्ब

की है कि बैठने की हिम्मत ही नहीं पड़ती। महाशय जी का छत ब्रामा बा। धनकरीब बहु बाकायशा छत भेजनेवाले हैं। शिमले से वहाँ की करैबाइयों की खबर देते रहियेगा बरतें कि खिलाऊ बाबूता न हो।

बसुधाम

धनपत राय

१४४

बालभद्रानन्द, काशी

११ जून १९२१

भारिबान

उससीम। शालिबन् आप शिमले से बापस धा गये होये। वहाँ की उपबत ने तो आपको ठाखा कर दिया होगा। वहाँ तो गर्मी के मारे तबखीर हो रही है। न दिन को नैत है न रात को।

तालीमी अरम-ए-उभावुन बाला अरबुन अवर बेख सके हों तो उसके मुत्तम त्तिरक अरने फँसने से मुत्तबा कीजिएना। 'बाल छीटा' साऊ कर रहा हूँ बसुध मेबूंगा। अभी तक महाशय बालीनाब जी ने मेरे पास अरमन छत नहीं भेजा। आपके छत से मासुम हुमा बा कि जून के पहले ही इच्छे में भेज देंसे। धाब तो ११ जून धा गयी।

उम्मीद है कि धाब मय अयात कृत होंगे।

गियाबुमन्

धनपत राय

१४५

बनारस

१९ जून १९२१

भारिबान

उससीम। धाबके मुतबातिर तीन काब धाये। एक का अबाब दे बुका। दूसरे का अबाब दे रहा हूँ और तीसरे के अबाब में बलपूसे लखीर^१ हाबिर हो जाऊँगा। कस सब तैयारियाँ कर बुका बा। इकन तक मंगशा मिया बा देहात में यह धासान काम नहीं है। लेकिन शाम को छोटक भागा साहब का छत धाये कि मैं सोमवार को तुमसे मिलने धा रहा हूँ। इगलिए लखनू धो करइन्^१

रकना पड़ा। धीरे वही पहली मुघम्यन तारीख मकदूम रही। मैं २२ को बर्नूया धीरे २३ को पहुँचूँगा। पहले इरादा था कि बगाल को इलाहाबाद छोड़ दूँ और कानपुर में बकाल तय करके सिवा साऊँ। जब घाप क्रमवर्ती कि मकान भी टोक लिया गया है। यह मुश्किल भी भाषान हो गयी। जब मय बगाल के कानपुर घाऊँगा। मुश्किल हो सका तो भापको टीक बहत से मुत्तमा कर दूँगा। मकान मौनूर ही है। कोई तरक़ुब न होगा। मेरी बकरतों से भाप बरिऊ है ही लेकिन बपरत मुहान धगर मकाल मुझे पर्वद न भी धाया तो फिर कुछ तमाऊ करूँगा। हाँ धगर धाते ही धाते बकाल न मिला तो फिर मुझे धापके धर का खाना बेतकल्पुऊ बनाना पड़ेगा। वो एक दिन वस्तुएत^१ को भी एक देहकाली धीरेत की महमानबाबी बननी पड़ेगी जिसमें धातिबन् स्थाय स्थित न होनी। धाप मानन साहिबा को उधार धमबसा कर दें ताकि वह इस धामर को बताये नातास्ता^२ न जपाल करें।

म्युनिस्विल शेफ्टरी का जिऊ धाप क्रियून करते हैं। एक मुभाहिवा^३ तय हो धाम के बाद धब मैं किसी दूसरी मुभाविपन का ख्याल भी नहीं कर सकता। मैंने म्युनिस्विल मुभाविमत की कोठिख उसा हागत न की थी जब महाठय काटीनाय को मैंने कोई हठमी बना न किया था। उनके धीरे धापके यकीन दिमान के बाद फिर मैंने इस ख्याल को दिल में बपह ही नहीं री—बनीं वहाँ मुझे डेंड तो बप्या माह्वार मकाल मुगन धीरे काम हस्ते बवाहिख की धुरन पैर हो गयी थी। वह मैंने मंजर न किया। कुछ तो मुभाहरे का ख्याल था धीरे इनके बनादा धापके कब का ख्याल। महाठय को भी हमदर्शी धीरे खानामतरको^४ भी हम क्रीवम में मुर्न^५ हुईं। बस यह भाकिरी क्रीमला है। धमो बारिख नहीं हुईं हाताकि हबा न इननी द्विप^६ नहीं है। धीयर हाताय साबिक वस्तुर है। बस बनबा रहा है। बड़ी बड़ी मुशकिल ध मिलते हैं।

बिपादा बस्थनाम

नियारबपन

धनपन राय

मान छोटा तामीऊे कृष्य बाँरहू काननूर धाकर ही साऊ होंगे। धब तो यहाँ की नहीं सगना।

१. निबन्ध २. प्रकाशित विवरण ३. धरकी बाउ ४. बहूनाचना ५. महापक ६. बनीं

१४६

भारवाड़ी विद्यालय, नयापत्र, कामपुर

१ नवंबर १९२१

बराबरम

दसलीम । मुझे बपरासी की जबानी मालूम हुआ कि आपको किसी बपरासी की बकरत है । हाथिस-ए-खैका शिवप्रसाद इसी विद्यालय मे ३४ साल तक बपरासी रह चुका है । जून मे पैरों में चोट लग जाने के बाद बेकार हो गया था । धारमी दनुबेदार मालूम होता है । कम-से-कम शहर के मुहम्मदों और गनी-कूचों से बान्धित है । हालांकि बहुत अमीर नहीं है । अगर आप मुतासिब समझें इसे एक नें । धरमी इम्तहानन् एक महीने के लिए रमें । अगर इसीताम हो बामे तो फिर मुस्तजिब रमें । धार शाम को साढ़े चार बजे धाऊंगा । टासिबन् आपसे मुताकात हो आपनी बगर मेरी बबह से आप अपनी कोठ हूँ न होने बीबिएगा ।

आपका

बनपत राम

१४७

कामपुर

१६ दिसम्बर १९२१

माईबाब

दसलीम । बराबर दो तीन दिन से आ न सका । मालूम नहीं महीने सन की तबीयत कैसी है ।

दोन दिन आप के महीने मे धारा उमो दिन राम को खोने पर ये निर पड़ा । दोनों धंखुओं में सज्ज बोरा भाई और एक पुटनी भी पूरा गयी । कमर में भी चोट लगी । इन बबह न घर में महीने हैं ।

माहीर से सैयद इन्धियाब बसो ताब का एक मल धाया है । बहु प्रम पचीसी हिस्सा बीम (१।।) में छरालन कर रहे हैं और कहते हैं इन बामों मही शक के परीवार है । इनामा माहब से ताकीब छरमा में कि बहु नवम्बर क 'जमाना' और धरने 'आबाब मे हिस्सा धायम की बीम (१।।) के बजाय (१।।) बनना से बर्त माहीर बामों को शिकारत होगी । ईस्वर मे चाहा तो कम परमां तक हाबिर हो सकंगा ।

नियाबबद

बनपत राम

१४८

भारवाही विद्यालय कागपुर

२२ अक्टूबर १९२२

मार्गनाम

तमसीम । मैंने आज हस्तीना दे दिया । बहुत रंग धा गया था ।

मर वीच बिस्म 'जमाना' में निकल चुके हैं—१ 'कहे हयान' २ मुघलमा
३ नाम ज़ीना ४ तहरीर ५ मोठ । इनका जो मुघलमा मुनामिब समझे भेज दें ।

मेरी किताबों का हिाब भी धमें से मछों हुआ है । बराहें करम बनाव फ़ाजा
माहब मे बहु सीत्रिये कि बहु रिमम्बर के घासीर तक का हिाब कर दें । जनवरी
से फिर हिाब बनता हुआ । इसमें यह भी रज कर दें कि अब मेरी टिनगी जिन्ने
'बत्तीमी' और 'पत्तीसी' की बरतार 'जमाना' में है । इन तर्की-करी के सिरे मुघल
कीजियेगा । मैं जुमे के रोज़ हाजिर हूँगा । धाप धाने की तर्कीऊ न कीजियेगा ।

बाबू रघुपति सहाय का खन धाया है । धाप न उनकी खजल गरी शाय
की । इनकी रिवाज की है । खल और खजलें और रबाहरी भेजी है । जुमे के
दिन लेता घाईया । बाकी सब सीरियत है ।

धापना

बनरज राय

१४९

बालमण्डल, काशी

२६ अगस्त १९२२

मार्गनाम

तमसीम । काठ के लिए मराहूर हूँ । इनके पहल के दोनों सुनून भी सिधे
से । हिन्दी में मात्राबन भये रिवालों की भूम है । मगनऊ में एक निचन रखा है,
हुमरा बनरसे से । धाना बड़ी-बनी सी-रियाँ कर रहे हैं । मजामान की अरमाहों
रोशाना मोमुन^१ होनी है । इसीलिए जूने निगने की तरक़ खयाव ही गती गया ।
इपर रीन और बीमाय की मर्यादा की बीमाय ही में निचामन का इरादा है ।
हानाकि धापा बीमाय मुजर गया और धामी रीज भी गरी निहामा ।

मैंने मैंने बरबरा की एक जिप्य मीनो यो । बराहें करम भिजवा दें । शायी
मे जकर धापतो मुनगहिर^२ कर रगा है । धब तो बरन भी बरीब धा गता । यो

तो चाहता है कि धार्जें लेकिन मौका ऐसा है कि आपको तरबतुव और मुने तकसीफ़। सर परीशानी सही। मसबार में मब नहीं बटाना चाहता। बानु शिबप्रसाद साहब पुष्ट की तकसीब है।

हुमार्य क्या मब तक नहीं निकला।

बस्ससाम

नियाममन्त्र

बनपतराम

१५०

४६।३ मध्यमेस्वर, बनारस

११ मई १९२२

माईबान

तसमीम। कई दिन हुए एक मजमून और बत इरखाले बिदमठ कर चुका है। बबान का इंतजार है। मपर मजमून इस माह में न निकला तो बेकार हो जायेगा। मसीम फिट हो रही है। ऊपर मकान का पता है। इसी पते से बत का बबान दिने की इनायत कीमिए।

और तो सब खेरियत है। समीब है बाप भी बसेर-मो-बाकियत हागे। बाबकन बेहात से घर पर हैं।

बस्ससाम

बनपतराम

१५१

बालमहडल काशी

२३ मई १९२२

माईसाहब

तसमीम। ७ मई को शादी थी। १५ दिन गुजर गये। समीब है कि शादी बहून-मो-बुबी तक हो गयी और अब पालिसनू मीहमानों की मूरिशा भी बूर हो गयी होयी। अब तो खेरियत-ए-मिबान से मुत्तिला फरमाए। यहाँ पर खेरियत है।

बच्चों को दुषा।

नियाममन्त्र

बनपतराम

१५२

जानमल्लस बनारस

३१ मई १९२२

माईजी

तसलीम । मसरतमामा^१ मिला । कुछ कुछ हुआ । मेरी यह बदनसीबी थी कि इस मुक्त में शरीक न हो सका । एतएव सिर्फ एक है । आपने धरिये बुकाम की दावत गार्ड की । क्या पायवा । क्या अभी आपने शोहरत गंज ललीलाबाद ललीनपुर बरौख के बाइये गद्दी बैच ? एसी हामत में अब हुमनबाई^२ बेमोहता है प्नाह^३ इससे अपना किरतना ही काठी नफ़ा क्यों न होना हो ।

बाबादे हुस्न परिणाम । मैं जमाना में रिष्क का मुसखिर हूँ । मेरा न मनाबिल भी शायी हो गया । बड़े धरिये रिष्क हो रहे हैं ।

मेरे रुपये अगर बार बाइह में न देकर उसके ब्रिटिश इण्डिया कारपोरेशन के कुछ Defected हिस्से खरीद सकें तो अच्छा हो । बराहै करम लिखिएगा कि उनका निम्न धात्रकन क्या है ।

जनाब खाना माहब मुकर्रम से मेरी फिताबी के हिमाब धुरतब करने की काबीर परमा कीजिएगा । मैं जानना चाहता हूँ कि जनवरी मन् २१ म इज्जर जमाना में प्रेम पञ्चोठी सम्बल होम प्रेम बलीठी सम्बल होम की किरती जिस्से थी किरती साहीर ययो किरती साहीर स धायी किरती फ़ोरेकन हूड अब स्टाक में किरती हैं और कमीशन की मिनहार्ई के बाइ अब किरती खम मुझे मिलनी चाहिए । इसका इरतहार बन्द करार हैं । जमाना में और बाबादे म नी । मैं धनबटीब डूमरा इरतहार मेरूमा । मन् मामूम ही जाये कि मुझे आपने कुछ क्या मिलेवा ठी मैं प्रेमना कर्के कि किरते हिस्स से लखूया । जामीन हिस्सों के लिप् मुझे क्या देना पड़ेगा । इन तफ़सील में खर खोर हो लयेगा मपर मरी धानिर मैं इस इरुम कीजिएगा ।

उम्मीद है बन्ने धरिये लखू होंगे । मेरा मकान बन रहा है ।

जमानाम

धनराम राम

१५३

ज्ञानमण्डल बनारस

१६ जून १९२२

बराबरम

उसमीम । धर्सा हुआ काई लिखा था मामूम गहो पहुँचा था नहीं । बचान से महकूम हूँ । मैंने बिटिश इण्डिया कारपोरेशन के ब्रेडर हिम्सों के मुतास्किफ लिखा था । मामूम होता है कि वह क्रिमडास न मिल सकने । घबराहों में उनकी कीमत् सोनह रुपये थी हिस्सा नबर थाठी है । अगर न मिल सकें तो बराह करम रुपये रजिस्टर्ड धीर बीमा करके खाना करमाएए । कानपूर में बार बाएड के बराबर प्राधानी से मिल जायेंगे । यहाँ मैं कही धीकों में मार-भारा फिस्सा । मेरा फिर प्रेस खोलने का इरादा है । धीर धालिबन् बारबर^२ होगा । प्रेस तय भी हो गया है । सिर्फ एक रेडिस की धीर बकरत है । बाहन्वा एक मसीन ले सुँगा ।

क्रिडाओं के हिस्सा के मुतास्किफ मैंने लफ्सील से धर्ब किया था लेकिन उसका भी कुछ न मामूम क्या हुआ । जनवरी २१ से हिस्सा करना है, मुठस्सल । मौजूदात बिन्दी बाकी बडीरह । उम्मीद है कि हुआए इसके लिए लफ्सील देने की बहरत न होनी । मैं धगस्त में मिलने का इरादा करता हूँ । धालिबन् उस बस्त तक अपना प्रेस हो जायगा धीर मैं अपने धर्ब बाबाव महसूस करूँगा । उम्मीद है धाप बडीरिपत्त होंगे । धाजकस एक क्रमा लिखने में धीर अपने धर की ठामीर^२ से ऐसा मसकड हूँ कि कोई फिस्सा मिलने का भीका न पा सका । मुधाफ़ कीजिएगा ।

बचने बडीरिपत्त होंगे । बाबावे हुस्न को सेल बाबू ने पर्सब किया था नहीं ।

लैरप्रिदा

बनपठ राम

१५४

ज्ञानमण्डल, बनारस

२४ जून १९२२

भाईजान

उसमीम । धग्से से हाजान न मामूम हुआ । मुतरदिब^२ हूँ । यहाँ बाबू शिव प्रसाद धी में ज्ञानमण्डल का एक लख से शिकस्ता^२ कर दिया । नसारा ही रहा था । इनतिग सब धार्धमियों को धमहुवा करके धब निक एक एडीटर रह गया है या एडिटर का काम ठेके पर करने का इंतजाम करना । मेरे लिए बिद्यापीठ में

इंतजाम हो रहा है। पर मैं वहाँ जाने पर राजामन्य नहीं हूँ। अपना प्रेम बोलन का मुमम्मम इच्छा है। यहाँ एक प्रेम—सकड़ी के सामान धीरे टाइप दो हजार रुपये में मिले हैं। अभी मिले तो नहीं मगर मिलने की पूरी उम्मीद है। अब एक ट्रेडिंग धीरे एक मशीन की उबरन है। सोमवार को इलाहाबाद जाऊँगा। मुझे मैं थाया है कि वहाँ बहुत दोनों चीजें बिकरत हैं। अगर मिल गयी तो मेरा प्रस तैयार हो जायेगा धीरे धरना काम जारी कर दूँगा।

दिनांक के हिसाब में ११ दिसम्बर तक मेरे दलनर जमाना पर १ ३॥) निकले। इस हिसाब का ३१ मई मन २२ तक मुकम्मल करा दीजिए। मुझे मजा कीन के मुनाम्मिन मिनमुमला^१ पेनीम रुपये के बीच मिले थे। इसके बाद मने एक मटमून धीरे लिया। इस तरह मजाकीन को मत्र म मुझे ६ धीरे मिलने चाहिए। १२३॥) तो यह होने है। जनवरी से ११ मई तक की बिजली के सामिचन बुद्ध धीरे निराम धारों में। इस बजल में धारको नरकीठ नहीं देना चाहिए या पर उबरत मन्न मत्रबुर कर रही है। मुझे प्रेम के लिए पाच हजार दरकार होंगे। प्रेम जमाने जमाने एक हजार लग जायेंगे। प्रेम को बमान क लिए एक हजार की जिफ धीरे है। मने बार हजार का इंतजाम कर लिया है। एक हजार मेरे इंदीपी भाई मात्रबु के रहे हैं। अभी कम धार^२ कम एक हजार की धीरे उबरन है। धारने यहाँ मे मान की मिन बाध तो गोया एक धीरे मे सेरगह ईगह ट्रेडिंग का दाम निराम धारों में। अगर मुझे मानुम होना कि इस दरर मन्न मुझे प्रेम लेमना पदगा तो मने तामीर मवान में हाथ न लगाया होना किमें अभी तक तकरीबन दो हजार मत्र हो चुक है धीरे प्लास्टिकिंग अत्रा बपरह का काम बाती है। यह ममभ लाबिए कि प्रम मन्न जान के बा^३ मने धररगण्ट म तक कोही भी न रहुगी। इस दाक पर धरना मत्र बुद्ध रयकर जिस्मन बाबमा रहा हूँ। देगुं क्या मनीया होता है।

मे जानना हूँ कि इस बजल धारके हाथ छासा है। नात्रिम हूँ कि धारना तकरीबन के रहा हूँ। पर उबरन मत्रबुरन यह मत्रों मुझे सिगवा रही है। मुझे यकीन है कि मान के धरर मे हम बाबिन हो जाउंग कि पर बीने दो इ^४ भी पैश कर मरुं। जाना-बाना म मन्नत^५ उम्मीद नहीं। बउ र^६ निर निराम। छोटा के पाम बार दीध भी य बउ मवान की मत्रर हो मने।

मे उम्मीद करना हूँ कि इलाहाबाद मे दाम पर मन्न मशीन धीरे ट्रेडिंग का दाम बजाने बजल धारके यहाँ म रुपये मिन जायेंगे। बिचार रपुवति मत्रम जेम में है। मत्रों तो उममे भी मने मान की बमून हो जाने—नैर।

१५३

जानमस्वस्त, बनारस

१६ जून १९२२

बराबरम

तसमीम । घसईं तुषा काईं सिखा वा मानुम नही पहुँचा या नही । बबल से महकूम हूँ । मैने ब्रिटिश इण्डिया कारपोरेशन के डेप्यु हिस्सों के मुतासिक सिखा वा । मानुम होता है कि बहु फिलहाल न मिल सकने । बबलवालों में सन्धी कीमत सोलह रुपये की हिस्सा नबर घाटी है । घवर न मिल सकें तो बराबर करम रुपये एडिस्टर्ड और बीमा करके रवाना करयाइए । कालपुर में बार बाइक के खरीदार आसामी से मिल आवेंगे । यहाँ में कहीं बैंकों में मारा-मारा किस्सा । मेरा फिर प्रेस खोलने का इरादा है । और गार्सिबन् बाराबर होया । प्रेस तब भी हो गया है । सिठ एक ट्रेडिस की और बकरत है । बाइसा एक मरीम से खूबा ।

किताबों के हिस्सा के मुतासिक मैने तफ्तीस से घर्ब किया वा मेडिसिन ससका भी कुछ न मानुम क्या तुषा । जनवरी २१ से हिस्सा करना है मुफ्तसम । मौजूदा बिक्री बन्की बगैरह । उम्मीद है कि बुबाय इसके लिए तकनीक देने की जरूरत न होगी । मैं घमस्त में मिलने का इरादा करता हूँ । घासिबन् सस बहुत तक अपना प्रेस हो आवगा और मैं अपने ठई आबाद महसूस करूँगा । उम्मीद है आप बखीरियत होंगे । आबकल एक तुषा मिलने में और अपने घर की टामीर में ऐसा मयकूठ हूँ कि कोई हिस्सा मिलने का मौका न पा सका । मुघाफ़ कीजिएवा ।

बच्चे बखीरियत होंगे । बाजारों तुल्य की सेन बाबू ने पसंद किया या नहीं ।

खरबरीश

बनपत राम

१५४

जानमस्वस्त, बनारस

२४ जून १९२२

भाईबान

तसमीम । घरने के हालत न मानुम हुए । मुतरहिब है हूँ । यहाँ बाबू सिध प्रसाद जी में जानमस्वस्त को एक तरह से सिफ्तता कर दिया । तमारा हो रहा था । इसलिये सभ घाबमियों को घमहवा करके घम सिफ़ एक एधीटर रह गया है आ एडिटिय का काम ठेके पर करने का इंतजाम करेगा । मेरे लिए बिछापीठ में

अंतर्ग्राम हो रहा है। पर मैं वहाँ जाने पर राजामन्द नहीं हूँ। अपना प्रस सौतेले का मुमम्मम इरादा है। यहाँ एक प्रस—सफ़ाई के सामान घोर टाइप को हजार रूपय में मिले हैं। अभी मिले तो नहीं मगर मिलने की पूरी उम्मीद है। अब एक गिरिन और एक गछीन की बकरी है। सोमवार को हलाहाबाद जाऊँगा। मुनन में धाया है कि वहाँ बह दोनों बीजे बिकाऊ हैं। अगर मिल गयीं तो मरा प्रस पैवार हा जायेगा और अपना काम जारी कर दूँगा।

किराबां के हिसाब में ३१ दिवम्बर तक मर खजुर उमाना पर १ ३॥) निकले। इस तिनाब को ३१ मई तक २२ तक मुकम्मल करा दीजिए। मुझे मजा मोन के मन्तविक मिलबुमरा^१ वीनीम रुपये के बीच मिले थे। इसके बाद मैंने एक महमल और दिया। इस तरह मजामीन की मद म मुझे ३) और मिलन चाहिए। १२३॥) भा यह होने है। जलदरी से ३१ मई तक की बिड़ी के घालिबन् कुछ और निबल घागे। इस बकन में घापको मचभीऊ नही देना चाहना या पर बकरत मकन मजदुर कर रही है। मुझे प्रस के लिए पाँच हजार दरकार होंगे। प्रस बनने जमाते एक हजार मस जायेंगे। प्रस को बनाने के लिए एक हजार की टिक और है। मैं चार हजार का अंजाम कर लिया है। एक हजार मर इसीसे माई मायब दे रहे हैं। अभी कम घड़े कम एक हजार की और बकरत है। आपसे यहाँ से मान भी मिल जाय तो गोया एक छोटे म सचमद ईगद टुडिन का काम निबल घाय। अगर मुझे सामम ज्ञाना कि इस हरर बन्द मुझे प्रस मोकता पडगा तो मैंने तामीरे मदान में ज्ञान न लयाया होगा जिसम अभी तक लकरीबल दो हजार मऊं हो चके ह और प्लास्टरिंग फ्रत बरीरत का काम बारी है। यह ममक संभिए कि प्रस मुन बान के बाद मेरे घरादलन म एक लोही भी न रहेगी। इस काम पर धानना सब कुछ खजुर डिम्भन घायमा रहा है। देनू क्या मनीमा होना है।

मैं जानता हूँ कि इस बकन आपके हाथ लागी है। मारिम हूँ कि आपको सबमाक दे रहा हूँ। पर बकरत मजदुरन यह मनें मध्ये सिगबा रही है। मुझे यकीन है कि मान के बन्दर में इस शक्तिन हो जाऊँगा कि पर बीठे से बाई मो पैग कर मरूँ। माता-जाना से मुनमकने उम्मीद मरा। बडे रन्धिर निबल। घोटा के पाम चार पाँच मो ये बह मकाल की नबर हो मने।

मैं उम्मीद करता हूँ कि हलाहाबाद में धान पर कमे मरीन और गिन का काम बुजान बकन आपके यहाँ में खपद मिल जायेंगे। बचारे रपुर्वन मगाय प्रस म है। मरी तो हमसे भी मेरे मान भी कमुम हो जाने—मैर।

बच्चा बच्ची तरह है। मैं आबकलम अपना गया गाबिल गोराए बाफियत साफ सिद्ध रहा हूँ। एक हिन्दी कामा भी सिद्ध रहा हूँ। इस बच्चा से क्लसर्स की तरह लकीयत माइस नहीं होती। मेरा इरावा है कि अपने प्रेस में 'संसार इशान' चीरीब निकानू को *Peeps At Many Lands* के बंग को फिताये होंगी। यह शैशान हिन्दी में छाती है और शालिबन् इसको बकरत भी है। हिन्दी पुस्तक एजेन्सी से तय हो गया है कि वह मेरी फितायों को चाभीस छी सभी कमीशन पर दक-मुस्त गान्न छरीब मिया करेयी।

सम्मीद है कि यमने-लीर^२ होंगे।

निपाबकेठ

बनपत राम

१५५

बनारस

७ अगस्त १९२२

साईबान

तसनीम। इस तरह बहुत परीशान रहा। यहाँ ज्ञानमण्डल से फमहवा हो गया। बाबू साहब ने स्टाफ कम कर दिया है। मुझे बिद्यपीठ क स्कूल महकम की हेडमास्टरी मिल गयी है। शाना बाना बहुत दूर पढ़ता है। प्रेस को यहाँ मिसन बाना या उसकी तरह से मामूली हुई। मासिक के एक सञ्जीव ने छरीब मिया। इलाहाबाद में महीन है अगर बहुत दिनों की चली हुई है। ट्रेडन है। एक साहब का भेजा था। वह देख आये हैं। अब मे कम मिसत्री को लेकर खुद बाऊंगा और मिसत्री ने मुबाकिर राय की तो कीमत बगीरह तय कर रूया। नानपुर शाना अब मेरे लिए मुशकिल है। मकान तैयार हो जाठा है तो घर ही रूँवा और लौट आया करेना। अब परदेस का इस्ते^३ नहीं है। मुझे यहाँ लछा प्यारा न होगा तो मुद्रताम का धरिता भी नही है। कुछ पब्लिशिंग का काम शुरू करेना। इनच बिलकुल बाहर के काम का सहाय न रहेया। महीन को ह्जार के एक प्रय रीब धाप भेगी। महीने में छातीस बबैरह मिशनकर शालिबन् २४ प्रारम निकल सकेंगे। बारह प्रारम मैं पुब छानूंगा बारह प्रारम के लिए बाहर का मुन्तबिर रहूंगा। हाँ जब बाहर से आना पड़ेगा। आपने बाबू शालिबन् कफकता रूँत होने के लिए भेज दिये होंगे। जाहीर ने धमी तक लत का बचाव नहीं दिया। नडे इबरात है। तीन ही मिस्रें इन्प्रारमा चाहते हैं। सरे इरनेस की मुझे सग्न

बकरल है। अगर एक जिम्मे भी मिल जाती तो काम निकल जाना। धारके यहाँ एक जिम्मे बकर निकल जायेगी। मुझे धारियजल दे दें। तर्जुमा करके लौटा लूँगा। ज़मीन है कि धाराल खुश होंगे।

धारके यहाँ मक़दम है एक प्रेसों की अहरिस्त थी। बराहें करम मेर बाबिये।
बस्नलाम

नियोजक
बतारनराम

१५६

धारा धारन बबोर बीर
बनारस शहर
१४ सुलाई १९२२

माई साहब

तमलीम। इलाक़ातलामा मय भैक निमा। मठकूर हूँ। मूर बकरल सं स्वाश है। जमाना के सिने को कुछ निमा है वह बन मेर लूँगा। निमाओं का निमाव ताहोर मे मानेबाला है। शाब्द हो बाग़ रोड में बा बाये। बिद्यार्थ में मैं धारकी शेर पर हो गया हूँ। बाबू भगवानलाम जी मे स्तुत का हिस्सा मेरे निपुन कर दिना है। दखल नहीं देते। इस निपे कोई तरबुद नहीं। जनसंख्या में भी बाड़ी धाराम था। बिद्यार्थ में निमान का भीडा है। बीर धारम था। मुझे मार बाड़ी स्तुत में निमकी तरबीड हूँ उनको नहीं बीर हा ही नहीं लकनी। मानुस नहीं महसूस के मेरी क्यों धनबन हो गयी।

अन मे बनन पठेदल निमा। धक की इनबार को इलाहाबाद गंग था। मरीमें दो देनी। एक बघी थी। अगर जोमन तीम लडार। इस निपे लौनों मे लरीने को मसाह नहीं थी। वहाँ मे बापन धाने पर मानुस हुआ कि बमारम ही मे एक बापलामा मुनपन विक रहा है। धक इनमे बाग़बीन हो रही है। बटन कई गयी है अगर अन हो है धोर मुजर्कल नामाल है। हेमू का मरीम होना है। नाम का मुझे भरोला है। मैं ॥२॥ को निमाओं का एक निपनिमा निमानन का बरुद कर रहा हूँ। गणितन हरदुमरे मरीने हीम एक निमाव निरम बायेगी। मुझे ४) निम जायेगे। अम की धारई बरीदक मह इस में निरम बायेगी।

यहाँ बाबूकम है मगर पब्लिशिंग काफ़ी है। गया नाबिल एक हजार निकल गया। अब क्रिस्ती का मजमूदा^१ निकलनेवाला है। मुझे मायूस होता है कि शायद एक नाबिल और प्रख्यात सिद्धांत में खानानसोन^२ हो सकता है। हस्ते बकरत घर बैठे मिल जायगा।

यहाँ बारिश ने नाक में हम कर दिया। 'बाबारे हुस्न' का रिज्यू बकरत कर दिया। साहीर से 'हजार वास्ता' निकल रहा है। एक क्रिस्ता बहुत इंसान के बात मेंने भी सिखा है। बच्चे प्रच्छी तरह है। उम्मीद है घाप भी मय घवान कुरा होंगे। क्रिस्ता मुकर्रम^३ व मुयबजम^४ की कैफियत से घाप ने मुत्तमा नहीं किया। सहा हो गयी या नहीं। बरबीज सेन ने बाबारे हुस्न का पसन्द क्रिमा बा नहीं। मैं उनके ईससे का मुत्तदिर हूँ। धीर सब ईरवर की कृपा है। बग्याष्टमी में सखनऊ क्रियों से मिलने काठगा। उस बकत घाप से भी मुत्तमात होगी।

बस्तनाम

बनपठपय

१५७

बनारस

१६ सितम्बर १९२२

माईबाब

तमलीन। काठ विधा। प्रक बापस है।

नामा कासीनाब की हिन्दी क्रिस्ताब तारीख से मूँही पढ़ी हुई थी। इस पर मैंने रिज्यू कर दिया है। क्रिस्ताब प्रच्छी है। एक सिद्धांत हो गयी। मैंने जो क्रिस्ताब लिखे है उसमें 'प्रम पचीसी' या 'जमाना' के बज़र से घाई हुई क्रिस्ताबों का हिसाब शामिल नहीं है। बज़र के क्रिस्ता मेंसे २४ क्रिस्ता प्रम पचीसी की है मेरे क्रिस्ता बज़र की मुरसमा बुगुब।^५

मैं कुछ ऐसी कोशिश में हूँ कि मजामीन का सिमसिमा न हूँ। बाबूकम कुछ तो कुछ पकठा है कुछ बकत नाबिल की तैयारी में निकल जाया है। 'प्रठाप' के खास नामर के सिमे भी एक मजमून लिखा। यह कभी क्रिस्ता से नहीं क्रिस्ता बुरसे मजमून से पूरा कर्हेगा।

कोशिश कर्हेगा कि १२ को सखनऊ घाई। बरबीज घाईगा। लकिन टहरन का ठिठाना कर्हीं होना? सब पहले से तय कर बीजियेगा।

घापका

बनपठपय

१५८

धामा नगण कबीर बोरा,

बनारस

१ अक्तूबर १९२२

मार्द्दान

तसलीम । बामाना के लिए एक मजदूर लिखा था । उसका हिन्दी तबना कलकत्ते के एक रिहाले में निरुत्ता था । मैं मजदूर साक किया मगर हिन्दी में निरुत्तने के ठीकरे ही बिन उसका ठरुमा साहीर के प्रताप में नजर आया । इसलिये उस क्रिस्ते को न मज सका । संभूक में साऊ किया हुआ पडा है । हात्तारि साहीरी ठरुमा बिलखुद भग्वा है मगर निरुत्ता तो बही है । अब कुछ धीर निरुत्ता ।

प्रेस का सामान कुछ बलकत्ते से भेगवाया । टाइप का घाडर दे दिया है मगर मशीन अभी तक नहीं मिली । Woodroff & Co से बत-किताबत कर रहा हूँ । डाविडन् बही से मिलेगी । इसमें एक दो माह का सर्वाँ बकर समेया । मगर धापको किसी मशीन का पठा हो तो मुझे इतना बीमिण्या । प्रेस धुना धीर में कर बीद्य । बामाना में कौशिक भी का क्रिस्ता बूब था । बवान का क्या कहना । सरदार मरदूम का बच्चा पाका उठारा । हिन्दी में कौशिक भी इतना बच्चा नहीं निरुत्ते । उम्हें मेरी तरफ से मुबारकबाद ।

बचा साहब क्रिस्ता की सहायगी की लवर बाइसे इतमीनान हुई । उम्मीद है नइके बच्चा ठरुह होंगे । यहाँ भी सब त्रमित है । छोटक बच्ची ठरुह है । नाना साहब तहरीक सामे हुए है । उनके खानदान में खानगी बंम शुरू हा मवी । धाई-बन्दी से उनकी तनहाधुरी^१ में बरमित हो सघी । अब बटवारे का ममला बरपेत है । मेरे मकलम में हुस्नाइ हो रहा है । जम्माष्टमी कटीब था रही है । मुसम्मम इराधा है कि इस तादीन में धापसे मुनाकत करेँ । डिन्वी वा एम्ब २ मही । रस्मे मुनाकत इयम रहे ता बेहतर । धाप तो मुनुब है । शेर । प्याम कुर्प पर जाते है कुर्पा नही बीड़ा घाटा । बाजित में नाक में बम कर दिया । अरत को भी मुकराम पहुँचा । धापका यह मुनकर सुती होपी कि प्रेमाधम की १२ बिन्दे निकम भयो । अब दूसरे एडीशन की तैयारी है । धीर सब ठीरित है ।

धामना

मनपठ राम

१५६

घाया भवण कबीर खीर ।

बनारस

७ नवम्बर १९२९

भाईबाब

तसलीम । मुबारकबाद । इधर धरें से आपके हुस्तात मालूम नहीं हुए । मैंने कुछ कोई बात नहीं बिचा । इसमिए शिक्षायत की मुजाइस नहीं । परमारमा आपको कानपुर का पंगा प्रसाद बर्ना बनाये । उम्मीद है कि बाल-बच्चे अच्छी तरह होंगे । यहाँ भी खीरियत है । अभी प्रेस कमकते से नहीं घाया । हायब इस माह के आखीर तक आ जाय । मैंने इधर कोई ऐसी चीज न बिची जो जमाना के आबिल समझता । और रिसाओं में तराबिम कद्दामियाँ बे दिया करता हूँ । आपको कुछ प्रोरिबिमल बेना चाहता हूँ । पाबिलमिगापी स्कूल धीर बर के मंडस्ट—यह सब परीशान किया करते हैं ।

बेहमी म एक बुकसेलर है । उनके पास बैन की किताबें बबरिवे की पी बिबवाने की इनायत करें । (सायब यह क्याबा बिबनें खरीदें । पठा यह है)

Messrs Gupta & Co

Publishers, Booksellers & Stationers

Egerton Road

Delhi

प्रेम बचीसी हर बो हिस्ता

प्रेम पचीसी हर बो हिस्ता अगर बस्त्याब हो सके । सायब यह इधका बूसरा एडीशन निकालने पर रजामन्व है बर्ना हिस्ता दोम ही यही ।

जबाब धीर बीगर हुस्तात से मुत्तिसा क्रमार्थे ।

मियाबमन्व

बनपत राय

१६०

बनारस

२ दिसम्बर १९२९

भाईबाब

तसलीम । फोड़ों में आपका पीछा पकड़ मिया है । अभी तैम बाबू को निरमा सब बही शिक्षायत आपको पैदा हुई । और यह मुनकर इरीमान हुमा

हुआ कि जब अकम मुखयित हो रहा है। परमात्मा कहे आपको अप्प सेहत हो। यहाँ जो ईश्वर की कृपा से सब खरिपत है। हूँ छोटे बच्चे जो खोसी घाती है। प्रेस इन्डियन से रवाना हुआ है। सायब रिसेंबर के भाखीर एक यहाँ घाने। मकाम बार हो गया है। मैं धाबिक बस्तुर विद्यापीठ में हूँ। जगाना ने हूकरते मियाज की खूब कनई खोसी। देवू हूकरत क्या बबाब हैं है। यहाँ जालमएकम की तरफ से एक धरिनी हूकरतार निकामने की तबवीज बरफेस है। मुरी मीबत राय साहब का तल्लुक सो एक धबब धकवार से नहीं रहा। क्या कर रहे है। आप बनारस धाले ही धाले रह गये। क्या इरदा ठरक कर दिया ?

बच्चों को हुआ। वेन बाबू तो धब ठमार हो रहे हाने।

क्यादा बस्तमाम

निबाजम

बनारस

१६०

काली विद्यापीठ, बनारस

१७ फरवरी १९२३

बाईबाल

तमजीम। एक मुद्रत के बाद आपने मात्र करवाया। मममून है। मैं बरिखित है घोर धम्मीर करता हूँ कि आप भी बलीर-धो-धरिगत है। मैं धबहबे नागिम है कि बमाना के लिए धमें स कुछ न सिध कवा। बार बार इरासा करना हूँ सेधिन कमी ता बरत नहीं मिलना धीर कमी मजमून नहीं मूमना। हिन्दी रिमानों में निगन के बाइस बचन ही नहीं निगमना। फिर धयना क्या नाबिस भी लिपता पाहता है। बमाना को फिर लुकमाल वा धामना करना पग। धकमोन है। उरू में सायब धबदे रितालो वा ज्ञायम एरता धीरमुमजिन हो गया है। पात्रुम नहीं दमका क्या बाइम है। उरू पत्रुमेबालों की धागाध सो बम नहीं है धनिन गादिबन् मब मुद्रन के पत्रुमेबाये है। मबका बाबए नामानिमारी है। सभी धकमे बरत है पत्रुमेबाया कोई नहीं। धब इलाहाबाद में एक नया रिमाना 'धार्मा निगमने नामा है। देरू यह रिगने रिनों धराना है।

आपने मुमम मुद्रा में रिग पार्टी में हूँ। मैं रिनी पार्टी में भी मनी है। इमनिए कि दोनों में मैं कोई पार्टी कुछ धयनी धाय मने बर रही है। मैं ता उम धानगालो पार्टी का मम्बर हूँ जो नोभट्टमाना को मियागी नामाम वा

अपना दस्तूर-उम अमम^१ बनाये। स्वराज्य-विभाषण पार्टी की जाति से जो कान्स्टीच्युशन निकला है उससे अममता मुझे कुस्मी^२ इतफ़ाक^३ है। मगर ताल्लुब यही है कि यह एक पार्टी से क्यों निकला। मरे खयास में दोनों ही पार्टियाँ इस मुआमल में मुताफ़िक^४ हैं।

जिस मजमून का साथ जिक्र क्रमाते है वह पहले बनारस के मर्यादा में निकला था। उसके बाद हज़ारदाम्ता में छाया हुआ। इसके मुतामिलक आपने ताल्लुब का इतहार क्यों किया।

मिस्टर गोपाल कृष्ण ने जो तबबीह लिखी है उसकी कामवाची में मुझे बहुत शक है। इबतीह में मामानियारों को हज़ारों मिले होंगे तब इस फ़िस्ते की तकमीम^५ की होगी। यहाँ ऐसी कोई तरगीब^६ नहीं है। महज़ ठक़टीह क लिए शायद कोई मिलने पर तैयार न हो। बहरहाल धगर मुझे लिखिय तो मैं एक बात^७ लिखने की कामिता कर सकता हूँ।

अब प्रेस की बात। आज तक प्रेस नहीं आया। सितंबर के महीने में बुधराज क पास रुपये ख़ाना किये गये थे। ४ अक्टूबर को अबाब धीर रसीद आ ही गयी थीं। मामून हुआ था उसने जो महीने ख़ाना की है। दोनों इन्वोर्ड थी। लेकिन तब से अब तक कोई ख़बर नहीं। १ अक्टूबर को मामूस होकर फिर मारदिलानी की गयी है। देवू कब तक पहुँचती है। टाइप नवीरह जमा कर लिया है धीर जमा करता जाता है। लेकिन इस तुमानी^८ इतहार के बादस हीससा फ़स्त हुआ जाता है। ख़स्ये की तो कोई कमी नहीं है। धाके छ हज़ार की रकम हाथ में है। हाँ मेरा मक़ाम तैयार हो गया धीर ह्योभी से उसे धाबाब भी कर दिया जाममा।

बानू महदाब राय धामिक वल्लूर जालमयइत में है। बच्चे धक्की तरह है। यहाँ भी कई दिनों अब रहा। लेकिन आज म्मना^९ शक़ हो गया है। धालटी बात यह कि अनाब ख़ाजा साहब से मेरी फ़ितावों का हिस्सा तैयार करने की क्रमास्त कीजिए। अक्टूबर तक ही रहा है। मार्च में मैं कामपुर आने की ज़म्मीर करता हूँ लेकिन धगर किसी बजह से न आ सका तो मैं बहुत मसकूर होऊँगा धगर साथ वह रकम मेरे नाम किमी बैंक की माक़त ख़ाना क्रमायेमे। इत तरह मेरा एक हिन्दी ड्रामा भी निकला है। बच्चों को हुआ।

नियाजमन्

धनपत राय

१६२

धारा भवन कबीर बीरा, बनारस

२२ अगस्त १९२३

साईबान

तसलीम । शाब्द इस मकान से यह धादरी रात आपके पास भेज रहा हूँ । धादर प्रेस के लिए मकान है हो गया मर्याद का यही टाइट ब्लाक लफ्फों के केत बंदी रह पहुँच गये । उम्मीद है कि इस बर्ड के महीने में प्रेम मुहम्मद तीर पर काम करने के इच्छित हो जायगा । अब रिजल्टेशन बाधित करना रह गया है । सांभार को बाधित कर दूँगा । अभी तक नाम नहीं ठगवीज कर सका । साहित्य प्रेस सरस्वती प्रेस संसार प्रेस बंदी रह नाम खेहन न है । आप भी कोई नाम ठगवीज कीजिए क्योंकि नामों के इतजाब में आपसे काम है । इसके इन्त आपको इसलिए ठगवीज नहीं थी कि आप मुनिशिपस इतजाबात में परोशन थे । अब आपको कुर्मत है । हालांकि अब तक मुझे यह नहीं मामूम हुआ कि आप बोर्ड में आये या नहीं । यहाँ तो पूरा बोझ काँचेसी है ।

मेरा इच्छा एक सीधे प्रेस रखन का जो है । क्या कोई कामगूर में सीधा प्रस है । बच्छे करम इसकी मुझे इतना बीजिएगा । मेरा कहते हैं बनारस न सीधे प्रेस नहीं बन सकता लेकिन मैं एक बार कोशिश करके देखना चाहता हूँ । मेरी कई किशायें निकलने के लिए तैयार हो रही हैं । प्रेम पचोसी लम्ब हो गयी बोशय धादरपत महज इसलिए मादरमा है कि कोई पबलिसर नहीं है । ताका इमाना सांभार भी अबू मे निजामता चाहता हूँ । जब तक यह किशाय तैयार हमी मालिकान् मेरा तथा मालिक तैयार हो जायगा । बहानियाँ थी बस-बाच्छे तैयार हो गयी हैं । बहुरहाल कोशिश बकर कर्मा । कामगूर में अब हैरत प्रेम धादर धादर डेट हो गया है । शब्द बहाँ सत्ते धामों मिल जाये ।

कमाना बाह्य के हिसाब की परतों में मामूम हुआ है कि कमाना एजेंसी पर मेरे साबिक बीरा हाम निमाफर २३३) धाते है । यह रकम अगर धादर इन बडा वे हैं तो मुझ पर बडा एहसान हो । मुझे मकान प्रत के लिए न मिलना था । बड़ी मुशिकलों एक बीरे का पबलिसर मिला है । इसमें अब तक बी ए बी० एनू ल था । अब स्कूल धादरी नहीं बनारस में बना गया । अगर पुरानी इमारत में चलने हुआ हुआते किम है किमके लिए वह मालिक मजान से १२ ०) रुपये का सालिक है । मालिक मकान से मरा समझीता यह हुआ है कि मैं धादर भर तक एक

सौ रूपया माहवार के हिसाब से धार्यसमाज को हूँ धीर पचास रुपये के हिसाब से किराने में दिनहारा कर्कें। धायसमाज ने यह शर्त मंजूर की है। एक धीर पुपना प्रेस जो बहुत मसहूर है जसमीनारायण प्रेस इस मकान के लिए खारा जाने बैठा है। १२) यकपुरत देने के लिए आमाबा है मयर समाज के जो एक मेम्बरों की इनायत से अभी तक उसका धाऊर मंजूर नहीं हुआ है। मयर में यह शर्त न पूरी कर सका तो वह मकान निकस जायगा धीर महीनों की इबा-बकिश^१ अकारण हो जायगा। मेरे बजट य इस बार सौ की गुंजायत न थी। धाय तीन सौ रुपये दे दें तो तीन महीने तक किराने की छिऊ न करनी पड़े। तब तक मुमकिन है प्रस से कुछ आमदनी होने लगे तो किराना बसा होता जाय। मयर इस बहुत रूपयों की बकरत शरीर^२ है। अगर धायने मकबार देने में तरदुद हो तो तीन महीने तक सौ रुपये माहवार दे दें। मुझे उम्मीद है धाय मामूख मही करेगे।

मैने मयर सिबना बर सा कर रखा है। उर्खत हूँ नहीं मिलती। मसफाना शुद्धि पर एक मुकतसर मजमून लिख रखा हूँ। मुझे इस तहरीक से बहुत इच्छि लाऊ है। तीन बार दिन भ भेज सकूँगा। धार्यसमाजवाले धिमामेवे सकिन मुझे उम्मीद है धाय बमाता में इस मजमून को बगह देंगे।

मेरा इरादा कानपुर जाने का है। मई के पहले या दुमरे हउते में धामे का इन्द करता हूँ। अगर कोई नया मोस्ट घर पर खारा न हो गया तो।

धाय इस तरह मुझने कुछ नाराज से हो रहे है। महीना तक कोई पत्र ही नहीं। मैं ठिकायत नहीं करता फुद भी इसी इस्मत में फिरछतार हूँ। ईरवर ने बाहा तो अब मेरी तरऊ से यह विमसिमा हरे सारिक बापी रहेया।

यहाँ सब छीरिपत है। उम्मीद है धाय मन बयाल धध्व होंगे। तीन बानू ने पर्व धन्ने निय होंगे। बन्नों को मेरी तरऊ से दुघाए खेर।

धीर क्या सिर्य। बबावे पत्र का बैताबी से इतवार रहेगा।

धायक ,
बनारस राय

१६३

आशा भवन, बनारस

२३ अगस्त १९२३

भाईबाग

तसलीम । कम सुबह एक छत लिखा शाम को चापका काई मिला । पत्रकर निहाम्त सदमा हुआ । बीमारियाँ और परेशानियाँ तो जिन्दगी का खास्ता^१ हैं लेकिन बच्चे की इसरतनाक मौत एक दिलरिक्तन हारसा है और उसे बदरत करने का अगर कोई तरीका है तो यही कि दुनिया को एक तमाशायाह या खेल का मैदान समझ लिया जाय । खेल के मैदान में बड़ी शक्ति तारीफ का मुस्तहक^२ होता है जो जीत से फूसता नहीं हार में रोता नहीं जीते तब भी खेलता है, हार तब भी खेलता है । जीत के बाद यह कोठिया होती है कि हारें नहीं । हार के बाद जीत की धारू होती है । हम सब के सब खिलाड़ी हैं मगर खेलना नहीं जानते । एक बाकी जीती एक गोम जीता तो हिप हिप हुर्र के शोरों से घासमान गूँज लडा टोफियाँ घासमान में उछलने लगीं भूल गये कि यह जीत बापनी^३ अरुह की बारहटी नहीं है । मुमकिन है कि बूछरी बाबी में हार हो । मनहाबा^४ हारे तो पस्तहिम्मती पर कमर बांध ली रोये किसी को बरके रिये अरुत येसा और ऐसे पस्त हो गये गोया फिर जीत की सूरत देखनी नसीब न होगी । ऐसे छोटे तंगबुद्ध^५ धादमी को राम के बसीह^६ मैदान में छोड़े होने का भी मजाब^७ नहीं । रामके लिए मोराएठारीक^८ है और छिके शिकम^९ बस यही उसकी जिन्दगी की कसनात^{१०} है । हम क्यों प्रयास करें कि हमसे तन्द्रीर न बेबअरई की ? बुदा का शिकवा क्यों करें ? क्यों इस प्रयास से मसूम^{११} हों कि दुनिया हमारी मेमलों स भरी बाभी को हमारे सामन से लीब सेठी है ? क्यों इस दिक्क स मुतम्बहुर^{१२} हों कि अरबाक हमारे ऊपर धापा मारने की ताक में है । जिन्दगी को इस मुकतय निगाह स देखना अपन इरमीनाम इम्ब^{१३} स हाब बोना है । बात दोनों एक ही है । अरबाक ने धापा मारा तो क्या ? हार में सारे धर की शोमन रो बैठे तो क्या ? अरुं निक यह है कि एक बन्न है बुररा बकिमार । यह अरबाक अबईतो बाग और मास पर हाब बराठा है मेजिन हार अबरहती नहीं धानी । खेल म शरीक होकर हम खुब हार और जीत का पुसाते हैं । अरबाक ने हाथों मुदा जाना जिन्दगी का मामूसी बाफया नहीं हादगा है मजिन राम में हारना

१ बरत हुन २ बरिबारी ३ क्वाय ४ हुनी तरत ५ लंबीअं हुदुद ६ ल ने-बोई ७ बरिबार ८ बरिा बोना ९ टट की किना १० बुक हुयी: बरहय ११ बुयी १२ बलन १३ मज्जियक बरिि

धीर बीतना मामूली बाक्य है। जो खेल में शरीर होता है वह खूब मानता है कि हार धीर बीत दोनों ही सामने प्रार्थनी इच्छिए उस हार से मामूली नहीं होती बीत से पूसा नहीं समाता। हमारा काम तो सिर्फ़ खसना है खूब दिन लगाकर खेलना खूब भी ताड़ कर खेलना अपने को हार से इस तरह बचाना गोया हम कौनसे की दोमत को बैठने लेकिन हारने के बाद पटकनी खान के बाद गर्द भ्रष्ट कर खड़े हो जाना चाहिए धीर फिर कम ठेककर हरीक से कहना चाहिए कि एक बार धीर।

बिनाबी बनकर आपको बाकई बचा इत्मीनाल होगा। मैं खुद नहीं कह सकता कि मैं इस मयार पर पुरा उत्तर्हना या नहीं मगर कम से कम अब मुझे किसी नुकसान पर इतना रंज न होया बितना बाक से बन्व खाल इन्म हो सकता बा। मैं अब शायद न कहूंगा कि हाय बिन्वमी धकारण मपी कुछ न किया। बिन्वगी खेलने के लिए किसी भी खलन में कोताही नहीं की। आप मुझसे क्या खेने है हार धीर बीत दोनों देखी है आप जैसे बिनाबी के लिए शिकवये एक धीर की जरूरत नहीं। कोई गोमूठ धीर पोतो खेलता है कोई बन्वहा खेलता है बात एक ही है हार धीर बीत दोनों ही मैदानों में है। कबहुी खेलने बाक को बीत की खुसी कुछ कम नहीं होती। इस हार का राम न कीरिए। आपने खुब ही न किया होगा। आप यहाँ मुझे मरसाऊ है। मैं ५ या ६ मई एक कालपुर धान बाता हूँ। यहाँ की कोई बीक दरकार हो तो बेतकम्पुष लिखिएगा। बीवर हाबात मेरे प्हुन सत से मानुम हुए हूमे।

आपका
बजात राम

१६४

४६। ११ मध्यमेइवट, बनारस
२१ मई १९९३

भाईबान

तमलीम। आपका २१ मई का काह कम मिसा। इनक प्हुन आपने तीन अठ भंख। मुझे मलन घाघसोम है कि उन तीपों में से मुझे एक भी न मिसा। मझे इनका सट्ट रंज है। किसका सर अपने पीरों पर ठक है। मैं तो देहात में हूँ। धुनून शहर में घात है। वहाँ से यहाँ तक धान में गापव जा जाने है। मैं धाज रात को माड़ी है बहुत खकरी काम में मोरगपुर जा रहा हूँ। ११ का या १ जून को सीरूका। बालिषा गाहिबा त्रिग दिन यहाँ धानबासा हूँ उमने मुझे १

जून तक ऊपर के पत्ते हैं। मृत्तिका ऊपरमाइए। यहाँ मेरा निज का किरामे का मकान है जिसमें प्रस है। बगइ बसीह^१ है। मगर हममें टायर छटपट से तकसीऊ हो। इसलिए यहाँ के एक थपड़े बमशासा य ईतजाम कर हुआ। चिट्टी बात की तक सीऊ न होनी। हाँ मुझे पड़ने छत मिल जाना चाहिए ताकि मैं स्टेशन पर उतर या बिकालन^२ सीमूर रहूँ। धरर १ जून या २ जून तक मुझे पन न मिला तो मैं बालनपुर घाईया भीर जिस निग बह यहाँ धाना बाहोंगी उन्हीं के माय मैं भी बला घाईया। धमी तो बलमान १३ दिन बाकी है।

और सब खर-बा-बाकियत है। प्रेस धमी बला नहीं मगर महीन रिट हा धमी। मकानी का सामान तैयार किया जा रहा है।

बलमान

धायका

बनपन राम

१६५

४५। ३१ मध्यमेश्वर बनारस

१८ जून १९२३

माईबाब

तबसीम। सेन बाबू की मकामयासी का मुझे ताम्बुह है। धीर क्या नहीं। शानिब^३ यह पिछले साल की तबील^४ बीमारी का लीजा है।

घायकी बीमारी की छबर इससे भी खराब बड़सोमबाह है। इन तपिस में बुझार की तकसीऊ। ककर यह बनारस की तकसाऊ का प्रमियाबा^५ है जिसका बिम्पेगार एक हद तक मैं हूँ। धरर एक निग भी एक गया हीना तो मुनसक तकसीऊ न होनी। मेरा प्रस का मकान इनना बसीह, शहर में मुनसिऊ^६ भीर किर इनना घुर भीर सेन सीऊ से है कि जगने बगतर जमह बनारस में नहीं है। बिसतुन टाइन हात भीर पाक के मुनसिम^७। कमरे के बरवाय मोन बीनिए भीर पाक का मुटक पर बीठे जटाइए। उने घोइकर इन्हें मरिबडिडा बाट बर रहना पड़ा। मरा एक घायकी भी प्रेस में रहना है। पर बरा कई मरीउमन।

धमी प्रस नहीं गुना। बाबू महताब घान की तानमएकन से पुत्रुप्रमागी^८ का रंगवार है।

बलमान

नियामरंड

बनारस

१ लोनी-लोनी २ बरिबिबि के बरिबि ३ लोनी ४ मुनसिम ५ मिला ६ बा ७ बरिबि ८ बरिबि
क्या हमार मुनिस

बराबरम

तसलीम । कई दिन से कुछ मित्राज की और-ओ-आक्रियत और लड़के-बालों का हासनाम नहीं मानूँ तुम्हा । सेन बाबू आभिवन् प्रब विमकुल धर्ये होंगे । मैं तो घाटे घाटे रह गया । मेरे तीनों सबकों को बेचक (खोटी) निकल घायी थी । इसके बाद छोड़े कुंसियो का चिलसिला शुरू हुआ जो अभी तक जारी है ।

मेरा तास्तुक १ जुलाई से काशी विद्यापीठ से टूट गया । इंतबामिमा कमेटी ने स्कूम के इन्टरवाइँ वर्ये ठोड़कर बाकी कालिब से मिमा बिये । हेबमस्टर की बरूरत नहीं रही । और मैंने किमी वूसरी बपइ पर रहना मंजूर नहीं किया । वह तो बाहिर ही है कि बंब महीनों के बाद मुझे इस्तीछ देना पड़ता क्योंकि प्रेस के मुतास्मिऊ कुछ न कुछ काम मुझे भी करना ही पड़ता । लेकिन इस बरत कुछ ठरवदुर्बे बरूर हुआ । अब अब तक प्रेस से कुछ याउत न हो कसम ही का मरोसा है ।

मैंने इराफा किया था कि आपको तकसीछ न हूँगा । आपकी पटैशानिवाँ बड़ी हुई है लेकिन मेरी मौजूबा हालत मुझे अपने इरादे पर आपम नहीं रहन देती । मकान का जिस्सा तो आपको पहले ही निबू चुका हूँ । साम भर तक एक सौ बीस रुपये माहवार किरया देना पड़ेया । मजीद^१ ठरवदुर्ब का बाइन यह है कि बाबू महताब रय ने दो हजार मंजूर किया था । वह नागा साहब से बामे लेनेबाने ये । नागा साहब ने एक हजार तो दिया मगर अब बालाकाली कर रहे हैं । वह एक हजार भी अब मुझे ही कही से पैदा करना है । इतने बर्यों का बन्बोवस्त होते ही काम शुरू कर हूँगा ।

मेरा गोराए-आक्रियन धर्यो तक पड़ा हुआ है । क्या कर्के इसे भी सखीर भेज हूँ ? मेरे लिए नुब छपनाला तो बम धर्य काम वा साम तक मुशकिल है ।

प्रेम पबोसी का छपना भी बरुरी है । इसी बरनियान में एक नाटक भी हिन्दी में लिब बाना । इनका सर्वू-एरीशन निकलना बरुरी है । इन बरन एक नाबिल लिब ही रहा हूँ का १ हिरो मुख्हात या २ सर्वू मुख्हात ने बम न हाना । बररब इन बरत मुझे एक अन्धे पबलिटर की बरुरत है या इन किनाकों से कुछ कसमरा बरतमे और मुझे भी कुछ है । एक बार फिर नबसजिओर का बरनाडा

कटकाईया । आपसे कुछ मन्त्र मांगते हुए इतना रुकता है लेकिन अगर इतना बड़ा ध्यान किसी तरह मेरे रुपये में खर्च हो गया काम चला निकले । मैंने अपने हिन्दी पब्लिशरों से भी अपना मांगा है । अगर कुछ ऊपर से मिल गया तो यह एक हजार की किक्र बुर हो जायेगी ।

कल रात को छाती भारिष्ठ हुई ।

मन्त्र सम्पीन है कि ध्यान इस धीक पर मुझे मायूम न करेंगे ।

बस्तभाव

आपका
बनपन राय

१६७

४६।३१ मध्यमै-वर

बनारस,

१५ जुलाई १९२३

भाईजान

तमसीन । आपका ध्यान पढ़कर बहुत मायुमी हुई । ध्यान ऊपर पढ़ाने में इधर परेछान । कौन किसको मुने । पर आपके बनारस^१ बनीह^२ है मर निहायन महबूद^३ । इसलिए मुझे फिर भी यही धार कम्पा पढ़ता है कि ध्यान न मेरी तरफ पुपुपुप का काली अन्धारा शायर नहीं किया । अगर इनकी तीसीह^४ महबू इतना ही ब हो सक्तो है कि मुझे मजबूर हा कर ४०) छोट करने पड़े । और नवान का क्रियावा २) देने पर फिर १) बच रहे । धर्मो धार-बन में Chakr या बार्देमि और फिर विष्णुन त्रिहीवस्त^५ हो जाईगा ।

२ से प्रेम का काम एक होगा । अगर छाती हाय । मेरे पास धर कुछ नहीं रहा । कुल ८) का तमसीन किया था । मैं ३०) बाहर खर्च कर चुका । धर कहीं से लाई । दास्तों को तमसीन देने क विचार और नहीं जाई । ४) एक साहब से लिये । अगर ध्यान ३) के मफे तो एक महीन के तिये कुछ मर हमका हो पाय । एक महोने में दालिबन कुछ धामन्वी हो ही जांगी । राम^६ पर बहन तक बाक रुपपति महाय का मीजा करतान हो जाय । इसके बाद ही बड़ मुझे रुपये धान करलेबाण है । मैंन तो धार पर बार न जानन के पिय निगा था कि धार माहवार १) के वें तो मैं मकाल के क्रियाये मे मुकुन्दरोत हो जाई ।

१ बापन २ विष्णुन ३ धीकित ४ नवनीकरत

आप की तरफ़ दुबारा का सम्बन्ध कर रहा हूँ। जानता हूँ कि मकान की तरामी^१ में काफ़ी रकम सर्क करनी पड़ेगी। मगर मेरा मकान भी तो धमी पूरा नहीं हुआ। सिर्फ़ बुजर करने के इन्तज़ाम हो गया है। धमी एक हजार और धमें तो मुकम्मल हो। इस धने क्यावा इतमीनाज के मीछे के लिए टास दिया है। और क्या धर्क करूँ।

मुझे एक बुजर रकम के धिये बार-बार आप को तकलीफ़ देते हुए लम घाटी है। मैंने उस बजत तक मिलने से लघम्मूल^२ किया जब तक किसी महज^३ से मेरा काम चल सके। पर अब मजबूर हो गया हूँ। अगर आपने इमबाद न की तो फिर कर्क सेना पड़ेगा। इसके सिवा और कोई चारा नहीं है। मैं बड़ी बेठाबी से

मगर क्यामक्याह क्यों आप पर अपनी जबरत की महम्मिलत साबित करन की कोशिश करूँ। आप लुव समय सकते हैं। आप को मेरी माली हासत का इत्त है। मैंने ऐसे मीछे के लिए आप से क्यावा इमबाद की लघम्मूल^४ की थी। इतना मामूल न कीजिये। मेरे लामे साहब को आप धामते हैं। मेरी मजबूरी का सम्बन्ध महज इससे कर सकते हैं कि मैंने इस बन्दए लुवा स मरब मांगने से भी बुरेब न किया। हालांकि वहाँ क्या मिलना था। जबाब तक न धामा।

ज्यादा बस्तकाम

मियाजमब

बनपत राज

१६८

छारखती मेस, मध्यमेतबर

बनारस

१४ अगस्त १९२९

बनारस

तमामी। जब से धामा हूँ आप ने कोई खत नहीं भेजा। लाहौर से कितानें धा गयों या नहीं। मेरी लहरीर के मुनाबिक जगकी ताबाब निकसी या नहीं। धामी हिम्सा अग्नस की १८ और हिम्सा खोयम की १२। मैंने अब इरादा कर लिया है कि धपनी लुई कितानें लुब ही धाप लूँ। एक छोटा सा लीबो प्रेम लल हूँ। आपन धपने प्रेम का जिऊ करमाश था। कैमा प्रेम है। क्या गाइज है। धामी काम है रहा है? कम-मुजें दुल्स है? जगके लाम पत्थर भी है या नहीं? 'जमाना' के ४ लुके एक बार देगा है या ८? इन धमूर से मुझे जिन इतर

अब मुमकिन हो मुत्तमा करमाहये । दब ताकीर^१ करने में कोई क्ययण नहीं ।
 'कबना के मुनाम्निक पनाब स्वाभा साहब ने मुझे एक किताब दिखाई जो
 तिसमें मराठी^२ के इन्तयाब थे । बराहै करम उसकी एक बिन्द मरे पाठ निम्नपा
 रे धीर कीमत मरे काम बर्ब करमाये । निहायन मराकुर हुँगा । यहाँ धीर सब
 खीरियन है । कायेस हो रही है । × × ×

बाबू रघुपति सहाय तयारीक भाये हुए है । जमाना का ताका पर्वा मर
 पाठ नहीं आया । क्या अभी नहीं निकला । उम्मीद है कि आप बनारिया की जग
 में न आय होंगे ।

आपका

बनेपत राम

१६६

सरस्वती प्रेस

बनारस

२६ सितम्बर १९२६

भारत

तसमीम । निम्न शरीक । 'तहजीबे निम्न' के अन्तर से आरफ यहाँ
 'प्रथम बत्तोसा' हिस्सा अन्वय १८ 'थम बत्तोमी हिस्सा चौम १८ तिसमें
 रबाता की गयी है । उम्मीद मे मुत्तमा करमाने धीर अपने यहाँ दब कर दें ।

यै तो अब न यहाँ आया है अपने नये गाबिन के लिगन में इमानन^३ ममकुर
 है । आप मे भी मा नहीं किया ।

बाबू बिरान मरायन भायब माहब के यहाँ मे अन्न बेर-बहन^४ के मुनाम्निक
 का^५ उठ नहीं आया । मिन खुद को बार लिता पर जबाब बनारस । मयम गया
 बर भी एक रईमाना उबाय था । दब है हमारे शर्का की तलखुम-निहाजी^६ ।
 उन का जबाब तब देना संभूर नहीं धीर तबक किया बकगिये तार !

आपका

बनेपत राम

१७०

बनारस

२६ सितम्बर १९२६

भारत

तसमीम । उम्मीद है अब आरबो छोड से मजान हो गयो होगी । बरन

तकमील दी । मैं तो अच्छी तरह हूँ यामी बीमार नहीं हूँ ।

बाबू रघुपति सहाय ने एक मुहायरा खेल की रिपोर्ट मेकी है । देखें । कहीं बर्न करा दें तो अच्छा हो । प्ररीकों की धारजू बर धाये ।

सर्तों तो कहीं मो खुब पड़ती होगी । कई दिन से धन्न-धो-बाद ने नाक में बम कर रखा है । बाम-बच्चे मने मे है । उम्मीद है कहीं भी सन भगवान की कृपा होमी ।

प्रेस धमी तक नहीं धाया । हूँ धब उम्मीद है कि धब सीधो का काम भी करने का सुभीता निकल धाये । सरमावे में इबाध होने की कबी उम्मीद है । धीर क्या धर्न करें । बच्चों को बुधा ।

धानका
बनपत राम

१७१

सरस्वती प्रेस बनारस
६ जनवरी १९२४

माईबाल

तसमीम । बुधाए धीर के लिए मरफूर हूँ । यहाँ हमानन बुधा हो रहा हूँ । मुझे बंवाल के समझीते मे बनूध इस मुक्त के कि इसकी इसाधत बेधिका भी धीर कोई बाध मुक्त मबर नहीं धाता । एक सूने का समझीता हू एक सूने के लिए कानिसे धमन नहीं हो धरुठा धीर हर एक सूने को धपने धरुठरुठ के एतबार ध उसम तसमीम करने का धरुधियार है । सासा साबपत एय भी न मिस्टर बास के साध किली क्रबर क्यावती की है । धीर मुझेतो इस बन्ध धमी बरु-बटान की मुलहकुन पानिती धरुधता कर रही है । उनके खयासत म का हीरत धनेध इन्नाज हो रहे है उसको धसमी शुधि समझना हूँ धीर कहीं शुधि देर-ना हो सकती है । धापने मेरे मजमून को मुस्तरद कर रिया । धीर कोई मुबाधना नहीं । मैंने निय धाला दिन की धारजू निकल नयी ।

काबज के ममूने देते । कहीं कलधार सखेव २४ पीएड का कागज मुझे पसं है । यहाँ बीसा कागज नहीं है । २४ पीएड का कागज उती डिस्म का मिता है । बाम साधे साध कपये यानो कहीं पांच धाने पीएड मबर सायर ऐस के किराये के धलाधा धाने में देर होगी धीर धपये मज्ज देना पड़ेंगे । धगतिए मैं २४ पीएड ही का लूना । कपोंक यहाँ बेधिट मिल धायेंगे । X X मे मजबूर कर रखा है ।

१ धुकी २ धरुध ३ नमज भाध के ४ मधार ५ उदेरवो ६ धामिधुर्न धारधित धसमीम

× × धाय तकसील न करें । ही धायर कुछ इमबाब^१ कर सकें ती मशफूर होयेंगे ।

धीर तो कोई ताबा हाल नहीं है । बच्चों को दुखा ।

धायका

धनपतराम

१७२

सरस्वती प्रेस बनारस

१७ जनवरी १९२४

भाईजान

तकसील । एक हजार रुकिया मय नुब । बहुत उकरत पर धायने इमबाब करवाई । मकामोल सिधल को बार बार कोठिय करता हूँ मगर यक़ीन मानिए हिन्दी रसायन इस इतर दिक् करते हैं कि कुछ किये नहीं बन पड़ता । धाय में कहाबियाँ उरू में नही हिन्दी ही मे लिखकर भेज दिया करता हूँ । इमलिए येठि एक राय है । मैंने इमर पाँच महीने मे धयने ताबिल रंगभूमि के साथ एक ड्रामा लिखा है जिसका नाम है कबला । इसमे कबला के बाइयात पर तारीखी हैसियत को इमयम रने हुए एक ड्रामा लिखा गया है । मैंने तब तो हिन्दी रखा है मगर अबाम सत सर उरू है । क्याह^२ हिन्दी पब्लिक इनकी कर न करे पर मैंने मुसलमान कैंटेंटों को अबाम से छुटीहूँ^३ हिन्दी निकलनामा बेंमोका समझ । नाटक इमी हफ्ते में मगवे न चला आयया । येरे ही मगवे न । इस बचन नजर-भानी कर रदा हूँ । मैंने मिलमिलेबार जमाना मे वे हूँ तो क्या राय है । जिस्वा निहामत रिमबल है निदायत दन्नाक । मैंने माभुठी मे कबला पर एक मजमून लिखा था जिसकी कर भी काय्ये हुई । को^४ बजह नहीं कि उरू में ड्रामा मजमून न हो । इसमें मुझे मजमून निमाठी^५ न करनी पड़ेगी सिद्ध सत्र तकसील कर देना पड़ेगा । बाद को यह निमनिसा बिताबो सुरत न निबल आयया । इसका यकीन रथिए कि मैंने एहनउम^६ को कहीं नजर धन्दाक नहीं होने दिया है । एक एक मजब पर इम बात का खयाल रता है कि मुसलमानों के मजहबी एहलासाठ^७ को सहया न पड़ेने । मकनद है पार्तिबल बाहुमो एलहाब^८ का बडाला धीर कुछ नहीं । धायका जबाब धान पर पदुल्य चीन इरराम गिरमत हागा । मैं साथ के साथ कद् सक्ता हूँ कि उरू में एठा रिमबल ड्रामा न होगा । ही अबाम को ड्रामाहउ^९ मर इमयन मे नने । बाइया सुद ही दनना रिमबल धीर बरनाक है कि ड्रामे क लिए निहाना मोरू है ।

१ इमबाब २ वार्ड ३ सुद ४ रचना, लेखन ५ धायर बगवान ६ लखनौ ७ धायकी बरता ८ धायन के लान टीकी

धीर क्या धर्म कर्मों में प्रेम कम रहा है। धनी भयभीत नहीं हो रहा है मगर अपना सब धर्म सह लेता है। साल धास्त्रि तक मुभक्ति है कि कुछ नश्र भी होल लगे। बच्चे धम्धी तरह है। मई धामय हमरोज-कृषी में हानेवामी है। धर्मी हिमाकृत पर अश्रुसोस करता हूँ धीर कहु बरवश बरजाम दरबश^१ क मिसधक^२ अपने क्रिये पर नास्त्रि धीर मुतास्त्रि^३ हूँ।

बच्चों को दुषा। परमात्मा धापकी मकतव म कामपाव करे। ईरवर ने बाहा ती जल्द कामपूर धार्केगा।

१७३

सरस्वती प्रेम

१ मई १९२४

बटावरम

उसमीम। माहभावरी का मशकूर हूँ। कबला साऊ करम की नीवत नहीं धामी। बाया न पूरा करम का नास्त्रि हूँ। ब्याह की ताटीस हिउब^४ है। ईसा धम्माह।

जुलाई की माह भी है। ईसा धम्माह।

यहाँ के बीनर ह्यालाठ धामिऊ बस्तुर है। मकान धम एक कूटीन का बन धया। धब इसकी हिसियत मकान की हो नमी। उम्मीर है बाल-बच्चे धम्धी तरह होने।

निवाबनन्ध

बनपत राय

१७४

सरस्वती प्रेम, बनारध सिटी

१ जून १९२४

मार्दान

उसमीम। मी ३ जून को न धा सका। इसके लिए मधाबतर^५ करते हुए मुझे निहायत अश्रुसोस मामूम होता है। येरी धोटी लड़की को ८ मास को पीसा हुई थी २८ की काम से बस्त धीर जुगार में मुबतिला हुई। मी लममता का धारिबी शिकामत है। रश्र हो धामयी मगर शिकमयत लड़की ययी यहाँ तक कि ३ ताटीन को उसकी ह्यालाठ हलमी धबतर ही नयी कि पर में लोगों ने रोना-

१ काम-बन्ध २ निवाटी का बुरा लकने कपर निवसता है। ३ अस्तुवन्ध, बनारध ४ दुली ५ बहा ६ बनी-बाचवा

पीटना भी शुरू कर दिया। मगर मुबह को उसे जरा सा इफाका^१ हुआ। ठब से सब तक न बह मुर्दा है न जिम्मा है। धर्मों बंद किये पकी रहनी है धीरे गीया करती है। होमियोपैथिक की दवाएं वे रखा हैं मगर धमी तक कोई दवा कारगर नहीं हुई। सायर^२ और लहोकर^३ इस ऊपर हो पयी है कि धयर बच जाये तो मे ऐसे ईरवर की छान रहमत समझूं। मुझे बार बार धडलौस होता था कि मैं इस तकटीक^४ में न शरीक हो सका। मगर अब तोय एक बच्चे की कारपाई के पास बार बार उसका मुंह आस कर देण रहे हा कि धमी नीचे उगारने का बचन धाया या नहीं ऐसी हानत में मिबाय इसके धीरे बजा बहूँ कि ईरवर को यह बाग बंदूर न को धीरे इसका कनक मुझे ता-बो-न रहेया। और अब ना जो कुछ शोना या हो चुका। शानो बहुल-धो-बुबो संजाम या मयो होयो। अहबाब न दूब बापतें उड़ावी हौयो। इस पर धापको मुबारकबाद बता है। मुझे इस तकटीक में शरीक न हो सकने का दिली सदमा है। मजबूरी पाने हुई। सल मजबूरी जिसकन मुसकक^५ गुमान न था। धीरे क्या सिखूं। धापसे धपनी हासनाये दम मुगानी इस बकड निहायत बेबीका है, बेमुदा राय है। मगर यथाकरत की कोई कुछी मूळ देना ही न हो सकती थी सिबाय इसके कि मैं कुछ बीमार हो जाना।

ईरवर बने धीरे बनी को हुमात-ए-उबई असा करमाये धीरे उमकी खाना धाबती मुबारक हो। सायर नहीं कि कसीदा^६ या सहनिवत-नामा^७ सिखूं।

क्याह मेरी शिरकत किछी बजह से न हो लको सेकिन मैं हये हमेदा धनने किस् बाइने दिबाब^८ समझूया।

१७५

बनारस

११ जून १९२४

धर्मदान

धर्मनीम। उम्मीह है कि आप बगुशी व गुरमी^१ शारी करके बापन या बये हौये धीरे अहबाब की दाबज-तबाको से क्राण्ड हो बये हाये। यहाँ तो साय को लफ्फे कपगत हो गयो। उनकी धा-कल्पो^२ समबीर धमी तक धाँतों में फिर रही है। माधुम को परमात्मा लक्ष्मि हैं। गर्मी हतनी सिद्धय की है कि कोई नाम

१ धर्मदान सुफी २ धर्मनी-कपली ३ कल्पो ४ दाबज व तबाको ५ कपगत ६-७ धर्मदान ८ नाम ९ सुफी १ नाम का विकलना।

के वे रिमे, माम मशी तक सापता है। हालांकि कंपनी से मित्रा-पत्री हो रही है। पाँच महीने से पाँच ही रुपये फँसे हुए हैं। मशीन या बाती तो अब तक उससे कुछ भ्रामवनी हो गयी होती। लेकिन माम का पता लगता है कि कंपनी से रुपये मिलते हैं।

क्या सड़कों को कानून पढ़ाएँगा। और रास्ता ही कौन सा है। या मुसाबमत या कानून। मैंने तो प्रसन्नता किया है कि अपने सड़के को बोका या पढ़कर कारोबार में लगे हैं। प्रश्न होगी तो यहाँ भी दीक्षित पेश कर लेगा। और क्या भ्रम करे।

भाषका
बनपत राम

१७८

सरस्वती प्रेस, काशी
२२ जुलाई १९२४

भाईजान

तसलीम : बेहतर है कि कब्रों का निकासिए। मेरा कोई मुकदमा नहीं है। न मैं मुक्त का सिमबाना सर पर लेने को तैयार हूँ। मैंने हजरत हुसैन का हाल पढ़ा। उनसे धक्कीरत हुई। उनके बीछे शहादत में मर्तु कर लिया। उसका मतीजा यह हुआ था। अगर मुसलमानों को यह भी मंजूर नहीं है कि किसी हिन्दू की शबात-को-इमाम से उनके किसी मजहबी पेशवा या इमाम की मदद सप्राई भी हो तो मैं इसके लिए मुठिर नहीं हूँ। इस काब का शबाब देना तो क्रिम है, हाँ हजरत हुसैन के मुताबिक कुछ भ्रम करना चाहता हूँ। धार करमते हैं शिया हजरत यह नहीं पसंद कर सकते कि उनके किसी मजहबी पेशवा का इनाम तैयार किया जाये। शिया हजरत अगर मजहबी पेशवा की मजदूरी पढ़ते हैं, मजदूरी पढ़ते हैं, मजदूरी मुनते और पढ़ते हैं तो उन्हें इनाम से क्यों एठराज हो। क्या इसलिए कि एक हिन्दू ने लिखा है ?

शारीख और शारीखी इनाम में ऊर्ज है। जैसा धार मुद तसलीम करते हैं। शारीखी इनाम काम कैरेक्टरों में तो कोई तसलीम नहीं कर सकता मगर शानवी कैरेक्टरों के तबदुल और तसलीम यहाँ तक कि तसलीम में भी उसे धाजदी है। हजरत असगर भी उम्र से माह की.... लेकिन बाज रिवायतों में से धार को भी लिपी हुई है। मैंने वही रिवायत शक्तिवार की जो मेरे मुताबिक हाल की। अगर शिकरत एसी रिवायत न भी हो तो हजरत असगर इन इनाम के कोई कास कैरेक्टर नहीं है।

यजोब को फालाकी है शियात मुम्बने कहीं श्यादा बेहतर मुसलमानों से

कर दो है। मैं मजबूर था। मैंने तो सिर्फ उसकी शराबखोटी और एहपसंजो का बिक्र किया है। शराबखवार था ही।

सुनकाए राशिबीन के बाद और जितने कुसफा हुए सब पीठे से और बड़मने से पीठे से। देखिए यकीन के मुताबिक मीलाना धमीर धमी क्या करमाने है

Yezid was both cruel and treacherous his depraved nature knew no pity or justice His pleasures were as degrading as his companions were low and vicious. He insulted the ministers of religion by dressing up a monkey as a learned divine and carrying the animal mounted on a beautifully caparisoned Syrian donkey Drunken riotousness prevailed at court...

धमीर धमी को तो घाय मुसलमन मानते ही होंगे। क्या मने यकीन को इसमें भी सवाश पस्त कर दिया है? घाय ऊरमाले है, हासाकि वह मुसलमान था। कुब हसीन है। नबाक रज्जपुर भी तो मुसलमान था।

तारोपी हैसियत से घायन माहब राज के तबासुल^१ पर एतराब किया है। बेशक इब्राहिम^२ रिवायात में इनका कोई बिक्र नहीं। मगर एक रिवायत जो मीने रिवायात आईना इनाहाबाद से ली है, मुमकिन है वह रिवायत जमत हो। सेफिन धवर माल नीबिए बेक-ए-बास्ता^३ ही के लिए ली गयी है तो? इनामा तारीख तो नहीं है। इससे किसी तारीखी कैरेक्टर पर धसर नहीं पड़ा। इन कैरेक्टरों का बंशा है हिन्दुओं का हजरत हुसैन पर किया हो जाना। उनका बन्त^४ भी इसीलिए हुआ है। यह इनामा तारीखी होने के बाद पोसिगिस है। धरबी हैसियत से मुसलमान^५। घायका एतराब तो बसरो धरम उसीम करता है। मीने कमी धरीब होने का बाबा नहीं किया। मुझे भीम पबबस्ती इस्तापरवाज^६ और सेहनिगार^७ और धल्लम धल्लम लिप दिया करते हैं। मैं बाब को सीधी तरह सीधी खबान में क्यू देता हूँ। रंज घाकरीनो और इस्तापरवाजी में इतिर^८ हूँ। धोर अब इनामा इसलिए ठीकर किया गया है कि हर साध ब घाम बसे पड़े तो खबान-घाकरी^९ और भी बमोजा हो जानी। बहरहान में इनामा की इतायत के लिए मुमिन नहीं हूँ। इसलिए यह धरम मुसली और धरम हो गयी।

इनामा हुसैन निजामी ने कुरान बोठी सिनी। एक हिन्दू नबराद में समरी तारीख की सिफ इतिमिए कि मौनामा ने कृष्ण से धामी धरीरत का दखतरा किया था। मीरा भी यही बंशा ... धायन हुसैन निजामी को वह धाबारी हानित है और मुझे नहीं है तो मुझे इसका दखमोम नहीं। बराहे करम जम मुमब्दरा को

१ इतिरत होबद २ बक ३ इराना ४ इतिरत ५ धायन ६ इस्तापरवाज ७ सेहनिगार ८ मीनामा के बाबू मीरा ९ धर देनेबाबा रंज नरबद नबराद रचना सिफ जमबपैर नाबापी नबराद

बापस प्ररमा बीबिए । हूँ मैं यह सब करना भूल गया । ज़ामे हो किस्म के होते हैं । एक किरा^१ के लिए एक स्टेज के लिए । यह ज़ामा महज पढ़ने के लिए लिखा गया था । खेमने के लिए नहीं ।

बयादा बससभाम ।

भापका

बनपत राय

१७६

सरस्वती प्रस, बनारस

२ अगस्त १९२४

माईबाल

उत्तमीम । लिख्यलिख मिना । मराफूर हूँ । मैं कई दिन से सत लिखने का इरादा कर रहा था लेकिन मारे नशास्त^२ के कबल उठान की हिम्मत न पड़ती थी ।

प्रस ने मुझे इस क़दर परेशान कर रखा है कि मैं तय या नया हूँ । वह कुछ बकल या कब मेरे घर में वह सौयाए खाम^३ समाया । घाफकी निदमत्त न बडाय़ा शार्प की वह क़हरिस्त को इस बकल मेरे सामने रखी हुई है इरसान कर रहा हूँ । बंकिमे तब मेरी परेशानियों का सही मन्दाबा घाप कर सोंगे । (२२७५) बडाय़ा बड़े हुए हैं और इनके बसूल होने में अभी न जाने कितनी देर है । इरर मुक्त पर १) टारप के शीर ४) काठज के शीर २) किराय़ा मकान के ख़ार है । मैं तो मुतअर्रिक रकूम न जाने कब पाऊँगा पर मेरे तकावेबाल कब बँग लने देते हैं । वो लिताबें खुब ख़ायाकी मगर खमीर के लिताफ़ घमी तक एक किराय़ा तैयार ही नहीं हुई ।

मैन मोबा का सितम्बर प्रक़ुदर तक दोनों लिताबें तैयार हो जायेगी । बडाय़ा बसूल हा जायया । लिताबें बिक जायगी । रुपों की किरकलत रफ़ हो जायेगी । मगर वह खारे मसूबे परेशान हो गये । न लिताबें तैयार हुई न बडाय़ा बसूल हुआ । बकि हर महीन में कुछ न कुछ बढ़ता गया । अभी कोशिश कर रहा हूँ कि किसी बुकमेनर से मुघामला करके वह सब ख़पी हुई लिखें खायत पर बेकर घनल तबात्रबागों का धरा कर डू । बडाय़ाखारों से ख़ता खना बसूल होता ख़ेगा । हालांकि इसमें से कम धन कम ५) Bad debt में लने जायेंगे । इररर जानता हूँ मैं हीतासाबी नहीं कर रहा हूँ । धान्दिर हीमा करता ही क्यों । घाप मुक्त से बोस्ताना मरासिम^४ के शीर पर तो नहीं मांग रहे थे । दर घसल मैंने वह मंडप्ट मोल सेकर घपमी जान घायत में फँसाई । नहीं तो मेरे सामे मर वो बहुत काय़ी

या । इसी तरह वे सिन्दुरी काम भी नहीं होता । सब प्रेस को बताया से आजाद करने और बाबाजी काम से मुक्तगमी होने के लिये इस निष्कर्ष में है कि रोडना 'हमदर्द' की एक हिन्दी हफ्तावार मकस हिन्दी हमदर्द के नाम से थाया करे । मगर इसके लिये भी रुपये की जरूरत है । देखिये परमारया क्या करते हैं ।

पर में अभी रोज चम्बल है । यहाँ इलाज में सहूलियत न देव कर इलाहाबाद पहुँचा थाया कि शायद शहर में बाबायया इलाज में कुछ फायदा हो । लेकिन आज तोसरा दिन है इलाहाबाद से भोटकर थाया है । यहाँ यहाँ से भी बदनर हासत हो गयी है । धक हफ्ते धारारे से बाबाद निमा मारेंया । जानता हूँ कि यह परे शानियाँ खूब हो बायेगी । कम धक कम इसड़ी उम्मीद करता हूँ । मगर अब यह नहीं कह सकता ।

वे इलाहाबाद गया हिन्दू होस्टल में भी गया रात भर यहाँ रहा भी पर सेन बाबू को न देया । मुझे थाव ही न रहा कि वह यहाँ है क्या उम्पर निमया ।

सब कहना' को मुलिये । धक थाप को मामूम हो गया कि मैंने हिन्दू उम्पुर^१ जो शानिस क्रिया था वह छोटेसे बाबाया^२ है । थाप इसे निकालना शुरू करें । उत्रमें हकक^३ करने की बकरत न होगी । मैंने हजरत हुसैन की बचान से कोई आशिक्रयना उत्रस नहीं नहीं थाथा कराई है । पत्रीब की मजलिम में उत्रसे गाई गयी है और बेमोका नहीं है । उत्रनों का इन्तयाव धक्या नहीं हुआ है सो थाप को इन्तियाव है । यहसत साहब में धक्या पत्रमें बुनबाकर शानिस कर होबिये । मगर क्या उत्रयी भी यह उत्रम धक्या नहीं है ।

गनी धक के बेडे थाव करनेथाने

उठे हाव उठा कर दुषा करमवाले ।—कात्री सुधियना उत्रस नहीं है ।

या

हाँ तुमे मापी हरे पैत्राना थाव

सँ ही भर दे मेरा पैमाना थाव ।—धक्या नहीं है ?

या

सबे बसस वह उठ जाना चिती था

वह उठे को धपने मनाया किगो था ।

उमानान की नजाराव न बरियव । यह देखिये कि उत्रस सलोस^४ धामउत्रम गुममी हुई है या नहीं । गान के लिये मोत्रुं है या नहीं । शानिस की उत्रस या शानिस की या धक्या की या बबबरत की गाने के नाम की सलो गोपी । पत्रे^५ इबाउत्रे इस्मारे^६ हम कबर होते हैं कि वह बरि उत्रम हो पानी है ।

^१ निवृत्त २ बनबारे इलाज ३ वैजिवाविड कान्ध ४ कब ५ बरत ६ पत्री ७ वर वर कबकर धक्या कबक यमाना न उत्रनाकबक आदि

मिर्जा बाऊर यन्नी जी साहब ने धगर कुछ तारमीयात की है तो कोई मुजायफा नहीं। बाऊरया यह है कि मेने हिन्दी से कुछ उजुमा नहीं किया है। मेरे एक नार्मल स्कूम के बोस्त मुशी मुनीर हैबर साहब करैती है उन्हीं से कटा लिया है। अब बलिम्बा हिस्सों का उजुमा में कुछ करेया। तब जो सामिया होगी वह बकर निकाल दूंगा। खवान के मिहान से किसी को हफ्तीरि^१ का मीका न दूंगा। मेरे अहबाब ने हिन्दी में यह जामा पडा है धीर उसकी तारोऊ की है। एनुपति सहाय तो इस पर एक तबसरा लिखनेवासे है। धीर क्या भर्ष करे। बारिश नहीं होती। इन्हूत के घाघार है। कोहूत पड़ने लवा। लबनम गिरती दुरु हो गयी। मुसीबत का सामना है।

घाप को डाक्टर इकबाल का पता मानूम हो तो बराह करम मुत्तला करमाइये। मैं उनके कलाम का इतकाब घापके तबसरे^२ को बीबाबा^३ बना कर हिन्दी में शाय्य करने का इरादा कर रहा हूँ। यह भी तहरीर अर्माइयेया कि उनका कलाम सब का सब कहां मिलेया। कागज तमाम हो गया।

घापका
बनपत रस

१८०

लखनऊ
३ सितंबर १९२४

भाईजान

उत्तमीम। घापका नकाइशनामा कई दिन हुए मिसा। मराकूर है। कुछ घाप मेरी इकस्ता-वाई^४ का लिखवा करते है हालांकि घाप कालपुर से हिमने का नाम नहीं सेते।

कबना घाप शाय्य करना शुरू कर दें। यों तो इनका तमाम होला बर मुत्तकिन है। हां अब निश्चयना शुरू हो जायेगा तो अक मारकर सिरमा पड़या। तब मिजाज हीलासाज को कोई इमीन न होगा।

खमाना के लिए एक खराकन-घामेज^५ क्रिस्ता मिजा है। कल या परतों तक भेज दूया।

हिन्दू-मुसलिम क्रिशादान वा विमसिला जारी है। मेन पड़ने ही देरीतगोई को पो। यह हक न हक नहीं साबिन हा रही है। हिन्दू गवा दिन्दी में भी शापर समझीता न होने है। लखनऊ में डिवायनी क्रिन्दुओं की तरऊ से हुई मगर

१ आरति करते २ मनीजा ३ शक्तिवा ४ पीरी की लकवा ५ वास्तुदर्शन

बार को किसी ने मुँह न दिखाया। Wit, Humour and Fancy of Persia
 २४ एक हज़ते के लिए मेरे पाठ भेजने की इलायत कीजिए। देखने का
 इरितयात् है। पकर भेजिए। शायद मजबूत के लिए कोई मसाला मिल जाय।
 मुँहबिर रहूँगा। और तो सब खैरियत है। तिलिस्मी खुशत बहुत दिलचस्प है। तब
 तहरीर निहायत बिलगती^१।

नियाजमंद
 बनपत राम

१८१

धया पुस्तकमाला, लखनऊ
 ११ मार्च १९२३

घान्डीबाब

तसलीम ! कहीं मिला ! कपवा अभी नहीं मिला ! इनके रुपये फिटारों में
 फँस बचे हैं। इस सबह से मेरो उम्मीद के जिभाऊ इन्तुलसब^२ न मिल सके। वो
 हज़ते का बादा है। क्या हुकाम इतने दिनों तक मतबिरत रह सकेँये ? मुझे
 धापको फिर मावसिहानी की पकरत न पड़ेगी मिलते ही भेज दूँगा।

वो हों फिटारत और छपाई के लघाल से मीने अपनी दोनों फिटारों को
 छपवा लेने ही का इरादा किया है। सहर की मसमरी भी छपवावे देता हूँ।
 उनको पबलिशर की उलास है और पबलिशर मिलता नहीं। छपवाकर उन्हें दे
 दूँगा चाहे बमाना एजेसी को दे दूँगा।

और क्या खर्च करें। बच्चों को दुया।

धापका
 बनपत राम

१८२

धया पुस्तकमाला लखनऊ
 २ अप्रैल १९२३

बघारराम

तसलीम ! क्लाइक मिला गया। छान भी मिला। मीने अभी बहन जबाब भी
 लिखा पर भेज न सका। आज भेज रहा हूँ। अजमोग है बाबू दुन्दरे लाल जी
 पत्नी तक नहीं धाये। मुझे बेखर नशामन हो रही है। मुझे उम्मीद नहीं थी कि

१ तुलसीदास २ बालीने वर

बह इतने दिन के लिए था रहने है। सिर्फ चार दिन में भीट घाने का बाबा था। पर भाव गये हुए सोमह दिन हो गये। शायद वो एक दिन में था जाये। हजर से कारबरापी^१ होते ही मैं हाजिर करूँगा। यकीन है। मोका मिला तो सुर ही सेकर थाउंगा।

बसनाम

जियाजमद
बनपठ राम

१८३

धया पुस्तकमाला, लखनऊ
विधि अनुपमाला आई-कून १९२५

भाईजान

तसलीम। दोनों मजामीन देखे। इनके मुतास्सिक क्या धर्म करें। पंडित माधोदास साहब की शिकायत है कि मेने इसलाही^२ कहानियां नहीं मिली थीर अक्सर बीयर अहबाब को शिकायत है कि इसलाही मजलिसिह क्रिस्ती को खराब करते है। मेरे निस्स से जायद क्रिस्स किसी न किसी तसहूनी^३ मुधाममे से मुतास्सिक है। बाजारे हुस्न प्रेमामम 'रंगभूमि' कोई भी इसलाह से जाली नहीं। मगर धाप मजमून जामा कर सकते है।

दूसरा मजमून मामूम नहीं किस का सिखा हुआ है। मगर कोई मसनबी साहब है। एतदाब उनके बिन्कुम टीक है लेकिन उन्होंने क्रिस्ते का धमसी मशा न समझ कर उन बुबदात^४ से बहम की है दिन पर रोसनी जालना मेरा इरादा न था। देखने की बात सिफ इतनी है कि उस बपउ मसनबी रऊना की यह Mentality थी या नहीं जिस का मने जिफ किया है। बस। इने भी धाप जामा कर सकते है।

दुसरे जाम धाज वो हफते से धापरे गया हुआ है। ५ को गया था। उसी दिन शायद मने धापको छत भी मिल दिया था। लेकिन अब तक उम्मीर के जिनाऊ, बापिस नहीं धाया। मुझे कामिल उम्मीर है कि तीन चार रोड के अन्दर बह था जायगा थीर म अपने बापरे को पूरा कर सकूँगा।

सोतन जलन की बाबत। मैं जब कभी इन क्रिस्म का इरादा करता हूँ तो मुझे प्रौरन बरबाकों का गवान धाया है कि मेरी नहीं उजरीह करे थीर यह

१ कारबरापी २ इसलाही ३ मजलिसिह ४ बीटी-बीटी वाली

बचारे यहाँ पड़े सड़ा करें। तबरील की बकरल जिसको महीं महसूस होनी लेकिन जो सुदमुसतार है वह अपना इरादा पूरा कर सते है जो मीहताज है वह दिन में सोच कर रहे जाते हैं। इसी खयाल से एक बाठा हूँ। दुमबे भर को ले के जाता मुस्किम। इसलिये यहीं पड़ा रहूँगा। उस का एक पर्वत और दो तीन पैसे का रोखाना एक मौसम की तकमीक के लिये काठी है।

धीर क्या धक करे। सब बैरियत है। बन्धों को दुमा।

घापना

बनपन राय

१८४

गंगा पुस्तकमाला लखनऊ

२६ जून १९२५

बराबरम

तसनीम। जरा एक तकरीब में मिर्जापुर जमा गया था। उम्मीद है घाप बलैरियत होंगे।

बन्धु रघुपति सहाय का यह छठ भेजना हूँ। उन्होंने भीतना घबुम एक छात्र के पास भेजन के लिए मेरे पास भेजा है। मुझे मन्डूह का पना नहीं मानूम है। इनाहाबाद यूनिवर्सिटी में एक उर्दू प्रोफेसर की अपह है। २५] मास्वार २५ स्वया नामाना तरबडी। रघुपति सहाय उसके लिए केशा है। मजमने लन से मानूम होमा कि वह क्या चाहने है। घाप बराहै करम इनी हाक से इन गन को मंत्री घबुम हक की त्रिदमन में भेज दें। मीने रघुपति सहाय से दरान भी मिया था तो इनमे मानूम हुमा कि उन्होंने करीब करीब सब मजल्ल तय कर लिये है। सिध मोनरिजो की अबान बन्द करन के लिए दो बार लाल मुमनमान घसहाब की सिगरिहा बरवार है।

घाप गुरु कीरिस्त करना चाहें तो शासिबन्धु बाममाबी हो। घाप बानपूर बब तक धाले है। ये शायद १ जुलाई तक धाऊँ।

१८५

गंगा पुस्तकमाला लखनऊ

८ जुलाई १९२५

मार्शियन

१। उत मिया। मगपूर हूँ। ये इनबार को बानपूर धाउगा। घापन

के धाराब में यहाँ से बनारस जाने का इच्छा है। इसलिए एक बार घाप लोगों से मुलाकात कर दूँ। फिर न जाने फिर क्या मिले। इतबार को घाईगा। धीरे उठी दिन भोट से घाईगा। धीरे वार्ते उठी वक्त घापसे भय कख्या।

नियाममन्द
बनपठ राम

१८६

मया पुस्तकमाला लखनऊ
१९ जुलाई १९२३

माईजात

तसलीम। आज मतसुबा रकम रबिस्टरी से रवाना कर बो है। रबीम लिखिएमा। धीरे हो सब खेरिबत है।

हाँ बरघ अपने यहाँ की लीषो खपाई का रेट लिखिएमा। शायद मुझे रंवनूमि बानपुर खपवाना पड़े। मखनऊ से जाने के बार यहाँ खपाना मुश्किल हो जायेमा।

नियाममन्द
बनपठ राम

१८७

मया पुस्तकमाला लखनऊ
३ अगस्त १९२३

माईजात

तसलीम। मेने आपके छत का खबाब नहीं किया। इन खपाल से कि शायद धमी घाप हमीरपुर से लीं न हों। मे यहाँ से ४ कर बनारस जानेवाला था लेकिन कई बरूत से इच्छा मालवी कर देना पड़ा। अब १३ को आईमा। मुझे १ को मेरठ में एक जलसे में शरीक होमा है। वहाँ से भीन्ता हुआ एक दिन के लिए बानपुर भी टहनेंग। तब वार्ते होंगी। जब दिन घापकी नियम नभा क बारन न हो सकी।

वंबाब का एक पबमिहार मरी कहानी का मत्रमुधा शायद करना चाहता है। मुझे याद नहीं थागा कि प्रेम बलीमी के बार मेरी कौन-कौन कहानियाँ कहीं-कहीं शायद हईं। बंद कहानियाँ वा साहीर के खबारवास्तु में लिखली थीं। एक हुमाय

बाबी ही

में शायद हुई थी। एक हमदर्द में हाम में निकली जो मुझे याद है। मुमकिन है
एकप घोर निकली हों जिसकी मुझे इस बहस याद नहीं। शायद तमिहारबानों
ने जो का तनुमा किया था। पंजाबी शखबारों ने भी मुमकिन है कुछ कहानियों के
तर्जुमे कर डाले हों। क्या आप इस भबभुए परीशों के जमा करने में मेरी कुछ
मदद कर सकते हैं? हूजारबास्ता का आइस मुकम्मल आपके यहाँ है? हुमाय है?
शौबहार है? हुमजर भी है या नहीं? पाउडर में तो कोई कहानी नहीं निकलते?
बराह करम इसका जबाब मुझे जल्द हीलिफ़ ताकि बापसी में मैं एक काम यह भी
पूरा कर लूँ।

१८८

स्वान-तिथि नहीं है।

धनुमानत' लखनऊ अगस्त १९२५

शरिवात

उससोम। कर्बला खत्म है। कल आपके दो काह साब हो गिले। सीनापुर
में बापस धाकर औरत खत मिलिमेया। क्रिस्ता भी मिल रहा हूँ। छोने भी
पिचबाडेगा। क्याक बनन में दर लगेगी। १९ की रात की माड़ी स जाने का
इरादा है। अगर आप उस दिन जाते हों तो क्यों न मैं भी कानपुर आ जाऊँ। साथ
ही साब जमें।

आपका

बनपत राम

१८९

शगा वृक्षकमाला, लखनऊ

धनुमानत' अक्षम सप्ताह अगस्त १९२५

बपदरम

नमस्ते। काह मिला। मरापूर हूँ। हमर का खिन्नी तर्जुमा कर लें तो
जेरूँ। अभी तीन-चार दिन की बसर है।

हजरत सेहर ने 'रंभसुमि' का तर्जुमा कर दिया मगर मुद्राबदा खिन्नी
नक़्शा पर ॥१॥ श्री सरा जोगते है मामी कुल ५६५॥ मझे कुम रिनाब के

६) जिस आर्योने तो ये समझूंगा मैंने तीर मारा । घाप ४६५) बुर मींग रहे हैं । बतलाइये हैं न सायाकोही^१ की बात । मैंने लिखा दिया है कि घाप बुर किया किरी पब्लिशर को दे कर मुझे ६) जिसबा हैं और घाप बाकी सब मे जाये । म राबी हूँ । बूसरी शर्त मैंने छपे हुए सर्व सञ्ज्ञा पर १) छे सञ्ज्ञा रखी है । और तीसरी शर्त यह कि पब्लिशर से जो कुछ भिन्न उसका २/५ घाप का और ३/५ मेरा । बतलाइये मैंने क्यावती की है ? अगर घापको इसमें मेरी तरफ स क्यावती मामूम होती हो तो साफ लिखिये । ठामर यह घाप से पूर्ण । सर्व बाबारे क्रम की हासत देव कर १५) बुर मुघामबा नहीं है । और यह मे कुठो से देने पर तैयार हूँ । उनके क्यावा से क्यावा तीन महीने धर हूए होंगे । ३-४ घंटा रोड काम करके धर १५) जिसते है तो क्या कम है धरर यह न जाने किस सयान मे है । मैं धरर ४६५) उन्हें हूँ तो मुझ कुछ न मिलेगा । धरर यह घाप से पूर्ण तो बरा समझ बीनिएगा । मैंने मुहरम के बाद बनारस जाना तय किया है ।

बसनाम
बनारस राम

१६०

लखनऊ

प्रथम सप्ताह अगस्त १९२३

हजरत सेहर को मैंने २) देना तय कर लिया । यह राबी भी हो गए । घसनको की स्याघत^२ में ११) सब हो चुके । बक्रिया ६) उन्हें और देन है । धरर यह राबी हूँ तो गोष्ठ घाक्रियत भी उनगे पूरा करवा लूंगा और कुछ नई कहानियों का तर्जुमा भी । संखन में सब तय जाएंगे और कुछ न कुछ दे मरेगी । बाबू राम सरन की तबियत अब कैसी है ? लइके तो हमाराबाद जाने गए होंगे ।

निवाइमर
बनारस राम

१६१

मया पुस्तकपाला, सत्यमठ

१२ अगस्त १९२५

मार्मिल

तसमीम । मैं बापस न भन्न सका । सबब यह कि ५ टापीस से पीर में कचक पड़ गयी । चार दिन उल्ल बदे और बलन और टीस थो । पाँचवें दिन डाक्टर से मस्तर लिया । बाहिने पाँच की धापी एड़ी का बमडा बाट लिया गया । छह दो दिन से तकलीफ़ तो बहुत कम है लेकिन उठन-बीठने काम करने से मानूर हैं । इसी बातना मे स्वराज्य पार्टी के लोग बही रही मुसम्बदा उठने से मये और कातिब से थो मिलबा लिया । अगर मैं समझता कि कातिब पढ़ लेगा तो पहले धाप ही के पास भेज देता । मैं तो समझता बा शायद मेरे सिबा और कोई पढ़ ही न सकेया । लेकिन यह कातिब साहब होठियाए मानूम होते हैं । मैंने काफी देली एलियाँ कम लिखीं । और, अब तो पैम्पलेट ही की एक काफी भेजूया । ४ को यहाँ मे जाल का इच्छा या लेकिन अब शायद पच्छ दिन तक न जा सकेया । मसनवो-ए-सेहर छपकर रखी हुई है । परा तबीयत धक्की हो तो धापक पास भेज हूँ । अब की इस्तरधा है कि कमीशन २५ को धरी लिया जाय । खुद बेचारे नहीं कह सकते । धाप शायद उनकी इतनी बात मान लेंगे । रंगमूमि का तमझिया हो गी पर कर दिया । अब इच्छा है योशए धाकिजत भी भेज हूँ । खरम हो जाये । मेरे खाम भिय न होगी । बाकन इच्छाधत धापने को ठियार है । सो समय इत सिबा पर देने का धारा लिया है । और तो कोर् ताजा हाम नहीं । उम्मीद है धाप बापन का मय हूँगे । छत सिगिएबा ।

निदाबमन्

बनपन राय

१६२

मया पुस्तकपाला सत्यमठ

२२ अगस्त १९२५

मार्मिल

तसमीम । धापका बाड मिला । अब जन्म पुर हो गया अगर धापी तक बनने-करने से मानूर हैं । धी तो बरा भी चाहता है कि बनारस जावे न कम्न एर रोड बानपुर का जाऊँ । देगा चाहिए । यहाँ भेज बलीनी दिग्गा दोम रपी

हुई थी। कोई उछल ले गया। अगर घाप इतनी इलायत करें कि हिस्सा बोन के मजामीन की खेहरिस्त नकल करवाके भेज दें तो ऐन एहसान हो। मैं कुछ हिन्दी कहानियों का तर्जुमा करके पंजाब के एक पब्लिशर पिण्डी दास को भेजना चाहता हूँ। बरखा हूँ कि कहीं वही मजामीन न पा जायें जो हिस्सा बोन में निकल चुके हैं। हिस्सा बम्बस मेरे पास मौजूद है। सिर्फ़ बिस्व बोन के मजामीन की खेहरिस्त की जरूरत है। परसों तक मुझे खेहरिस्त मिल जायगी तो मैं इन्जाम बर्मा साहब को मजामीन की खेहरिस्त भिज भेजूंगा जो उधु में हुए है। मसनवी भी भेजनी है। जरा पैर काम करने सवे तो भेजूँ।

बस्तमाम

बनपठ राम

१६३

सखनक

२५ अगस्त १९२५

मार्जान

तसलीम। सीरे बरसेत का तर्जुमा धनकरीब खरम होनेवाला है। उस इसे वापस कर लूँगा। धम सोचे बतन की जरूरत है। उसमें से दो तीन कहानियाँ ले लूँगा। बरखे करम सोचे बतन को एक कानी भिजवा दीजिए। बितनी बस्त हो जाये बतना ही धरखा है। दिसंबर के पहले यह मकमुधा अपनी प्रेस से निकाल लूँगा। इसका नाम होगा 'प्रेम प्रसून (प्रेम का फूल) पन्नीस कहानियों का एक बसहवा मकमुधा कलकत्ता में भी निकल रहा है, जो हिन्दी की प्रेम पत्रोती होगी।

आनकम Anatole France का एक हिस्सा हिन्दी में तर्जुमा कर रहा हूँ। धीरे मेरे ही प्रेस में छप भी रहा है।

सीरियते मिजान से मुत्तिका करमाइएगा। धीरे सब सीरियत है।

कामिबन् मकरंर यादबिहानी की तकमीक घाप छटना पसंद न करेंगे। क्यों कि घाम के पाँचवें दिन में फिर सोड बतन के लिए हाडिरे खिरमत होईगा। उसी के तीन किस्मों की कमी है।

निदायुमन्

बनपठ राम

१६४

गया मुलकमासा, लखनऊ

३ अगस्त १९९१

मार्दान

तसमीम । काह यिना । मैं तो सब लंगड़ा-लंगड़ाकर चल रहा हूँ । मगर घायल बुखार म मूबतिला हो गए । अब तो मैं कम खाना हुआ जाता हूँ । ईरबक ने बाह्य तो रिशम्बर में इतमीनान से मुलाकात होगी ।

हजरत सहर की फिठाबे पासल से खाना कर दी हूँ । बीरंग पामन है । उन्होंने कुछ समतियाँ निकाली हैं । घलतनामा लपबाना चाहते हैं । मुझे जिजून मानून होता है । लेफ्टिन अबर उन्होंने इखरत किया तो एक घलतनामा लपबाना ही पड़ेगा । इसकी फ्रेडरिस्त में यहीं से आपके पास भिजवाऊँगा । आप इसकी क्रोम्ट फिठाब की बिश्री में से बजा करमा सीखिएगा ।

घौर सब खेरियत है ।

आपका

अनवर रय

१६५

सरस्वती प्रेस, अम्बरेश्वर, काशी

३ सितम्बर १९९१

बखरम

तसमीम । मैं १ को लखनऊ से खेरियत पहुँच गया । आपका लख घौर मजामीन की फ्रेडरिस्त मुझे लखनऊ में मिल गयी थी ।

अब एक घौर लखनऊ आपको देना चाहता हूँ । येरा बहु खाना शिमम शतरंज के घिसाही शायल हुआ था गुम हो गया है । बरह करम बहु मंबर मरे पास फिर से भिजवा सीखिए । एम लखाबिस होगी । मैं अपनी मन्हुषाने आशर कहानियों का मजमूया तैयार कर रहा हूँ । सम्मीर है मयमबी-ए-सहर पहुँच गये होगी ।

घौर सब खेरियत है ।

आपका

अनवर रय

१६६

सरस्वती प्रेस, बनारस

२ फरवरी १९२६

बराबरम

तसलीम ! काह मिखा । 'कर्मसा' का एक सीन फ्रील मिख भेजटा हूँ । उबकत के जमान से धीर बबाबा न लिखा । दो-बार टोच में धीर एक-दो भेज चुँया ।

धमी तो कुछ मानुम नहीं हुआ कि इसाहाबाद में कब तकबी होगी । नाम ठी बड़े बड़े हैं । गैर-सरकारी धादमियों न तो सामर बार-बार धादमियों से बपाबा नहीं । धीर जोय किसी न किसी तरह सरकार से बाबिस्ता^२ हूँ ।

धीर तो सब खेरियत हूँ ।

धापका

बनपत राम

१६७

सरस्वती प्रेस, बनारस

२७ मार्च १९२६

भाइजान

तसलीम ! मुहूब से धापने न कोई खत मिखा धीर न भेजे । इसलिप रिक्का-यत का मौका नहीं । जम्भोष हूँ कि धाप मय धपाल पच्छी तरह हूँ । खत कोई खत भेज कर मुतमझन^२ फरमाइए । भेज इरवा हो रहा हूँ कि धपने सवानहो^३ मजामीन का हिन्दी तर्जुमा लाया करूँ । इन्दीबन् सभी सवानेइतमरिया^४ मैंने जमाना ही में लिखी हूँ । मेरे पास 'जमाना' का कोई छद्रहल नहीं । क्या बहू हो सक्ता हूँ कि धाप मेरे पास एक एक बिस्व भजते जाएँ धीर मैं उसका तर्जुमा कर के लौटाता जाऊँ । या एक बुनरी मूरत यह हूँ कि जगमोहन भी दौधित से कहुँ कि बहू धाप के यहुँ से छद्रहल भकर मजामीन का तर्जुमा करके मेरे पास भेजते जाए । धपर बहू धामाका न हुए ती फिर धापको छद्रहलें मुझे धाविउन्^५ बेनी पहेंगे ।

धीर तो सब खेरियत हूँ ।

धापका

बनपत राम

भाइनाम

सरस्वती प्रेस बनारस

११ मार्च १९२६

तसमीम। कार मिला। मरी शिबनापावला साहब की बख्त की खबर सुनकर
 पत्रोंसे हुआ। परमात्मा उन्हें फलत मसीह करे। कई दिन हुए एक छत मिन बुझा
 है। यहाँ के हामात मामूम हुए होवे। मारी साहबा की तबीन धनामन की खबर
 सुकर भी रंज हुआ। शुक है कि अब उन्हें सेहत है। मैं तो साबिक दस्तुर काम
 करता बना का रहा हूँ। प्रेस की हालत खराब हो, अब कुछ खबरसमाह है।
 सभी एक शहर में मुझीम होने की सुरत नहीं निरुमी। अब जून के बाद ही
 मकान सँपा। लड़के की छात्रयो का खवाल न होना तो मैं खोजना धामा बापा
 करता। बमाना के लिए कुछ नहीं लिख सका। इसकी मुधारी बाह्या है। बहू
 में कोई पुरदानेहास तो है ही नहीं अपने दो मामिलों के तर्जुमे दाखल इस्तामत
 बनाव को दिये। सभी कृप तय नहीं हुआ। धीरे धरी इतनाम बनी साहब मार
 लडाओं के नाक में बम क्रिये हुए है इतनाकि एक ही पचाम दे चुका हूँ लेकिन धमो
 उन्हें इतना ही धीरे देना है। इन दोनों किताबों की इतामत पर ही खर्चा बमूम
 होया। धीरे क्या अब कहें।

बापरा

बनपन राय

१६९

सरस्वती प्रेस, बनारस

१७ जुलाई १९२६

भाइनाम

तसमीम। कार के लिए मठकूर हूँ। मेरे हालत लोट कर लें। सायेख देना
 इत संबद् १९३०। बाप का नाम मुंशी बनावब सास। मुकुषत घोडा मडॉ
 लम्ही। मुसठिल पाहडेपुर। बनारस। इम्तदाधन काठ खाल लक प्रारवी
 परी। फिर धिरेजी शुक की। बनारस के बामजिएट रूम से एम्प्ले पास किया।
 बामिर का इम्तदाधन पंडह साल की उम्र में हो गया। बामिया सागवें नाम मुजर
 चुकी थी। फिर तामीम के तीरु में मसाबिमत थी। धम् १९ १ ई स डि

१ देरमा १ कार १ बाप १ टुक के विनाम

रेटी जिम्मेगी शुक की । रिसाला जमाना म सिद्धता रहा । कई साल तक मुतर्झिक मजामीन सिद्धे । सन् १९४ मे एक हिन्दी नाबिल प्रेमा सिक्कर इरिप्यन प्रथ से शायी कराया । सन् १२ में बस्वए ईसार धीर सन् १८ में बाबारे हुसन् लिखा । हिन्दी में सेबासदन प्रेमाभय रीगभूमि कायाकल्प—चारों नाबिल बो-बो साल के बरठे बाब निकसे । इनके उधू तर्जुमे बनकररीब शायी होंगे । कहानियों के मज्जु प्रेम पत्नीसी धीर प्रेम बत्तीसी उधू मे निकसे । हिन्दी में मो कई मज्जुए शायी हुए । सन् २ म मुलाजिमत से किनाराकठ हो गये । अब ज्ञानानरी है । बाकी समूर बापको खुद ही मानुम है ।

कर्मना धाप निकाल रहे हैं । मैं इसके धागे के हिस्से बनने में हूँ । उधू की ठारीक के तर्जुमे के मुठासिक क्या धर्म कर्ते । उस पर धापका ऊँसता मेरे ऊँसल से बेहतर होगा । धपर जमाना की तर्जुमे के सुच्छाट है तो दो सन्या धी सुका उबरत जिन्ही तरह बयासा नहीं । इससे कम मे तर्जुमा करना मेरे हक में मुकसान का बाइस होसा । धपर मंजूर करमाँ तो मेरे पास मुसब्बवा मेज दें । धपना नाबिल बाओ म शुक करेगा । बरसात में तर्जुमा जलन कर जानूँ ।

धीर तो सब सीरियत है । एकपसन का काम मुझे तो नहीं मिला न मैंने छिन्न की । मपर अब देखता हूँ कहीं मिल सकता है । धारिक मामूली है । यमी नी कुछ कम हो मयी ।

बच्च धन्धी तरह है । धाप बारबार मुझे बुलाते हैं । एक हजते बनारस की हमा लाइए । मैं बहुत अब धाऊँसा मीका मिसा तो हजते-धारे मे धाप मुझे कामपूर न देखेंगे ।

बच्चों को दुखा । कुबारा कुछ माहून बघेरह का हाल भी लिख विमा कीजिए । धापक बाइस मने उन सोगों का हालबाल जानने की भी छिन्न रहा करती है । मसकन् बाबू रामधरन का विक धाप मुतमन्न नहीं करते । छिठ क हालात से मुझे भी कुछ इन्टरेस्ट है । यह हजरात मुझे नून गये हैं लेकिन मुझे तो उनकी माद धामा करती है ।

बस्वनाम

धनपत धय

२००

सरस्वती प्रेस बनारस
२७ जनवरी १९२७

जाईमान

ठपनीय । घापका काट करे दिन हुए थाया । ये इधर जुकाम और दरदर की बजह से तीन दिन से प्रेस नहीं थाया । मुझे काई पत्रकर हैण और मज्जोम हुआ क्योंकि मैंने दो हफ्ते से कामर हुए कबला का एक २० मुठ्ठे का टुकड़ा भेज दिया का । क्यों नहीं पहुँचा मुझे इसका लाग्जुब है । दो शबागा^१ रीज की मेहनत प्रकारव गबी । और सब फिर मौला निकालकर जल्द ही लिखगा है ।

एकडेमी से घाप बेनिवाज^२ हुए इसका मुझे और भी लाग्जुब है । कुम्हरेडी^३ घापने की बाबदाते^४ घापने की इस्ल दुकरे का रहे है । घाप शम्बर इस बोले में से कि घापको सेक्रेटरीसिप के लिए मज्ज^५ किया जायेगा । इन मज्जत-बडा^६ के जमाने में हाथर कहां ? जिसने सबकुछ की बहु बाकी से पया । फिर जब घाप ही न रहे तो मेरा मला कहां मुजर और किस हैसियत में । देखिए कब जम्मा होया है । मुलाहात होगी । मुझे तो सबसे बड़ी यही पुरी है । घाप भी तो मेरे एक पुराने रसोका^७ और सबगुमार^८ टहरे और घापने बरसों से मुलाज्जत की मौबठ नहीं थायी । इत्तज्जाले^९ जमाया और क्या ।

जम्मी^{१०} है कि और सब लोग बनेरियज होंगे । यहाँ बहमा बुम्ह^{११} औरियन है ।

घापर

बनपउ घप

२०१

सरस्वती प्रेस. बनारस
६ फरवरी १९२७

जाईमान

ठपनीय । कबला के दो तीन दो तीन दिन में भेजूया ।

कम लखनऊ से काबू बिठान मरामन भामव ने मुझे घापुटी की एडिटरी के लिए बुपाया है । मुलाहिजा दो सद माहवार होया । घापन इलाहाबा^१ जो छान लिया उसका धमी कुछ जकाव थाया ? कुछ इलाह^२ की जम्मीर है ? धपर धबर कोई जम्मीर न हो तो यही यही । अबाव बधापसी डाक मुलाका करयाइ^३ ।

नियामन्द

बनपउ राव

१ घाप दिन २ जम्बर ३ काज बीला ४ बीपना ५ जम्मीरिज ६ बीपन-बीपन ७ परद होण ८ एपर ९ इथेज १० लकाई

२०२

नवलकिशोर लुकडियो लखनऊ

२१ अक्टूबर १९२७

भाईबान

तसलीम । मैं १२ तारीख को यहाँ आ गया हूँ । आप पटना कब आयेंगे ? आप पटना गये हुए हैं तो वहाँ से कब आँटेंगे । आप आ आयें तो एक टोच क लिए आऊँ । मुसलमान का भी चाहता हूँ ।

जिमानमन्

बनपत राम

२०३

नवलकिशोर प्रेस लखनऊ

१४ मार्च १९२७

भाईबान

तसलीम । अपनी ऐक मुज आया । बचापसी डाक से भेजिए । बंधा हो रहा हूँ ।

१६ को बनारस जला आऊँगा । इसलिए कम ही भेज बीजिएगा । परसों मुझे मिल आवेगा । आपके भेज पर रखी थी ।

आपका

बनपत राम

२०४

माधुरी कार्यालय, लखनऊ

२२ अप्रैल १९२७

भाईबान

तसलीम । छठ मिला । कर्मला का एक टुकड़ा परसों तक भेज हूँगा । ओटो-प्राक्टर के पास गया था । मूक डाक्टर ताप बंध साहब के पास से आ गया है । उसने एक हफ्ते के बंधर देने का आचा किया है । ज्योंही मिलेगा आऊँ बनवाकर माधुरी में देना धीरे बाह को आऊँ आपके पास भेज हूँगा । बच्च जालिबन् १५ मई तक आयेंगे । बीबान साहब का एक छठ आया है । आपर उनका मग्य बार का मुआमला ठीक हो गया । एक दिन जूब आऊँ रहा । सुरबत में भी एक

१६५ / चिट्ठी-पत्री
महा है। दोस्तों के साथ बोझ भी हो तो भाषणकार न मुझे। इतना बर्ना साहब
जमाना के लिए क्रियाकर्म का रिप्यू लिख रहे हैं।

२०५

भाषका
बनपत पत्र

माधुरी कार्यालय लखनऊ
१४ नवंबर। सख नहीं है। अनुमानत १९२७
मार्जिनल
सखलौम। भाषण शालिबन् इसाहाबाद से लौट धाम्ये होये। वहाँ क्या मजीबा
हुषा मतिमा करमाइएया^१। एक ज्ञास बात मुझे एक मजमुन के लिए बाइ बाल
मुकुन्द की मुक्त मरहूम का बह मजमुन बरकार है वा भाषने जमाना में तिषा
वा। उस माह का रिवाला मौजूद हो तो बटहे नबाबिष^२। येज बीजिए बर्ना
प्रारन। कुछ बातें भी करनी हैं। भाषण तो इस तरह लखनऊ नहीं था रहे है ?
या मैं ही हाडिर होऊँ ?

२०६

भाषका
बनपत पत्र

माधुरी कार्यालय लखनऊ
२५ नवंबर १९२७
मार्जिनल
सखलौम। जम्मीद है भाषण ईसाहाबाद से या गने होये। मुहम्मद की ईक़िनत
मुनफर मुझे इस बजत सखत रज हुषा। मिलने का भी चाहता है। भाषण किंच रिज
मौजूद रह्ये। एक दिन के लिए धार्जंगा। प्रीरन लिखिए।
मुफ्तियों के मीनेबर साहब साहबेरी के रूपों का तकाजा कर रहे हैं।

भाषका
बनपत पत्र

२०७

भासुरी कार्यालय लखनऊ

१८ दिसम्बर १९२७

बराबरम

उसमीम । कई कई दिन हुए आपका मिला । क्रिस्ता लिखने में मसक़्त था । दो दिन पीठ में बटक पड़ जाने से कोई काम न कर सका । धब यह क्रिस्ता भैबता हूँ । प्रोटो के लिए मैंने सोचा था बनारस से मुहल्लया कर्सेया क्योंकि वहाँ कई उसबीरों पड़ी हुई हैं, पर देखता हूँ इधर वो चार दिन बनारस जाने का हतकाक न होमा । इसलिये इन्हा मस्वाह कम उसबीर लिखवाकर भेजूंगा ।

धीर सब कैरियत है ।

आपका

बनपत राम

२०८

२३ नारवाड़ी गली, लखनऊ

१९२७

बराबरम

उसमीम । आज एक कार्ड भज चुका हूँ । इतकाक से इस बक्त मरे बोस्त परिष्ठत मातामीन शुभल एक पकरत से काकपूर था रहे हैं । अमर आप जुलाई १९ ९ की आइस धीर सन् १९ ८ की आइस के हैं तो आपको मसक़त कपने की पहमत भी न उठानी पड़े । रामा प्रताप जुलाई सन् १९ ९ में है धीर बिबेका मन्ध सन् १९ ८ में । यह दोनों लिखें आपके खतुर में मीभूद है । बस मिर्क़े अकबर नंबर का मुसामला रह जायगा । उसकी एक लिख बस्न्यात्र हो सके तो मुझे धीर किठी आइस की पकरत न होमी । मैं यह दोनों मतामीन मरल कपके आइस बहुत बन्ध लीटा हूँमा । कुर लेकर धाईया । धीर सन् कैरियत है ।

आपका

राम

२१

है। कम शान्त मिल पाये। मिलते ही भेजूंगा। धारा १७ को धार रहा है। रंगवार कर रहा है। प्रोगे का तो ब्लाक कामपुर ही में बनना होगा। २४ बच्चे में बन सकता है। धाराएँ। इस धामे नाम के मुताबिक धारासे बहन-भो बाने करना है। इसधामे अगर कोई सड़का ठीक हो जाये तो धामे साम धारी कर दूँ।

बाकी सब सीरियस { ।

दिनूस्तानी एकेडमी में इनाम के लिए जब तक बिनामें भेज दो जायें मगर यह सब तो मनाकाउ होने पर।

धानदा

बनपन राय

२१०

माधुरी कार्यालय लखनऊ

१ अगस्त १९२८

बराबरम

तसलीम। धारण कर मजामीन किमी कानिब को है गिय या नही। इस बार नंबर के मजामीन मिल गये होंग। उन्हें भी शर्मिल करना है। बिताबन का ठिक ठरतीब है ही जावेगी सफिय अयर बहो बिताबन में कोई दिक्कत ही तो धार सारे मजामीन अब अजबर नंबर के मजामीन मेहरबानी करके भेज दें। यहाँ भी बयासानी^१ बिताबन हो सकनी है।

और सब सीरियस है।

नियाहमग

बनपन राय

२११

माधुरी कार्यालय लखनऊ

११ अगस्त १९२८

मईमान

तसलीम। मजामीन के लिए शकिया। धामी बार मजामीन ही करन करन है।

१ रामा प्रदान—जुलाई सन् १९६

२ रामा मानसिह—अजबर नंबर

२०७

माधुरी कार्यालय लखनऊ

१८ दिसम्बर १९२७

बराबरम

उसमीम । काई कई बिल हुए आपका मिला । किस्सा लिखने में मसबूत था । वो बिल पीठ में बटक पड़ जाने से कोई काम न कर सका । अब यह किस्सा भेजता हूँ । छोटी के लिए मैंने सोचा था बनारस से मुहम्मद कर्हेगा क्योंकि वहाँ कई एसबीरें पड़ी हुई हैं पर देखता हूँ इधर हो चार बिल बनारस जान का इत्तफाक न होमा । इसलिये इन्हा मस्नाह कम उसबीर लिखवाकर भेजूंगा ।

धीर सब सैरियत है ।

आपका

बनपत राम

२०८

२५ मारवाड़ी बली, लखनऊ

१९२८

बराबरम

उसमीम । आज एक काई भब बुका हूँ । इत्तफाक है इस बक्त मरे बोन्ठ पसिबत मातावीन दुस्ल एक बकरत से कानपुर जा रहे हैं । अपर आप बुलाई १९ ६ की इअहल धीर सन् १९ ८ की इअहल से हैं तो आपको नफ्तन करने की बहमत भी न उठानी पड़े । रामा प्रताप बुलाई सन् १९ ६ में है धीर बिदेअ-मन्द सन् १९ ८ में । यह दोनों बिन्दे आपके बफतर में नोकूर हैं । बस तिक्र अकबर नंबर का मुधामला रह जायगा । उसकी एक बिल्य बस्तपाब हो सके तो मुझे धीर किटी इअहल की बकरत न होयी । मैं यह दोनों भबामीन नफ्तन कराके इअहल बहुत बत्ब लीटा रूंगा । खुब सेकर भालेगा । धीर सब सैरियत है ।

आपका

बनपत राम

२०९

माधुरी कार्यालय लखनऊ

१९ जनवरी १९२८

भाईजान

उसमीम । छोटी तो लिखवा बुका हूँ सैरियत अभी प्रोगेवाकर ने दिया नहीं

है। इन शायद मिस कामे। मिलते ही भेजूया। धाप १७ को धा रहे है। इनकार कर रहा है। क्रोने का तो क्याक कामपूर ही में बनता होगा। २४ बन्दे म बन सकता है। धापए। इस धपे त्रास के मुशकिलक धापसे बहुत-सी बाने करमा है। इसधाम धकर कोह लड़का ठीक हा बाब हा धपमे साम शर्ती कर है।

बायी सब सैरियन } ।

इन्दुस्तानी एकेडमी में इनाम के लिए कब तक किनासे योग दी जाये धाप रह सब तो मुमाकात होल पर।

भारती

धमपन राय

२१०

बापुती बाबासाय लखनऊ

१० धपस १९२०

बापुती

उसलीम। धापने मेरे मजामीन किसी कानिब को दे लिये या नहीं। धर धर नबर के मजामीन मिस धपे होय। उन्हें भी शामिल करना है। जितानन को फिर ठरतीब दे बी बाबेदी मजिन धपर वही जितानन में कोह रिहवन हा ठा धाप सार मजामीन सब धरधर नबर के मजामीन महरबाबी करके भब है। यहाँ भी मजामीन^१ जितानन को सकठी है।

बायी सब सैरियन है।

नियारमन

धमपन राय

२११

बापुती बाबासाय लखनऊ

११ धपस १९२०

बाबासाय

उसलीम। मजामीन के लिए शकिया। धभी धर मजामीन को लखन रह रन है।

१ राजा ब्रतानु—जुलाई मन् १९ ६

२ राजा बाबासाय—धरधर नबर

३ राजा टोडरमल—धकलर मंबर

४ स्वामी त्रिविक्रम—१६ ८ सुफहा ३८६

इन बार मन्नामीन को बन्धन मुक्त करके रख लीजिए ताकि प्रबन्धी बन्धन में जाऊँ तो तैयार मिलें। इन मन्नामीन के बन्धन मन्नामीन बेकार है। मुक्त करने की उम्मीद में प्रार्थना कर रहा। क्या तकलीफ़ होगी मगर कहीं क्लिपते ?

धकलर

बनपत राम

२१२

नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ

२६ अगस्त १९२८

मन्नामीन

तसलीम। दोनों हस्तोत्तर दस्तावेज लिखित हैं। अगर मुनासिब समझें तो तसलीम की उम्मीद कर दें। अभी बहुत धर्म से मेरी क्लिपों का भी हिसाब नहीं हुआ। जो धर्म तो हो ही गये होंगे।

अपनी कहानियों का एक मन्नामीन मैंने खुद यहाँ छपवाना शुरू कर दिया है। इस प्रारम्भ रूप में है, शायद एक प्रारम्भ ही हो। उसका नाम रखा है तसलीम परवाना।

×

×

×

×

आपने मन्नामीन हस्तोत्तर के यहाँ से × × न मन्नामीन हो तो मन्नामीन न लिखा। तसलीम मेरे दो मन्नामीन हैं। राखा प्रताप सन् १६ ८ में है। इन तीन मन्नामीन के बन्धन मन्नामीन गैर मुक्तमन्नामीन रखा जाता है। प्रारम्भ मन्नामीन लीजिए तो मैं एक दिन धकलर से धकलर ही क्लिप किसी धकलर को रखकर धकलर मन्नामीन मुक्त कर दूँ। ८ १ प्रारम्भ में एक छोटी-सी थीज हो जायगी।

आप इलाहाबाद तो चल ही रहे होंगे। वहीं मुनासिब होगी।

अर के योग धकलर गये। तसलीम है धकलर बन्धन लिखित हूँ।

धकलर

बनपत राम।

२१३

सप्तमः

७ अक्टूबर १९२०

पार्श्वगत

तत्कालीन । आज काजपुर जाने का इरादा था । इसलिए लठ न लिया था । लेकिन अंत ऐसे काम था जैसे कि धाना न हुआ । उसके परवाना का इरतहार देने जमाना में देखा । अथर टीरिहय सेंटर के बीच में एक सुरहा धपवाकर निमका रें तो अत्यंत अज्ञान मूर्खता जतीजा पैदा हो । आइया बीबी आपकी पाम । मैं एक इरतहार तैयार किया है । आप अथर उसे मधामिपका^१ तालमुकाउ हो निमा पर हो चार धसवार में धपवा सकें तो कहिए उसे खेज दूँ । तीर इंच से इंच में धा जायेगा । 'बीगाने हस्ती' धा थपी है । धाऊंगा तो लैता धाऊंगा ।

कोन में मुत्तलक^२ हो जाने पर लकने निम से मुबारकबाद । आपने मुझे इतना लक न बी । बख ।

अथर नबर धौर उछा प्रताप अर हो मजामीन धमा लक मुझे नहीं निने । कियतउ हो रही है । मौजूग मजामीन अल्प लाम हो कार्येक । बहु कोनो मजामीन आप मौताला हसरत मोहानी से संघबा रें तो मरी कियत मुकम्मल हो जाम । बर्ना अचूरी पड़ी रखी । मजले करम^३ क्या काम देगा लिखिएगा ।

आपका तजबीहकर्दा^४ काउक रजिस्टर्ड पट्टीक यना था । पशपूर है । अब आप बी तबीयउ रेंतो है । आप तो काम म लेक शानकर बैठ जाते है धौर यहाँ कोई दिन ऐसा नहीं जाता कि एक धाव बार आपका तिक न धा जाता हो ।

आपका

धनपत उय

२१४

१ हिजे^५ रोड, लखनऊ

१३ दिसंबर १९२०

पार्श्वगत

तत्कालीन । अजकी जमाना में उसके परवाना का इरतहार न था । यह बेइन्तिजती^६ बनी । बुरे लठे का न लही पर एक धोउ मा इरतहार तो बगी न रही उदना ही चाहिए । बर्ना बिजेपी रेंसे । 'रियामन' में धो धान ही इरत-

१ धनपतलिक २ जुने जाने ३ काउक-विद्यु ४ मजामीन ५ धौरकतः काउक ।

हार से हैं। वह एक ३ X ३ काशी होया। धीरे तो सब हाजात सामिह बस्तुर है।

धामक
ममपत राम

२१५

नवसकिसोर प्रेस, लखनऊ
२१ फरवरी १९२६

माईबाब

तसलीम। आपको यह सुनकर मसरत^१ होगी कि बेटी की शादी जिला
घापर के एक मुठमजिबन^२ साम्बान में तय हो गयी है। वह लोग यहाँ घाये
से धीरे कल आपसे गये है। वो चार रोड में मी बरन्दे को रूम घरा करने
बाउंवा। लड़का भी ए में पढ़ता है। जामबाब मामूम है। मसर सर्त^३ चार
हजार का है। मेरी मुगत कुल दो हजार की है। धाम बतला सकते है कि आप
माच के घाड़ीर तक मेरी कितनी मरब कर सकते है ताकि मी बकिन्दा की धीरे
कोई छिन्न कर्क। मी आपको इस बक्त मुठसक तकलीफ न देता मसर बह लोग
इमसाल ही शादी करने पर मुसिर है। इस बजह से मबबूर हूँ। शादी बनारस
से कर्कपा।

धाम बमामा मिसा। इस माह मीने ऊभोबाली तसबीर मापुटी में निरुम्बवाली
भी मगर आपने तकलीम^४ की। धम यह लोग ब्लाक का धाम क्रिस हिसाब से हैं
कैसे हिसाब होका। मिसिपंगा उस तरह से है कर हूँ। घापर इस माह में आपने
म लयायी होती तो मे लोग तसबीर, ब्लाक बरीरह का काम हैतें पर राडी से।
मुझे मामूम न का कि आपने छपवा भी है बनी आपको मला कर देता कि इम
माह में न घापियेगा। मगर लीर। बबाब का मुत्तदिर रूँगा।

धामका
ममपत राम

२१६

सलमऊ
२१ फरवरी १९२६

माईबाब

तसलीम। मीने कस नवसकिसोर प्रम से बातचीत की। वह १५ डिमाई
छाईन् सेह-रंगी^५ के कम से कम २५) मांगते है। इससे कम करने पर राडी

नहीं है। आपको इसमें किफायत मालूम होती हो तो मम्मे इतना दें। कायब भी इसमें शामिल है।

हां 'बस्टिस' मेने शुक्र कर दिया। १६ १७ सप्रहात कर भी डामे। लेकिन धमी उसका हिन्दी का तनुमा तो धाया नहीं। इसलिए वह सब मुश्किलों को पहले बिलशानियों या मरावरों से हल की थी फिर धा रही है। इसलिए अब तक हिन्दी तनुमा न धा जावे उस बन्त तक के लिए मुमनबी करता हूँ।

दुसरे किल्लों के मुतास्किर धं यही कर्हूया कि धाप लुह हो कर सें। मैन समझ था एक नशिस्त में ७-८ सप्रहात हो जाएंये। पर अब देखता हूँ तो मुश्किल से चार सप्रहात होते हैं और मेरे पास एक नशिस्त से ज्यादा बज्ज नहीं है। अगर इसे करता हूँ तो मेरा 'फॉए मन्नाह' रहा जाता है। सुबह को कल्ला हूँ तो 'कमभूमि' में हर्ष होता है। और बूसरा कौन सा बज्ज है? 'बस्टिस' तो मैं किसी न किसी तरह कर ही डार्नुया सक्ति बाकी दोनों का मेरा इस्तीअर है। इतने ही बन्त में मैं ज्यादा क्वाये के काम कर सकता हूँ।

और तो कोई ताजा हाल नहीं है। जम्मीद है धाप सुरा है।

धापका
बनपत राय

२१७

सपनऊ
१६ मार्च १६२६

बाईबाज

उसमीम। कबला धाटाव से दिसंबर मन् २० तक माना न भूल जाइया। यह धारविहाती कर रहा हूँ। अगर प्रज्विस^२ पत्ते न होंगे तो मज्ज कराने लिये धार्ये।

हां Surfic धोर Golden Wing भी पच लठ धारया। बोना मानवरों की है।

धापका
बनपत राय

२१८

ट्रिफ्लेट रोड लखनऊ

१६ मार्च १९२६

भाईजान

तलसीम । आप मुझकर खुश होंगे कि बेटी की शादी ठीक हो गयी । लड़के की बहन महा अपने शौहर के साथ धायी की धोर देख भासकर खुश बनी गयी । अब मुझे लिखक भेजना है । राखी छठ में होगी । मैं मई के पहले हफ्ते में दो माछ की खसत भेकर धाऊंगा । मेरा इरादा इतबार को धान का है । जरा मिस्टर बीरामाज खन्ना से मिलना है । अपनी टीशर्टों के धंभ धी में रपबर्न करने के लिए उनसे कहना है ।

मैंने मास्टरकी का ड्रामा कटीब लिख कर सारा कर लिया है । बाकी इस माह में सारा कर दूँगा । आपने अपने दोनों ड्रामों को चुक दिया या नहीं । लिखना कर चुके ?

ऊबोबाली तसवीर के ब्याज मैंने तीस रुपये पर माधुरी को दे दिये । बीस रुपये धरम तसवीर के मुखभिरर साहब की नजर करने से बाकी इस रुपये मेरे पास है ।

आपसे यही पुकारित है कि इस वक्त आप क्यासे से क्यासे मेरी कितनी हमबाद कर सकते हों कर दें । हिसाब पुराना पढ़ा हुआ है । उसे भी सारा करा लीजिए ।

धीर क्या धरं करे । इतबार को इरा बख्साह मुताकत होगी ।

आपका

बनसत राव

२१९

कानपुर

लिपि नहीं । अनुभावतः मार्च १९२६

भाईजान

तलसीम । बिना इतिहा आया धीर कटीबन् दो धंटे के इतबार के धर धर का रहा है । यह लिखना खयाला के लिए लिखा है । पत्र धामे तो दे लीजिएगा

इसमें कहीं अक्षर underlined नजर आये। वह हिन्दी मुद्रित^१ न बनाये हैं। उनके कुछ मानी नहीं हैं।

बस्वामा

बनपत राय

२२०

नवलकिशोर प्रेस सखनरु

१७ अगस्त १९६६

बाईबाल

उसनीम। कलामकरा का यह तनुमा दरसामे लिखित^२ है। इत्यादि भी निस्के स पयादा हो गया है। बस्त^३ मई तक खरम हो जायेगा। मैंने कोरिप्ट तो नहीं की है कि तनुमा सही हो और उसके साथ ही महाबरा हाथ से न जाने पसे। घाप इसे देखें।

धबको कानपूर गया पर घापसे मुलाकात न हो सकी। उमसल^४ थी छरर न सका। 'साहकार' तो अब कालिबन् न निकसेगा। घाप उनसे मेरा रिम्मा से न और जमाना में निकाल दें।

बकिगा खरियत है।

घापका

बनपत राय

२२१

सरस्वती प्रेस, बनारस

२३ मई १९२६

बपाररम

उसनीम। मैं २१ तापिल को यहाँ आ पहुँचा। जम्मीर है घापने बड़ो मंपबाले का इन्तजाम करमा लिया होगा।

मैंने घाप रिम्मा का कि ताके परबाला की कुछ जिस्से माबपत राय एंड संस बुकसेलर्स काहोर के यहाँ भेज बीजिएमा। घापर घब तक न रबाना की हों तो घब उ जिस्से मिजबा हैं ममनून हूंगा। और तो लब खेरियत है। पासबरी का 'साहकार' घाप ने शुक कर दिया होगा। मेरा तो 'निम्बर

१ प्रतुपत्रक २ देखा है देरिप ३ काया उ मन्व ४ मकरी

बाँस' सब बोड़ा रह गया है। 'जस्टिस' साफ भी हो गया।
उम्मीद है कि अगाम बर्सेरियत होंगे।

घापक
बनपत राम

२२२

बज्जतर मासुरी, लखनऊ
१६ अगस्त १९२६

मार्जमान

ठसलीम। आप इलाहाबाद से न मालूम कब लौट वये कि मुसाफ़रत न हुई।
एक साहब ने मेरी कुछ फ़िटारों मंगवायी है। वो फ़िटारों तो मेरे पास है
मगर प्रेमबत्तीसी और पत्तीसी मौजूब नहीं। अगर आप इन दोनों फ़िटारों की एक-
एक बिस्व हर दो हिस्सा या पत्तीसी मौजूब न हो तो सिफ बत्तीसी हर दो हिस्सा
एक एक बचापसी भिजवा दें तो मैं यह छतरमाहदा पूरि कर हूँ। उम्मीद है कि मुम्बू
बाबू को Seed o f कहने के लिए मैं भी कालपूर पहुँचूँ। आपने तो शायद सब
मसलत अपने की कसम खा ली। मिर्जा अस्करी ने आपको शायद खत भिजा
हो। इंडियन प्रेस से यहाँ का मुसामला बेहतर है क्योंकि यहाँ हम भी हर तरह
की इमदाद करेंगे। चाहे रायस्ती कुछ कम मिले पर आपको मसलत बहुत कम
करनी पड़ेगी।

मेरी राम बर्चा तो आप देव ही बुके। रामनराजन नाम ने बाकमारों के
दशन भी आप दिया। धाऊँया तो एक बिस्व मखर कर्बवा। राम बर्चा ता पाँचवीं
छठवीं बमात के लिए मबीर खानगी के लिए मीजू है। बाकमारों के दशन नहीं
दसवीं के लिए मीजू होगी। कुछ न हो तो इलाहबादी कुसुब में तो आ ही जाना
बाहिए। कुछ उम्मीद है ? फ़िटारों कहर भिजवा दें।

आपका
बनपत राम

२२३

मासुरी कार्यालय लखनऊ
२ सितंबर १९२६

मार्जमान

ठसलीम। आपके दो कार्ड मिले। सब मैं अपनीगुहीसा पार्क में रखा है।

मकान का नंबर कहीं नहीं मिलता। हाँ दहया की बुकाम पर पूछने से पता चल सकता है। बिन्दुस काँच के बखतर से मुसहिफ़ा मेरा मकान इसा माइन में है। दरवाजा धड़क से है। मरे मकान के टोक नीचे पऊ सोईय मरीन की एरमी है। बिटीबी नाम पारवाकरीश भी नहीं रहता है। उससे पूछने से पता चल जायगा।

मैं सनीबर को धानेबाला या मगर उसके एक राँव कुन्व ही से घर में तीन मरीन होगये। बुन्नु की बालिका के बाँधों में बर घोर बुन्वार, बेटी की जंगमी म कमो जो बिसहटी बहमाठी है। घोर निहयउ दर्द पैदा करनेवाली होनी है। घोर बुन्नु की मामी को बुन्वार घोर पेबिल। कम बेटी की जंगमी बिरवा हो। घर दर्द कम है। बुन्नु को माँ के बाँधों का बर घमी बदल्लुर है। हाँ बुन्वार बंग हुआ। घर बाँध निकलवा देने की सलाह है। घोर बुन्नु की मामी का बुन्वार भी बाबिक बरनुर है। इन बन्नु से न था सऊा घोर बिन दिन घापका काइ मिला या उसी दिन तक मुझे जम्मोनी की रिं पाऊँया। मगर शाम को यहाँ से गया तो मानुस हुआ कि घर नहीं जा सकता। गल मिलने का मीरा न था।

घरीब बुन्नु के साथ मेरी दुपारें हैं। बच्चों का दुआ।

घापका

बलपन राय

२२४

नबनबिघोर प्रत लघनरु

१४ विसम्बर १९२९

मार्चम

उसमीम। मैं इन राँव को मरबुरल रह गया। बिन नाम के निर दया का बर न हो सका। इमर नि मुउरान जी से मुनाइय हुई। ९ बजे। घर इन बरन बालेक आम के लिए तैयार होय इमलिए मैं न हाजिर हुआ। इसकी तपारी बरँया।

जो हा रिमाना बनारस से निकल रहा है सेरिन में बनारस नहीं जा रहा है। कुछ मिलता रहँगा। मरे बनेकर साहब निजालने रहँगे। जमाना के लिए कुछ सिगुंगा। हाँ शुब याँ बाया मैंने घापका मुनमर-सा स्केच मारत में भेज दिया है। घर बहु मुझे घापका ब्याक बाँध रहे हैं। कोई प्रोटी या ब्लक या हो

(मिका हुआ २ वीं व ३ वीं बिट्टी-बत्ती मार्चम)

भारत को बेविए या मरे पास । मैं भेष हूँ । मगर जल्प । और सब चरिपठ है ।
 सीधे तो आपने शुरू कर भी लीं ।

बसनाम

बनपत राय

२२५

बसनाम

१९ फरवरी १९३०

भाईबाल

तसलीम । आपका काठ मिल गया था । 'घलहूबपी' शक्तिबन् क्रमवरी में हो
 बायगी । क्यों ? आपने मुझे बुलाया है । मैं भी शायद कुबूल करता हूँ और सबकी
 इतबार को घाड़ंगा । घाब १२ है । १३ को इतबार है । उसी दिन घाड़ंगा ।
 और दिन भर बपतप रहेगी ।

आपने पिछले महीने इकनाम बर्मा साहब की मरण की । मेरी बानिब से की
 थी । अभी उनके जन्म से मैं सुबुख्योत नहो हुआ हूँ । मेरी फिताबों का पिबला
 हिसाब तो साठ हो क्या लेकिन नये साल का हिसाब बाकी है । उसे भी जरा
 देखा नीबिए । मगर इस माह में पचीस रुपये की डूचरी फिस्त बसा कर हूँ तो
 फिर तिऊं बीस रुपये और रह जायं । मैं जगुन बागी नये साल से एक
 हिन्दी रिवाला 'हंस निकालने जा रहा हूँ । ३४ मुकहात का होगा । और स्वाश-
 तर बक्रसानों से तास्मुक रहेगा । है तो हिमाकृत ही बरें सर बहुत और मज्ज कुब
 नहीं लेकिन हिमाकृत करने को भी बाहता है । हिन्दी हिमाकृतों में मुजर पपी
 एक और लही । मैं पहले कमी कामबाबी की सूया देखी और मैं घब देखने की
 उन्मीर है । इतबार नगेरु दे रहा हूँ । पहासा पर्ना नये साल के दिन रवाना हो
 बायगा । मुदरात साहब अबू में निकाल रहे हैं मैं हिन्दी में निकालूंगा । १ फरवरी
 के रिवाले में बस्मी जुबों में इसका एक नोट लिख बीबिएगा । और तो सब
 चरिपठ है ।

आपका

बनपत राय

२२६

बसनामफिजोर प्रस लज्जत

१९ फरवरी १९३१

भाईबाल

कम घानेबासा था मगर बस ही मेरी समबिल साहिबा उनके बामत पीर

सकें साथ वो धीर धीरतें खरिद हो गयीं । यह लोग शालिग्राम तीन बार रोज रखेंगे । इसलिये कम न हाथिद हो चर्खूया ।

मुंठी इन्ध्राम गयीं साहब का खत प्राप्त फिर आया ।

पहलूर

बनपत राय

२२७

अमीनाबाद, लखनऊ

७ अप्रैल १९३०

माईबाब

तसलीम । हामिने हाजा^१ हमीरपुर के एक मुखरिख है धीर अब मैं वहाँ या तो हमसे मेरे वास्तुकात महब अफसरों धीर भातहठी के ना बे । यह नियम है और इस बख्त इन्हें एक लड़क की तलाश है । इस क्रिक में लखनऊ आये बे । मुझे मुसाफात हुई । वहाँ वो एक जगह इन्होंने लड़के देखे हैं मगर अपनी मर्जी के मुताबिक कोई लड़का नहीं मिला । मुझे इन्होंने कहा कानपुर में घाप किनी को बलने हों तो मुझे भिख दीजिए वहाँ जाकर तलाश करें । मेने घापके ऊपर मरोसा करके बह खत इन्हें भिख लिया है । मगर इनकी कारबराती की कोई सूरत निकल सके तो बरंग न कोजिएगा । घाप का तो वहाँ की नियम बिराबरी का हास मामुम होया । मुझे तो कुछ खबर नहीं है ।

'हूँ' पहुँचा या नहो । अमीना राय लिखिएगा । अमीना में हमका बिक मी । और बना सब करें । इस तमक ने लखनऊ में डाल रखा है । इन्दीनाम-कम्ब^२ खरिदत^३ हो रहा है ।

घापरा,

बनपत राय

२२८

काशी

२३ अप्रैल १९३१

माईबाब

तसलीम । घापका मुखबतनामा कई रिज हुए मिला या । 'ग्रेम बसोमी की बीमज घाप टोकसे १॥) कर हैं । बम्कि मैं तो चाहूँया कि वह एक ही रुपये में बिके । मगर लाहौरबासे तो कमी करेगे नहीं इमानिये १॥) मुसाबिख है ।

१ का वरी २ का-बाहक ३ काकम ४ का-मिख काति ५ विरा

हमारे पास ऐसी कौम ही बहुत विरल है।

रीटों की तैयारी में मुझे धाय क्या मदद चाहते हैं। मैं तो धाजकम बुटे तरह काम कर रहा हूँ। हंस ने धौर कब्रमर निकाल लिया है। वो क्रिस्ते हर माह धौर इरीब बीच सके एक्टोरियल धौर बीचर मजामीन। इसके धनाभा धपमा मानिम। फिर प्रेम जालीसी के लिये कहानियों को उर्दू में लाना। धौर साबिर ने रोजाना बंटा दो बंटा कावेस के कामों में मसकत रूना मैंने लिये काइने से स्वादा है। मगर मुझे वो मदद धाय चाहें वह धपने सब काम छोड़ कर करने को हाजिर हूँ। धाय ने तो कुछ कहा ही नहीं। मगर इनसास क्रिवासे पैठ करनी है तो धाय तबकूक की मुबाइश नही है। एक नकाल रक लीजिये धौर उससे मजामीन नकल कउते जाइये। एक क्रिवाब मुकम्मल हो बन्व तो मुझे बुलाकर मुझ से मसबरा कर भीजिये। बस इस क्रिवाब की क्रिवाबत शुरू हो जाये मजामीन की मोहपत धाय को मानुम ही है।

हाँ मेरी क्रिवाबों का धौर हंस का इतविहार 'जमाला' में एक दो महीने हो जाये तो धख्खा है। यह इतविहार भेज रहा हूँ। एक सख म धा जायगा।

नमक को धाय कम्म-धख-बकत जयाल करते हैं। जिस तरह मीठ हमेंसा कम्म धख बकत होती है, साहुकार का तकाबा हमेंसा कम्म धख बकत हाता है उसी तरह ऐसे सारे काम जिन में हमें माली या बकनी मुकसान का धन्देया हो कम्म धख बकत मानुम हउते हैं। इस तहरीक की कबुलियत ही बगला रही है कि वह कम्म धख बकत नही है।

इस नौके पर फिर साख बाहिर हुमा कि धपर दो खीसरी धिजेनी-खानि धसहाब तहरीक के साथ है। तो इन् खीसरी उसके मुकानिक हैं। खीनी एबाब से धुनिषसिटियों धौर स्कूलों पर खीम का बितना रपया सख हुमा वह इरीबन जाया हो गया। यह मोम सरकार के धादमी हुए, कोम के नहीं। धेर-धंपरेजी-बां कारोबारी धौर पैसावर तस्करो ही ने इस तहरीक में धान काली है। धपर तामीम-जापना धादधियों के धरोसे मुक वीठ रही तो सापर जयामन तफ उये धाजाली नमीद न होगी।

कम मानुम है धौर इसके लिये समुत धौर धरीस की धकरत नही कि सरकार नई रिधर्म उस बकत तक नहीं करती कम तक उसे यह यकोन न हो जाय कि इस तहरीक के पीछे क्रिवाबी ताफत है, तो तामीम-जापना जमात का इमसे रिमार रहना जितना विमसिकन है। जामूनपेसा लबीबपेसा धोटेवर धौर सरकारी कुलाजिमान—इन सब में जितनी गुमामाना जेहनियत का पता दिया है

उसकी मुझे उम्मीद न थी। यह सबका अपनी खीरियत गवर्नमेंट का इतदार^१ कायम रहने में समझता है। वह एक समझे के लिये भी अपनी धासाइरा^२ और बुनिया-उमकी^३ को प्रयत्न^४ नहीं कर सकता। जरूर उसका वीज और ईमान है। वह या तो धासाओ चाहता ही नहीं या उसके लिये कीमत न देकर दूसरों पर ठकिया करना ही अपनी शान के मुनासिब समझता है। या वह हम जगत में यदम है कि धाव ही आप धाजादी भी मिल जायेगी। जायस के दोरे प्रबल में वह हमसे काइऊ^५ रहा कायेस के बीरे सानी में जो उसकी यही हालत रही। वह सरोह^६ बैल रहा है कि जो कुछ उसे मिला और जिसे सब वह अपना हक समझता है वह दूसरों के ईसारे^७ व इर्बानी का नगीजा है। फिर भी वह इस ईसार और इर्बानी में शरीक नहीं होता। यही boargers किआ है और यही काशर^८ फिकों को वार^९ फिकों का बुरयन बना बना है।

आप ने क्या हैरावाह जाने का इरादा कर लिया ?

महाँ तो हम लोग अच्छी तरह है। * कई तक लोग यहाँ से बन ही जायेंगे।

भापका
यनयन राय

२२६

नवलखिसोर प्रस सन्तक

२७ जून १९३

मईवान

तमलीम। इधर कई दिन परीशान रहा। इन बज्ज से जत न लिन सका। बेटी की खसल मुसवी हो गयी। वह लोग यहाँ जाये और हल्के मर मुर्गीम रहे। मगर बेटी को बुनार जाने लमा और सब तक धा रहा है। छोटा मइरा भी मौबानी बुनार में मुकतिला ही गया और सब तक बच्छा नहीं हुमा। दवा कर रहा हूँ। उम्मीद है दोनों को सेहल हमी।

बच्छे मैहरबानी अमाना का वह नंबर में ब बीजिए निमर्मे येरी बहानी 'घमइगी' शाय हूँ थी। मरा वह नंबर कोई साइब ने मये और मुझे उन बहानी की प्रेम वालीमा के लिए प्रकरत है। इन बहानी डाक ने मरिएगा। और तो सब खीरियत है।

निजाइम
यनयन राय

१ खीरियत २ मुन इजिबा ३ बाबाजिक आब ४ बुन ५ मरि कइता ६ खसल ७ यनयन ८ यनयन ९ डाक १० खसल ११ मुकतिला १२ मुकतिला १३ खसल १४ यनयन १५ यनयन

२३०

नवलकिशोर प्रसा, लखनऊ

१९ जुलाई १९३१

भाईबाल

तसलीम ! लकड़ीकूट देने की बक़रत यह है कि मेरे सग इन काँ हमसाल भी ए पास हुए है । वह कानून धीर एम ए दोनों एक साथ लेना चाहते हैं ताकि वो साथ में निकल जायें । क्या ऐसा कालपुर में मुमकिन है । घागाट मुनिबसिटी में इसके खिलाफ कोई कायबा तो नहीं है । वह हिन्दी में एन ए करना चाहते है ।

इनाहाबाद का क्या कायबा है, मुझे मालूम नहीं । वहाँ भी दर्यास्त करता है । अमनपुर में कासिम किस शरीफ को चुनेंवे ।

धापका

बनपत राम

२३१

लखनऊ

१९ जुलाई १९३१

भाईबाल

तसलीम ! कई दिन हुए घब मिला था । मैं धाककम मुहम्मद गनेरुमन नंबर २ में रहता हूँ । घाप तो घाते घाते रह जाते है । हीरदाबाद जाने का बब तक इत्दा है ? बसहरे में न ? बक़ीनी तीर पर ? तीर इसके क़म्म तो मुनाकल हो जायेगी । मैं सितंबर के पहले इज्ते में बकर घाऊँगा । उती बस्त मेरे पास जो गोम्राए धाडियत बगैरह की बिन्दे है वह लेता घाऊँगा । धीर तो बब टैरियत है । उम्मीद है घाप बलीयियत होवे ।

धापका

बनपत राम

२३२

लखनऊ

३ जुलाई १९३१

भाईबाल

तसलीम ! ग्रेस ऐक्ट का बार मुझ पर भी हो ही गया । एक हबार की

जमानत तमब हुई है। कम बनारस या रहा हूँ। जमानत देकर रिहाया हूँ
निकासना तो मुझे खतरनाक मामूला होता है। मैं तो सोचता हूँ रिहाया बग्य कर
हूँ धोर इसके साथ ही प्रेस भी। बनारस आकर हामात का मतासघार करने के
बाद प्रेसमा कर चहुँदा।

भापका मुद्रमित

धनपत राम

२३३

लघनऊ

११ अगस्त १९१०

भाईबाग

तसमीम। भाप तो लघनऊ आते ही आते रहे मये। क्या इराया ममून
कर दिया ?

नाटकों के मुतास्मिक क्या हुआ ? अरु तबज्जो कर दीबिए। बर्ना
क्याहुरी में कुरा जाने कब तक मुघामला खटाई म पड़ा रहे।

मुन्नु बानु कब तक आ रहे हैं। शायद इसी माह, या तिर्नबर में तो
आयेंगे ?

मरी बिरान नरामन मरहूम की रिवास्तत दामिनन् कोट बाऊ बाउ स के
इतदार से निकस मयी। वो बार रोज में बहकाम या आयेंगे। मर
भाइया इतबाग के मुतास्मिक कुछ खबर नहीं क्या होगा।

शाहकार से भापने मेरा किस्सा म लिया ?

बाफी खीरियन है।

भापका

धनपत राम

२३४

नवलजिहोर प्रत लघनऊ

२१ तिर्नबर १९११

भाईबाग

तसमीम। मजमून टाहप कराके भेज रहा हूँ। एक यहाँ इराया मैनेजर
को दे दिया है। भापकी मुसाहात का कुछ मतीजा हुआ है। मुम्न पंग धोर

१ अन्वयन २ ध्यात ३ आत्मबारी ४ अतिकार ५ आदेश

केसरदास सेठ लोगों ही पूछ रहे थे। आपसे बिंदी कमिश्नर साहब ने क्या कहा। मैंने कह दिया मेरी उनसे मुलाकात ही नहीं हुई। मैंने इस मजमून में कहीं कहीं एकादक जगह रस्योबदल कर दिया है। आपको कर्ष एक बार मेरी खातिर से फिर धाना पड़ेगा। बाबूजी हानात बचस्तुर है।

आपका

बनपत राम

२३५

सद्वनक

१२ नवम्बर १९११

बराबरम

मनसुत। आपने शायब बलवार में देखा हो परसों मिसेब बनपत राम पिफेटिय करने के जुम में विछलार हो गयी। मैं बार पाँच टोड के लिए बाहर गया हुआ था। उस बकत भर पर मौजूब न था। वहाँ से घाकर वह बाक्या सुना। बूखरे दिन सनसे बेन में मुलाकात हुई। घब ६ को उनके मुकदमे की पेशी है। सबा तो हो ही आवेगी मगर देखिए फिलने महीनों की होती है। धीर सब खीरियत है।

नियामन

बनपत राम

२३६

सद्वनक

१४ नवम्बर १९११

भाजान

उसमीम। धाम प्रीसमा हो गया। बेड माह की झूठे महब हुई। मैं तो न धा सका। धब देखू कब एक धाता हूँ। मरे एले धीर उनका बीबी यहाँ धा कये हैं।

घट्टर

बनपत राम

२३७

नवलकिछोर प्रेस लखनऊ

१८ दिसंबर १९३१

बाईबाल

तसमीम । आपने शाकिबन् कोटो भारत के दफ्तर में भेज दिया होगा । मुझे इरफान बर्मा साहब जब कानपूर न आवेंगे । आप उन्हें अपना भेज दें तो बड़ा एहसान करें । मैं तो मानूर हूँ बर्मा आपको तकसोऊ न बैठा ।

आपके लिए एक खिस्ता लिख रहा हूँ । यहाँ से कोस की कितने भेज दी यो है ।

नियामुमन्द

बनपत राय

२३८

नवलकिछोर प्रेस, लखनऊ

२१ जनवरी १९३१

बचरम

तसमीम । काई मिला था । मैंने घसर साहब का जबाब दिया । वह खुद एतना कमजोर है कि उसके जबाब देने की इतनी शक्यता नहीं । भाकून-बसदा^१ न उनके जबाब को शिफ्त^२ का एतएक^३ समझ । हजरत निगाह...शायद कोई बर्माकिफन जबाब लिख रहे हैं । देखिए क्या लिखते हैं ।...मैं मेरे जबाब को बहुत पसंद किया था । जमाना के लिए मुझे बिनाम मरयम पर एक स्केच लिखने की शिफ्त में हूँ । स्नाक भी मिल जायगा । खिस्ता भी एक लिखना चाहता हूँ । देखिए क्या कर सकता हूँ । धर्मी छाके परवाना की जितने आपके दफ्तर में हामी । यहाँ कुछ जितने नवलकिछोर बुकशिपो को बरकार है । बचम महरबानी आज ही तीस जितने देलवे पासम से खाना क्रमामें और देसवे रसीद मेरे पास भज दें । बाकी हामात हस्वे साबिक है ।

घाफरा

बनपत राय

भारिवाल

तसमीम । दोमों नेक भिम मये । मै बरा हंस के लिए क्रिस्ता निक्कने में मसकक ना इसलिये बबाब न दे सका । इन इनायात का कहीं तक शुक्रिया धरा कर्ने । मै बरा भी कमीबतखातिर^१ नहीं हूँ । सूदे-मुरकक^२ और सूदे-सादा^३ में ऐसा झक ही क्या होता है । यकीन मानिए मैने घाफ्फो सूब का बिक्र करके बेरबार किया । मेरे घर को मुकाने के लिए यही एहसास क्या कम है ।

कराची का इराबा ना मपर धाब मबतउिह की फौसी ने हिम्मत तोड़ दी । धब किस समीर पर बाढे । वहाँ यात्री का मबाक सड़ेया कौबस वैर-बिम्बेवार शोरिहपसं^४ तबके के हाब में घा जायेगी और हम लोगों के लिए उसमें बबह नहीं है । घाइत्या क्या तबे घमस यलितयार करना पड़े कब नहीं सकता मगर क्रिहाल बिल बैठ क्या है और मुस्तकबिस^५ बिसकुल टारीक^६ नबर घाटा है । इपर बनावर मिर्बापुर, धाबरे में जो हाजल हुए उनसे बबमेंट का हीसमा बड़ेना यही मेरा क्र्यास है । मगर इससे फवाबा हिमकत कोई बबमेंट नहीं कर सकती थी । हील धाबमियों की सबा में तबवीभी करके बबमेंट क्रितना मब्दा धमर पैदा कर सकती थी । पर उसके तबे घमस ने धब सानित कर दिया कि टालीके-कस्ब^७ उसने घमी तक नहीं किया और धब भी बह बफनी सही क्रोम^८ वैर बिम्बेवारना रबिठ^९ पर डायम है ।

शाहकार को मै धाब भिन्नीना कि क्रिस्ता आपके पास रेब हें ।

एकेडेमीबाने सकररब बेंब या नहीं । बुरत तो मेरे पास भी धामे हैं सेफिल जात्रेमा उची बहत बब बब भिबेया । बरा भिन्बिएना । यही सानिक बस्तुर बना बा र्हा है । मगरो मेहरबान तो है मपर क्रीसमा उसके हाब में तो गही है ।

मै 'ईराक' का तर्नुमा कर रहा हूँ कोई पभास मुकहल हो बय है । इर ताम' भी कर हुँना । 'बादी की बिबिया' धाप सुब कर लें । पून तक यह तब पल्प हो जायेगा ।

धापरा

बनगन राम

१ कबबब २ बब बुदि क्वाब ३ बाचारब क्वाब ४ कबबुवी ५ बाधिब ६ बंभिरा ७ दरब रबिठिनब

८ हुतामी ९ बदीति बेंब

२४०

सखनरु

११ मई १९३१

भारिबाल

उसमीम । घसें से धापका कोई सत नही धाया । नाटक की रसीर भी नही निमी । कालपूर मया था मनाकात भी नहीं हुई । घात्र एक माह के लिए बनारस था रहा है । वहाँ में 'इंसाफ' करम करके भेजूया । तनुमा कँसा रहा ?

बनारस में भेरा पठा होगा

धरस्वती प्रस काशी

रिसाला जमाना का यह मंबर (यानी साजा) मेरे पास से गाएब हो गया है । रिसाल की तनकीर के लिए इसकी जरूरत पड़ेगी । हर माह में हिन्दोस्तानी रिसाल की तनकीर करता हूँ । सबू हिन्दी मरठी गुजराती बरीरह । बराह करम एक कापी कमर के फते से बचापती निजवा दीजिएया । जम्मेद है कि घाप बखेर धो-धोच्यत है ।

निपात्रमन्द

धनपन राय

२४१

नवलकिशोर प्रस सखनरु

१० जून १९३१

भारिबाल

उसमीम । धापका ७ जून का नवादिशनामा मिसा । म बनारस में १३ जून को लौटा । धापका वरत घात्र वहाँ से यहाँ धाया है । बुन्नु बाबू को शान धार कामवाबी धर धापको कीर बुन्नु को लहेरिस से मुबारकबात । वयों धार इाहरत बर्ष कासिज से धमहया क्यों हो रहे है । मैं सोच रहा हूँ कि मौजा निने ठो कालपूर धाऊँ । बटी समुराम मयी है । बुन्नु उमी के माध धया है । यहाँ सिर्फ बुन्नु (छोटा मइका) धीर हम बो धागी है । यहाँ के मीनजर एन मिस्टर बबमोहन नाथ भागब हुए है । धभो उनसे मेरी मुसावाज नही हुई है । क्या धरमीम होगी इसकी किमहाल खबर नही । मरे नाबिस गुबन की बोर्ड निस्त्र धापके पास पहुँची या नही ।

धारवा

धनपन राय

२४२

भारतवर्षी प्रेस काशी

४ जुलाई १९११

भाईबान

तसलीम ! इस काम से फुसल मिली । जब कोई मजदूर भी मिलेगा । मगर ऐसा न हो आप इन किताबों को सास छ महीने के लिए डार में बंद कर दें । एक बार इनकी मरकरसानी कर बाइए । चार पांच रोख लोंगे । फिर किसी से कुशलत लिखवा लीजिए । अपनी बगिस्त^१ में तो ठरुमा बुरा लही किया । लेकिन बेहदरी की गुंजाइश हमरा रहती है । और जुलाई में इसे चलवा लीजिए ताकि एक माह में रुपये मिल जायें ।

हमारे यहाँ अभी तो साबिक दस्तुर काम चल रहा है । लेकिन क्याशा चम्पीर नहीं है । मैं तैयार बैठा हूँ । पुनू कल बेटी के समुदास से घा गया है ।

'मातन' और 'ऊरेबे अमस' में धाऊँगा तो सेवा धाऊँगा शाहकार के पास मेरा एक हिस्सा पड़ा हुआ है । तल बगु से कई अपने बोस्त बइसी के बछरे लुई^२ से ये सतावफुल हीन^३ मीम हैं । शाहकार का इस हरियत^४ के जमाने में बुजर ही कहीं ।

अबाहरलात धाअकल कितना जहर उयम रहे हैं । इनकामाब की तैयारी है ।

आपका

बनसत उब

२४३

भारतवर्षी प्रेस लखनऊ

२६ जुलाई १९११

भाईबान

तसलीम ! ईशकर करे आप जल्द धाअि हो जायें । तबीयत की मामाबी तो एक ममीबत है ।

मार्ग कोर्ट धाऊँ बाई का इंतजाम है । मगर अभी कोई तबदीली नहीं हुई है । स्वरास मैनेजर का गय है । इंतजाम साबिक दस्तुर है । शायद तगुअीय^५ होमेबासी है । मगर तहकीक^६ मालूम नहीं । येरो तो मैनेजर साहब से मुसाफात^७ नहीं हुई । न उम्माने जुमाया न मी गया ।

१ बग-२ २ दांड माई ३ कच्चे बराने के ४ बगमज ५ बंटीनी ६ टोच काज

बनी मसुराम में है। मन्नु बाबू तो शायद इंग्लैण्ड से अमस्त में धान
 धान है।

तमीयत मन्नु हो तो मुसम्बर्षों पर अरा निगाह शामिल।

सहकार से मरा अफसाना धापने शायद नहीं लिया। मोरसपुर से तो इसी
 नाम के एक रितासी का इजरा हो गया।

बकिदा हस्तात साबिक बरपुर है।

धापका

अनपत राप

२४४

सप्तमः

३ अगस्त १९३१

मार्जिन

तमीयत। धापके अत के इंतजार म बर गया। मीने अर्सा हुआ एक
 गत मिला था। उसका कोई जवाब न मिला। धाप गुन धापेधाने से मगर
 शामिलन् फुर्मत न मिसी।

उन जर्मों किताबों के मतास्मिन्न नया करबाह हुए। मजरमानी हा मपी मा
 नहीं। शक भी हुए? अब तो बहुत देर हो रही है।

यहां का हास साबिक बरपुर है। मजर है कि रियासत को^१ धाक बाह म में
 निकल गयी। लेकिन अजर ही अजर है। मफाज नहीं^२। सरकारी कारखाने
 है। मुम्किन है महीनो लम बायें। धीर तो बौह मपी बात नहीं। मन्नु बाबू
 तो इस माह में आरेंगे। या मीममज के बाह?

धापका

अनपत राप

२४५

सरस्वती अंत कागी

११ सितंबर १९३१

मार्जिन

तमीयत। धापका बाह कई दिन हुए मिला था। ममीने धापने धामी तक नहीं
 देग। अजर एकेइमी शायद अज ऐसे तपस्मि^३ देवार समझ रही है। बाबू हर

१ कारन २ दुःख काटी मगी हुआ ३ अतुबाह

प्रसाद सम्बन्धना सभी कई रोज हुए डाक्टर पाराशरत हैं किसी काम की उम्मात के सिगसिमे में मिले थे । उन्होंने उस वक़्त यह ज़यान काशिर किया कि इन डारों से कोई मुन्नेब नतीजा नहीं निकला और यह तबीह-सीकात^१ है । ऐसा न हो उन्हें ठरुमों के मुतास्सिक यही ज़यान हो और हम लोगों की गेहगत बरबाद हो जाए ।

यहाँ कम एक नई बात हो गई । यहाँ मेरे जिमाफ़ मुपबत से एक बमाघत भी जिसका सरगमा यहाँ का मेनेजर हरो राम है । साथे गुब्बिरता^२ से उसका एक और मुपाबिन^३ पैदा हो गया । यह है मिस्टर पंत जो यहाँ कनबैसर होकर बुलाए गए थे । मिस्टर पंत यहाँ हाबी होना चाहते हैं । इसकी उन्होंने रोजे धम्मन से कोरिस्त रुक की और मुझे धपना रखीब^४ समझ कर उन्होंने पदने मुम्बे ही को रास्ते से हटाना बकरी समझा । किष्मयत का मतमा यहाँ रुक से बा ही । धापन यहाँ किष्मयत सोची कि एकोटोरियस धमसा बर उरछ^५ कर दिया जाए और फ़िटाबें जिम्मेदार बा-घसर और कमेटी में स्सुब रकने बाने या बुर कमेटी के मेम्बरों से बनबा ली जाए । इन बहमकों को यह न सुधी कि मुझे जो कुछ देते हैं वह एक फ़िटाब में बसुल हो सकता है और बा-घसर घसहाब से फ़िटाबें मिल बाने में रायस्ती की बेत-इदर रकम बेनी पड़ती है । मेरी बात से इन लोगों ने जितना पैदा किया है उसका जिस भी मुझे न दिया गया हो । अगर पंत बीबा ब दानिस्ता^६ महब मुझे बक^७ देने के लिए मेरी तैयार की हुई फ़िटाबों को 'पुत करने में तसहली^८ न करे तो लाबों खपा बना सेते । मगर इस तकस ने महब मुझे मुझवान पहुँचाने के लिए इन फ़िटाबों के मुतास्सिक कोई कोरिस्त नहीं की । जब फ़िटाबें कमेटी से नामंजूर हो गईं तो बाहिरपारी के लिए महीनों यतो-फ़िशा बत करवा रहा । और । मुझे यहाँ से जाना तो बा ही । बस्कि मैने जून में इम्पीफ़ा देने का इरादा किया बा । मिजा भी । मेकिन बाब रोस्तों के कहने से उसे पैसा न किया । मुझे यहाँ से बाने का गम नहीं । और बपारा काम कर्बना । मेकिन रक़ीबों को मूँ सुरा होठे देख कर इगानी कमबोरियों के बाइम भी बनता है । धापसे मिस्टर मनरो से कुछ राह ब रसम है । नामू यहाँ का स्पेसम मेनेजर है । मामूम नहीं उमते धापकी कुछ मुसाक़ात है बा नहीं । मगर मनरो से तो है ही । धाप एक दिन के लिए यहाँ धा जाए और मनरो से मिम्कर यहाँ की इन फ़िउबेबंदी^९ का हास धम समझा बीजिए । हम बक़्त भी नहीं फ़िटाबों को तानीक का मतसा पैदा है उन्हें हिन्दी मिटरपी रीडरो का । पंत उनके लिए कमेटी के मेम्बरों को तमात कर रहे हैं । उसे यह मंजूर नहीं कि ये फ़िटाबें तिरुं और जो

१ बरब की बर्बादी २ पिछले बाक ३ बरबोधी ४ मजिबीमः बसू ५ बर्बोपारी बरब बर दिने बाई ६ दमठे-बनकरी हुए बीबा दिताने के लिए बीन न बालरी ७ बितोरबनी

कमेटी में पेश हों क्योंकि ऐसा करने में उसे दबा-दबिहा^१ करनी पड़ेगी। मेम्बरों से फ़िरमों सिखा देने में कुछ क्लेश नहीं होता। फ़िराबें धाप ही धाप मंजूर हो जाती हैं। बस सिर्फ़ उनसे सतर्कतावत् करके मुसामला पटा लेना होता है। यही काम उसने अपने जिम्मे लिया है और शायद मनरो को या गामू को समझ दिया है कि एंड्रीटोरियस स्टाफ़ की ज़रूरत नहीं। अगर धाप या जाएंगे तो मनरो को यह तो मामूम हो जायगा कि मेरी जात से रियासत का मुक़्तान नहीं है। बस में इतना ही बाहूला है।

हॉस्पिटल धारणों के लिए बाऊई बड़ी मुश्किलात पेश पाठी है और मैं कई बार इसका ठामान बे चुका हूँ। लेकिन अब तो वह ख़िस्त नहीं छोड़ी जाती जो धारण हो गई है।

और सब ख़रिपत है।

धापका मसलिस

बनपन राय

२४६

मसलिस

२४ सितम्बर १९३१

बपारम

तमनीम। सिकाका मिला। मेरा ख़याल है कि धापका एक बार अल्प वहाँ प्रामा चाहिए। यहाँ की डिपला-संवेडियो^२ का कुछ हाल बनना देना ज़रूरी है। मैं धापनी धारणारत में कुछ इसका ह्साप ठा कर िया है। अगर उस पर मुनस्नन कहने की ज़रूरत है। इन वजह मुसकिन है मनरो धारके मसामल म कुछ जबाब हें।

मैं मनेजर साहब से धामी नहीं मिला। सोचना है वह धारणरी ज़रत नमें ठो क्या क़यदा। आ कुछ करना होगा वह ठा करेवे ही। मेरे ख़याल में मनरो को कुछ करेया बही हागा। उनगे कोई ज़म्मीर नहीं।

धापरा

बनपन राय

२४७

पनेसर्गाज, सल्लगऊ

१ अक्टूबर १९११

माईबाप

तसलीम । आपका २२ का खत पाव मिला । आप उस पर ममती से सब मऊ की जगह हमाराबाद लिख गये थे । धीर बहू हफ्ते भर माउ-माउ फिरत के बाव पाव मिला । यहाँ तक से कोई नयी बात नहीं हुई । इन लोगों ने ठी कर लिया है और अब किसी की हकूतलफ्ती बेईसाली या अपने मुकमान का खयाल इन्हें अपने इरादे से बाव नहीं रख सकता । मुझे बख़्तसोस यही है कि आपको मजूक तकसीफ बी । खैर धामी तो यहीं हूँ । ए को यहाँ से बसहूरा होकर गालिबन् धक्कू बर लखनऊ मे काटूंगा । उसके बाद बीबा ब्याहुर शुर^१ । बराप खुदा काम तो देखे जालिए । महब एक सरसरी निगाह की जरूरत है ।

मुसलिम

बनपन राव

२४८

गनेसर्गाज, सल्लगऊ

१२ अक्टूबर १९११

माईबाप

तसलीम । आप तो गालिबन् हीराराबाद और बंबई से आपस का मय होय । मुलू बाबू आपके बाव पास जान । म तो दिल्ली बला गया था । बड़ा बल शारह दिन सब गये । बीबासी को सीटा । मुलू बाबू को येरी तरक स कुमा और मुबारकबाद कहिएगा ।

अमाना म अगुबर में बिष्णु विम्वर का ब्याक है । हूम में भी दिसेबर मंबर म बिष्णु विम्वर पर एक मजमून खपा है । आपसे यह ब्याक आरियन^१ मे भूगा ।

अब तो मामाखरी पर तबज्जो करने की जरूरत है । आपसे माग ममीन मे खपादा हो गय । इस तरह तो कमी काम तरम न होया । बम-याब रोड में मस्तक़िम तीर पर बैठकर काम की निबटा ही जालिए । यहाँ ममा तो नहीं है कि एबे बमी ने तर्जुमे को अपने प्रोघाम म लारिय कर दिया हो । अघर यहाँ

कैफियत है तो भी चन्दा भ्रष्टोत्सव का मुकाम नहीं। मैं तो इन बिताबों को खुद छपवा जाने को धामादा हूँ। घाठ घाने कीमत में बेचकर दाम बसूल किया जा सकता है। बहुरहाम कुछ भी हो जब तो इतबार मुशकिल हो रहा है। उम्मीद है धाय बुरा है।

भायका
बनपनराम

२४६

पत्नीघबरा, सदानन्द
१३ जनवरी १९३२

बदपरम

उसनीम। भायका इनायतनामा धीर उबरबाठ मिसे। मसफूर हूँ। मैंने बुरा उबरबाँ से लिया है धीर उसका हिन्दी तजुमा करके हंस म बे दिया है।

मैं अपनी तक उस पटना बाल मज्जमूल का छूँ तर्जुमा नहीं कर सका। इसके लिए नाबिन हूँ। धीर कई दिन तक एक छोड़े में तकलोक बा। जब बर पन्धा हा रहा है। ६ मार्च को मेरे बड़े भाई साहब बाबू बसदेव साय ना दुर्गम से इंतकात हो गया। घर में दो बच्चे हैं बेबा भाई की बेबा धीर एक बेबा बहुत। अठारह को बसबाँ है। मे १५ या १७ को जा रहा हूँ। बहा म २१ २२ को बसब भाऊंगा। इन घनापों की परबरित का कुछ इंतबाम भी करना है। भोज भी करना हो पड़ेगा। हीं बपर एकेडमी से कुछ पेटमी वा इंतबाम कर सकेँ ता इस बकल मेरा काम निवस।

ईरबाबाद म भायका मेरो धाव न आयी कुदरती बाठ है। बाद तो उनको पानी है जो बार-बार यादनिशानी करते रहे। मैंने ता भूल स बिक्र कर दिया था। जब तक कसम धीर रिमाग काम करता है तब तक सब नहीं। जब बाबाद हो जाऊंगा तब देयो पायमी। तीन महीने धीर यहाँ हूँ। फिर मघ बहानी बफान है धीर मैं हूँ। जब तक दोनउमगद न हो सगा तो अब क्या होऊँगा। धायमी की बमबोरी है कि बघ बरिती आता है बनीं कुछ छोड़कर मर तो बरा धीर रामो हाव गये ता क्या।

कोटिग कसेगा कि बनारस से लौटते बजा बनपुर होजा हुया धाई।

धीर तो सब तैरियत है। यहाँ की बाय स कमेटी तो बंद हा चुनें।
इनाबिब मुस्तमनिपान में है।

मुशसिम
बनरज राम

सो रुपये निकाल कर ले हूँ। मैं धनी बाहर हूँ और मुझे ऐसी सखीब^१ बरकरार नहीं। मगर उनकी हानत हमबर्हीतम्ब है। जो कुछ हो उनके बन्ध कीजिए। मई म बह रिहा होकर घा बाबेमे। उस बन्धत मुझे फिटानी नवामत होगी। शायद फिर दो-चार दिन में लभे जायेंगे। कम से कम उन्हें यह तराफ्दी^२ तो हो कि उनके घरबाब ने उनका खयाल किया। जो तो बबमेंस्ट की ख्यालियाँ अब माऊमिले बबरिठ हो रही हैं। परिश्रुत अबाहर साल की खईरु माँ के साथ फिटानी बिदघते^३ को मयीं। अब बाहर रहना मुझे भी बहपार्स मामूम हो रही है। हाँ पदए मजाब का रिब्यू धनी तक नहीं हुआ। इसका इंतजार करता रहा। अब माब बिमाता हूँ। काँ साहब से रिब्यू करवाये। या धाप और जिघसे मनासिब सममें। मेरे किन्ही माबिल का खयाल मैं रिब्यू नहीं हुआ। हालांकि परए मजाब को लेकर छः हो चुके और सातवाँ भी धनकरीब तैमार है। मैरगे खयाल ने बाबारे कुल का रिब्यू कर दिया था। और फिटानें पड़े हुई हैं। और और फिटानें तो पुछनी हो गयीं। पदए मजाब तो नयो बीब है और उसका एक-एक मजब मेरा है। और तो सब खरियत है।

धापका
धनपत राम

२५३

लखनऊ

१३ मई १९३२

माईबान

तसलीम। मैं धाब बनारस का रहा हूँ। अब से मेरे पास मुगून सरस्वती प्रेश कारी के पते ही से लिखियेगा। मेरा नाबिल बेबा^४ तैमार हो गया है। इसके लिए मुझे यहाँ आठ-दस रोज ठहरना पड़ा। इसकी दो सी जिसें भाबपाड़ी से भेज रहा हूँ। इतरहार बनारस से भेज हुआ। धाबार और खयाल दोनों में रिमबा कीजिएगा। साबद साल दो साल में बिक्र जाये। फिटान बहूल खपक घपी है मेरी हिमाइतो^५ के बाहल^६ सेफिन मैने ज़ीमत बहुत कम रखी है। उम्मीद है धाप करीरिबत है। धनर बनारस धापको इतराफ हो तो मुझे जरूर इतना कीजिएगा। डामों के बारे में धापने मुनासिब कार्रवाई कर ही भी होयी।

धापका
बनारस राम

२५४

सरस्वती प्रेस, बनारस

७ जून १९३२

बाईबाल

उसमीन । क्या भिना । हाँ मैं सज्जनक था । लेकिन कानपुर न था सका । परेशानियों में था । फिर कभी इसका चिह्न करूँगा । मुझाऊ कीविएपा ।

'बेबा' बेचक बहुत खराब छपी । कई प्रेसों न छपी कह परवर टूटे कह कालियों न लिखा । फँस गया था । मजबूरन खरन करना पड़ा । उसगी रह मद्र कि प्रिन्ट साइज न हो जा सको । धैर्य इसकी चिन्ने खैर, रखा हूँ । तकसीक ठी होवो मपर बख्तगी से बिपकबा लें धीर बोनों कित्ताबा 'परए मजाब' धीर 'बेबा' का रिष्णु निकसबा रें । बहुत धरें से मेरी किसी कित्ताब की तनछोद बनाना' में नहीं निकसी । 'रामकसो' की तनछोद में भिन्न हूँगा । बहुत जल्द ।

धब नाटकों का चिह्न करना जरूरी हो गया । बाबू हर प्रमा' सक्नेता जेन से घूट भाए धीर बहुत तम-हास हूँ । मेरे पास बरनाक छत लिखा हूँ । क्या बनाव हूँ । मरख्ना कित्ता तय हुआ कितना बाकी हूँ मुझे क्या खबर ?

घाने मजरसामी की या नहीं ? एकेडेमी मे क्या पेशगी का मबान नहीं पेश हो सकना ? धीर न सही सी दरये पेशगी लेकर उनके पाम भिन्नबा दीविए । बेचारे बड़ी तकसीक में हूँ । मैं मजबूर हूँ हालांकि खालसा हूँ यह मजबूरी धारबी हूँ । धाए हो सोबिए कितनी मुश्त गुजर गई । गामिचन बैठ मान हो गए । धब तो ब परे भी नहीं करते बनता × × ×

धीर तो सब परिचय हूँ । धमी शहर में मकान नहीं न छपा । × × धनिए मन्नु से न मिल सका । खरा शहर या जाऊँ तो भिर्नु ।

मधुलिम

धनपन रम्य

११४ प्रिन्ने ही गई । बख्तगी मे साहीर का 'बमाना धीर' 'बमाना का धाहीर धैर' लिखा ।

२५५

सरस्वती प्रेस, काशी

१७ जून १९३२

साईबान

उसलीम ! मैंने तो तल्प व मस्के के एक समसने वाले तनामुब^१ को सबकीं का तनामुब समझ है। और उसी पर धमस किया है। मगर इस वक्त कितने सबसूए हिन्दी उर्दू तैयार हो रहे हैं उनके शिकते किसी तफ की मुजाहद मस्किन है। ये तो धक काग पकड़ रहा हूँ। सबकी फेंस गया हूँ और महक बरान नाम। मगर भाइया से इस भाइन से सोसहों भागा किनाएकस हो बाऊंगा।

मेरा नया नाबिस कर्मसूमि खप रहा है। घटाएह कार्म खप गये हैं। कोइ घ-
सी सठे की किताब होगी।

धमी तक तो बेहतर में हूँ अगर खसव रहुर में रहूंगा। मकान ठीक कर रहा हूँ। समीद है कि भाप खुश है। धनारकनी की तनकीइ सी धमी नहीं निक सका। इसी पीकरानी कुतेखसी म मैं भी मुबतिला हूँ हालांकि की बिलकुल नहीं चाहता मवर रस साहब से बाया कर चुका हूँ उसका इज्ज करना जरूरी है।

मुसलिस

धनपठ रस

२५६

सरस्वती प्रेस, काशी

२७ जून १९३२

साईबान

उसलीम ! आई मिला। पहले इन दोनों चिट्ठाओं 'पर्ये मजाब और बेबा का रिब्यू तो करा बीजिए। एक इरिहहार तो बही है, दूगय यह मज रहा है। 'अमागा' में रीडिय मीटर के नीचे किसी गोसे में रखवा दीजिए। 'पर्ये मजाब' पर तो मैं घापकी राय का मुरताफ^२ हूँ। इस मने बहुत मीहन से लिखा था। घाप इसे एक बार सरसरी तौर पर पढ़ तो जायें। मगर सापर घापकी पुसन न मिलेगी।

घाप जिन अमाधतों के लिए उर्दू रीकरें लिख रहे हैं। पांचवीं घटवी घाठवी के लिए या घाठवी मतो बगवी के लिए। मजमूनरीन^३ के मुनास्किफ नोट लिखान म एक दुरबारी यह पेस घात्री है कि घकसर सबक रिखाता से निजे

जाने हैं और रिशालों में बला-धीकाठ^१ गुमनाम पहले कमर^२ या बत्ते हैं, जिनके ठेके लठ्ठीर^३ या कुमुत्रियात पर कोई राय कायम नहीं की जा सकती। न इनकी ठसानीक ही है जिन पर कुछ मिया जाए। अगर यह सोचिए कि मुस्तनर^४ मोयों के मशामोन ही सिमे जाएं तो कटीकुलम में जो शर्ने इन्तजाब^५ के मुनास्किर कायर की गई है उनकी पाबन्दी नहीं हो पाती। पहले कमर ता घाम-गाम मौजू पर मशामोन नहीं मिलने। पाँचवीं छठवीं और सातवीं में तो मन्ने यही रिशकन देठ घाई। कोशिला की है कि बड़े-बड़े भायों से ही इन्तजाब किया जाए। फिर भी के-नसनीक नाम आ ही गए हैं। इन पर भी कुछ न कुछ रो बार लाइन मिल ही दिया जायगा।

अब यह मया सभामात्र के मुनास्किर—हिशामजोवासी लठ्ठीर में इन पर भी लठ्ठीर डकारे मौजूब हैं। क्याश इठमोनान के लिए इराइटीरिया देख लीजिए। मिस्टर फड़के लकरीकांग रिपाठी और अयोप्यानाय रिपाठी बघर ने किठाबें लालीऊ^६ की हैं। उनमें किनो से मिल कर ठी कर लीजिए। इन मोयों की किठाबों में मशामान बहुत अच्छे हैं। मजबूत उर्बू किठाबों में घापका अच्छे सबानान न मिलेमे क्योंकि रयात्तर मोयों ने तुसबा^७ से मशामोन इन्तजाब कराये नाम बाल दिये हैं। हाँ अजमर का नवा इन्तजाब अच्छा होया। हर एक सिहाब से। मन्ने-मुनमान को बाल बँध यूँ मिली भी कि अमर इन किठाबों के लिए घापको दकमुरत रकम मिल गई है वो लँद, बर्ना रायाटी मुकरर है। अमर रायणी किठाबों की बिजो ही बर तो मिलगी। अमर बस किठाबें एक माघ मँजूर हुईं तो एक घारमी के हिस्से में पाँच ही दिने तो घाए। उनमें उबू लकरी की तादाद रिगनी है। अमर पाँच दिने मिल जाएं तो फिर भी कुछ घामशनी हो सकती है। एक ही से दिने मिल कर यह मए ता अमबला मुजलान हो जाना है। मानुम नहीं घाप किमके लिए निश रहें हैं। घापका बाती अमर यहीन किठाबों की मँजुरी और इराधन^८ में मशामिन हाया इनमें टक नहीं।

येरा मशाममा शायर कहा जा रहा है। तात्पुबेशर अम काबामान अम है। उमानाय बनी छात्र नाम क तात्पुबेशर है। अम के पाप घनामा^९ कुछ नहीं। अभी तक किठाबों की घाप^{१०} शक नहीं हुई। मुसम्मरीन में दो माघ रयाहाबाद म्योर कालिब के हैं। एक माहब तो मँजुरी में लठ्ठीर रगने है, दूसरे माघ रायपुर में या गरगिहपुर के तीमरा में हैं। गेर। बँके में लक म पारा मरुअर^{११} हैं इमतिर^{१२} मंग अर बरीरा रगने का डिम्मा से पिया बा। अमर

^१ बन्ना २ केसक ३ किलक-दीपी क प्रामाणिक बाते बने ४ तुसबा ६ बन्नी ६ रिपा
विषी अचर-अमर ३, ४

धमी तक तबाघत^१ रुक नहीं हुई। पुसाई में तीनों किराओं तैयार हो जाएंभी मुझे इसमें रुबहा है।

माटकों के मुताबिक मुझे कुछ लिखते डर लगता है। कहीं घाप यह न समझ किठना बे-सबर बावमी है। लेकिन जब हर प्रसाद साहब की यादगिहानी या जाती है तो मनबूर हो जाता है। इस वकत उन्हें ही अपने माब अपने के बर बर है। मेरे लिए भी तो तो के बराबर नहीं सही। घाफके लिए भी नामिबन् तो फबास के बराबर न होंगे। बुबा करे घाफकी रीबरें अस्म हों और घाप इपर मुतबज्जे^२ हों। कहीं तक बावबा कर्के।

'हंस' का सास नम्बर निकालने का डरपा है। अस्मि जमानत का मसला है। घाबेनिस का इभावा^३ होगा और हमारे ह य-वाँव फिर बंब जायेंगे। बेखिए के नी रुबद^४।

बास-अज्जे मज्जी तरह है। क्या बाबु बिरान नउपयन मुस्तिहान तीर पर नैनीताल बंधे गए हैं ?

मुबनिउ
बनपय राम

२५७

सरस्वती प्रस, काली
१८ सुलाई १९३२

भाईबाल

उसलीम। काब मिला। शुक्र है घाफको इस इंतजाम से फुमत तो मिसी। बेखिए किठने सेट होये हैं। मेरा हिन्दी सेट तो मसकत^५ हो गया। तात्मुकबार प्रस किराओं की छपाई का इंतजाम न कर सका। कारकुना^६ में कुछ ऐसी बरमजबिबा^७ पैरा हो गयी कि उय साहब की कुछ न जमी और उनका मुकवान भी हुआ। बनबैसर बनरह पहले ही से रख लिये गये थे। एक हज्जार का टाएय भी धा गया था। मगर सब धरा रह गया। सामे की पोती भी मुघलिनडो य तीन साहब थे एक बम्बा भी था। और अमहाब हवा खाने पहाड़ों पर तशरीफ लै गये थे रह गया। मैंने भी प्रस की हालत बेनी तो बुपका हो रहा। उडू सेट तो मैंने लिया ही नहीं। अपना सेट मुझे बेरने को दे दीगिएगा। हूँ और बँक यब घाफको इन नाम के लिए फुमत हो गयी है माटकोंबाला मुघामला तो उरम कर दीगिए। मझे बार-बार घाद रिमाते नागवार मामूम होता है। हंस का नंबर निकल रहा है। घब

^१ दवाई र च्यान से ^२ पुनरावृत्ति व जबा होगा है ^३ बरत जबा ^४ बजान करनेवाली ^५ बरबनवनाओ

एक इन्डोवार निकालने भी जा रहा हूँ। शालिकर १५ अगस्त से निकले। धीरे ठो बोर्ड नहीं बाग नहीं।

घापका
बनपन राम

२५८

इलाहाबाद
२५ अक्टूबर १९३९

मार्जिन

समस्यीम। नरलों यहाँ घावा धीरे मामूम हुआ कि घाव भी एक दिन पहल लक्ष्यक लाए थे। क्या कहें समाजात न हुई। बहुत-सी बानें करती था। यहाँ से बनारस घाव लक्ष्यक ले जाते हैं मगर धीरेबनाने की तरफ मन्तानिक नहीं होते। मैं जानपुर घावों धीरे घापसे न मिसू यह महाल है। घाव घाते हैं धीरे मुझे खबर तक नहीं होती। इने क्या समझें।

'बिबा' का कोई रिष्णु 'जमाना' में न छपा। 'पदए मन्नाब' का भी यही हाम हुआ। घापका मुझमें इतना कम इन्वेस्ट क्यों हो गया है? क्या 'पदए मन्नाब' घापन पड़ा? घापके किमी होमन ने पड़ा? या इन ऊपर मन्नाब है कि घापन पड़ने की तकनीक मन्नाब नहीं की? पिटरैरी काम न विघाप मन्नाब का ऊपरानी के धीरे क्या रखा है। पम्पिशार भी बिनाब क्या हाया कर जब कोड उनका पुरमाने हाम न हो। धीरे जब 'जमाना' जमा रिमाता इन ऊपर बणन भाई करे ता दूसरी पर मेरा क्या हब है धीरे क्या धारा है?

'बन-जमानों के दरान' यहाँ नामा राम नाचपण नाम बुद्धमेवर न राग दिया है। यह घापकी मामूम है। हममें इनकी मन्नाब उमरिया है —

- १) टाळा प्रगार २) टोडरमण ३) मानमिह ४) अक्बर ५) बडगहीन मन्नाब की
- ६) नर सीय महमद ७) बहीरुहीन ससीम ८) शरर ९) गीरीबाहणी १०) रान्
- पीनमिह ११) विवेकानन्द।

पहले इन मन्नाबुए में मन्नाबमान मन्नाहीर न थे। शरर इनकी बिना पर कमेटी न इन पर मन्नाकान न दिया था। अब वह बही पूछे कर सो न है। अक्बर तो मैं धरवीर मिर्जा से पिया है। बहीरुहीन मन्नीम धीरे शरर भी 'जमाना' के मन्नामोन से मन्नाबिम है। मेरे मदान में अब यह मन्नाब ने क्राविय है। अक्बरी पर रिनाब फिर पेश की जायगी। मैं घावने उम्मीद करेता कि हमने

१ बहान गरी २ बडेजा ३ मन्नाब मन्नाब ४ मन्नाब मन्नाब

हक में एक कमरा खीर^१ कह कर इसे दाखिले इंतजाम करा दें। इसके लिए शुक्रिया न भरा कहेया।

हंस' की अमानत बालिल कर रहा हूँ। एक सूरत निकम धार्ई है। 'बाग रथ' इष्टोबार में खूब अपत पड़ रही है। मगर हिम्मत क्रिये निकामे जाता हूँ। देसिए उंट किस बरबट बैठता है।

और तो सब सैरियत है।

आपका
बनपतराम

२५६

सरस्वती प्रेस बनारस
२५ अक्टूबर १९३२

भाइजान

तसलीम। उम्मीद है कि आप खुश हैं। सबकों से वहाँ के हायात मामूम हुए थे। उन्हें आपकी मेहमानबाजी से ओ आसाइरा^२ पहुँची उसके लिए शुक्रिया।

गाटकों के मतास्तिक कुछ पुछना न चाहता था लेकिन अब बाबू हर प्रसाद साहब की माबदिहानी या जाती है तो मजबूर हो जाता हूँ। अब तो पूरे डेड साल हो गये। कुछ उनके छपने की उम्मीद है या नहीं। मैं चाहता हूँ अब वह किसना ठमाम हो जाये। मुझे हर प्रसाद साहब से ओ लबामत हुई है वह बहुत दिन बाद रहेगी। मैं समझता हूँ एकेइमी अब इन इमों को शाबा नहीं करना चाहती थीर आप महब शर्मिन्दागी की बजह से उन्हें रखे हुए है। मैं आपको यकीन दिनाता हूँ कि मैं उन्हें दो माह के अन्दर लाया करा लूंगा। या तुब या किसी पब निराह से। इसलिए आप बराहै करम मुसबबहा बापस कर दें। मैं आपका बहुत ममनून होऊँगा।

बया आप बतला सकने है बेबा की कितनी शिर्से निकम नयी होंगी।

आपका
बनपतराम

२६०

सरस्वती प्रेस, बायी
७ दिसंबर १९३२

बनारस

तसलीम। उस दिन मैं सिने से बजे तक हजूर का इंतजार किया लेकिन

समझ गया कि वहाँ धर गिय गये । धाप मुझे बुला रहे हैं । म मही माध रहा हूँ कि बड़ दिन में धा जाऊँ । क्या वहाँ के विसों के इरतहारी पहकमे मे धापके बस ठसमुकाठ है ? ज्ञान हमली बगीरह से कध इरतहार मिल सकने हूँ ? जन बरी म तो उनका गया साल शुक होना होगा ।

महाँ १ ठारील को सरस्वती प्रस धीर जागरण से बो हज्जार की जमानत ठलब हो बरी । मिस्टर ममफोड से मिला धा । धाब नीटा हूँ । गाभिवन मंभूर हो बाये । धीर तो सब लीरियत हूँ ।

मुञ्चलिन
धनपत राय

२६१

सरस्वती प्रस बनारस
१५ दिसम्बर १९३२

मार्जान

वसलीम । जमानत का मन्त्रो की धबर मिल चुका हूँ । धाबबार बदलूर गयी हूँ ।

धापने ठरमाया धा कि धाप जागरण के लिए किमी एजेंट में मधामना बग सकने हूँ । फिलहाल कागनूर में महक ५९ कावियां जारी हूँ । ज्ञानाकि मेघ ग्रामक है कि धाबर कोई जमता हुआ धावमी हो तो हमको बुदनी कावियां धामनी स निकल सकें । लेमा कोई धामनी निवाह में हो तो बराहे करम निधिग । जागरण के लिए कुछ इरतहारों की भी जरूरत हूँ । यों कुछ न कुछ इरतहारान तो मिल ही गये हूँ मगर उनसे पर्वा बेदिनाक नहीं हुआ । धब भी समय कम से कम ५०) रुपये माहवार का धाग हूँ । धाबर पचीम रुपय के धरनहार भी धीर धा बाये तो लघाध कम हो धीर बरारित न काविय हो जाय । धमी ही बधुमर लिखता आ रहा हूँ । धापका कागनूर के विसों के धमना से धीर मंनजरा से कुछ न कुछ राह-धा-रखम तो हूँ ही । ममलन् बुपेन मिया या बरैक्य बगीरह । क्या धापके जरिये उनमे कुछ इरतहारान मिल सकने हूँ ? धन मुग हूँ मे भोग जनबरी से साल भर के लिए धंनजाम किया करते हूँ । धीरान नाग में कुछ नहीं करत । जनबरी धा रहा हूँ । धाबर धाप कुछ सम्मोद रिवाये तो मे उन कारणाओं से गल धो-निवाबन शुक बर धीर धाव निगनाम बरैक्य मेक हूँ । जागरण की तायाइ इराधन दा हज्जार तक पहुँच करो हूँ ।

मगर जैसा कि घाप कुछ जानते हैं महज कसरते इशाभत से अज्ञान नश्वरकत नहीं होता ताकते कि इतवारों की माकत धामनी न हो ।

मेरी किताबों का हिसाब वो सास से नहीं हुआ है । धर किताबों की बिंदी से कुछ खये हुए हों तो भिजवाने की इनायत करें । धीर तो सब औरिपत है । उम्मीद है घाप कुछ है ।

मुखसिध
बनपन एन

२६२

सरस्वती प्रेस, काशी
२२ दिसम्बर १९१२

बराबरम

तसमीम ! कम अज्ञान में धर्मा की बफात की खबर देखकर बिनी सदमा हुआ । उनके लिए तो इससे बेहतर मौत नहीं हो सकती थी ऐसी कुशलकी किताबी माई है जो अपने पीरों को फलता-पूलता देखकर कुछ-कुछ खसख हों लेकिन माँ बाप की मौजूदगी में तो लड़के बड़े होकर भी लड़के ही रहते हैं । घाप को धीर सारे खान्दान की माताजी की बफात से कितना सदमा हुआ इसका अंशा नहीं कर सकते हैं जो ऐसे सानिजे भोग चुके हो । परमात्मा उन्हें बन्त में बपह दे । हमारे लिए सब के सिवा धीर क्या आटा है हालांकि सब की तकलीफ करना जितना आसान है सब करना उतना आसान नहीं ।

मुखसिध
बनपन एन

२६३

आयरल कार्यालय, काशी
३१ जनवरी १९१३

बराबरम

तसमीम ! धर कई हफ्तों से बेधा का इतवार आजाद में नहीं निगन रहा है न जमाना में । क्या उसकी सब जिम्मे फरान्त हो गयो ? धर फरेक हो गयी हों तो धीर १ जिम्मे भिजवा है ?

३२ आगिर हो गया । बनकी ३१ से किताबों का हिसाब नहीं हुआ । क्या घाप हिसाब करवा सकते हैं ? ३२ के आगिर तक का हिसाब ही जाना चाहिए ।

घाप सैनाटोमन कस्तुराणा वेप्स बगीरह के इरतहारी एजएटों का पना दे सकते हैं ? मतकूर हूँगा ।

घापना

धनपत राम

२६४

आपरल कार्मलप काघो

१० अरबरी १९३३

बराबरम

तसमीम । घने से घापके हासाठ न घामूम हुए । मैंने पंडह दिन से जायद हुए एक लख भी बेका मगर उसका कोई जबाब न मिला । क्या मत पहुँचा ही नहीं । मैंने पूछा था क्या 'बेका' क्रोन्स हो गयी । उसका इरतहार नहीं है । मगर क्रोन्स हो गयी तो क्या घोर जिस्में मिजबाई ।

मुगमिस

धनपत राम

२६५

सरस्वती प्रस कापी

२० अरबरी १९३३

माईवाल

तसमीम । नवाइशामे के लिए शक्रिया । बेका तो बरनमीब होती ही है । उनही इनको कम जिस्में फरोन्स हुई इसमें उनका मिबा घोर चित्तपी गना है । बेका को जत्यब तीर पर कौन पूछता है । पटना ही बाड़े तो घानिघनम् मिन लपनी है ।

घाप बराड़े करम इमपी १ जिस्में मानवाही स

एन डी सहगल ऐंड संम

बकनसस ऐंड पन्निशम

लोहापी मेन

माहीर

के पास भज हैं । उनकी एक अरमाशा मरे पान घापी थी । माहीर में भी इन चित्तब की घन्पी बिन्नी नहीं हो रही है । फिर भी इन मूब के दगते हजान एनीमन है ।

हाँ रोखाना 'बागएष पसनऊ से निकालने का इंतजाम हो रहा है। देखिए कब तक पूरा होता है। हफ्तेंवार के मुकसाल में रोखाना पर आमादा किया है। आपने जो फते रवाना किये हैं उनके लिए शुक्रिया।

अम्मीद है आप सुरा हैं।

मुसम्मिद
अनपठ राय

२६६

सरस्वती प्रेस, काशी
१२ जून १९३३

भारतवासी

तसलूम। आप भी लायोल धीर मैं भी बस बसुद। मालूम नहीं मैंने आपको खबर दी थी या नहीं। बेगै एक बच्चे की माँ हुई और साथ ही बीमार भी। अन्नादाने में ही मुझसे बामनगीर हुआ। महीने भर तक बनाने अस्पताल में रही। अब घर पर है। याना अपने घर पर। कुछ न कुछ टेम्परेचर हो जाता है। दोनों बच्चे धीरे उनको माँ अने देखने मये से धीरे एक माह से उत्पन्न हुआ है अभी सोते नहीं हैं। आपकी तरफ सब अरुण है न ?

फ्रिदाओं के हिसाब के मुगम्मिद आपक मीनेजर साहब ने कुछ न किया। मेरा हफ्तेंवार अभी तक असार पर है और मुझे बहुत परीक्षण कर रहा है। अपना तो दो हजार है और किक भी जाता है मगर इतनाहार न होने क बाइस माहवार अंडे सौ की अपन देगा है।

धीरे तो सब ठीक है।

आपका
अनपठ राय

२६७

सरस्वती प्रेस, बनारस
३ सितम्बर १९३३

भारतवासी

तसलूम। मेरे पास एक अजबुन राजा राममोहन राय पर आया हुआ है। मुझे माद है आपके यहाँ उनका क्या मोजूद है। बराहो करम खाना कर दें तो ब शाना। इसी माह में गामिबन् उनकी बरमी है। इगलिए पनावा मोहनग गही है।

साहस में एक मेरी कहानी और एक महिला साहिबा की कहानी निकली।
मामूम नहीं थापने किन्तु रखाने में लिया। किसी का नाम न था। साहीने पत्रों
की यह धरमा हरकत है।

बम्बोर है थाप पुरा है। किताबों के हिमाज और मुब्तिलात का पगर बर
बिन्नी हुई हो मुस्तबिर हूँ।

धरहर
बनपन राय

२६८

सरस्वती प्रसन्न बनारस
१३ मितम्बर १९३३

मार्जान

तसमीम। इह बर्जा मममूम।

आपसे मैं इस्तराफा की थी कि राजा राम महल राय का क्वाट मित्रता
है। आपके छत में इसका तिक नहीं है। शायद वह बदन नबरमंगल हा गया।
बपड़े करम वह क्वाक बबापसी मित्रता हैं। इमी माह में वह मडमूम धरवाना
बाहुरा हूँ। और आज १३ हो मयी।

बड़ा लड़का तो मनी सेक्रेड इयर में है छोटा पाठवी में। लडका मन्वी
तप है।

मुस्तबिर
बनपन राय

२६९

अमीनजहीला बार्क, लखनऊ
३ मितम्बर १९३३

मार्जान

तसमीम। काह के लिए शक्रिया। प्रमवतीसी हिमा मन्वी मंजूर हुई मम
रत भी बाह है। धर शायद बक्रिया किन्तु निजम जाय। जम्बए ईमार के निजम
बाने का मुझे धरगोस नहीं। मुम्ह ता जगके दार्गल होन पर ही ताजुब हमा
पा। हूँ धर बक्रियासी के बदन मंजूर हा जाय तो धपना क्वाक है बक्रिया उम
पर मयी उमन्वी है। बक्रिया बमटी क्या करनी है। मैं दा कुमा के तत्रम भर

दिये न सिलवर बाक्स धीरे बसिटा । इन ठरुनों में मुझे बड़ी बिपरसोबी करनी पड़ी । एक तरह यह खयाल कि संस्कार-अस्कार न माने पायें । इसके साथ आरती के गैर-मानूस^१ अस्कार से मोतरिख^२ रहने का खयाल । एक एक पुमने के लिए बटों सोचना पड़ा । इस पर भी डाक्टर साहब को पसन्द न आवे तो मजबूती है । अभी स्ट्राइफ मेरे पास ही है । खान्द कर चुका हूँ नबरखानी कर रहा हूँ । आपसे डाक्टर साहब से इस मामले पर कुछ गुप्तगु नहीं हुई? कभी खबर हो ? आप क्या तक बनने का इरादा करते हैं ? या भेज दिया ?

बकिमा सब खरियत है । बच्चों को बुधा ।

निवाबमन्,
 बतस्त टब

२७०

सरस्वती प्रस, बनारस
 ६ बलवटी, १९१४

माईबाब

तसलीम । मुहम्मदनामा मिला । मैं भाव ही आपको मिलने का रहा था । अभीज बुनताउमल की कामयाबी पर तहे विल से मुबारकबाद । मैं गुबस्ता नबम्बर न मिस बकन लखनऊ गया हुआ था तो मुझे मास्टर कुमारीर साहब से मुमकलत हुई थी जो डाक्टर साहब के बचेरे माई है । उस बकन उम्हले कहा था कि डाक्टर साहब अपनी साहबबाबी को भी ए तक से जाना चाहते हैं । तब से न मैं लखनऊ गया न कोई मीला गया । अब मैं किनाकतु^३ मास्टर कुमारीर से बरमाउन करके आप से बात करूँगा । बाह ! आप भी क्या करते हैं । मैं इन तरह बिक करूँगा जिसमे किसी तरह का गुमान न हो ।

मेरी हासत साबिक बल्लूर है । हम का काशी नम्बर तो आपको मिल गया है ? आप बरा इगकी उनकीर करवा दीजिएगा । इस नम्बर पर मेरे ठकरीबन् १२) खच हो गए । ४) का तो कागज सय गया । २) के ब्लाक धीरे उठे बार ही आया । महमूज डाक बनीय में २) खच हो गए । खयाल था कि इन नम्बर से पत्रों की इतायन में भाकूल इजाजा होगा । खयाल था कि वो बाई मो लरीदार बड़ पाएँगे । मगर गतीजा बिककुल बर-अकल । ५ थी पी गए थे उनमें ३) आपस आ गए । खजुर में खलाहान रिमातों का डेर लगा हुआ है । ७) मिले मगर कागजबालों के २) बाकी थे । ब-भुरिजम

२) दे सका । १५) कमाज का बाकी पड़ा हुआ है । बस मैं ममक सीबिए कि बचिया बैठ गई । बड़ी करारी अपत पड़ी । बुचिया गया हूँ । लीडर प्रेम बाला ने गुजरा कर रखा हूँ कि वह मेरे सारे कारोबार को अपने में शामिल कर में । वो सदा राम कृष्ण भी से मिल गी चुका हूँ । हिम्मत पस्त हो गई है । इस बार मान न होतो रिहासा के पीछे ४) से जगान मुकसान उठा चुका । मेहनत का सऊ की वह धलय प्रेस को जो लघारा हुआ वह धलय ।

बात यह है कि ये इस काम में बिना सोचे-समझे कूज पडा । जहा मे गया मिन मका वह मगा दिया । बाबू रघुपति सहाय से रुपए मिले थे । धनी ठक उनके ४) मुझ पर था रहे है, जिसका वो सलत लडावा कर रहे है । पत्रिका परेकानियों में मुबतिला हूँ । इस लिए जिसे लकडो से काम करना चाहिए वह न दे सका । पर पर लिटेरेरी काम करता ही हूँ । इस काम को मऊगैह के तीर पर करता रहा और लकडीह तो लक की चीज है ही । निवारण तो दिन न जान शनो चाहती है । कई बार भी न घाया कि घाप को लकडोऊ हूँ सतिन महूज इन लयात से कि घाप लुद अपनी परेकानियों में मुबतिला है जुगन न हई । लेकिन अब धनन बहालन की घालिणे सीड़ी पर हूँ और मुझ इलहाई मबबूरी की हालत न मिलना पड़ता है कि मरी उकरत को इलना ही शशर^१ ममभिर सिजना घाप लुद अपनी उकरत को समझते है । बाइन्दा बसूबर न घाप रुपए देमे ही । अगर जनबरो फरबगे में २) ही दे मक तो मे शमिन्दगी न बब बाई । बाकी बसूबर में दे सीबिएना । घाप इन हालत न है कि घाप लुद इलनाम कर लघते है कि घाप का अशिट अब बइबहा रगाठ हो गया है । मरा बरी मरिण मही । मुझ पर तो चिरंजी लाम की डिडी हो चुकी है, मिनकी इतिना में दे चुका हूँ । इयो काशी नम्बर पर टानना घाना था । मगर बर नम्बर घाया और निरुन गया मगर इयो को बारिना तो क्या घाम भी न टररी । हुन मिन्या कर घामिनन (०) न जगन न मयना है । अगर इन बउन निरुड भी मिन जाना तो बार-बाब महीन के लिए माहजन मिन जानी । इन परमियात न सायद लीडर प्रेम न मुघाममा हा जाए । मगर उम जगन न भी तो मुझ धनने मुगानबाग^१ धया करने ही पड़ेये । मे यह गही पात मरना कि घाप मरो मरर करना चाहें तो न कर सकें । हां मेरी उकरत को मरुमून ही न करे तो हुनरी बाउ हूँ ।

घोर क्या अब कक ? बेटी मही है । डिमम्बर की छुट्टिया न उपका सीरर घाया वा मगर हम मोपा न उमे रगमन मही किया घामिनन माच में बनयो ।

बड़े साहब-बाड़े सबकी एक ए का इतिहास दे रहे हैं। लेकिन बीसत बर्से में है। बहनियत की कोई खास बसामत नजर नहीं आती। छोटा क्यासा जहीन है, मगर धमी घाळी में है।

आप सड़कियों के एतबार से पिबरोयत के जिस बर्से में है मैं सड़कों के एतबार से उसी बर्से में हूँ। इस बजत मुझे इन सरकारी से निजात मिल जामा बाहिए का ठानि किसी दोठे में ब इतमीमान पडा हुया कुछ मिल-पडा करता मगर यहा धमी बन्ने पाल रहे। जो काम जामीन को उन्न म होगा बाहिये का वह सब पबपनसामे ये हो रहा है जब सावमी पेंशनर हा जाता है। जम्मीद है आप येठे इस बाल्ताम सम पर धीमू की वो नभो बुई निरा देने। जम्मीद है आप बर्बरियत है बीन-बीत में बर्से नहीं हो रहा और बन्ने पृथ है।

सहकर
बलपत राय

२७१

सखता सिमेटोन लि, बर्डी
२५ जून १९१४

भारिजाम

तसलीम। हेर-बो-हरम पडा। मरा ही साधमाना है मगर सापर उर्दू से किमी घोर नाम से प्रया था। हा जिन्दगी ने नज़म करने में असल का धुन इस मजमूम म विभी को शिजायत का क्या मीका है। फिरकापरस्ता की बहनियत का परा प्रयत क्रिया मया है। जिना किमी ब-रियायत के। एक-उच्छदियू पंजिनी घोर पुमारिया की मजहबपरबरी का नरबाय है। धूमरी जानिब मुस्लो की मजहब परबरी का। धानी मजहब के परे म अपनी अपनी नफमपरबरी के शिकार हो रहे है। मगर कुछ लागो का बुरा लगता है ता मरा क्या सकिमार है। सड़क बायम्ब वाटशास्ता होस्टम से है। बहा बहा हिन्दोस्तानी एनेबी है। बीन नंबर के कमरे में रहते है। एन का नाम युल या धीफन राय डुगरे का बन्नु या समत राय। धमी बोना घाये ये। ५२ को गये है। याग ता गकेरमी घाये मे ही बन्ने भी बदल ब हीजागा। मे ता यह संबा सजर करने मे रहा। २३ चटे बनते है। मरल हा जाली है।

१ बर्बरी २ काठे ३ बेट बन्ना

मैंने मीनेबर हम को ताकीद कर दी है कि जब मरा अष्टमाना छप बह हमका प्रुठ जमाना को भेज दिया करें और हंस में लिख दिया करें। उठू तनुम का हउ जमाना क लिए महफूज^१। साम में पांच छ^२ से शहर नहीं लिखना। हा महर मात्र हम काम के लिए बहुत मीजू है। और सब बैगियन है।

मुगलिन
धनपन राय

२७२

सबना तिनैटीन लि हंसई
११ अक्ट १९१४

मार्जान

तमसीम। मैं सख्त दिल से कहता हूँ कि उस रात से मेरा मरमूर मानना निन-माबापी^३ न बी। अगर आपका सडमा हुआ तो मुझे इसका मराम है और न आपसे मुषाजी का इनास्तमार हूँ। आपन सिर्जबर में कुछ भेजना का बारा दिया है। अगर आप बीर किसी छाय तरबुस क भेज करने हा तो भेज द बना उठू भेकर न भेजें। मुझे यह गुमान न था कि आप सब भी उमी अउमरा म है किम में हूँ। मैंने तो समझ था इसका बाइस मेरी मूरबिमान का गहनाम न होना है। अगर आपकी हालत इननी ही अराब है जैसी मेरी तो आप उम और अराब न करें। मैंने आपका बेक बराहे रात रचुरनिमहाय को भेज दिया। सब बह खामोश रह्ये। निर्जन जाल को भी मैं अउमरा^४ यहाँ से भेजटा छूँगा। बाल यह है कि मैं कभी बिजनेसमें नहीं रहा। आप भी नहीं छे। मगर मैं पास कुछ सबड न छोडा और न जाने क्योकर यह हिमाजन मबार हो गयी कि यहाँ आप माकाम छे वहाँ मैं कामयाब हो जाऊँगा। हम कमरलन बार पाब इबार का पाटा दे चुका है। हम पर शामन मबार हुई एक हजलवार भी निवान बीटा। हम पर भी तीन इबार का पाटा दे चुका था। मजमर यह था कि पाटी भी मुल्किस आमदनी होती छे और मैं धरने मोरना अउमरा में बीटकर कुछ पोरा ना लिटररी काम कर दिया बर्के। लकिन और बाये और पर से भी मे लय। वो म एक पर्चा भी कामयाब न हुआ। प्रम और तुनुम की मारी आमन उमर इकरा में सक हो जाती है। उम पर मैं काटक के हा इबार राय मर न मबार हा मने। बागिर मुझे यहाँ आमकर जाना बडा। मनी माल-दा-माम छे लया ना पाउड इउ से मुबुरुदोरा हो जाऊँ। मगर डिम्पन लया मना है कि रागन उउम

^१ महफूज ^२ छप ^३ बिट्टो-ममी ^४ अउमरा

कर सके। बागएक की बाबत उम्मीद है कि सोशलिस्ट पार्टीवाले उसे से से। प्राजरुत इसे बानू सम्पूर्णतः विकास रहे है और यह सोशलिस्ट प्रसवार है। अगर यह इतर चल गया तो बेइ सी को माहवार अपत पड रही है यह बन् हो जायेगी। फिर प्रकेला हंस रह जायेगा। उस पर अगर साल म पांच साठ सी का लसाटा हुषा भी तो मुबायका नहीं। किताबों का इस्तहार तो होता ही है। अगर प्राप स्त्रीन के क्राबिस कोई सिनेरियो लिख सके ओटीजिनल न हो किसी बंधनी नाबिस से ही माबून हो मुबायका नहीं मैं यहाँ कम्पनिया में उसकी निस्कत मुस्तगु कर सकता है। स्त्रीन की लकरियात बवा है यह प्राप मुझे बबर्बाह पयाश जानते है क्योंकि प्राप सिनेमा के शायडीन में है। मैंने तो यहाँ प्राकर कुछ सीखना शुरू किया है। ऐसा कोई किस्ता न भेजिए जिसमे कापीराइट का क्राबि ता हो। पुपनी किताबो में भी बहुत कुछ मिल सकता है या कोई टापोकी धरुवाना हो मबर सोसल हो तो बेइतर क्योंकि प्राबकल सोसल किस्तों की उरु प्राम बमाल है। प्रापके कमम से ओ सिनेरियो निकलेना यह नाबबाल होगा। पहले प्राप ओ किस्ता लिखना चाहें उरुका एक बूमाला सिबें। उरी पर साठ शारोमवार है। अगर यह कम्पनी ने पसंद कर लिया तो सीकाल्य और सिनेरियो लिखना मुस्तकिस नहीं। एक बार यहाँ प्राइए। मौसम लुहगवार सिड रेन का कर्ब। बस पांच रोड यहाँ बूमबामकर सिनेमा कंपनियों से बातचीत की जाये। मुमकिन है कोई मुस्तकिस मूरत निकल प्राये। मगर वो एक सिनासिस के बगीर जामी मुस्तगु से कुछ न होपा। यह लौग मिटरटी शोहरत से मरऊब नहीं होते। गीटी संकर अरुतर यहाँ मुकीम है और बार पांच सी माहवार फकार सिठे है। अगर प्राप वा धरुसाने भी साल का किस्ती ठ कलेक कर सके तो हजार बेइ हजार बहीं बीटे-बीटे प्रामरली में इबाका हो सकता है। और वा धरुनाम पयाश से पयाश ओ महीने का काम है।

और क्या प्रब करे। मैं फिर प्रापसे मुधाप्री मांगता हूँ। यह महब परीसाल और मुबतरिक रिल का उवाल बा। इरतहारवालों की बरमुपामिनी का ममे बहुत उरु उरुबा हुषा है। प्रामरस के तकरीबन साठ सी रुपये ओ साल के बीरान में कुब गये। बकाहिर मुस्तहिर साहब मौलबर प्रावमी भाबूम होसे वे सेकिन अब महीने वा महीने इरतहार निकलने के बाब बिल गया तो साभाश और प्राबोती भी उगी जो टूना नहीं जाननी। ओ साहब कसकत क है, चीन साहब बंबई के है। यहां उनका पना लयाना प्राह मबर मानुम हुषा बोमस ये। एक दिन मिस्टर जिवाउहीन बरमी साहब तशरीक साये ये। प्रापको बहुत पाट

१ लिखा गया २ डी.डी. ३ कलकत्ता ४ टी.टी. में नहीं जाती ५ लिखा ६ बेकन बेईनामी ७ बंद या ८ विरकलीक

करते थे। अब तो मिस्टर सीतलचन्द्र भी जो कर्मियों के मालिक हैं। उनमें लक्ष्मण हो जाये तो आपके लिए प्रयास ही बहुत बर्बाद हो सकती है। मैं तो उनसे नहीं मिलता क्योंकि मैं इस कर्मिणी के घाम भर के बन्धु में हूँ और इस सीतल में और नहीं छिन्न के लिए नहीं मिल सकता। मुझबिना तो बर्बाद नहीं है लेकिन यहाँ इतनाब का मौजा कहाँ था। मुझे जो सहारा मिला। बस चला गया।

आप घबर बिना किसी जोर के छिन्नकर य इतनेबास कर सकें तो मैं मरकुर हूँगा लेकिन सरदरुह हो तो मैं तो आपके परीक्षण करना ब चाहूँगा। छिन्नपी में कमी करण्ड नमीब न हुई अब क्या नमीब होयी। अब खामानटीनी का बमाना है तो यहाँ बंबई में हूँ। नाकाम छिन्नपी (मार्गी एलवार से बीयर एलवार से तो मैं इसे कुटी नहीं कह सकता) का हमसे बचकर और क्या करे हा सकता है। बेटिनी में कुछ समती डीमी निम्नत करना अगर वह धारक न पुरी हुई न होयी। आप परीक्षण हुए तो क्या और मैं परीक्षण हूँ तो क्या एक ही बात है।

मुद्रित

बनारस राय

७७३

सागर ली को

११ अक्टूबर १९३२

मार्गान

दमनीम। मैंने ४ अक्टूबर को बम्बई को प्रक-बाद कह गया और भी पी के घटना की बीर करता हुआ १ को सागर आ गया। यहाँ से निम्नकर दमनीम बना आऊँगा और देवी जी को यहाँ परीक्षाकर १७ को इरीर नाग्य सम्पन्न के अन्त में शक्ति होन के लिए रवाना हो आऊँगा। मैंने इन्को सम्पन्न म पान और लक्ष्मीने बजे के लिए यह महामुन लिया है और बाग्य या रि करने पनागन बह दुनिया के सामने भी एक हूँ। छिन्नपीनी का लक्ष्मी म जब तक बह और छिन्ने दोनों न शक्ति हो जायें काम म एन्को पडगा। मैंने अन्त कई मनमि दोस्तों से इस दुधामने में लक्ष्मीए खामान चिया है। बह समय मन्त्रिकर्ण मापुन हुए। और भी धरनी राय में मुझे मतिपा कीजिएगा। मैं इन्को में भीतर धारके शन का इन्कार बर्षया। या मुद्रित हुआ तो बाकुर होजा हुआ बनारस आऊँगा। इस महामुन को धार अन्त में अन्त राना करान की

इनायत करें। मुमकिन है इसका कोई साहब बवाब दौ घोर मुझे फिर बबाब-उत बबाब मिलना पड़े। बखिए इन्दौर में मेरी तजवीज को लोग मानते हैं या नहीं। हां अगर इस मजबूत की बोल कापियां बलहृश निकमवा बें तो बीगर भल्लबाउत में धपबाऊं।

उम्मीद है धाप खुश है।

मुसलिस
बनपत राम

२७४

सरस्वती प्रेस, काशी
४ मई १९३३

भाईबान

तसमीम। मुझे इस तकरीबे सईद में शरीफ न होने का धीर मुक्त सोहबत औ देने का धकसोस है। अगर यहाँ बड़े लड़के मुन्नु को बचक निकम धापी है धीर २७ से हम सब यहाँ इनाहाबाब में है। कम गामिबन् उसे यहाँ से बनारस ले जायें अगर जाने काबिल हो सका। हाभाकि बचक हस्की किसम की बी अगर धमी तक बाने बिलकुल मुन्बमिल नहीं हुए हैं धीर अगर डाक्टर की राम न हुई तो दो तीन दिन यहाँ धीर रहना पड़ेगा। मीने ऊँमसा कर लिया है कि जुलाई से इनाहाबाब न ही रहूँ धीर यहीं प्रस धीर कारेबार उठा भाऊं। बैखिए क्या होता है।

मुबारकबाद के साथ कृतज्ञ

मुसलिस
बनपत राम

२७५

सरस्वती प्रेस बनारस।
३ जून १९३५

भाईबान

तसमीम। धापका राम मिला। धबीर बिराम नाउबख धी धर ५-६ मेटन है धीर दो-बार रोड न बनल-बिकरने के काबिल हा जायेंगे। शऊ है राइयराइ बडा मुर्बी मुन्नार है।

बिन्दगी से धीरे जमाना कोई साम्बुद्ध नहीं है ।

मुझे तो सब की सब इमर में गया है, छोटा बसबी में घावा है। मैं सब इमाहाबाद जा रहा हूँ। जो प्रेस बरीच यही रहेंगे। इस जमाना से किसी तरह रिहाई नहीं होती। इस कमबख्त 'आपरण' ने मुझे कोई छ-सात हप्ता के पैसे में डाल दिया। सब भी मुझे कोई पन्द्रह सौ रुपये बने हैं। प्रेस से मुझे सब एक कोई पन्द्रह हप्ता का मुकाम हो चुका है। अगर क्या कहें गले में जो डोल पड़ गयी है उसे बचाए जाता हूँ।

घोर क्या सिद्ध है। इमाहाबाद जाने पर मुलाकात की सुरतें आसान हो जायेंगी। सब की सितम्बर से हंस को १२ सप्ताह का कर रहा हूँ। बेजु क्या होता है। यह भी एक ठकबा है। कम बम्बई जा रहा हूँ। एक महीने में लौटूँगा।

आपका

बनस राव

२७६

सरस्वती प्रेस काली

१४ जुलाई १९३५

माईबाब

तलमीम। मैंने एक खत लिखा था घोर हंस के लिए आपसे इस्तबधा की थी और कुछ घरीबों के पते परिवारित किये थे। आपने तबन्नी न करवाई। क्या मेरा खत नहीं पहुँचा। हंस १ सन्तुबर से सबदिपाठ का रितामा हो जायगा और इसमें तनी सास-झास बानों क सास-घास बहने जमान सिद्धे। आपसे मैंने इस्तबधा की थी कि जहु के माहाना लिटरेचर पर आप हंस के लिए एक सजे का नोट लिखना इजूम करें। मैंने इन असहाय के पते पूछे थे

डा इन्वान

प बजमोद्दुन नाय बत्ताबय कौडी

मिर्जा सलीम बाटर

घोर चंद घोर असहाय जिन्हें आप समझते हैं कि जहु के मुकतलिक सोंबों पर लिख सकते हैं ताकि मैं उनमें अत-किताबन करूँ।

मुनसिम

बनस राव

२७७

सरस्वती प्रेस बनारस

१९ सुमई १९३५

श्रीमान

तसमीम । मैं अभी बंदाई गया था । हाथ धारको इतना दे सका हूँ । यह उप किया गया है कि अल्फ़ार से 'हंस' को हम मकान की तकमीम के लिए बजट कर दिया जाय जिसका मैं बिक करूँगा । कुछ धर्म से यह तहरीक हो रही थी कि हिन्दी में जो धर्म उठा उठा डीमी खबान का दर्जा हासिल करनी जा रही है, एक ऐसा रिवाज थाया हो जाये जो हर एक सूबे की धरमियान से हिन्दोस्तान अठ्ठाल^१ को आठाना^२ कर दे । धमी तक हिन्दोस्तान का कोई डीमी धरम नहीं है । हर एक सूबा अरबन अरब^३ अरबन धरम की तरफ़ी क मिला कोटा^४ है । चुनाव एक सूबे के लोग दूसरे सूबे के बाकमानों से बिमहुस और मुजमि^५ है । अब में बहुत कम धरमहाब को मानुम है कि बंगला मुजराती मपये, ठामिल कनाही बरीरह खबानों में क्या है । धमा हाजा इन सूबजान में भी अब से इनती ही लाइस्मी है । हम धरमको बाकमानों से बाकिक है अरनी फास इंसैएड के धरीबों के धनमामे गप^६ हमारी नोके खबान पर है मेरिन हिन्दोस्तान में सूबेबाही खबानों में कौन ठी बाकमान पड़े हुए है इसकी हमें बिमहुस खबर नहीं । इनी बेमानगी को दूर करने और हिन्दोस्तान भर के धरीबों में बप^७ठना रठन-अठन पैदा करने और उन्हें एक दूसरे की तसानीठ^८ से कठनाम^९ करने के लिए एक अरुमन की बुनियाद डानी जा रही है जिसका पटना अरम इन रिवाज को शापा करना है । जिसम पबलिक में डीमी धरम का एरनाम हा बाने और धरमो खानि^{१०} को कम-से-कम मारे हिन्दोस्तान में बुबुमियन और टोररु हासिल हो और कूमर सूब के लोग भी इनके गजाराज और बंठ^{११} से कइयाब^{१२} हों । इन रिवाज की इमशा^{१३} के लिए मैं अरर बोने क मुमतिम धरीबों के नाम और पते आहूना हूँ । बपठे करम धार बिबबा बें । धगर धारने पाम बक हो (शामाकि में जानता हूँ धारने पाम बिमहुस बरन नहीं है) धोर धार बोटी के अबु रमायस में धपनबाज इमी और गतडीरी मरमोच पर बप मोट मियकर हर माह भेज दें तो वह एक धरबी निरमन डारी । हा मुजमान से बापद की तो गजाराज नहीं है । हर एक खबान के लिए दो-दो मुज

१ हिन्दी बाकमानों के लोको २ अरबिण्ड ३ अरबन अरम ४ अरबनीय अरनीय ५ अरनीय ६ अरनीय ७ अरनीय ८ अरनीय ९ अरनीय १० अरनीय ११ अरनीय १२ अरनीय १३ अरनीय

हान किये जायेंगे तो भी सोसह-सबह सुझहाव पुरे हों जायेंगे । आपके पास रिशाले ता समो बाले है । उनमें से चार पांच रिशालों के चार पांच मजामोन के मुकद्दमे^१ और इकतबासाव^२ जैसे भाइन रिब्यु में होते है और जैसे हंस में दिये जाते है कर दिये जायें तो काम बस जाये । आप मुझ उन हजरात के पते सिद्ध बें तो मैं उनसे भी इस्तफा करूँ और आपको सुबुकबोश कर दूँ । हासकि आप जाईं तो इस उमदान^३ से हर माह चारे हिन्दोस्तान के बाकमालों को अपना ममदून^४ बना सकते है ।

- १ डा इकबाल ।
- २ पं ब्रह्ममोहन नाथ बस्तामेय कौंडी ।
- ३ डा मुहम्मद हबीब ।
- ४ डा जाफिर हुसेन ।
- ५ मीलाना मुनेमान नयवी ।
- ६ साहिबे गुले राना ।
- ७ मि राम बाबू सपयेना ।

आपका भाई
बनपत उम

२७८

बनारस

१७ सितम्बर १९१२

साईमान

तमलीम । उम्मीद है आप खुश हाने । मेरे इस मजमून ने तो ग्यासी पहल-पहन पैदा कर दी ।

हंस का अकतूबर नंबर मागी पहला नंबर खर-उ-तबा^५ है । पहली अकतूबर को मुकम्मल हो जायगा एसा यकीन करता हूँ । हिन्दुस्तान के मुकम्मल हिस्सों में मजामीन या रहे हैं और उम्मीद है कि कोलिया सरराख्य होगी । उर्दू में अभी डाक्टर जाफिर हुसन मुझीउद्दीन और और मुहम्मद जाफिर साहब के मजामीन जाये है जिनमें गिफ्त बा की मजाइरा निकल सकी । डाक्टर इकबाल की एक नम भी धानी है । डाक्टर टीपौर का भी एक मजमून जाया है जो हिन्दी में मुताबिक^६ होकर निकल रहा है । महारमा चापी का मजमून भी धानकरीब धानबाला है । मजमून क्या होना दुधा-गो पैदाग हागा । इब्रल जोश मनीहाबारी ने भी याद परमाया है । मैं गोचा है इन लयी धरवी उद्दीक के मुताबिक उमके लिए कुछ

लिये हैं। हमें तो इस सहरोक को मकसूत-प-धाम बनाना है। अब धानकी इमरत का उभरण दरपेस है। अब कुल दो सप्ताह का एक ठूँस रिसालों का उभरण बाहता है। बिलकुल माइन रिप्पु के बंध का। मेरे पास जमाना के घसावा घोर को रिसाला बहमित्ताम नहीं थाता। तबावला कर्सेगा। नये हंस से। धभी तो किमी रिसाल को उभरत न मइसूस होती थी। इसलिए तबावले की उभरत न समझता था। आ धा गया उसे पत्र मिया न धाया तो खंभी गम नहीं। मयर अब मंगवाकर पटना पड़ेगा। धाय बड़ दो सप्ताह का एक उभरण छास रिसालों के छास इन्मी मजामीन का उभर कर दें। हिली में कर्सेगा। बंगला गुजराती मठली कनाडी सामिन वेपुपु मलपामम बगीरह का बम्बई में इंतजाम ही मया है। धाफके निधा घोर किसे सताऊँ।

मन्त्रलिख

बनपन राय

२७६

सरस्वती प्रस बनारस

१ अगस्त १९३६

भाईमान

उसलीम। काय मिला। मीने तो इबर तीन माह से एक अरमाना भी नहीं निधा। बन जामिना में 'नफ्त' मिला था। इसके बाद मिनरने की नीजत ही न पायी। हां याद, इन सवारतों के मारे परीशान है। मीने मिस्टर सगवा ज़ोर ने बहनेरा कहा मइ मुमाक करो मुझे अपना काम करने दो। मगर न मान। १ को मसनऊ घोर लाहीर में धाय समाज को बुबसी के नाच एक धार्य भाग सम्मेलन हा रहा है। वहां ११ को मुझ सम्मेलन का सहर बनना है घोर बर्ग बर्गमा तो चार पांच दिन मय ही आवेंगे। मीने अपना माजूरी निर दी है। मयर मान गये तो ठीक बर्ग बर्ग भी जाना ही पड़ेगा। मगर मुझे सोनने का शरर होय तो एने लोठे बडी धुरी से मंजूर कर लिया करता मयर वहां तो बह पुन ही नहीं। इसलिए जान बचाता फिगता हूँ। मजून की परीशानी होती है। घोर दिन काम से रोडी मिमती है जममें धमस पडता है। इरशा ता परी धा कि मसनऊ से एक ही राज के लिए कात्पूर धाऊँगा मगर अब तो मसनऊ न ? की टय को साहीर भागना पड़ेगा। घोर क्या धय बर्गें।

माना बरपुर।

धारा
पनरन राय

२८०

सरस्वती प्रेस बनारस

१५ अगस्त १९३६

भाईबान

तसलीम ! हां मझे भी घापसे न मिलने का बख़्तसोच रहा । माया इनमिए कि मेरे पास एक रिटन टिकट या घापरे से—मंगल की भी बजे रात तक बनारस पहुँचना बहरी था । और—फिर सही । अभी तो मुझे लापर दिल्ली जाना पड़े ।

तकलीफ़ की घापते ख़ूब कही । अपने घर में काहे की तकलीफ़ । घाप न से मबीब सेन से । सेन न होते तो बूटी थी और अब तो अभी साहबा से भी तमर्कज़ हो गया । अब तो जानए बेतकल्लुक हूँ । अब घाने के इत्तम घापसे एनमेजमेन्ट कर लूँगा ।

घापका

बनपत राय

२८१

१६ सादुल रोड लखनऊ

१ अगस्त १९३६

भाईबान

तसलीम ! घापको लाग़बुब होगा ये भवभऊ कैसे था गया । बात यह है कि कोई डेढ-दो महीने से मुझे बरसे-बिगर^२ की शिवायत हो गई है । बी बार मुँह से सैरें गून निकल गया है । बनारस में इलाज से काई इलाज न देखकर २ को मर्दा था गया और डाक्टर हर गोबिंद सहाय के बारे इलाज हूँ । पातला पेशाब गून बघैर की बाब हो चुकी है । मगर अभी कई दौत छोड़े बायेंसे तब डाक्टर साहब मर्द को तशदीस करेंगे और इलाज शुरू होया । लापर यहाँ बंरत लिग लेंगे । या तो इयमाइ हो होगी या नात्मा ही होया । मुलकर घावा रूइ क्या हूँ । जद । न कुछ था सकना हूँ न हजम होजा है । एक बार मलिन से हांसिन ला सेना हूँ । मास्टर कृपा शंकर गाहा का मेहमान हूँ । मगर यह मकान बहुत मकानर है और आरकन में कोई कुरत मकान से लूया । पर मे जिनसे आए मेकर जता वा तब सऊ हो गया । इरादा था तबन रे कराने वा

१ बरिच २ बिबर, बपुन, बी मूरन: विरीविब बाब बिबर

मगर यहाँ के लाल तो आप आमतो है। काम-काम पर फ्रीस। मीने घर पर रुपए के लिए मिला तो है। लेकिन ममकिन है वहाँ से रुपए कैर न भायें क्योंकि बीन का कार्डेंट तो मरे नाम है। मगर आप भासानी से मुझे इस बकल एक सौ रुपए परिये तार भेज दें तो बड़ा एहसान करें। मे यहाँ से आते-जाते खाना कर देना। मुमकिन है घर से रुपये धा जाएं—घौर इन रुपयों की जरूरत न पड़े मगर एहनिमातन कुछ आबिस रुपये अपने पास रखना चाहता हूँ। तार से स्वारा लख हो तो मनीषाकर से सही। घौर क्या मिलूँ। यहा बड़ा सबका धुल्लू मेरे साथ है। बेसिए इस बीमारी से निजात मिलती है मा यह आखिरी पैगाम है।

आपका

बनारत राय

२८०

सरस्वती प्रेस बनारस

१५ अगस्त १९३६

भाईबाबू

तसलीम । हा मुझ भी घापसे न मिलने का प्रयत्नोस रहा । माया इसलिए कि मेरे पास एक रिटन टिकट था घागरे से—संयस को भी बजे उठ तक बनारस पहुँचना बहरी था । नीर—ठिर सही । घनी तो मुझे शायद किसी जाना पड़े ।

उत्कृतीक की घापने खुब कही । घपने घर में काहे की उत्कृतीक । घाप न बे घबीक सेन बे । सेन न होसे तो भूटी थी घीर घब तो भानी साहबा से भी तपकक हो गया । घब तो लागए बेतकस्मुफ है । घब घाने के इन्क घापसे एनगेबमेष्ट कर भूया ।

घापका

बनारस राय

२८१

१५ लाहूर रोड सखनऊ

१ अगस्त १९३६

भाईबाबू

तसलीम । घापको लागमुब होया में सखनऊ बीसे था गया । बस यह है कि कोई देह-नो महीने से मुझ बरमे-जिगर की शिकायत हो गई है । वो बार मंजु मे मिये गून निकस गया है । बनारस में इलाज से काई फायदा न देखकर २ का बर्ता था गया घीर डाक्टर हर गोबिंद सहाय के बीरे इलाज है । पावाना पैसाव गून बरीय की बाब हो बुधी है । मगर घनी नई बाँध तोड़े बाँधने ठब डाक्टर साहब मर्ब की तरातीश करेंगे घीर इलाज शुरू होमा । शायद बहा पंडर दिन सवे । या तो इमलाह ही हीगी या नात्मा ही होगा । मुझकर घाबा रह गया है । पर । न कुछ था मरना है न हरम होजा है । एक बार मरिजन से हर्जिनक था सेवा है । घाक्टर कुरा संकर गहुर कर मेहमान है । मगर बह मफान बहुत मुजामर है घीर घामरन में कोई बुरा मफान ले भया । पर मे जिने काए सेकर जमा था नब लक हो गया । इलाज या ग्यम रे कराने का

मगर यहाँ के खूब तो धाप जाते हैं। ऊबम-ऊबम पर फीस। मेने भर पर रुपए के लिए लिखा तो है। लेकिन ममकिन है वहाँ से रुपए देर में धायें क्योंकि बैंक का क्लॉक तो मेरे नाम है। अगर धाप धासानी से मुझे इस बहन एक सी रुपय परिये तार भेज दें तो बड़ा एहसास करें। मैं महा से बाटे-जते रवाना कर दूँगा। ममकिन है भर से रुपये धा जाए—धीर इन रुपयों की बकरत न पड़े मगर एह्तियासतन कुछ प्रबलित रुपये अपने पास रखना चाहता हूँ। तार से क्या हो तो मनीभाइर से सही। धीर क्या निर्जु। यहाँ बड़ा लडका पुन्नु मेरे साथ है। बेलिए इन बीमारी से निजात मिसली है या यह बाखिरो पैदाम है।

धारका

धनपन राम